रतननाथ 'सरशार'

की

अमर कृति

∵

कामिनी

रूपातरकार

शमशेरबहादुर सिह

सरस्वती प्रेस बनारस

कॉपीराइट
सरस्वती प्रेस, बनारस, १९५१

मूल्य–पाच रुपया

मुद्रक—पं० पृथ्वीनाथ भार्गव, भार्गवभूषण प्रेस, गायघाट,

भूमिका

'आजाद-कथा' के प्रणेता, उर्दू साहित्य के अमर रत्न रतननाथ 'सरशार' से हमारे पाठक अपरिचित नही हैं। 'आजाद-कथा' उनकी हास्य-कृति थी, 'कामिनी' उनकी गम्भीर रचना है। एक सामाजिक उपन्यास की हैसियत से हम समझते है कि आज भी उसका स्थान बहुत ऊँचा है। आज भी इतना सजीव, इतना यथार्थ चित्रण दुर्लभ है। यह निर्विवाद है कि नवाबी जमाने के लखनऊ का जितना सजीव चित्र 'सरशार' उपस्थित करते है वैसा और किसी लेखक ने नही किया है। 'कामिनी' की रोचकता और उसमें अकित चित्रो की मोहकता उसकी अपनी निधि है। और उस निधि को आपके हाथो में समर्पित करते हुए हमें न केवल सतोष है, वरन हर्ष भी हो रहा है।

'कामिनी' बहुत बडा उपन्यास है और आज के पाठक के लिए, सभवत, वह पुराना विस्तार और शब्द-बाहुल्य बहुत प्रीतिकर न हो। उपन्यास की हमारी धारणा में भी बहुत अतर हो गया है। इस दृष्टि से अनुवाद के समय उस विस्तार का कुछ अनावश्यक अश हमने निकाल दिया है। ऐसा करने में, परतु उपन्यास की कहानी, उसकी शैली अथवा गठन को कोई क्षति नही पहुँची है। वैसा करना हमें कदापि प्रिय न होता। अब 'कामिनी' का रूप और निखर आया है। उसकी भाषा के साथ, आप देखेंगे, हमने अधिक स्वतत्रता नही ली है। 'सरशार' महोदय की शैली इतनी सुदर है कि उसे और अधिक सँवारने का मतलब सूरज को दीपक दिखाना होगा—जो कभी हमारा दभ नही है।

—प्रकाशक

पहला अध्याय

सूरमा बेटा

धनन्ना ! धनन्ना ! तोप की घन गरज आवाजें जो गूँजी, तो लोगो के कान खडे हुए, ऐं ! ये तोपें कैसी दगती हैं, भई ? किसी ने कहा कोई बडा लाट आया होगा। कोई बोला, मालूम होता है हैदराबाद वाला नवाब या कश्मीर का महाराजा आया है। किसी ने कहा अरे मियाँ, न कोई आया है, न गया है, चाँदमारी हो रही है। कोई बोल उट्ठा भइ आवाज तो धावे की-सी है, लाल कुर्ती के गोरो और काली पल्टन में लडाई हो रही होगी, हम जानते हैं बेली गारद पर धावा हैं, अपनी-अपनी राय के मुताबिक सब गद्देबाजियाँ करते थे और सरकारी तोपखाने से तोप की दनादन की आवाजें बराबर आती थी। थोडी देर में सबको मालूम हो गया कि हिज एक्सेलेंसी कमाण्डर इन चीफ हिन्दुस्तान, यानी हिन्दुस्तान भर की फौज के अफसर-आला, जिनका दर्जा और ओहदा इस मुल्क में सिर्फ गवर्नर जनरल के दर्जे से कम है, आज लखनऊ की रौनक बढ़ा रहे हैं और यह शिलिक उन्ही के स्वागत में है।

अब सुनिये कि ऐन उसी वक्त, जब कि छावनी से अजदर-मुहीं तोप पर बत्तियाँ पड रही थीं और शहर भर में गोलों की आवाज गूँजती थी, अभी धनना की आवाजें खत्म नही हुई थी, कि मिस बेली, अमरीका की लेडी ने बहुत खुश होकर एक शरीफ हिन्दू खान्दान के घर में अन्दर जाकर कहा—'बेटा-बाबा पैदा हुआ !' और उनकी मददगार दाई जुब्बन ने, जो हिन्दुस्तानी दाइयो में शहर भर की नाक थी, पुकारकर कहा—'लो बीवी, मुबारक ! चाँद सा बेटा पैदा हुआ। अल्ला जच्चा-बच्चा दोनो को सलामत रखे !' लडका होने की खुशी किसको नही होती, घर भर में सब खुशियाँ मनाने लगे। बाहर मर्दों में खबर हुई, तो उसके बाप से उनके दोस्तो ने कहा, यार यह लडका बडा सूरमा होगा, कि एन पैदा होने के वक्त हिन्दुस्तान भर की फौज के कमाण्डर इन-चीफ के आमद की शिलिक-सलामी सर हुई !

सबको यकीन हो गया कि लडका बढ के बडा तलवरिया, बडा गोलचला, बडा पक्का निशानेबाज होगा और रन के मैदान में शेर-नर की तरह बिफरे और डकारेगा। क्षत्री का लडका, राजपूत तो है ही, और फिर उस खान्दान का, जहाँ न जाने कितने पुश्तो से सिपहगिरी होती आई है—कोई रिसालेदार,

कोई सूबेदार, कोई कमेदान। चीन, बर्मा, काबुल की लडाइयाँ लडे हुए। घर में जो पैदा हुआ, जियाला। जरी, नर आदमी। घुट्टी के एवज गोया दुश्मन का खून पीना सिखाया था। खुद भी खूँखार, तलवार भी खून की प्यासी। ठाकुर बलजोर सिंह, जिनके यहाँ लडका हुआ था, एक बडा जर्रार राजपूत था। कई लडाइयो में ब्रिटिश गवरमेंट की तरफ से शरीक था। पहले महाराजा सिंधिया ग्वालियरवाले की फौज का कप्तान था। एक कमाण्डर-इन-चीफ ने जब ग्वालियर के दरबार की फौज का मुआइना किया और कवायद देखी, तो महाराजा साहब से बलजोर सिंह को माँग लिया। और इस जरी राजपूत ने हर जग में, जहाँ-जहाँ भेजा गया, बडा नाम पैदा किया। हर मैदाने-जग में दो चीजें हाथ में लेकर जाता था और एक चीज बग़ल में: तलवार और जान हाथ में—और बग़ल में कफ़न। रन के मैदान में जान को कोई चीज ही नही समझता था, और मौत को एक भूनी मूँग के बराबर भी कभी न समझा। उसका भाई भी बडा गोलचला मशहूर था. उम्र भर सूबेदारी की, और जब सुना यही सुना, कि आग फाँद पडा, समुन्दर में कूद पडा। इनके यहाँ की औरतें जब कभी अपने खान्दान के किसी मर्द के बारे में सुनती थी कि फलाँ शख्स गुत्थम-गुत्था घमासान में जख्मी हुआ, फलाँ मर्द ने गोली खाई, फलाँ नौजवान आदमी के दस टाँके रन के मैदान में लगाये गए, तो उस दिन घी के चिराग जलाती थी, और रतजगा करती थी और खुश होती थी। और मर्द तो कोई ऐसा नही जिसके बदन पर जख्म न लगे हो, या जिसने तलवार के मुँह लडाई न लडी हो, या गोली न खाई हो। यह तो इस खान्दान का फख्र है। इस खान्दान में जो ऐसे वक्त में लडका पैदा हुआ जब कमाण्डर-इन-चीफ-हिन्द के स्वागत में शिलिक-सलामी सर हो रही थी, तो उनके कुल बिरादरी वालो का कलेजा हाथ भर का हो गया, और खुशी के शादियाने बजने लगे।

मिस बेली ने बलजोर सिंह से कहा कि—ऐसी साअत में तुम्हारा बच्चा पैदा हुआ, यह कोई बडा मुल्क फतेह करेगा। हम जानते है कि रूस का जार होगा, या रूसियो को एशिया से निकाल के शहशाह हो जायगा और तुर्कमानिया के गेयोग-टोप को अपनी सलतनत की राजधानी बनाएगा।

बलजोर सिंह ने शुक्रिया अदा करके कहा भगवान करे ऐसा ही हो, मगर यह तो बताइये, मिस बेली, कि आपने ऐसी उर्दू बोलना कहाँ सीखा?

मिस ने मुस्कराकर जवाब दिया—मैं पैदा तो अमरीका में हुई, मगर दो बरस की उम्र में यहाँ आई, और चौदहवें बरस यहाँ से अमरीका गई। वहाँ तीन बरस रही। साल भर के लिये इग्लिस्तान गई। फिर अमरीका आके चार साल रही। फिर दो महीने फ्रांस में रही और वहाँ से लदन गई। वहाँ दो बरस तक डाक्टरी का काम किया। कभी-कभी स्काटलैंड और आयर्लैंड और पेरिस भी

जाती थी। फिर दो बरस तक अमरीका में रही। अब ग्यारह बरस से फिर लखनऊ में हूँ। इस अर्से में सिर्फ दो दफा अमरीका गई थी। बड़ी आपके शहर में। बारह बरस तक तालीम आपके शहर में पाई, उर्दू-फारसी पढ़ी। डाक्टरी का खिताब अमरीका में पाया। वह कौन महल है, जहाँ मैं नहीं गई, और कौन खान्दान है जिसमें मैंने इलाज नहीं किया, और वह कौन बहू-बेटियाँ है जिनसे मैं वाकिफ नहीं, और जो मुझे नहीं जानतीं। रजवाड़ों, ताल्लुकेदारों, जमींदारों में जाने का भी इत्तफाक होता है। उनकी बोली ऐसी साफ बोलती हूँ कि आपकी औरतें न बोल सकेंगी। अच्छा, अब छुट्टी के दिन मिशन की आठ लेडियों की दावत कर दीजिये। शैम्पेन पार्टी।'

बलजोर सिंह ने खुशी से क़बूल किया और उसी वक्त मिस बेली से एक खत भरे एण्ड कम्पनी के नाम लिखवाया कि मेहरबानी करके आधी दरजन शैम्पेन की बोतलें और आधी दरजन शैम्पेन पाइंट (अद्धे) और तीन बोतल शेरी और तीन बोतल फेवरेट भिजवा दीजिये। और इलाहाबाद एक खत भेजा कि फर्स्ट-फर्स्ट क़िस्म की मिठाई भिजवाइए। और दोनो खतों पर दस्तखत कर दिये।

इतने में बलजोरसिंह के दो दोस्त आए। दोनों फौजी अफसर, दोनों पेंशनर। जब उन्होंने सुना कि बलजोर सिंह के यहाँ लड़का उस वक्त पैदा हुआ जब कमाण्डर-इन-चीफ के रेल से उतरते ही सरकारी तोपखाने से तोपों के दगने की आवाज़ें दनादन आ रही थी, तो बड़े खुश हुए। और दोनों ने एकराय होकर कहा कि यह लड़का यही या जरनैल होगा। एक ने कहा कि इसकी तलवार जाके काबुल ही में दम लेगी। दूसरा बोला—बरमा फतेह करेगा। होनहार बिरवे के चिकने-चिकने पात। गोली चलाना तो इस लड़के को मैं खुद सिखाऊँगा।

एक रिसालदार ने कहा—और घोड़े पर सवार होके मेख उखाड़ना और उसके कुल करतब हम सिखाएँगे।

एक मौलवी जो मुबारकबाद देने आए थे, वह मुस्कराकर बोले—अब इससे कौन इनकार कर सकता है कि यह लड़का बेशक बड़ा पक्का सिपाही होगा। जब तीन-तीन रिसालेदारों और ऐसे-ऐसे तजरुबेकार रिसालेदारों की तालीम होगी, तो फिर बचपने ही से लड़का अच्छे-अच्छे करनैलों के कान काटने लगेगा। अल्लाह उम्र दराज करे! मगर इसके साथ ही अँग्रेजी-फारसी की तालीम से भी न चूकियेगा। इस लड़के को निरा उजड्ड सिपाही ही न बनाइयेगा, जैसे—बे अदबी मुआफ—आपके ठाकुरों में बाज गँवार के लट्ठ होते हैं। ऐसा कीजिये, कि यह तलवार का भी धनी हो और कलम का भी। जब लुत्फ है।

इसी पर दो-एक ठाकुर हँसे कि हमारी अच्छी तारीफ की, कि उजड्ड बनाया और गँवार का लट्ठ।

बलजोर सिंह ने यह सुनकर जवाब दिया कि अब तो हम लोग अंग्रेजी अमलदारी की बदौलत आदमी बन गए , मगर कभी-कभी वह पुराने उजड्ड-पने का खून जोश कर आता है । अब इससे बढके उजड्डपना और क्या होगा कि लडकियो को जिन्दा ही मार डालते थे । एक तोता भी आदमी पालता है तो उसकी मोहब्बत हो जाती है—न कि अपनी औलाद ! अब भी पुराने उजड्डपन की बू नही गई है।

एक बूढ़े ठाकुर रिसालेदार ने ये बातें सुनकर कहा—अरे अब कौन सिपह-गिरी रह गई। जब से हेनरी मार्टीनी रफल चली और आर्मस्ट्राग की तोप निकली, सिपहगिरी गई-गुज़री। आड में खडे होके, ख़ाकी ख़ाकी वर्दी पहन ली और पट-पट दाग दी। जैसे मौत बरस गई। परबत हो तो डोल जाय, आदमी भुनगा कौन चीज़ है। इसमें सिपाही की क्या चले। सिपहगिरी तब थी जब दोनो फौजें गुथ जाती थी, जैसे दो साँप जबानें निकाले हुए एक दूसरे से गुथ जायें। वह सिपहगिरी थी। मौलवी साहब, (पगडी उतार के) यह देखो, यह सर पर तलवार खाई थी, और दूसरी लडाई में इधर तलवार पड़ी। जब तलवार पडती है, मौलवी साहब, तो पहले आँखो में अँधेरा छा जाता है। होश कब आता है जब खून की धार निकलती है। बस आँखें खुल जाती है। और उसके बाद जो चक्कर आता है तो फिर जख़मी गिर जाता है, और अगर ज़ख्म खाने का आदी है, तो ज़रा देर ठहर सकता है। लेकिन कारी ज़ख़म के आगे देव के बच्चे की भी नही चलती। हमने कभी ज़ख्म खा के उफ़् नही की और आगे ही बढ गये। और कडकैतो का कडका सुनके तो हिजडे तक को हरारा आ जायगा। हाँ, शेराने-शेर ! बढे हुए !—बस सुनना था कि तलवारें सूत-सूत के घोडो को और भी तेज़ी से कडक्डा दिया। अब उस वक्त यही दिल चाहता है कि फौरन मुठभेड हो जाय। बस जुट ही जाएँ। और जब ग़नीम को भागते जा देखते थे, तो हमको तो रज होता था। दिली खुशी हमको तब होती थी जब हमारी फौज ग़नीम की फ़ौज से तलवार की लडाई लडती थी। शपाशप। उस वक्त कलेजा हाथ भर का हो जाता था। और लुत्फ़ यह कि अगर ज़ख्म लगाएँ तो भी खुश, और अगर ज़ख़म खाएँ तो भी खुश। हम तो मनाते ही थे कि ज़ख्मी होके रन से आयें। और हम, अपनी कहते हैं, औरो का हाल नही जानते, कि जब दुश्मन को हमने निहत्था कर दिया, और देखा कि उसके पास तलवार, तमचा, बन्दूक, कटार वग़ैरह कुछ भी नही है, तब हमारा वार कभी उस पर नही हुआ। बस हाथ को रोक लिया कि निहत्थे आदमी पर हाथ चलाना और औरत पर हाथ चलाना बुज़दिलो का काम है, कोई बहादुरी की बात नही। दो-दो दिन से आबोदाना हम लोग लडते थे। और अँग्रेज़ी फौज के साथ तो वह सामान होता है कि गोया समधियाने में दावत खाने जाते है। उनका कमसरियट होता

है कि दुनिया भर की न्यामत की माँ का कलेजा। भेड़ी और बकरी और बक-रियाँ और मुर्गी और अण्डे और बटेर और तीतर और कबूतर और सुअर और मछली और हिरन और हर तरह का गल्ला और दूध और मक्खन और दही और सारी खुदाई भर के ऐश की चीजें ढेर-की-ढेर होती है। और शराब की कोई इन्तहा नही। सुना, सोडा और लेमोनेड की हजारो बोतलो की डचोढ़ लगी रहती है। और यहाँ कभी रोटी नसीब हुई, कभी सत्तू ही खाये रहे। कभी चना चबेना, कभी कुछ नही। कभी-कभी ऐसा हुआ है कि आलू के खेत से आलू तोड के उसी दम भुनवाए और घोडे ही की पीठ पर खाए। खेतो निकल गये, और पानी का पता नही।

इतने में बलजोर सिंह के मुख्तार ने आके कहा—कल बड़ी कवायद है। जगी कवाएद। कुछ गोरे और काले एक तरफ होगे और कुछ दूसरी तरफ। साहब कमाण्डर इन-चीफ मोआइना करेंगे। देखन के काबिल है।

बलजोर—जो आता है जग ही का जिक्र करता है।

रिसालेदार, १ ले—कहा न, कि होनहार बिरवे के चिकने चिकने पात। भई, क्या नेकशगून है कि वाह।

रिसालेदार (नवाबी के वक्त के)—इस लडके का नाम रनबीरसिंह रखना। ब्रह्मन जल-सूर, छतरी रन-सूर, बैश धनकी लालच से धनसूर, शूद्र सेवा सूर।

रिसालेदार, १ ले—नाम तो अच्छा तजवीजा, मगर बैश की बडी तारीफ!

इतने में म्युनिसिपैल्टी का चपरासी टैक्स वसूल करने आया, और सलाम करके बलजोर सिंह को मुबारकबाद दी, कि शहर भर में लोगो की जबान पर यही है, कि ठाकुर बलजोर सिंह का यह लडका बडा नामी अफसर होगा।

मौलवी साहब—ठाकुर बलजोर सिंह आप जावे सिपन्द इस बच्चे पर से नजरे-बद के लिये उतारिये। इसमें कोई हर्ज नही।

रिसालेदार (नवाबी वाले)—अजी कही सिपाहियो के बच्चो पर से नजरे-बद उतारी जाती है? तो फौज की नौकरी तो कर चुके!

मौलवी साहब (जतन दाई से)—भला जच्चाखाने में सिपन्द की अँगीठी है या नही—जाके देखो!

जतन—ए मौलवी साहब, इनके घर की सारी खुदाई से निराली रीत है। न अँगीठी है, न कालादाना। एक तलवार रखी है वह भी नगी। और एक ढाल जो देव के उठाए भी न उठे। और एक जोडी तपचे की। पैदा होते-साथी छुवाई गई। (आहिस्ता से, कानमें) क्या जाने यहाँ के हुदनू है।

इतन में अन्दर से महरी आई, और घर का सन्देसा लाई, कि बन्दूकें दाइए। रिसालेदार (नम्बर १) मुस्कराये कि इतनी तोपें दगादा दग और अभी तक उनको बन्दूक के सर होने की ख्वाहिश है। रिसालदार (

ने इक्कीस जरब की सलामी उतारी—दाँय-दाँय! दाँय-दाँय! फिर अन्दर से सन्देसा आया कि बच्चे के ऐन सिरहाने पर भी बन्दूकें दागी जायँ, और बलज़ोर सिंह ने अपने लडके इन्द्र बिक्रम सिंह से जाके कहा। उसने भाई के सिरहाने पर जाके ११ दफा बन्दूक दागी। जब जाके कही औरतो को तसल्ली हुई। जतन को घर से बहुत भारी जोड़ा इनाम में मिला, और एक अशर्फी नकद, और हुक्म हुआ कि महीने भर तक रोज आना, और खाना यही खाना। मिस बेली को छै अशर्फियाँ नजर की, और एक सियाह रेशमी थान, और एक शाल; दोनो कीमती। वह भी खुश हो गई और दुआ दे गई कि यह लड़का वस्त-एशिया का शहशाह हो, और वादा कर गई कि मै हर रोज लड़के को एक बार देख जाया करूँगी। और जतन और मिस बेली दोनो ने अपने क़ौल को पूरा किया।

छठी के दूसरे दिन बलजोर सिंह के दरवाज़े पर भाँडो के गाने-बजाने की आवाज आने लगी। ("मान करे नँदलाल, सुहागिन जच्चा। मान करे नँदलाल.....") उनको अन्दर से इनाम दिया गया। और बलजोर सिंह ने कहा—ईद बाद टर्र! पैदा होने के दिन नही आये। दूसरे दिन नही। छठी के दिन नही आये! आज आये हो!

एक बूढे भांड ने कहा—ए हुजूर, क़ुरबान जाऊँ, पहले दिन तो नौनिहाल के तौलदगाह जड़ैली वर्दी बजती थी। (सब ठठाकर हँसते है) कही तोप, कही करना, कही भोपू। हम नचनिये-गवैयों का कौन काम था। दूसरे दिन गराब चलने लगी। हमें मम्मूखाँ का ज़माना और बिरजिस कदरी गर्दी याद आई। (सब ठठाकर हँसते हैं।) समझे, भगदड के दिनो की तरह हवाई गोले शहर में उतारे जाते है—कि घबराकर खल्कत शहर को खाली कर दे! फिर हुज़ूर हम कोई रिसालेदार, सूबेदार, तमनदार, भोपूवरदार तो हैं नही, कि आग और तलवार की आंच सह जायँ। नचनिये का दिल कितना! सारगी तबला ढोल की मजीरा बाँध, अपने तायफे को साथ ले, काँकराबाद-गोपामऊ हो रहे। जब सुना अमन हो गया, भागे हुए रिसालदार तमनदार भोपूवरदार अपनी अपनी जगह वापिस आये। गदर ठडा हुआ तो घर की राह ली। राह ली तो रास्ते में कुरबान जाऊँ क्या देखते है कि—

भागे जहाँ-जहाँ पे विक्टर ओ, विकट मिला
लुट-पिट के घर को आए तो घर का टिकट मिला

फौरन् दूसरे भाण्ड ने तबले पर थाप दी; और सबने मिलकर कहना शुरू किया—'अल्लाह करे छोटे ठाकुर रनबीर सिंह बहादुर को झाँसी की गद्दी मिल जाए। आमीन! खुदा करे जच्चा महारानी हो जाएँ, और ठाकुर बलज़ोर सिंह को एक-एक थन से दो-दो सेर निखालिस दूध पिलाएँ!' इस पर बड़ा क़हकहा पडा, और भाण्ड इनाम लेकर और दिल खुश करके और दो-चार ओखी सुना के, यह जा वह जा।

—:०:—

दूसरा अध्याय

चाँद-सी बेटी: मनोकामना पूरी हुई

जान-आलम की नैना नुकीली,
सुल्तान आलम की नैना नुकीली
जान आलम की नैना नुकीली

एक नाजुकबदन, पिस्ता से होंठ, खुश आवाज , गलेबाज पतुरिया अजब लुत्फ से गाती और सच्ची तानों से लुभाती, और गोरे-गोरे हाथों से, जिनमें मेंहदी के शोख रंग से और भी जोबन हो गया था, बताती जाती थी—'नैना-नुकीले के नैन'। भाव पर सब लोट थे। नीचे छत पर कमरे में नाच और गाना होता था, मर्द बैठे थे, मगर सब घर के, बाहर का कोई नहीं। अगर बाहर का कोई था तो सिर्फ तबलिये, सारंगिये वग़ैरह। और उसके ऊपर दोनों जानिब कमरों में औरतें थी, करीब की रिश्तेदार। दोहरी चिकें इस तरह पड़ी हुई थी कि ऊपर से नीचे का हाल सब सूझता था, मगर नीचे से ऊपर का हाल कुछ नहीं मालूम होता था। तायफा थोड़ी देर के बाद बदला गया और बैठ के गाना होने लगा—

दिल लोट गया सुनते ही गुफ्तार किसी की,
सुनता ही नहीं अब य' मेरा यार किसी की।

—इतने में एक महरी ने एक कमसिन लड़के को जिसका नाम इन्द्रबिक्रम सिंह था इशारे से बुलाके कुछ कहा और वह कोठे पर गया, और शिवरानी एक कमसिन औरत ने जो इन्द्रबिक्रम सिंह की चचाजात बहन थी कहा—भैया, मुबारक हो, तुम्हारे एक और बहन हुई। सब खैरियत है। जैनब की माँ ने कहा—भैया, हम तो घबरा गये थे, मगर अल्लाह ने खैर की। मैंने बिटिया (शिवरानी) से कहा कि अब मेम-डाक्टरनी को बुलवाना चाहिये। मगर वाह री लड़की, उन्होंने कहा: नहीं बुआ, तुम क्या किसी मेम-एम से कम हो। बस उसी दम से तबीअत बहाल होने लगी। आप को—किसीको—कानोकान मालूम भी न हुआ, और बच्ची पैदा हो गई। ले अब इनाम लाओ। लड़के ही तो क्या हुआ, तुम्हारे बाप तो पिशावर में जाके दनदना रहे हैं; अब घर के बड़े यहाँ जो भी हो तुम्ही हो।

शिवरानी ने इन सब बातों का जवाब यों दिया—तुम घबराई क्यों जाती हो, जैनब की माँ! भर-पूर इनाम लो! जैनब की माँ और घर की कई औरतें आपस में बातें करने लगी, कि वाह कितनी अच्छी साअत पर यह लड़की पैदा

हुई है, कि वाह। यह जरूर रानी बनेगी। कितना अच्छा! सीताजी की सालगिरह का दिन। बाप ने लडाई सर की। खिताब और तमगा पाया। जान बचने और फतेह पाने का जलसा हो रहा है। किसी को सान-गुमान भी नही था, कि आज बच्चा पैदा होगा। ऐसी सुभ-घडी लडकी पैदा हुई कि जो जुडवाँ लडके भी होते तो ऐसी खुशी न होती। मालूम होता है, आज जलसा इसी खुशी के लिये हुआ था।

जच्चा की एक चची ने जो बडी-बूढी औरत थी कहा कि—कोई आठ महीने हुए होंगे कि एक दिन मैं और यह जच्चा रथ पर जा रही थी, तो एक फकीर ने दूर तलक साथ किया। और क्या जाने उसको क्या सूझी, जब कहे यही कहे कि 'गगामाई तुम्हारी मनोकामना पूरी करे, दूधो नहाओ, पूतो फलो: जो चसे साईं की जबान पर असर है तो अल्लाह ने चाहा, चाँद सा बेटा हो, और जो बेटी हो, तो राज करे, महालक्ष्मी सहाय रहे!' मुझे बडी हँसी आई कि यह उसने नई दुआ माँगी! उसको कहाँ से मालूम हो गया कि यह होनेवाला है। सो वही हुआ। हम इस लडकी का नाम कामिनी रखेंगे।

यह नाम ऐसा दिलफरेब था कि सब ने इसी पर राय दी। और इन्द्रविक्रम सिंह ने भी कहा, कि कितना प्यारा नाम तजवीज हुआ है। एक बहन का नाम पद्मनी, दूसरी का कामिनी। जैनब की माँ बोली—इस नाम पर तो हमारा भी साद है। लाख दो लाख में एक। जिसने सुना फडक गया। जच्चा भी जच्चाखाने में यह सुनके लोट हो गई और जैनब की माँ से कहा—इसके बाप को भी यह नाम बहुत पसन्द आएगा।

इतने में मिस बेली अमरीका की लेडी डाक्टर आईं। जब सब हाल सुना तो कहा—कोई पाच बरस हुए ठाकुर बलजोर सिंह के घर में लडका हुआ था। मैं थी और एक मुसलमान दाई। फौज के बडे लाट उसी दिन आए थे। रेल से उतरते ही तोपें दगने लगी, और तोपें दगती ही थी कि लडका पैदा हुआ। छत्रियो का खानदान, इसको बडा अच्छा शगून समझे, और अन्दर-बाहर बडी खुशिया हुईं। सबने आके बडी मुबारकबादें दी कि यह लडका कई मुल्क फतह करेगा; और एक ठाकुर ने उसी वक्त रनबीर सिंह नाम रख दिया।

शिवरानी ने जो गजराज सिंह की भतीजी थी कहा—और यही यहाँ भी हुआ। जलसा इस बात का हो रहा था कि हमारे चचा की जान बच गई, उन्होंने एक लडाई में बडा नाम पैदा किया और खिताब पाया। (दोनो तार जो आए थे, वह मिस बेली ने पढे।) बस नाच-गाना हो रहा था कि दाई ने कहा—मुबारक, लडकी सही-सलामत पैदा हुई। और हमारी एक चची होती है उन्होंने कामिनी नाम रख दिया।

मैं उसको अँग्रेज़ी-उर्दू सिखाऊँगी।

हाथ-पावँ सुडौल, नख सिख से दुरुस्त। बदन का एक-एक जोड़ साँचे का ढला हुआ। और हथियार लगाकर तो बाबई इस काबिल था कि पठो इसान देखें और मर्द औरत अश् अश् करें। ग़रूर नाम को नहीं। रहमदिल इन्तहा से ज्यादा। हर वक्त दूसरो की भलाई में। दिल का खुला हुआ। अंग्रेज़ी में 'रोज़मर्रा'—यानी बातचीत का ढग—बहुत अच्छा . लब-लहजा बिलकुल अंग्रेजो का-सा, कोई फर्क नहीं। अंग्रेज़ी के लिखने-पढ़ने में भी आम अंग्रेज़ीदानों का उससे कोई मुकाबला नहो। फ़ारसी-उर्दू की बहुत लियाकत। चाल-चलन तारीफ़ के काबिल, बेऐब।

अब सुनिए कि ठाकुर गजराज सिंह की लड़की इस वक्त जब रनबीर सिंह पूरे पन्द्रह बरस के थे, वह दस बरस की थी। हुस्न की निस्बत तो सारी खुदाई की यही राय थी कि ऐसी हसीन तो दुनिया-जहान में नही हुई। सरापा साँचे का ढला हुआ। कलाइयो पर यह नूर बरसता था कि तारीफ़ मोहाल है। हाठ याकूत को शर्माएँ। चेहरा सचमुच भगवान ने अपने हाथ से बनाया था। बूटा-सा कद, और नाज़ुक जिस्म, छरेरा बदन। और अंग्रेज़ी पढ़ी, फारसीदाँ, उर्दू में भी पूरी लियाकत। हिसाब किताब में ताक। इसी सिन में पूरा शऊर और सलीका। सीने-परोने में होशियार। मिस बेली ने मिशन की पुरानी और होशियार मिसोको तायनात कर दिया था। जुर्राब बनाना भी सिखाया था। खाना भी खूब पका लेती थी। सोलहवें बरस इन ठाकुरो के खान्दान में एक नई बात हुई, यानी कुमारी कामिनी देवी ने इन्ट्रेंस के इम्तहान में कामियाबी हासिल की। इम्तहान के हाल के एक छोटे-से कमरे में जहाँ परिन्दा पर नही मार सकता था ये जवाब लिखती थी, और मिशन की एक लेडी गार्ड रहती थी। नई पौध के क्षत्री तो बड़े खुश हुए कि एक खान्दान, और बड़े ऊँचे, रईस और शरीफ़ खान्दान की लड़की ने तहज़ीब की पहली मंज़िल में कदम रखा। और उसके बुज़ुर्गों और रिश्तेदारो की 'मॉरल करेज' पर भी सब अश् अश् करने लगे। मगर पुराने फैशन के ठाकुर बहुत बिगड़े, कि नवाबी होती, तो मूड़ काट लेते।

जब कामिनी सयानी हुई तो दिल में सोचा करती थी कि देखा चाहिए, किसके पाले पड़ती हूँ, किससे ब्याह होता है, किसके साथ उम्र बसर करनी होगी। अगर जाहिल-मूरख हुआ तो ज़िन्दगी तलख़ हो जाएगी। क्षत्रियों में कोई-कोई ऐसे भी है जो औरतो के पढने लिखने से चिढ़ते हैं। अगर ऐसे मूरख-उजड्ड से साबका पड़ा तो दिल इस हालत पर रोएगा, कि मैं किसके खूँटे बँधी हाय, इससे मर क्यो न गई! वह जब तक दस-पन्द्रह सफे किसी नई किताब के न पढ़ ले, तब तक खाना-पीना हराम है। जरा चैन न आए, जी घबरा जाए। क्या जाने, खूबसूरत हो या बदसूरत हो। जो सियाहफाम, चेचक-

रू, सूरत का घिनौना, कम रू हुआ, तो बिन-गहा चाँद-सा मुखडा गहन में आ जाएगा। कौए और तूती का कौन लाल-मेल। भगवान से मनाती थी, कि चाह जो हो, परमेश्वर मुझे अनपढ जाहिल से साबका न डाले, नही बिन मौत मर जाऊँगी। और बीमार न हो, बदसूरत हो खैर बला से। यों तो कौन लडकी न चाहेगी कि गोरा चिट्टा दूल्हा मिले। कौन लडकी न चाहेगी कि हमारा दूल्हा हमसे बढ के खूबसूरत हो। और वह कौन लडका है जिसकी दिली ख्वाहिश नही कि चाँद-सी जोरू मिले। मगर इसको खूबसूरत की इतनी ख्वाहिश नही थी जितनी इस बात की ख्वाहिश थी कि पढ़ा लिखा, समझदार, तरबियत-याफ्ता हो, और उसके खयालात दकियानूसी न हो।

कई जगह से कामिनी के लिये पैगाम आए। जब पयाम आता था, तो कामिनी दूर ही दूर से चुपके-चुपके सुनती थी। पहले एक लडके का पैगाम आया। सिन कोई चौदह बरस का। । उर्दू में "मुफीदुउल इशा" पढता था। अंग्रेजी से कोई बहस नही। बाप जमीदार, कोई सौ-सवा सौ की माहवारी आमदनी। रात को गजराज सिह, उनकी बीवी और शिवरानी और इन्द्रविक्रम सिह और उनकी बीवी खाना खाने के वक्त आपस में बातें करती थी, और कामिनी सुना करती थी। जब इस लडके की निसबत सुना कि चौदह बरस का सिन है और 'मुफीदउल् इशा' तक लियाकत, तो दिल से मनाने लगी कि माँ-बाप को यह घर न पसन्द आए। सबके पहले इन्द्रविक्रम सिह ने कहा, कि कामिनी के लिए बीस-बाइस बरस का लडका होना चाहिए। सब ने इस राय को मान लिया, और कामिनी दिल में बडी खुश हुई। दूसरे रोज फिर दो जगह से पैगाम आया। एक क्षत्री की दो हजार की जमीदारी। लडका सोलहवें में। अंग्रेजी में मिडिल फेल। उसके यहाँ से पैगाम आया। दूसरा पैगाम एक और ठाकुर के हाँ से। गरीब आदमी, लडका पचीस बरस का। पुलिस में तीस रुपये का सब-इस्पेक्टर। लियाकत नदारद। टूटी फूटी उर्दू गोद-गाद के लिख लेते थे। कामिनी को दोनो घर नापसन्द, मगर उफ नही कर सकती थी। जब दो-तीन दिन के बाद उसको मालूम हुआ कि माँ-बाप की मर्जी इस पुलिसवाले से ब्याहने की है, तो दिल में कुढने लगी, एक तो उर्दू अंग्रेजी फारसी सब लूटे वीरान, पढा लिखा नही, जाहिल, उजड्ड, दूसरे पुलिस की नौकरी ने और भी उजड्ड कर दिया होगा। इन्द्रविक्रम और उनकी बीवी दोनो इस पैगाम के खिलाफ। तीन चार दिन तक आपस में रद्दोबदल रही।—

इन्द्र—जनाब, एक तो पचीस-तीस रुपल्ली की औकात, दूसरे करिया अच्छर भैंस बराबर। फिर आपने लडकी को इतना पढ़ाया लिखाया काहे को?

गजराज—एसा खान्दान न मिलेगा। और यह जो तुमने कहा, तीस रुपल्ली का नौकर है, यह फ़िजूल बात है। क्या हम जागीर नही दे सकते? हमारी लडकी परेशान नही रह सकती, उनके पास चाहे एक अद्धी भी न हो।

इन्द्र—और जाहिल अनपढ गधे के साथ कामिनी की शादी हो जाए? यह दिल में कुढेगी नही?

गजराज—इसको यह समझना चाहिए कि हम जो काम करेंगे उसके भले ही के लिए करेंगे। न उसकी इतनी समझ है न तुम्हारी।

कामिनी की यह कैफियत थी कि रोज़-बरोज पल्लियों खून उसके बदन से घटता जाता था। दो हफ्ते तक यही बहस घर में थी। शिवरानी न इधर बोलती थी, न उधर। एक दिन बाप-बेटों में बडी देर तक बहस हुई, तो शिवरानी ने इन्द्रविक्रम सिंह को अलग ले जाकर समझाया कि बडो के मुँह लगना बुरी बात है। माना कि पढा-लिखा नही है, मगर यह बताओ कि तुम्हारे घर में पढे-लिखे कितने हैं? फिर कोई मोहताज है? कोई बेकार है? सब खाते-पीते है। कोई ज़मीदार, कोई माफीदार, कोई रिसाले में नौकर। यह लडका जो पुलिस में नौकर है तो क्या बुरा है? आज तीस पाता है, तो चार दिन में सौ हो जाएँगे, दो सौ पाने लगेगा। तुम्हारे चचा-ससुर तो बारह के हेड कास्टेबिल से पाँच सौ के डिप्टी हो गए थे, और इसी की बदौलत एक गाँव के मालिक बने बैठे है।

गरज़ यह कि कामिनी को दो-ढाई महीने में पूरा-पूरा यकीन हो गया कि इसी उजड्ड जाहिल के साथ उसको अपनी ज़िन्दगी बसर करनी होगी। इस ग़म ने उसको आज़ार की तरह घुला दिया। बिलकुल घुल के काँटा हो गई। दिन-रात इसी फिक्र में डूबी रहती थी कि क्या करूँ, क्या न करूँ। कुछ करते-धरते नही बनती थी। बाप-माँ की मर्ज़ी के खिलाफ कोई कार्रवाई नही हो सकती थी। भाई-भावज खुदमुख्तार आज़ाद नही। मुँह खोल के खुद कुछ कह नही सकती। अब सुनिए कि शादी यहाँ तक पक्की हो गई कि सुर्ख कागज़ पर शादी के रुक्के छपवा लिये गये।

कामिनी का दिल किसी वक्त ठिकाने नही रहता था। और सबसे बढकर जुल्म इस बेचारी पर यह ढाया गया कि शिवरानी के छोटे देवर ने जो सिन् में नौ-दस बरस का था, एक रुक्का लाके कामिनी को दिया, कि ज़रा पढ के हमको सुना तो दो। कामिनी ने जो रुक्का देखा—तो रुक्का-ए-शादी! अभी तक यह नही समझी कि यह क्या मामला है। पढा तो टप-टप आँसू निकल पड़े। वह लड़का समझा कि अपनी शादी का हाल सुनकर मारे खुशी के हँसी को जब्त न कर सकी। बच्चा तो था ही और सिखला-पढा के भेजा गया था, दौड़ता हुआ चला और सबमें ढँढोरा पीट आया कि कामिनी बहन अपने ब्याह का हाल पढके हँस दी! महरी की लडकी, बूढी बारन की पोती, और दो-एक बराबरवालियाँ गयी कि जाके कामिनी को दिल्लगी-दिल्लगी में बताएँ। वहाँ जाके देखते है तो कुछ और ही गुल खिला हुआ है।

—"अरे! बिटिया! अरे, यह तो रो रही है!" कामिनी न फौरन जब्त किया, और जब तक कोई और आवे, जल्दी से मुंह धो डाला। शिवरानी ने आके कहा—कुछ बावली हो गई है लड़की? रोना दुश्मन को पड़े। हँसी-खुशी की बातो में रोना क्या? अब कामिनी बेचारी किससे कहे, कि जिसको तुम हँसी समझती हो, वह उसकी मौत है।

रात भर कामिनी तड़पा की हाय, मुझे ये लोग कहाँ झोके देते हैं! एक अठवारे के अन्दर इधर-उधर से मुबारकबाद के खत आये। बस इस खत का आना था कि कामिनी के दिल पर और भी सदमा पहुँचा कि बिलकुल सिड़न हो गई। बुत बनी हुई, साड़ी सर से खिसक गई तो इसकी भी परवा नही और कुर्ती मैली हो गई तो इसकी भी फिक्र नही। कुछ कानो से भी कम सुना लगी! दस दफा बातें करो तो शायद दो दफा जवाब दे, और वह भी ऊल-जलूल।

एक महीने तक यही हाल रहा। कैसी शादी और किसका ब्याह—जिन-जिनके पास शादी के रुक्के भजे गए थे, उन सबको लिख भेजा गया कि कन्या के बीमार हो जाने के सबब से शादी मुल्तवी की गई।

कामिनी की तबीयत रोज-ब-रोज खराब होती गई। डाक्टर, हकीम, वैद्य सब हार गये, थक गये, आजिज आ गये। सबने जवाब दे दिया। होम्योपैथिक इलाज से भी फायदा न हुआ। दिन रात या तो रोया करती थी, या चुप। रोना शुरू किया तो बराबर रोती गई, और चुप्पी साधी तो होठ तक नही हिलाती। घर भर परेशान। खाना-पीना हराम। दवा और दुआ किसी से भी आराम न हुआ।

आखिरकार हकीमो की सलाह से कामिनी को देहात में ले गये, और हर तरह से दिल बहलाना शुरू किया। इस बात की बड़ी कोशिश की कि बाहर-वालो को कानो-कान खबर न हो। ऐसा न हो कि सिड़न समझकर कोई ब्याह न ले जाए। सबको अफसोस था कि कैसी परी लड़की और कैसी पढ़ी लिखी और क्या हाल हो गया।

इधर गजराज सिंह के घर में तो एक तरह का मातम-सा छाया हुआ था लड़की जीती-जागती और घर भर में रोना कि हाय, चाँद-सी लड़की और यह हाल। घुल के काँटा हो गई थी।—मगर ठाकुरो में किसी को इस हाल की खबर नही। वहाँ कामिनी के ब्याहने की फिक्रें हो रही है। सब इसी पर लट्टू।

—०—

चौथा अध्याय

कामिनी की दिलरुवा अदा पर एक गवरू बिन देखे ही शैदा

ठाकुरो में घर-घर यही चर्चा था कि गजराजसिंह क्षत्री के यहाँ देवी पैदा हुई है। जिस औरत ने कामिनी को देखा, बस यही जी चाहा कि उसके पाँव धो-धो के पिये। हम एक बडे खान्दानी ठाकुर के जनानखाने में जो बातें कामिनी को लेकर हुईं, नाजरीन की नज्र करते हैं:—

घन्नो ठकुराइन इस ठाकुर की बडी बहू का नाम है।

दुलारी (दाई)— बीबी, अच्छी रही? हम तो कल आने को थे, मगर हमारा दामाद कम्पू से आ गया; फिर न आ सकी। और कहो खैरियत?

घन्नो—इस वक्त कहाँ से आती हो, बुआ दुलारी?

दुलारी—पकडिया टोले से आती हूँ। ठाकुर गजराजसिंह के घर गई थी। बहुत दिन वाद गई थी। पुरानी सरकार है। आजकल घर-भर गाँव पर है। लडका यहाँ है।

घन्नो—भला तुमने उनकी लडकी कामिनी को देखा है, वह जो सबसे छोटी है।

दुलारी—ए बीवी, जनाया किसने? मेम तो पीछे आई थी।

घन्नो—सुना कि बडी खूबसूरत, लाखों में एक है। मगर कहते हैं जरा उम्र में बड़ी है।

दुलारी—ए वीवी, अभी बच्चा है। हिन्दू की कुँआरी लडकी की उम्र क्या होगी? उठती जवानी, उभार के दिन। एक दिन नहा के, खली से सर धोके, शरवती की आधी वाहो की कुर्ती फालसाई पहने, मलमल का प्याजी दोपट्टा ओढे, तारो की खडाऊँ में, पुरी की बनी हुई सोने की नयनी, जिसमें एक चुन्नी, एक मोती पडा था, पहने, जनाने गुसलखाने से बाहर निकली तो मालूम हुआ कि इन्दर के अखाडे से कोई अप्सरा उतर आई। मुखडा जैसे चन्द्रमा। चन्द्रमा। छरेरा बदन। लाँबा कद। और बडी शर्मीली लडकी है। एकाएकी औरतो की तरफ भी आँख उठा के नही देखती। मैं कई वरस के बाद गई तो पहले-पहल नही पहचाना। जरा झिझकी, समझी कि कोई गैर है। तब उनकी बडी बहन ने कहा—ए इनसे क्या पर्दा है. ये तो जैनव की माँ हैं। अभी से भूल गई? मुस्कराकर आके पलग पर बैठी। मैंने कहा—बेटा, अपनो ही को भूली जाती हो? मैं जैनव की माँ हूँ। तुमको, तुम्हारी बहन को, तुम्हारी खाला की बेटियो को गोदियो खिलाया, नेहालचे धोए, हैं।

उनकी माँ बोली, दुलारी, सयानी लडकी को शर्म जरूर चाहिए।

मैंने कहा—ओई! ऐ तो हमही से शर्म!

मेम ने पढ़ाया है, कई इलिम जानती है। सीने-परोने में बर्क है। खाना खूब पकाती है। उसके हाथ का हलुआ हमने खाया पिस्ते की हवाई पडी हुई, अल्लाह जानता है, एसा हलुआ कभी नही खाया था।

धन्नो—भला कितनी बडी होगी? हमारी बिनो के बराबर है?

दुलारी—ऐ बीबी, उनसे माशाअल्ला सियानी है। और जो भर कद निकलता ही होगा। आँखें देखने से ताल्लुक रखती है। बिलकुल हिरनी की-सी। पुतली काली भौरा।

धन्नो—महरी, तुम भी तो उनके यहाँ रह चुकी हो। तुम उस लडकी को कैसा समझती हो? दुलारी तो बडी तारीफें करती है।

महरी—दुलारी सच कहती है। जस मन्सेधू की येह मेहरारू हो, उसके जानो भाग खुल गए। और बडी सोधी लडकी है। हम पच से कभी टेढी बात नही की। उनकी माँ बडी लडाका है। मगर यह बचारी किसी को आधी बात नही कहती। और शक्ल-सूरत तो एसी पाई है कि लाख-दो लाख में न होगी। और कैसी जल्द यह लडकी देखते ही देखते बढी है, कि मे क्या कहूँ। अभी कल की बात है कि तुरुसिया के बराबर थी। अब—जीती रहें—ऐसा डील बढा है कि मुझसे निकलती ही होगी।

धन्नो—लडकी की बाढ और ककडी की बाढ एक होती है। आज नखून के बराबर तो दो दिन में ताड।

इतने में बारन आई। धन्नो बीबी ने पूछा—कहाँ से आती हो बुआ?

इसने कहा—पकडिया टोला से आवत हौं। पडाइन दादी के साथ गई हती।

धन्नो ने कहा—पकडिया टोले में ठाकुर गजराज सिंह की औरतो को जानती हो?

वह बोली—ठाकुर गजराज सिंह तो हमारे जजमान हैं। उनकी एक बिटिया कुआरी सयानी है। उसकी बातें हो रही हैं। दोनो बहिनें सूरज चन्द्रमा हैं। छुटिकी सबसे सुन्दर है। नगर भर माँ ऐसी लडकी नही।

जैनब की माँ ने कहा—और नाम भी चुन-चुन के रखे हैं। बडकी का नाम पद्मिनी। छुटिकी का नाम, कामिनी। दोनो सचमुच की पद्मिनी और कामिनी हैं। चाँद सूरज की जोडी।

महरी—है तो दोनो की अच्छी सूरतें, मुदा हमको छुटिकी बहुत अच्छी लगती है। हाथ, पाँव, डील-डौल, आँख-ओ-नाक, शक्ल-सूरत—एक अच्छी, और एक बहुत अच्छी। छरेरा बदन और गोरे-गोरे गाल।

धन्नो—हमने भी बडी तारीफ सुनी है। हमारे नैयर में आये तो जानें।

जैनब की माँ—कौन बडी बात है! जो वो, वो आप। ठाकुर गजराज सिंह

के पास गाँव-गिरांव हैं तो क्या, तुम्हारे पास किसी बात की कमी है? अल्ला का दिया सब कुछ है। बहल है, छकड़े हैं, लढ़ियाँ हैं, घोड़ा हैं, जैदात हैं, गाँव हैं, बाग हैं। नानकार है। और फिर सबसे बड़ी देन अल्ला की ये है कि लड़के सब होनहार हैं। माँ-बाप के कहे में, और होशियार। आज-कल के लड़कों के-से नहीं।

धन्नो—मैंने इस लडकी को बचपन में देखा था। पहले तो मुझे धोखा हुआ कि किसी मेम की लड़की है। फिर सुना हमारे ठाकुरों की लड़की है। अब जो आता है, वह दो बातें बढ़ा ही के कहता है। कोई जतन ऐसा करो कि यह लड़की जाने न पाए। जब से सयानी हुई, तबसे हमने नहीं देखी।

महरी ने कहा—देखो कहाँ से? कहुरिया नहाने तक को तो दरिया जाने नहीं पावत हैं। बस चारदिवाली माँ बन्द। कोउ देखे तो कहाँ से देखे?

जैनब की माँ बोली—ये महरी की बहुरिया हैं और हमारी बिटिया।

धन्नो ने कहा—हाँ, तो महरी को हमारे नहर से कौन मतलब है। इसने तो हमको सुसराल ही में देखा है। भला यह तो बताओ, सरजू की दुलहन अच्छी है कि कामिनी? सरजू की दुल्हन भी गोरी-चिट्टी है।

जैनब की माँ—ऐ बेटी, खुदा-खुदा करो! सरजू की दुल्हन उसके पासंग को नही पहुँचती। कहा ना कि लाख-दो लाख में एक है। पतली कमर सचमुच बल खाती है। बाल भँवरे के-से, कमर के नीचे तक लहराते हुए, लटकते हैं। जो नवाबी होती, बीबी, और वजीर-बादशाहों की नजर पड़ती, तो जबर-दस्ती छीन ले जाते। खून-खराबा होता। पद्मिनी-कामिनी दोनों बादशाह के महल में होतीं। बस, सूरत देखते ही जैसे एक प्यार-सा हो जाता है। इस देस में तो ऐसी लड़की नहीं है।

महरी बोली—जो अच्छे घर जाए तो बात है। ऐसी लड़की अच्छे घर जानी चाहिए। अच्छा लड़का हो, कमाता-धमाता हो। कुन्दिया के मर्द का-सा न हो, दाढ़ीजार। रोटी का न कपड़े का, सेंत-मेंत का भर्रा।

धन्नो—भाट को उनके घर भेजें। देखें क्या संदेसा लाता है।

जैनब की माँ—मैं कहने ही को थी। बात तुम मेरे मुँह से छीन ले गईं। लड़की तो ऐसी है कि अँधेरी रात को अँधेरी कोठरी में बिठाओ तो मालूम हो हीरा चमक रहा है। गजराज सिंह एक दिन कहने लगे कि हम लोग लड़-कियों को मार डालते हैं; मगर इन दोनों को कोई फूल की छड़ी से भी छुए तो मूड़ काट के फेंक दूँ। लडके का इतना प्यार न होता होगा जितना उनको इन लड़कियों का है। और हुआ ही चाहे।

ये बातें ठाकुर बलजोर सिंह के मकान पर हो ही रही थी: धन्नो ठकुराइन उनकी बड़ी बहू थी, रनबीर सिंह की भावज। धन्नो ठकुराइन के देवर रनबीर

ढी दो.

सिंह की निसबत सब वाकिफ है कि बहुत ही खूबसूरत नौजवान था हाथ-पाँव सुडौल, डँड-मुगदर का शौक, कुश्ती बडी बाँकी लड़ता था। लकडी फेंकने के वक्त ऐसे अच्छे तेवर रहते थे कि जो देखता था अश-अश् करता था। तलवार और ढाल से लकडी के करतब इस सफाई से दिखाता था कि गोया फूल की छडी हाथ में है। तीन-चार आदमी अगर नगी तलवारें लेकर इससे लडते, तो यह सिर्फ गतके से आन की चोटें फुर्ती से बचाता, और अपनी चोटें लगाता। गोलचस ऐसा जबरदस्त कि निशाना कभी खता ही नही करता था। जिसे ताका, उसे मारा। शेर का शिकार पाठे पर सवार होके करता था। बेधडक सूअर के शिकार में जान पर खेल जाने को तैयार। घोडे पर ऐसा सवार होता था कि अच्छे-अच्छे शहसवार पिचकते थे। घुडदौड की बाजियाँ जीत चुका था। इससे यह न समझिएगा कि उजड्ड सिपाही ही था। नही, नही, पढा-लिखा आदमी था। नागरी, फारसी, अँग्रेजी में अच्छी महारत और लियाकत थी। दिन-रात सिवाय पढने-लिखने या सिपाहगिरी के शौक के और कोई शगल न था। यह होन-हार लडका अपने माँ-बाप के पुतलियो का तारा, घर-भर में सबसे प्यारा था।

अब सुनिए कि जिस वक्त इसकी जेठानी धन्नो रानी महरी और बारन और जैनब से इस प्यारी लडकी की बातें करती थी यह सब सुन रहा था, और उस परी-रू कुँआरी की उठती जवानी और जोबन और शर्मीलेपन और नजाकत का जिक्र सुनकर हजार जान से आशिक हो गया। सोचा कि भाई की बीवी को हमारा जरा खयाल नही। अपने भाई के ब्याह का बडा खयाल है। जब कहा, यही कहा कि वह लडकी किसी जतन से हमारे नैहर में आये। भावज की इतनी खाहिश, और देवरानी के आने का जरा भी खयाल नही। दालान के बाहर आन के कहा—

भाभी, यह किस लडकी की बातें हो रही थी, कि नाजुक-बदन है, और छरेरी है, और अँधेरी रात में बिठा दो तो मालूम हो जैसे हीरा चमक रहा है। वह कौन परिस्तान की परी है, इन्दर की अखाडे की अप्सरा। शायद आजकल भाई साहब ने तुमको छुट्टी दे दी है, मेहनत का कोई काम नही लिया जाता। जभी यह दूर की सूझती है। अपने भाई का तो इतना खयाल, कि महरी से सिफारिश उठाई जाती है, जैनब की माँ से सलाह-मशिवरे होते हैं, बारिन से सलाह ली जाती है कि वह प्यारी लडकी हमारे नैहर में आवे, और यह खयाल ही नही कि हम भी कुँआरे है। अच्छा इस लडकी ही की राय पर रखो। हम दोनो जा के सामने खडे हो, जैसे अगले जमाने में स्वयम्बर होता था। जिसको पसन्द करे, उसके साथ भँवरी फेरी जाय। भला ऐसे खूब-सूरत जवान के होते-सोते तुम्हारे भाई को काहे को पसन्द करने लगी। हमारा सीना चौड़ा ; उसकी कमर अभी से दुहरी हो गई है।

८३२८

इसकी भावज ने हँस के कहा—बड़े सुन्दर बन के आये हैं। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू। और जो कहीं सूरत अच्छी होती, तो धरती पर क़दम ही न रखते। और भी इतरा चलते।

देवर ने जवाब दिया—भाभी, अच्छी-बुरी सूरत का हाल तो तुम ही अपने दिल से पूछो। अगर भाई के साथ शादी न हुई होती और कोई हमको दिखा देता तो पानी मुँह में भर आता, जादू-टोना करती, सैकड़ों मिन्नतें मानती, कि परमेश्वर करे, इस गोरे-गोरे लड़के के साथ हमारी भँवरी फेरी जाय!

भावज ने कहा—घर की पिड्डी और बासी साग। जरी जावें मुह धो आओ। गोरा-गोरा लड़का, अपने नगीच बड़े गोरे हैं! कोई औरत पूछती तो है ही नहीं—चलो, अब अपने मुँह मिया मिट्ठू बनने से भी गये-गुज़रे? शर्म नहीं आती? बिज्जू की-सी ज़रा-ज़रा-सी आँखें, कछुवे की-सी गर्दन, उस पर इतना घमंड!

गो यह लड़का निहायत हसीन था, नख-शिख से दुरुस्त, हर बात में चालाक-ओ-चुस्त, जवान औरतें वाक़ई दिल में कहती कि क्या अच्छा गबरू है। मगर बेऐब खुदा की जात है। मोर की सब तारीफ करते हैं—हीरे-नीलम के-से पर होते हैं, मगर पाँओ को देखो तो नफरत होने लगे! इस लड़के में एक ज़रा-सा ऐब यह था कि आँखें छोटी थी, और हँसने के वक्त ज़रा-ज़रा बन्द हो जाती थी। भावज के इस फिकरे पर कि बिज्जू की-सी आँखें हैं, बड़ा कहकहा पड़ा, और जितनी बैठी थी सब हँस पड़ी। और रनवीर सिंह साहब बहुत झेंपे। झेंपकर मुस्कराते हुए बाहर आए। और कपड़े पहनकर अपने एक दोस्त ठाकुर बलभद्र सिंह के मकान पर गये।

रन—अरे यार आज कलेजे पर साँप लोट रहे हैं। वल्लाह बुरा हाल है।

बलभद्र—क्यो, खैर तो? बुरा हो दुश्मनो का, आखिर बुरा हाल क्यो है?

रन—भाई कुछ इश्क और हुस्न का झगड़ा है।

बल्भद्र—वाह-वा! बहुत अच्छी शुरआत है। इस कूचे में हजूर का गुज़र हुआ। खैर, मुबारक है। यह नई बात सुनने में आई। तुमको लडन्त और लकड़ी और डंड और पढ़ने-लिखने से क्योंकर फ़ुर्सत मिली, कि इश्क के कूचे में कदम रखा। मालूम होता है किसी परिया ने घायल कर दिया। बुरे फँसे, भाई साहब!

रन—फिर अब तो जो हुआ सो हुआ, इश्क के मरज ने घर दबोचा।

बलभद्र—यह बताओ कि दर्द ला-दवा है, या इलाज हो सकता है? घर-गिरस्त है, या बाज़ारी औरत है? ब्याही है कि कुँआरी? किस कौम की है? तुमने कहाँ देखी?

रन—तारीफ सुनी है। देखी-भाली नहीं। मगर सुनते ही दिल हाथ से जाता रहा। कुँआरी है, और हमारे-आपके कौम की। और सयानी और नेक है, जैसे भलेमानुसो की बहू-बेटियाँ होती हैं। तुमसे सलाह लेने आए ह।

बलभद्र—अब साफ-साफ कह चलो। मगर एक बात का खयाल रखिएगा कि इधर-उधर बक्ते न फिरियेगा? हाँ अब खुल पडो।

रनबीर सिंह से कुल माजरा सुनकर बलभद्र ने कहा—अजी, एक तस्वीर हम तुमको दिखाएँ, भूख-प्यास बन्द हो जाए। यह भी कुँआरी लडकी है। मगर वह सूरत पाई है कि शायद दो-तीन हजार कोस के गिर्द में कोई उसको पहुँच सके। गश आ जाएगा। जरा सँभलते हुए! (तस्वीर दिखाकर) न कहिएगा!

ठडी साँस भरके रनबीर सिंह ने कहा—यार, यह मस्नुई तस्वीर है। ऐसी सूरत इन्सान की कहाँ होती है – अगर एसी औरत सचमुच होगी तो हजारो को कत्ल कर डाले। और एक बडा लुत्फ यह है कि हया और शोखी दोनो मौजूद है। यह बात करोडो औरतो में दो एक को हासिल होती है—सादगी के साथ बाँकपन—बहुत मुश्किल है।

बलभद्र सिंह ने कहा—बन्दानेवाज, यह मस्नुई नही है। इसी शहर में मौजूद है। मैंने तो कहा ही था, कि देखते ही भूख-प्यास बन्द हो जाएगी। (सर पर हाथ रखकर) इस सर की कसम यह एक कुँआरी लडकी की तस्वीर है, और बडे शरीफ खान्दान की है।

इतने में ठाकुर गुमान सिंह तहसीलदार आये। उनको रनबीर ने तस्वीर दिखाई, और कहा—है अस्ल परी, या नही ?

तहसील्दार ने तस्वीर देखकर कहा—कामिनी, पद्मिनी की वहन। गजराज सिंह की लड्की।

यह सुनते ही रनबीर सिंह के चेहरे की रंगत बदल गई, और दिल में सोचा कि वाह, यह तो कामिनी ही निकली! घर बैठे भगवान ने सूरत दिखाई। अच्छी सायत है। और नेक शगुन है।

गुमान सिंह ने कहा—हमने इस लडकी को कोई दस बरस हुए जब देखा था। तब कद इतना न था। लडकी जल्द बढती है। मगर सच या है कि खुदा न अपने हाथ से बनाई है। चकोर और हिरन में यह छल-बल कहाँ? इसको हुए भी दो बरस। यह थोडा जमाना नही होता। अब तो कुँआरपने के सबब से बेगानो-परायो से छिपती और पर्दा करती होगी। क्या कहते है, अब तो सयानी हुई, कद बाढ पर आया है। जब में और अब में बडा फर्क है। लड्की बाँस की तरह बढ्ती है। अब तो इसकी शादी की फिक्र करनी चाहिए।—खूब याद आया। अरे मियाँ रनवीर सिंह, तुम यार क्या नही डोरे डाल्ते ? वल्लाह, चूकते हो, बहुत चूकते हो! ऐसी परी दूसरी न मिलेगी, हूर है। किसी बडे खुश-नसीब के हाथ आएगी। खुदा जाने, खुद भी खुशनसीब है, या नही। अगर अच्छे लडके से ब्याह हुआ तो खुशनसीब है, वर्ना बदकिस्मत, बदनसीब। भाई, टप्पा जरूर लडाओ! क्याजी बलभद्र सिंह?

वह बोले—तुमने तो यार भरभडा ही फोड दिया। जाओ भी ! ये वडी देर से कामिनी की तारीफ कर रहे थे। किसी की जवानी तारीफ सुनी थी। बस लट्टू थे। मैंने यह तस्वीर दिखाई। गौर से देखकर कहा, भई यह फर्जी तस्वीर है। ऐसी सचमुच की सूरत हो तो हजारो कत्ल हो जायें। मैंने उनके सर की कसम खाई कि यह फर्जी नही है।—तुमने आन के भर-भडा ही फोड दिया। (रनवीर सिंह की तरफ घूमकर) कहिए, भाई साहब, क्या नक्शे है ? जाइए अब आपका जोडी हिलाने का वक्त आया। कुछ पढिए लिखिए। आपको इस आशिकी और माशूकी की बातो से क्या सरोकार है ?

उन्होने कहा—भई इश्क-विश्क तो हम जानते नही, हम तो शादी-ब्याह का जिक्र करते हैं। आखिर हम शादी करेंगे या नही ?

गुमान सिंह ने कहकहा लगाकर कहा—अरे क्यो , तुम जाके लँगोटा बाँध के कुश्ती लडो, लेजम हिलाओ या किताब के कीड़े वनो। शादी किसके लिये करोगे, मोहल्लेवालो के लिए ?

रनवीर सिंह ने कहा—अब कोई अच्छी सलाह दो, फिर दिल्लगी कर लेना। हमारी तो जान जाती है। यह मालूम ही न था कि एक परी इस शहर में रहती है—जिस कदर तारीफ सुनी थी, उससे बढ़के पाया। तस्वीर से शोखी और बाँकपन और सादगी दोनो जाहिर है। घर में औरतो ने जो आपस में बातें की, और सबने तारीफो के पुल बाँध दिये, तो मुझे शौक चर्राया कि भई सुनूँ तो यह किस कोहकाफ की परी का जिक्र है। कान धर के सुना किया , और बिन देखे इश्क की आग दिलमें भडकने लगी। अब तस्वीर भी देख ली। सिर्फ आप दोस्तो की सलाह की जरूरत है। कोई सूरत ऐसी निकालिए, कि निशाने पर तीर पहुँच जाए।

गुमान सिंह ने जवाब दिया—बन्दानेवाज, निशाने के खता होने की तो कोई वजह नही मालूम होती है। जो बातें लडकीवाले देखते और चाहते है, वह सब तुममें मौजूद है। कमसिन, पढे-लिखे, होनहार। कोई ऐब नही। नक-सिख से दुरुस्त। करारे हाथ-पाँव। कसरती आदमी। जिस्म सुडौल। न मोटे भदभद, न दुवले-पतले गले हुपने। न थुलथुल भद्दे कि दो कदम चले और हाँप गये, न मुर्दा शल, कि फूँक मारी, उड गये। खूबसूरत आदमी—नोक के जवान हो। खासे अच्छे गबरू। मसें भीगती है। औरत से कोई सरोकार नही। बुरी सोहबत से नफरत। कोई जिस्मी ऐब नही। वरजिश का शौक। सिपाही आदमी। नशेबाज नही। फिर जागीर खाने भर का सहारा। कोई बीस-बाइस हजार रुपया साल की गाँव की आमदनी। और नकद रुपया, जेवर, मकानात, बाग, नौकर-चाकर, सवारी शिकारी। इसके अलावा खान्दान कैसा नामी। बाप-दादा आली खान्दान , नाना-नानी आली-खान्दान। सबब क्या जो उनके माँ-बाप इनकार

करें। और भई अगर वह छोकरी तुमको एक नजर देख ले तो, वल्लाह बेह-याई करके अपनी माँ से कहे कि मुझ यही गबरू पसन्द है।

बलभद्र सिंह की राय इस राय से नही मिली, कहा—इनके हसीन और कमसिन होने में कोई शक नही। मगर इसके क्या मानी कि जो औरत देख एक दफे लिपट जानेको जरूर जी चाहे। ऐसी औरत को गोली मार देना धर्म है। भुट्टा-सा सर काट ले—

रनबीर सिंह और गुमान सिंह दोनो इस बात पर खिलखिलाकर हँस पडे। कहा—यार, राजपूत की रग ने जोश किया। आ गये छत्रीपने पर। लग सर काटने। अरे भाई, यह जवानी और जोश और हुस्न अजीब चीज है। इसको कोई रोक नही सकता।

—— o ——

पाँचवाँ अध्याय

व्याह का सदेसा

अब कामिनी का हाल सुनिए कि देहात की आबोहवा और खुले हुए मैदान में रहने से जरा-जरा फायदा हुआ। दिल को तफरीह देनेवाली चीजें—मुरब्ब, अर्क, सोने चाँदी के वरक। बर्फ-शोरा बहुत-सा मँगवा लिया जाता था। दो महीने देहात में रहने से कामिनी की तबीयत जरा-जरा सँभल चली। सूरत से तो वही वहशत बरसती थी, मगर गालो के रग का पीलापन अब सुर्खी-सफेदी से बदल गया था। भूख भी मालूम होती थी, बातें भी करती थी। अच्छे-बुरे की समझ भी थी, अपने-पराये को पहचानती थी।

दो महीने के बाद एक रोज घरू महरी और कामिनी घर के एक बड बाग में जो बडी फिजा की जगह थी, रविशो में चहल क़दमी कर रही थी, तो कामिनी ने एक ठडी साँस भरी। घरू ने देखा तो यह कोई मामूली साँस न थी। ताड गई कि इस तरह से जो बेकसी के साथ उसने ठडी साँस ली, उसका कोई सबब जरूर है। जी कडा करके जो कुछ पूछना था, वह पूछ ही बैठी।

घरू—बीबी, एक बात पूछूँ, जो बताओ।

कामिनी—(घबराई-सी) हाँ पूछो। (फिर एक साँस भरके) उफ्!

घरू—बस यही पूछती हूँ कि इसका क्या सबब है, यह ठडी-ठडी साँसें क्यो भर रही हो?

कामिनी ने फिर ठडी साँस भरी, मगर अबकी ज़रा दवाके। घरू ने कुछ समझकर उस वक्त बात टाल दी और थोड़ी देर के बाद कहा—यहाँ की-सी बहार और लुत्फ और यह हवा शहर में कहाँ।

कामिनी ने कुछ जवाब न दिया।

फिर घरू ने छेडकर बात की। अबकी पूछा—फूलो में कौन अच्छा है? हमको तो गुलाब का फूल पसन्द है।

कामिनी ने इसका भी कुछ जवाब न दिया। फिर घरू ने पूछा—बीबी, शरवत पियो तो ले आऊँ।

इसका जवाब भी नदारद। अव घरू जान-बूझ के बाग से जाने लगी। जब दूर निकल गई और कामिनी अकेली रह गई तो उसने घरू को पुकारा। घरू ने खडे होकर कहा—क्यो? पूछा—कहाँ जाती है?

घरू—यहाँ क्या करूँ? तुम तो बीबी बुत बनी हुई हो। बात करो, तो जवाब नही देती। मैं यहाँ बातें किससे करूँ? दीवारो से?

कामिनी—यहाँ आओ।

घरू—बडी बात। बोली तो। बीबी हमको इतना तो बता दो कि यह सबब क्या है—क्यो ठडी साँसें भरती हो?

कामिनी—क्या बताऊँ?

घरू—यह क्या हुआ?

कामिनी—तकदीर का फेर (ठडी साँस भरकर) और क्या बताऊँ कि क्या हुआ। दिनों की गर्दिश। और क्या हुआ।

घरू—यह क्या बात है? राम ने सब कुछ दिया है। खाने को, पीने को पहनने को ओढने को। रुपया-पैसा, दौलत, सवारी-शिकारी, चैन-सुख, आराम, धन-औलाद, नाम, चाँदी-सोना, गहना। कमी काहे की है। फिर ये साँसें कैसी?

कामिनी—अरी घरू, मैं बताऊँ?

घरू—सुन्दर ब्याह होने को था, वह भी रोक दिया गया।

बस इतना कहना था कि कामिनी फूट-फूट के रोने लगी, और ज़ोर से रोई कि एक दफा तो दूर तक आवाज़ गई; और शिवरानी और एक ब्राह्मणी चौकन्ना हुई कि यह रोने की आवाज़ कहाँ से आई। आवाज़ पूरव से आई थी, मगर उनको मालूम हुआ, पश्चिम की जानिब कोई रो रहा था। एक छोकरी से कहा, जाके देख तो कौन रो रहा है। इतने में रोने की आवाज़ बन्द हुई; और उसने आके कहा, यहाँ कोई नही रोता। उधर रोने को तो कामिनी रोई और रोना ज़ब्त न कर सकी, मगर फिर सोची कि ऐसा न हो कि घर तक आवाज़ जाए; ज़रा-ज़रा ज़ब्त किया।

घरू ने तालाब पर ले जाकर मुँह धुलवाया और कहा—बीबी, अब हमको

तो तुमसे डर मालूम होता है। मैंने तो कोई बात एसी कही ही नहीं और तुम बेवजह बेसबब रोने लगी। यह भी कोई बात है?

अब कामिनी खुली। कहा—ब्याह का नाम क्यों लिया? (रोकर) अरी नासमझ, भला मूरख बिन-पढ़े मर्द से मेरा ब्याह हो तो रोने की बात है या नहीं। मैं तो मर जाना इससे अच्छा समझती हूँ। हाय, यह मेरे माँ-बाप को क्या हो गया।

यह बात सुनकर घरू ताड़ गई। बात टाल दी। रात को अकेले में शिवरानी से सब हाल कहा। वह रोने की आवाज़ सुन ही चुकी थी, अब उसकी समझ में आ गया कि कामिनी की इस बीमारी का क्या सबब है। मालूम हुआ कि जिस पुलिसवाले के साथ बात ठहरी वह जाहिल अनपढ़ होने के सबब से उसको पसन्द नहीं है। लड़की है पढ़ी-लिखी, और पढ़ी-लिखी भी ऐसी कि शहर भर में कोई उसके पासंग को नहीं पहुँचती। गजराज सिंह और उनकी बीवी और घर की औरतो ने सलाह की और सबने एक राय से कहा कि बेशक यही वजह है।

दूसरे दिन से कामिनी के सामने कहना शुरू किया कि दो सँदेसे आज आये हैं; एक लड़का बी. ए. है, अभी पास किया है, कोई बाईसवाँ साल है; और दूसरा लड़का एम. ए. है; आजकल अवध में मुसिफ़ है। रोज़ इसी तरह की बातें की, तो कामिनी की तबीयत धीरे-धीरे असली हालत पर आ गई। घरू रोज पूछती थी कि कहो बीबी, अब तो अच्छे अच्छे पैग़ाम आने लगे, और कामिनी हँसकर खुश हो-होकर कहती थी, कि हाँ अब जान में जान आई। इसके एक महीने बाद गाँव से फिर शहर में आये; कामिनी खासी भली-चंगी, तनदुरुस्त।

एक रोज़ दोपहर के वक्त खाना खाकर कामिनी के बाप ठाकुर गजराज सिंह ने घर में आकर अपनी बीवी से कहा, कि कामिनी के लिये आज कहाँ से पैग़ाम आया है? हमने घरू महरी की जबानी सुना कि कोई आज पैग़ाम लेके आई थी।

उनकी बीवी ने कहा, हाँ एक औरत जैनब की माँ को लेकर आई थी। शिवरानी को समझा दो कि लड़ न पड़ा करें। जिसके घर में बेरी होगी, वहाँ ढीले आयें ही गे। इसमें कौन ऐब है?

गजराज सिंह ने शिवरानी, अपनी भतीजी, को समझाया — बेटी, इसमें लड़ पड़ने और बुरा मानने की कौन बात है? यह तो दुनिया-संसार के कारखाने हैं। ऐसी ही होती आई है और ऐसी ही होती रहेगी। बक़ौल तुम्हारी चची के, जहाँ बेरी होगी, जरूर ढीले वहाँ आयेंगे। अब यह जहालत का जमाना नहीं जब हम क्षत्री लोग लड़कियों को मार डालते थे। हमारे क्षत्रीपने का जोर तो

कम हो गया, मगर शिवरानी का ठकुराइनपना अभी वैसा ही है। उस औरत ने जरूर बुरा माना होगा।

इतने में घरू ने आन कहा—ठकुराइन, वह लड़का इधर से जात रहे, तौन तहसीलदार होइ कै, वह जौन हियाँ आये हैं, ओइ हमका देखकर कहेन कि 'यह तुम्हारे सुसराल की कहारन है।'—हमका बड़ी हँसी छूटी।

शिवरानी बोली—देखो तो इन शोहदों की बातें! अभी सूत न कपास और कोरी से लट्ठम-लट्ठा। बात चीत भी अच्छी तरह नहीं हुई, और सुसराल कहने लगे। इन्हीं बातों से तो मैं जलती हूँ। बस, पराई कन्या को गाली देना क्या बात है? जब बात पक्की-मोढ़ी हो जाय, तब भी एकाएकी मुँह से न निकालना चाहिए। न यह, कि अभी ठौर न ठिकाना, और राह चलते हुए बीच में छेड़ने लगे। क्या किसी को लड़की यहाँ भारू पड़ी है? या एक उन्हीं का घर है? कोई और लड़का हमें न जुड़ेगा? इतना मुल्क पड़ा है! एक-से एक बढ़ के ठाकुर हैं।

गजराज सिंह ने घरू को समझाया कि ऐसी बातें शिवरानी से उनके सामने न कहा करो। यह नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती हैं। जरा-सी बात का बतंगड बना दिया। पहले तो उनकी बेवकूफी; अभी बात न चीत, बेतुकी वाहियात बकने लगे! ये लौंडेपन की बातें हैं। उस दिन गुमान सिंह साहब को तहसीलदार पहुँचाने आये थे, और घरू उनके लिये पान लाई थी। इससे पहचान गया कि यहाँ की महरी है। मगर रास्ते में यह कहना क्या जरूर था कि तुम्हारी सुसराल की महरी है। लौंडे को तहसीलदारी का जौम है। तुम घरू कहाँ से समझ गईं कि वह लड़का भी साथ था?

घरू बोली—मैं रधिया के घर से बयना लेके जाती थी, लड़का बड़ा सुन्दर है। अच्छा सयाना है। जोड़ी बुरी नहीं है। हमका देखके मुस्काया।

अब सुनिये कि गजराज सिंह ने अपने भतीजे इन्द्रविक्रम को बुलवाया।

गज—बेटा तुमने ठाकुर बलज़ोर सिंह के लड़के को देखा है? स्कूल में तुम्हारे साथ पढ़ता ही होगा।

इन्द्र—जी हाँ, इनके दो लड़के हैं—बड़े का नाम भानसिंह, छुटके का नाम रनवीर सिंह है। बड़का तो यों ही-सी अँग्रेजी जानता है। छुटके ने एम. ए. पास किया है और रिसाले में भरती होनेवाला है। जनरल साहब ने उसका इम्तहान लिया है। घोड़े पर ऐसा सवार होता है कि बड़े-बड़े घुड़दौड़िये मुक़ाबला नहीं कर सकते। गोली लगाने में बर्क है। तीन शौक हैं। एक लिखना और पढ़ना, दूसरे कुश्ती और लकड़ी, तीसरे शहसवारी और चाँदमारी।

गज—यह तो सब अच्छी बातें हैं। और न उजड्ड ही। पढ़ा-लिखा भी है। और सिपहगिरी के फन भी जानता है। कोई जिस्मी ऐब तो नहीं है?

इन्द्र—जी नही, जनाव। दीदा-रू जवान है। बहुत खूबसूरत लडका। हजार में एक और बहुत तबीअतदार। अब रिसाले में भरती होने का शौक है। साहब ने वादा भी किया है। कवायद भी सीखी है।

गज—सोहबत किन लोगों की है?

इन्द्र—फौज के अंग्रेजो की सोहबत ही ज्यादा है। और आलिमो और शायरो की। ठाकुर बलभद्र सिंह से बडा याराना है।

गज—उम्र क्या होगी? मैंने इस लडके को एक दफा अस्पताल में देखा था। तब बच्चा था। बलजोर सिंह अपने साथ लाया था। अब मुझे याद आया, बहुत खूबसूरत लडका है।

शिवरानी—(इन्द्र से) कामिनी के लिये बात आई है—तुम क्या कहते हो। तुमसे दोस्ती है, देख-भाल के काम करना चाहिए। सुभ-घडी दोस्ती-याराने पर न जाओ। देखो कि कामिनी की उम्र सकारत हो और अच्छे ठिकाने लगे। गाय को चरने छोडते है तो हरी-भरी खेती देख के। और यो तो 'यू करम-लेख ना मिटै, करौ कोउ लाखन चतुराई।'

इन्द्र—नही, वहन। दोस्ती-याराना और बात है, और लडकी की शादी-ब्याह और बात। हम कामिनी को कही ऐसी-वैसी जगह थोडी ही डाल देंगे। ऐसा लडका नसीबो से मिलता है। हमारी खुशनसीबी, अगर कामिनी का दूल्हा हो।

शिवरानी—अच्छा अभी इन वाहियात बातो से कौन मतलब है? तुम लोगो के जबान में लगाम नहीं।

गज—फिर बिगड गई। यह लडकी बात बात पर बिगडती है। हवा से लडती है।

शिव—अजी तो ऐसी बात क्यों करे कोई। अभी कौन ठीक! बने न बने। जब सब ठीक-ठाक हो जाय, तो गाओ चाहे ढोलकी बजाओ!

इन्द्र—हम तो बडे खुश हो अगर यह बात ठीक हो जाय। कामिनी को इससे अच्छा दूल्हा नही मिल सकता। इसमें चाहे हमारी बहन बिगड जाएँ। जनाब आप खुद उस लडके को देख लीजिए, ऐसा होनहार और लायक और चलन का लडका छत्रियो में दूसरा नही है। मैं तो कहता हूँ, कि हजार काम छोड के इस काम को कीजिए। पद्मिनी भी अच्छे घर गई है, कामिनी भी ठिकाने लगे, अच्छा। कामिनी से पूछ न लो, उसको पसन्द है कि नही।

गज—(हँसकर) तुम्हारी बहन है, तुम पूछो।

शिव—तूने अपना ब्याह देखभाल के किया था? कल्युग तो है ही। अंग्रेजी पढ़ के इतना भी न हो, तो क्या हो! फेरी मुँह पर लोई, तो क्या करेगा कोई! कामिनी बिचारी को इससे क्या काम, जहाँ हम मुनासिब समझेंगे

वहाँ ब्याहेंगे। कुँआरी बोल सकती हूँ भला? अभी कलजुग ने अँगूठा ही निकाला है। अभी यह ढिठाई कुँआरी लडकी में नहीं हो सकती। लडके बेहया और ढीठ होते जाते हैं, और थोडे दिन में लडकी-लडके सब एक-से हो जाएँगे। अब माँ-बाप का डर तो रहा ही नहीं है। जिसका जो जी चाहता है, करता है। अब इन्दरजी बडी बहन के सामने छोटी बहन से कहते हैं कि अपना दूल्हा पसन्द कर लो। बाह!

गज—मैं बैठा हूँ, मेरे सामने तो कहता ही है, यह बडी बहन लिये फिरती है। बाप के सामने तो चूकता ही नहीं।

शिव—बेहया कहीं का। चल, जा यहाँ से। तू इन बातों में दखल न दिया कर। (मुस्कराकर) तू अपनी जोरू से बेहयाई कर। भलेमानसों में ये बातें नहीं होती हैं।

इन्द्र—मैं जाके इस लडके की तस्वीर लाता हूँ। कामिनी को चुपके से दिखाऊँगा।

शिव—मैं कहती हूँ, इसको क्या हुआ है? अरे, तू बिलकुल सिडी ही हुआ जाता है? कहीं तस्वीरें भी कुँआरी लडकियों को दिखाई जाती है?

ठाकुर इन्द्रबिक्रम सिंह चचेरी बहन और बाप से बातें कर के सीधे अपने दोस्त रनबीर सिंह के यहाँ आये। यहाँ बलभद्र सिंह और गुमान सिंह तहसीलदार और एक मुंशी साहब बैठे शतरंज खेल रहे थे। इनको देखकर कहा—आओ भई, खूब आये। सुबह से तहसीलदार साहब और मुंशी को चार मात दे चुका हूँ।

क्यों नहीं!—तहसीलदार ने कहा—यार अब हम लोग इस फिक्र में हैं कि रनबीर की शादी करें और उनको आदमी बनाएँ। उनके लिये कोई उन्हीं-सी खूबसूरत लडकी होनी चाहिए। मगर जरा सयानी हो, बिलकुल बच्चा न हो, कि इनके पाले पडे।

बलभद्र ने भी साथ दिया और शतरंज उठा डाली, और मुंशी को रुखसत करके अकेले में बातें होने लगी।

गुमान सिंह ने खुल कर रनबीर और इन्द्रबिक्रम सिंह दोनों को बनाना शुरू किया। भाई, इनकी शादी की तुम ही फिक्र करो। हाँ साहब, भाई इन्द्रजी, हमारे खान्दान में तो कोई लडकी इस काबिल है नहीं, वर्ना हम तो ब्याह देते। लडका बे ऐब, खान्दान बे ऐब। ददियाल बे ऐब, ननिहाल बे ऐब। पढा-लिखा आदमी, और इसमें शक नहीं कि हसीन हैं। औरतें देखें तो खुश हो जायें। बीवी खुश हो जाय कि वाह क्या मियाँ पाया है! सास खुश कि क्या दामाद मिला है! सालियाँ बश्शाश कि क्या अच्छा बहनोई है! पास पडोस की औरतें दूल्हा को देखके आपस में बातें करें कि कामिनी बिटिया का दूल्हा बडा सुन्दर लडका है, चाँद-सूरज की जोडी है। और रास्ते में जो नौशे को

दसो, कहे यह किसी बड़ी खुशकिस्मत को ब्याह के लिये जाता है, कि ऐसा दूल्हा पाएगी! और ये तने हुए घोड़ पर रान पटरी जमाए बैठे है।

बलभद्र का मारे हँसी के बुरा हाल था, मगर ज़ब्त करते थे। गुमान सिंह का यह कहना कि भई हमारे खान्दान में तो कोई लड़की इस काबिल नहीं है वर्ना हम तो ब्याह देते, इन्द्रबिक्रम सिंह की तरफ इशारा था कि तुम अब अपनी बहन उनको ब्याह दो, और यह खबर ही न थी कि इन्द्रविक्रम सिंह खास इसी काम के लिए आया था, कि रनबीर सिंह की तस्वीर ले जाके बाप और बहन कामिनी को दिखाए। ये लोग गोल-गोल बातें और इन्द्र की चोरी से आपस में इशारे करते जाते, और वह खुद अपने दिल में सोचता था कि माँ-बाप पर बड़ा जोर डालूंगा। थोड़ी देर के बाद इनसे न रहा गया। कहा, अरे यार रनवीर ज़रा अपना अलबम तो मँगवाओ! उस्ताद तुम्हारी कोई तस्वीर हमारे पास नहीं है।

बलभद्र—दे दो मियाँ, दे दो, ये अपने अलबम में लगाएँगे।

गुमान—उम्दा-सी तस्वीर देना। न हो, तो खिंचवा लो।

बलभद्र—होगी क्या नहीं। जटलमैन कैसे, जो तस्वीर ही न हो!

रन—एक नहीं बीस। इन्द्रसिंह का कहना हम भला टाल सकते है। वह वह तस्वीरें दूँ, कि खुश हो जायँ। घोड़े पर सवार किसी में अंग्रेजी लिबास में। किसी में पजाबी ड्रस। कहीं मिस के कांधे पर हाथ है।

गज—लाओ, लाओ, फिर। लाओ, लाओ, दिखाओ!

रन—रामचरन, जाके अहमद से कहा कि अलबम दोनों ले आए। सुनहरी, और रुपहली दफ्ती की। तुम उसको हमारे पास भेज दो। वहाँ जाके सुन लो! अहमद आय। वह सुनहरा अल्बम जो खूबसूरत-सा बना हुआ है, और उसके साथ का दूसरा अल्बम रुपहली दफ्ती का, ले आओ।

गज—भई हमको देना। (एलबम खोल कर) ओहो-हो-हो! यह कौन औरत है, भई?

बलभद्र—यह पहाड़ की एक पातुर है कन्थी, खूब नाचती है।

गज—कौन पहाड़ नैनीताल या अल्मोड़ा?

बलभद्र—नैनीताल, अल्मोड़ा, रामगढ़, सब एक है। ऐसा अच्छा नाचती है कि वाह!

गज—खैर अब आप मियाँ रनवीर सिंह साहब अपनी तस्वीर निकालिये तो। देखें। जो सबसे उम्दा हो वह तो इन्द्रजी बहादुर को दीजिए कि ये अपनी जान पहचान की लड़कियों और उनकी माँ-बहनों को दिखाएँ और रिझाएँ और आपकी खाना आबादी की फिक्र करें। मियाँ इन्द्रसिंह, तुम्हारी एक बहन तो अभी बिन ब्याही है। जैसी तुम्हारी बहन, वैसी हमारी बहन।

गुमान सिंह आखिर उगल ही पड़े। न रहा गया। एक खूबसूरती के साथ इन्द्रविक्रम सिंह की बहन का ज़िक्र ज़बान पर लाये, और इस लुत्फ़ से कहा कि बुरा भी न मालूम हो। झप से अपनी बहन भी बना लिया।

बलभद्र सिंह और रनबीर ने आपस में इशारा किया और इन्द्रविक्रम सिंह ने कुछ गौर करके बड़े ढंग के साथ बात को रखा; कहा—भाई यह तो ज़ाहिर है कि लड़की सयानी है, और शादी होवे होगी, और जल्द होगी। और यह भी ज़ाहिर है कि रनबीर सिंह से अच्छा लड़का और कौन है। मगर भाई हम लोगों में ये मामले औरतो के ताल्लुक है। हमको इन बातों से कौन सरोकार। औरतें जानें, उनका काम जाने। हम दखल देनेवाले कौन।

गुमान सिंह खुश हुए कि इतने ढर्रे पर तो लाये। अब जब इतने सर बदले, तो आयन्दा और बातें भी होगी।

बलभद्र—इन्द्र ने बात अक्लमन्दी की कही। ये मामले औरतो के मुतािल्लक तो होते ही है, मगर मर्द भी राय देते है; नेक-बद को ज्यादा समझते है, और औरतों को सलाह-मश्विरा देते है। औरतें अपनी खुशी से थोड़ा ही कोई काम करती हैं। सदेसा उनके घर से जाए। औरतों के ज़रिये से औरतों में सदेसा जाय, और इन्द्रसिंह सिफारिश करें।

गज—हम भी यही कहेंगे। बहुत मुनासिब बात है।

बलभद्र—तो भाई साहब, अब कतई वायदा कीजिए। निकल न जाइएगा।

गज—पहले रनबीर सिंह से तो पूछो शादी मजूर है या नही। सदेसा-पैग़ाम तो हुआ करेगा; पहले उनकी राय तो मालूम हो जाय।

बलभद्र—उनको मंज़ूर है। आखिर शादी न करना क्या मानी?

गज—शादी तो ज़रूर ही होगी; न होना क्या मानी। मगर हाँ अब यह ज्योतिषी से पूछने की बात नही कि कहाँ होगी। कोशिश तो यही है कि जाने-बूझे घर हो।

गज—बस, बस, हम समझ गए जी। एक बहुत बड़ी पार्टी हम देंगे। उम्दा-उम्दा बकरे *अपने गाँव से तहसील के चपरासी की मारफ़त मँगवाएँगे, और* कश्मीरी बावर्चियो को बुलवा के पकवाएँगे। और आला दर्जे की शाम्पेन पिलवाएँगे और जलसा दिखाएँगे। रनबीर सिंह हमारे यार खास। उनकी शादी खाना आबादी हो, और इनकी बहन का जो खुद हमारी छोटी बहन है, ब्याह हो तो भला हम जलसा क्यो न दिखाएँ, दावत क्यो न दें।

बलभद्र सिंह ने कहा—हम भी दावत करेंगे। हम बकरा-वकरा हलाल करना और कश्मीरी बावर्ची को बुलाना-वुलाना नही जानते। हम तो भाई साहब सीधे होटल में दावत करेंगे। सूप, मछली, कटलेट, रोस्ट, बतख, कोफ्ते, आलू, टर्की, शामीकबाब, पराग्रदे कबाब, नूरमहल पुलाव, मुर्ग़ पुलाव, मुतजन;

इसके बाद मेवा खुश्क व तर, और दूधिया चाय और सिगोडे । और रनवीर सिंह से एक हफ्ते तक दावत लेंगे । पूरा जलसा । खूब धमा चौकड़ी रहे । खाना और शराब हमसे उम्दा से उम्दा लीजिए । मगर जलसा हम न दिखाएँगे । जलसा गुमान सिंह दें, और तायफ़े हम तजवीज़ करें—बी जद्दन और कालका वाली बग्गन, और काली उमराव, और नज़ीर जान की छोकरी, और खिलौना का लड़का। चार जनाने तायफे, और एक मर्दाना।

गज—क्यों साहब, यह आप क्यों जलसा न दिखाएँगे ?

बलभद्र—दावत भई आला से आला हो, और शराब चोखी से चोखी । मगर जलसा न देंगे।

गज—फिर वही, अरे मियाँ वजह तो बयान करो।

बलभद्र—वजह यह कि हमको जल्सा देने से नफरत है। खुदा जाने क्या सबब है; दावत में चाहे दो सौ उठ जाएँ।

गज—यह अच्छी वजह है! वल्लाह आपकी ऐसी-तैसी। चोट्टेपन की बातें करते हो। आपके तो बाप से जलसा लिया जाएगा।

रन—उनकी तरफ से हम दे देंगे। चलो छुट्टी हुई।

बलभद्र—अरे यार वह दिन तो आने दो, वह नेक घड़ी तो आने दो कि ये नयी दुल्हन को ब्याह के लायें, और हम लोग जश्न करें और शादी का दिन मनाएँ। अभी से क्यों कटे मरते हो। जलसा नहीं, जल्से का बाप ले लेना।

गज—तो यार रनवीर सिंह भाई, अब तुम फिक्र करो। अपनी देवरानी जेठानी बहन किसी से कहो कि तुम्हारी माँ से कहें और बात शुरू कर दें। अब देर न लगाओ! हाँ! और इन्द्रविक्रम सिंह तो सिफारिश करेंगे ही।

गज—जरूर।

बलभद्र—तुम क्यों खामोश हो, इन्द्रजी।

गज—बोलो यार, आखिर कहते क्या हो। खुल कर कहो।

इन्द्र—भ , किसी की लड़की रह तो जाती नहीं। शादी तो होवेगी। और यह कौन नहीं जानता कि रनबीर सिंह लायक होनहार नौजवान है। और यह कौन नहीं चाहता कि लड़की अच्छे घर जाय। मैं जरूर पिताजी से ज़िक्र करूँगा बल्कि तस्वीर भी अंग्रेजी ड्रेसवाली लिये जाता हूँ।

गज—हाँ, चाहे बहन को भी दिखा दो।

इन्द्र—ए जरूर।

—:०:—

छठा अध्याय

नागपंचमी

इन्द्रविक्रम सिंह तस्वीर लेकर खुश-खुश रवाना हुए। घर आये। महरी से सबके सामने कहा—दो रुपये छः आने की जरूरत है।' उसने उनकी बीवी स्मृति से कहा। स्मृता ने दो रुपये छः आने दे के आहिस्ता से पूछा—ये किस हिसाब में लिखे जायँगे? उन्होने कहा—एक तस्वीर ली है। शिवरानी ने पूछा—किसकी तस्वीर?

इतने में कामिनी बोल उठी—इस तस्वीर पर मुझे याद आया कि जब ईरान के बादशाह विलायत गये थे तो बड़े नामी करोड़पति आर्टिस्ट की कोठी में तस्वीर देखने गये। देखते-देखते एक गधे की तस्वीर देखी। यह मालूम होता था कि सचमुच का गधा है। क़ीमत पूछी। सुना, पच्चीस हज़ार। मुस्कराकर बादशाह ने जवाब दिया—पचीस हज़ार में तो गधो की एक पल्टन की पल्टन तैयार हो सकती है।

इन्द्रविक्रम सिंह ने मुस्कराकर कहा—और इत्तफाक कुछ ऐसा हुआ है कि मैंने भी गधे की तस्वीर ली।

शिवरानी बिगड़कर बोली—फिज़ूल खर्ची इसी को कहते हैं। दो रुपये छः आने में तस्वीर ली तो किसकी, गधे की! वाह, भैया, वाह!

इन्द्रविक्रम सिंह ने जवाब दिया—यह दो रुपये छः आने ही लिये फिरती हैं। और यह खबर ही नही कि सात रुपये जो मेरे पास थे, वह पलेयन हैं। नौ रुपये छः आने को ली है।

स्मृता—(आहिस्ता से) हूँह! गधे की तस्वीर और नौ रुपये छः आने! मैं कुछ कहने को थी, मगर बड़ो का लिहाज करती हूँ।

शिव—इसमें कहना और सुनना ही क्या है। वह तो खुली हुई बात है। नौ-दस की गधे की तस्वीर कोई गधा ही लेगा। और किससे यह गधापन होगा?

कामिनी, शिवरानी, स्मृता, महरी सब हँस पड़ी और स्मृता ने महरी से कहा—ज़रा तस्वीर माँग लो! अल्बम में रखने के काबिल होगी; या कोई अक़्लमन्द आदमी अपने कमरे में सजवा दे!

इन्द्रविक्रम सिंह ने तस्वीर महरी को दे दी। महरी ने स्मृता के हवाले की तो क़ीमती-क़ीमती पीले रंग के काशानी मख़मल में! सबको ताज्जुब हुआ, और हँस पड़ी, कि वाह गधे की तस्वीर और मखमली गिलाफ! मगर स्मृता ने गिलाफ से तस्वीर निकाली तो धक् से रह गई, और मुस्कराकर इन्द्र

बिक्रम सिंह की तरफ देखा, और वैसे ही कामिनी ने तस्वीर छीन ली। देखा तो यह भी मुस्कराई, और शिवरानी को दे दी। शिवरानी ने देखी तो हँसने लगी। महरी ने भी झुक के देखा। और सबकी सब मिलकर हँसी।

शिव—यह गधे की तस्वीर है?

इन्द्र—जी नहीं, आदमी की।

स्मृता—(मुस्कराकर) यह तस्वीर तो दो लाख को भी मँहगी नहीं। (झेंप कर) मुझे कहना न चाहिए।

इन्द्र—(बनावट के साथ बिगड़कर) क्या कहा?

कामिनी—है तो भाई यही बात!

शिव—(तस्वीर को गौर से देखकर) जैसे नारायन का रूप है।

स्मृता—चाहे कोई कुछ अपने दिल में समझे, मैं यही कहूँगी कि दो लाख की भी महँगी नहीं है।

इन्द्र—सुनती जाओ, बहन। ये तारीफें मियाँ के सामने हो रही हैं एक मर्द की, और ग़ैर मर्द की!

शिव—यह तुम जानो, तुम्हारी जोरू जाने। मगर इसमें कोई शक नहीं कि कितना खूबसूरत लड़का है।

कामिनी—है कोई हिन्दू।

महरी—ए बीबी, यह तो उनका लड़का है, वो जो पकड़िया टोले के पास रहते हैं, वह ठाकुर।

शिव—(मुस्कराकर) अरे! अच्छा अब मैं समझी।

स्मृता—हाँ (तस्वीर को फिर देखकर) क्या सूरत है!

शिव—कामिनी को फिर दिखाओ।

कामिनी—(समझ गई) मैं नहीं देखती। (मुँह फेरकर) तुम ही देखो।

सब औरतों ने तस्वीर गौर से देखी। मगर कामिनी वहाँ से चली गई। कामिनी की माँ ने भी तस्वीर देखी, और गजराज सिंह को भी बुला के दिखाई। उन्होंने कहा—मैं तो इस लड़के को देख चुका हूँ। बहुत अच्छा लड़का है, और इन्द्रविक्रम सिंह पढ़ने लिखने की बड़ी तारीफ करते हैं।

इतने में जैनब की माँ आई। इन्द्रविक्रम सिंह कह रहे थे कि—लड़का बहुत अच्छा पढ़ा लिखा है, होनहार, होशियार, कोई ऐब नहीं। हम तो दिल से चाहते हैं कि यह बात हो।

गजराज—इसमें कौन मुश्किल बात है। पैग़ाम आही चुका है।

जैनब की माँ—वह तो घी के चिराग़ जलाएँ जो ऐसे घर की लड़की उनके यहाँ जाय, और फिर कैसी लड़की, कामिनी की-सी।

गजराज—दाता खानदान क्या कुछ बुरा है? वह भी खान्दानी है।

जैनब—ऐसी अच्छी जोड़ी है कि मैं क्या कहूँ, जैसे अल्लाह ने दोनों को अपने हाथ से बनाया है।

शिव—घन्नो तो लड़ाका नही है! मॉं इस लड़के की कैसी है! सीधी है कि तुनक-मिजाज!

जैनब—ए सरकार उनके यहाँ कोई लड़का नही है। सब सीधी और मिलन-सार। लडाई झगड़ा तो वहाँ कोई जानता ही नही। घर भर में एक। घर तो घन्नो रानी का ही है। उनके मियाँ दूसरे दिन आते हैं। रेल के डाक घर में बड़ा ओहदा है। पाँच सौ पाते हैं। शाम को आते हैं, सवेरे फिर चले जाते हैं। उनको किसी काम से सरोकार नही। सब काम घन्नो रानी के सपुर्द हैं।

गजराज सिंह और उनकी बीवी और शिवरानी और स्मृता की सलाह हुई कि जाब्ते के तौर पर सन्देसा भेजा जाय और बात पक्की की जाय।

इधर तो ये मामले हो रहे थे अब इधर रनवीर सिंह के यहाँ का हाल सुनिये कि घन्नो ठकुराइन आज उधार खाये बैठी है कि अपनी सज-धज से गजब ही ढाकर रहेंगी। *जिधर निकल जाएँगी चाल की नाजुकी से दिलो को पामाल* करती जायेंगी। आज इन पर गजब का निखार है।

एक तो पैदा ही हुई हसीन, चन्द्रमुखी; दूसरे कम उम्र; तीसरे अच्छा साज-सिंगार; चौथे वजादार। इस पर शोखी व चालाकी। अब इस निखार और बनाव-चुनाव का सबब सुनिये।

सावन का महीना और उजाले पाख की पचमी; और बृहस्पत के दिन की चहल-पहल भी यादगार रहेगी। गुडिया-पंचमी का त्योहार बड़ी खुशी का दिन है। बलजोर सिंह के लड़के गो नये फैशन के थे, मगर पुराने त्योहारो में उनकी एक ही चलती थी। और औरतें पुरानी ही लकीर पीटे जाती थी।

रनबीर सिंह की बड़ी भावज घन्नो ठकुराइन ने तड़के उठकर महरानी नाउन को बुलवाया। बालछड़ का मसालेदार बटना बनवाया, जिसकी खुशबू मोहल्ले भर में जाती थी। जनाने गुसलखाने में जाकर नाउन ने बालछड से सर धोया, बटना मला, नहलाया, बाल सुखाये। सुखाने के बाद नाउन ने चोटी सँवारी, *बाल गूँछे, पाँव में महावर लगाई, माँग बुन्दो से भरी,* सेन्दूर का टीका लगाया; टीके के पास बिंदिया लगाई, सोने का जड़ाऊ टीका बाँधा। सर से पाँव तक गोदनी की तरह लदी हुई थी। झूमर, सली, झुमके, करनफूल, बाले, बाली, पात, चम्पाकली, जुगनू, तिलाई, चूड़ियाँ, नौरतन, जोशन, पाँव में छड़े कड़े, पोर-पोर छल्ले। इसके बाद गाज का सब्ज दोपट्टा, चार हाशिया आड़ी बेल, आबी अतलस की चोली, जरी-बूटी की बसन्ती कुर्ती, जरी-गरन्ट का सुर्ख लहँगा। इस ठस्से से बनाव-चुनाव किया, और खस का इत्र मला, बालों में *हिना का तेल छोटे गन्धी की दूकान का पड़ा था। उधर बालछड़ और नागर*

मोथे और छैल-छबीले की खुशबू, इधर उस मशहूर दूकान का हिना का तेल। छत पर बालो में आधे मील तक लपटें जायें। और इन सब पर तुर्रा यह कि खस का फर्मायशी इत्र--ले ही तो उडा। जैसे सोने पर सुहागा। एक अजब लुभावनी अदा के साथ छमाछम करती, सोते कितने जगाती, कमायत ढाती बाहर आई, तो छोटे देवर रनबीर सिंह ने मुस्कराकर कहा—इस वक्त सरकार ने बन ठनकर कहाँ की तैयारी की है ?

आती नये अन्दाज से इक सब्ज परी है
लब सुर्ख है, पर सब्ज है, पोशाक हरी है !

घन्नो—नाचना अब सीखो; थिरकना सीखो। जैसे कहार शादी-ब्याह में हुड़क बजा-बजा के किसी एक मर्द को औरत बना के नचाते हैं, तुमको हम नचाएँगे।

रनबीर—तुम तो नचाय रही हो। हमको और हमारे भाई दोनो को तिगनी का नाच नचा रही हो, और आज तो शहर भर को नचाओगी।

घन्नो—बड़ा बेहूदा होता जाता है।

रनबीर—हमें तो तुम लोगों की बातें बुरी मालूम होती है। यह गँवारिनो को ही सजता है।

घन्नो—तुम अपनी जोरू को सात पर्दों में रखना।

रनबीर—अरे, बग्गी पर जाओ, फिनस पर जाओ।

घन्नो—हाँ, यह माना। मगर किसके घरो की औरतें मिन्नत नहीं मानती ! किसके यहाँ रस्म-रिवाज नही। कोई दरगाह, कोई जन्नत की मस्जिद ; कोई गिरजाघर, कोई शिवाला, कोई मन्दिर। तुम अपनी जोरू को कैद में रखना।

रनबीर—हम शादी ही न करेंगे, और अगर करेंगे तो उसके साथ जो परिस्तान की परियों को शरमाए, लाखो में एक, करोरो में फर्द हो; और नेक। और बाहर न निकले। जाये भी तो डोली, फिनस, बग्घी पर, और पढ़ी-लिखी हो। शीन-काफ् दुरुस्त। गँवार न हो। नमकीन हो; गोरी हो। छरेरी हो, खुश-सलीका हो।—अच्छा, अच्छा, खैर यह तो जो कुछ हुआ सो हुआ, आप यह तो बताएँ, सरकार, कि यह इन गोरे गालो पर सितारे क्यो नही चुने गये ?

घन्नो—कौन अच्छे-भले चगे मुंह को बुरा करे। गोंद की चिप-चिप से जी घबराता है।

रनबीर—अच्छा अब इसी बात पर एक (चुम्बन का इशारा कर के) तो दे दो!

घन्नो—गड़ैया में मुँह धो आओ। ऐसे बडे सुन्दर!

रनबीर—इतनी देर बकवाया; अगर जरा होंठो का इशारा हो जाय, तो क्या हर्ज है? कुछ होंठ घिस न जाएँगे।

घन्नो—ये होठ जिसके वास्ते हैं, उसके वास्ते हैं। ब्याह करके जाके सास का मुँह चूमो। हमारे मुँह चूमने के लिये जाके मुँह बनवाओ।

रनबीर—अगर तुम गोरी-चिट्टी होती, तो सीधी बात भी न करती।

धन्नो—ऐसी गोरी हूँ कि तुम्हारे कुनवे में कोई नही है। मेरे पाँव को तुम्हारा मुँह नही पहुँचता। तुम्हारे घर भर के भाग खुल गए, हमारे आने से।

रनबीर—*तुमको कोई पूछता भी था। भाई साहब मुफ्त में फँस गये।*

धन्नो—क्या हमें कोई लडका ही नही जुडता ? उनसे हजार दर्जे अच्छे मिलते। तुम लोग हो क्या बिचारे ! अब जाओ यहाँ से। आज लडाई को जी चाहता है !

रनबीर—हाँ ! बाहर न जाया करो।

धन्नो—यह तो दुनिया भर का रिवाज है !

रनबीर—सच कहती हो। दिल का पर्दा चाहिये।

धन्नो—ए क्यो नही ! बिज्जू की-सी आँख और यह घमड !

इतने में बलजोर सिंह आये तो घन्नो कोठरी में छिप रही, और रनबीर सिंह बाहर आये। और धन्नो ठकुराइन भारी कामदानी की गुलाबी चादर ओढ कर हमजोलियो, सहेलियो, नाउन, महरी और बारिन को लेकर सूरजकुंड गुडियाँ सराने चली। सीक की रगीन डलिया नाउन के हाथ में थी। इसमें कपडे की गुडिया बनी हुई, छोटा-सा कमखाब का लहँगा, गुलनार दुपट्टा, उसमें लचक और लेस टकी हुई। डलियो में गेहूँ और चना और जौ। गुडिया लडको ने पीटी। नाउन ने उनको चना और गेहूँ दिया। सूरजकुड की मट्टी ली और हमजोलियो ने आपस में पान और गोटा, एक-दूसरे को दिया और झूला झूली। और तीन-तीन चार-चार मीठे *गलेवाली तर्रार तरहदार कमसिनो ने मिल-मिलकर* अपने-अपने झूलो से सच्ची तानें लगानी शुरू की।

पिया बिन हुई बिरहा की पीर !

दूसरे झूले से दो-तीन परियो ने नाजुक-आवाजो के साथ यो गाना शुरू किया—

रह-रह के दिल रूँधो आवे,
बिजुरी की चमक तडपावे-डरावे।
पिया बिन घटा नही भावे,

एक सिम्त *पीपल के बहुत बडे दरख्त में झूला पडा हुआ था,* और उस पर दो नौजवान तन्नाज बडे नाज से तनी-ठनी और बनी-ठनी बैठी थी। उन्होने बडे ऊँचे और मीठे सुर से यह सावन अलापा—

दिलको मर्गूब है ठडी जो हवा सावन की ....
अब्र भागा हुआ जाता है, खुदा खैर करे !
आज बदली नजर आती है हवा सावन की !

झूले से उतर कर धन्नो ठकुराइन ने, जो कि सबसे शोख और तर्रार थी, एक हमजोली की नाक पकडकर कहा—अपने दूल्हा का नाम बता। वह बडी देर तक झेंपती रही। आखिरकार आहिस्ता से धन्नो के कान में कहा—मुरालीलाल, धन्नो ने नाक छोड दी, तो वह फुर्ती के साथ चट हो रही, और तीन औरतो ने जोर से खिलखिलाकर कहा—धन्नोरानी धोखा खा गईं। उनके दूल्हा का नाम मुरालीलाल नही है, गनेश है। धन्नो ने कहा—चलो अच्छा, पराये मर्द को अपना भतार तो बना लिया। ऐसी औरतो का कोई ठीक नहीं है, जिसे जबान से ऐरे-गैरे को अपना मियाँ कहा। उसका कौन भरोसा। अब तो ये मुरालीलाल की जोरू बन गईं। मुरारीलाल की दुलहन, तनिक इधर आवो! तुम्हारे दूल्हा मुरालीलाल कहाँ हैं?

इस पर और भी ठट्ठा हुआ। इसके बाद दो-तीन औरतो ने धन्नो की नाक दबाई और कहा, दूल्हा का नाम बताओ। धन्नो ने बेझिझक फौरन कह दिया—मानसिंह।

इस चुहल और मजाक के बाद अपने-अपने घर गईं, और धन्नो के देवर ने हँसना शुरू किया।

रनबीर—तुम लोग बन-ठन के सोलह सिंगार करके मर्दों को अपना जोबन दिखाने जाती हो कि देखो ऐसे हैं, मर्द घूरते हैं।

धन्नो—बुरी नजर से देखें तो आँखें हम निकाल लें। झाँसी की रानी मर्दों से कैसा लडी थी। तलवार और बन्दूक की लडाई। औरत होके मर्दों से लडी। और बदी ही मर्द के दिल में हो, तो हो। वही नरक में जाएगा। हमारा क्या बिगडेगा?

रनबीर—हम तो अपनी बीवी को सात पर्दों में रखेंगे।

धन्नो—इससे क्या होता है? पर्दे-वर्दे रखे ही रहते हैं। रहे तो' आपसे, नही सगे बाप से।

रनबीर—यह तो सच है, मगर पर्दा भी कोई चीज है। हजारो रुपये का जेवर लादे, अच्छे-अच्छे कपडे पहने, मुँह खोले, छम छम करती चली हैं—बाजार भर की नजर पडती है।

धन्नो—अजी तो बाजार भर घूरे तो क्या होता है। अपनी आँखें फोडें, मुए। उनके माँ बहन नही है? सब निगोडे नाठे हैं?

रनबीर—एक बात हम जरूर कहेंगे, भाभी, चाहे बुरा मानो।

धन्नो—कह डालो, कह डालो। तुमको कहने हाथ का खाना हराम है। हम भी तो सुनें, कहोगे क्या?

रनबीर—जितनी औरतें आज ताल गईं थी, तुमसे ज्यादा मटक-चटक कोई न होगी। बोटी-बोटी फडकाती जाती होगी। चुलबुली हो ना!

घन्नो—कैसी कुछ! रग-रग में चुलबुलापन भरा है। कूट-कूट के। और जहाँ किसी ने पूछा, यह चमक्को कौन जाती है? मैं बारन नाउन महरी को समझा देती हूँ कि कहो—यह रनबीर सिंह ठाकुर की बहन है—सगी बहन।

रनबीर—जोरू नहीं कहती? मेहरारू कहा करो, जो सच्ची बात है!

घन्नो—घर की पटकी और बासी साग! हम ऐसे चुग्घो की मेहरारू नहीं बनते। तुम अपनी कामिनी को दुल्हन बनाओ। हमारे दूल्हा क्या कुछ बुरे हैं। सौ-पचास में एक।

इधर घन्नो ठकुराइन यह चुहल कर रही थी; उधर रसोई में बाम्हनों ने खाने का सामान लैस किया। पूरी, कचौड़ी, भिंडी, सीताफल (कद्दू), घुइयाँ, तुरई की तरकारी, दही, शक्कर, कई तरह का अचार, चटनी, मुरब्बा, दूध, सिवैयाँ, बालाई, और दो किस्म का कलिया। ठाकुर बलजोर सिंह ने दो बकरे का बलिदान किया था। बाजार का गोश्त यह नहीं खाते थे। सब परजाओ को पूरी-कचौरी-तरकारी दी गई। शाम को एक बहुत बूढ़ा ब्राह्मण जो ठाकुर गजराज सिंह के यहाँ आता-जाता था, आया।

ब्राह्मण—बहुरिया, आज तो ठाकुर गजराज सिंह की बखरी माँ मानो जुन्हैया निकली है। सम्पूरन चन्द्रमाँ। एक तो महालक्ष्मी सहाय है। और परमेशर का दिया सब कुछ है। दूध-पूत। और सबसे बढकर दौलत यह है कि लड़के सब होनहार, बुद्धिमान। और ठाकुर को दान-पुन्न का बडा खियाल है। बुद्ध को अन्धो और पाहिजो और मँगताओ को दो-दो डबल देते हैं, और अपने और लडको की बरस-गाँठ के दिन ब्राह्मणो को खिलाते और दक्षिना देते हैं। और बरस में दुई बिरिया बडा बरस-भोज होता है। मगलवार को बन्दरो को गुड-धानी भेजते हैं। और कन्याओ को महीने में एक दिन खीर और पूरी-भजिया खिलाते हैं। और कई कन्या-दान करा दिये। गर्मी में पौसाले बिठा देते हैं। बैलो को घी और गुड खिलाते हैं। एक धरमसाला है। और घर भर में मेल। लडके लडकियाँ दोनो सूरज और चन्द्रमा! एक अभी कुँआरी कन्या है। तुम्हारे घर में आयें, तो उसका भाग और भी खुल जाए। और सच पूछो तो जो है सो, जिसको ब्याह ले जाए, उसका भी भाग खुल जाए। और अब ब्याह के जोग है। सयानी भई है। और जो है सो, बात-चीत तो यहाँ से रनबीर सिंह की गई है।

घन्नो—तुम पडितजी कुछ जोर लगाओ। कही और से तो नही बात आई है?

पडित—चाहे, जो है सो, जहाँ से बातें आई हो, परन्तु इस घर से अच्छा और कोई घर नही है। गजराज सिंह नाही जानत है। और गगा-सौगन्द, रनबीर सिंह हीरा है, हीरा रतन।

महरी—पडित महराज, यह जोडी देव अपने हाथ बनाई है।

पडित—यह माँ कौन सन्देह है। कामिनी सचमुच कामिनी है। चन्द्रमा में मैल है, और उसमें मैल नही। और आँख नीची रहती है।

इतने में जैनब की माँ आई, मुस्कराती हुई। घन्नो ने कहा—आज तो बाँछें खिली जाती हैं; क्या पाया?

उसने हँसकर कहा—तुम्हारे देवर के लिए दुल्हन ढूँढने गई थी—लो, फतेह है, बहुरिया! हमने आज जरा टटोला; तुम्हारा घर इतना नामी है कि कोई एकाएकी 'नहीं' नहीं कर सकता। और लड़के का जो हाल सुनता है वह कहता है कि वह मर्द इल्म जानता है, और चार पैसे कमाने का शौक है। और अभी माशाल्ला कमसिन। अठारह बरस का बच्चा। मसें भीगती हैं। बहू सच कहती हूँ, अँधेरे में कामिनी को बिठा दो तो उजाला हो जाय।

घन्नो ने कहा—अरे यह तो हम सब सुन चुके हैं। मतलब की बात कहो।

जैनब की माँ बोली—अब यहाँ तक तो हुआ, कि शिवरानी ने ठाकुर से कहा; उन्होंने लड़के को बुलाया। लड़के ने कहा—हम और रनवीर सिंह साथ पढ़ते थे; मास्टर लोग सब उनको अच्छा जानते थे, और किसी ने कभी इस लड़के को बुरी सोहबत में नहीं देखा, सिवाय भलेमानसों के पास के। और रिसाले में नौकरी करनेवाला है; और तोप खूब चलाता है। .....

'तोप' के लफ्ज पर घन्नो और पंडित और महरी को बड़ी हँसी आई कि रनवीर सिंह को गोलन्दाज बना दिया। यह तो कहा नहीं कि तलवार के सब करतब जानते हैं, गोलचले बहुत अच्छे हैं, शहसवारी में बर्क़ हैं—कहा तो यह कहा कि तोप खूब दागते हैं।

घन्नो को यह बात सुनकर तसल्ली हुई कि गजराज सिंह के लड़के इन्द्र-विक्रमसिंह ने उनके देवर की तारीफ की। गो पहले घन्नो अपने भाई के वास्ते रिश्ता करने को थी, मगर देवर की तबीअत का रुख देखकर अब उसके लिये कोशिश करने लगी।

—:o:—

सातवाँ अध्याय

प्यारी प्यारी बतियाँ

अब सुनिये कि जब कामिनी के ब्याह का मामला पक्का-पोढ़ा हो गया तो बहुत-सी औरतें रनवीर सिंह को देखने को गईं; यानी वह औरतें जो किसी न किसी बहाने से जा सकती थीं। और वजह उसकी यह थी कि कामिनी की निस्बत बहुत से घरों से पैगाम आ चुके थे, और सब यही चाहते थे कि यहाँ आये। उसके हुस्न की दूर-दूर तक तारीफ थी। जो औरत रनवीर सिंह को जाके देखती थी वह गजराज सिंह के यहाँ आके मुबारकबाद देती थी, कि

जोडी हो तो ऐसी। और कामिनी और शिवरानी, घर-भर खुश होता था, कि जो आता है लडके की तारीफ ही करता है, कि ऐसा खूबसूरत पढा-लिखा और लायक और मिलनसार और खूबसूरत लडका है।

शिवरानी—कामिनी तो लडकपन ही से गोरा-गोरा दूल्हा ढूंढती थी।

कामिनी—जैसे तुमको मेरा लडकपन याद ही तो है।

शिव—नही, तू तो मेरी अम्मा के बराबर है। मुझे तेरा लडकपन कहाँ से याद है?

इन्द्र—पहले तो दाई ने कहा, लडका हुआ! लड़का हुआ! फिर सुना कन्या भवानी तशरीफ लाई है। हमने कहा, खैर भई अच्छा, लड़की ही सही।

कामिनी—तुम तो भई बातें करते हो! अब मैं इतनी जरा-सी हो गई कि तुमको मेरा पैदा होना तक याद है।

इन्द्र—अपने सर की कसम याद है।

शिव—कहती थी कि मेरा दूल्हा, चांद-सा होगा, और सबेरे उठके मेरी पूजा करेगा।

इन्द्र—है तो चांद ही-सा। यह बात तो सच निकली।

शिव—तो फिर पूजा भी करेगा। अब आने तो दो। लडका तो क़िस्मतो से मिला है।

गजराज—एक दिन जब यह ज़रा-सी थी तो एक खोचेवाले से मैंने जलेबी लेके उसको दी। माँ ने पूछा अरे यह मिठाई कहाँ से आई? कहने लगी—जलेबी दूल्हा भेजी। यानी, दूल्हा ने मेरे वास्ते जलेबी भेजी।

शिव—अब हम कहला भेजेंगे, कि भई तुम्हारी बहू को जलेबी लडकपन से पसन्द है। इसके लिये रोज़ सबेरे उठके जलेबी भेजा करो।

कामिनी—इनको आज नई बातें सूझती हैं। बडी देर से बखेडे की बातें कर रही हैं। तुमने मुझे कब जलेबी खाते देखा?

इन्द्र—अच्छा तो किस चीज की फर्माइश करें?

कामिनी—तुम्हारी सुसराल से किस चीज की फर्माइश आई थी?

इन्द्र—हमारी सुसरालवाले तो गँवार है।

स्मृता—(इन्द्र विक्रम की बीवी) हाँ, गँवार तो है ही। गँवार न होते तो (आहिस्ता से) तुम गँवारो के यहाँ ब्याहते क्यो?

इन्द्र—(हँसकर) सुना मैंने। कुछ सुनती हो?

शिव—फिर भाई जिसको तुम कहोगे वह तुमको भला छोड देगा?

इन्द्र—पद्मिनी जब जरा बडी हुई और उसने देखा कि अब घर भर कामिनी को प्यार करता है तो एक दिन बडी हसरत से कहने लगी—कि जब से कामिनी हुई, घर भर मेरा दुश्मन हो गया।

कामिनी—मैं छोटी थी ना। मुझे सब बहन से ज्यादा प्यार करती होंगी। छोटे बच्चे का प्यार होता है। बस वह बिगड़ गईं, कि सब मेरे दुश्मन हो गए। बच्चे की बुध कितनी? मैं बचपन में कभी रोती नहीं थी।

शिव—परमेश्वर न करे! तू तो माँ के पेट ही से हँसती हुई निकली थी।

स्मृता—जैसे भाँड़ नकल करते हैं कि हमारा घोड़ा माँ के पेट ही से कुलेलें करता निकाला था।

इन्द्र—यह तो दाइयों वाइयों और घर में सबने कहा था, कि यह लड़की बड़ी गोरी होगी। वैसी ही गोरी हुई।

कामिनी—हमारे घर में तो कोई काला दिखाई नहीं देता।

शिव—जो कोई इसके छेड़ने को कहे कि तोर दूल्हा तो काला है, तो यह रो-रो के ढेर करे, कि वाह, काला क्यों है? जैसी में गोरी हूँ वैसा ही वह भी गोरा है। पूछा, अरी कामिनी तेरी सास कहाँ है? तो कहती, सास चूल्हे गई, चूल्हे गई सास!

कामिनी—(मुँह फेरकर मुस्कराकर) कितना सच बोलती हो बहन!

शिव—अब न सास को चूल्हे डालना कहीं!

कामिनी—तुम पर एक दिन बड़ी मार पड़ी थी, मुझे याद है।

शिव—हाँ, क्यों नहीं। तुझे तो अपनी छठी भी याद होगी।

कामिनी—हाँ, उस दिन नौबत रखी गई थी, नाम रखा गया था, मिठाई भी बटी थी। मैं सबसे बातें करती थी।

शिव—हाँ, बातें तो तू पेट में आने से पहले ही करती थी। भला इसके दूल्हा को मालूम हैं कि यह अंग्रेजी उर्दू नागरी पढ़ी है।

इन्द्र—क्या खूब! यह अच्छी कही। वह अंग्रेजीदाँ आदमी, पूरे साहब लोग। उसको खूब मालूम है। पढ़ी-लिखी न होती, तो वह साफ-साफ कह देता कि मैं शादी न करूँगा। दो-एक बूढ़े बुजुर्गों ने जो पुराने फैशन के हैं बातों-बातों में कहा था कि इनको इन बातों में क्या दखल। जहाँ बाप-माँ चाहेंगे, वहाँ शादी होगी। उसने फौरन पलट के जवाब दिया—सुनिये, किबलाओ-काबा, आपकी और हमारी तहज़ीब, हमारे-आपके खयालात, हमारे और आपके तौर और चलन में बड़ा फर्क है। मैं शादी अपने लिये करता हूँ, न कि माँ-बाप के लिये।

शिव—बड़ों से ऐसी बातें करना कौन-सी अकलमन्दी है?

स्मृता—आजकल के अंग्रेजी पढ़े हुए किसी को नहीं मानते।

इन्द्र—क्या खराब रस्म हम लोगों में है, कि दूल्हा-दुल्हन से कोई बूझे ही नहीं। उनकी राय किसी शुमार-कतार ही में नहीं। अब, बाप चचा ने जिसके साथ चाहा ब्याह कर दिया, पसन्द-गैर पसन्द से कोई वास्ता ही

और इस से बढके और कौन बेवकूफी होगी कि जरा-जरा से बच्चो की शादी कर देते हैं। यह बडी जहालत है। लडका कम-से-कम अट्ठारह बरस का तो हो, और लडकी तेरह बरस की। यह नही कि आठ बरस का लौंडा और छै बरस की लौंडिया।

स्मृता—(भावज से) यह तो बुरी बात है। इतनी कमसिन लडकी का ब्याह तो न करना चाहिए, न इतने कमसिन बच्चे का।

शिव—घरवालो का दो घडी का खेल होता है। खेलते है, हँसते हैं।

इन्द्र—वाह रे खेल! शादी-ब्याह भी दिल्लगी है!

स्मृता—इसमें बडी खराबी होती है। जो लडका जाता रहा, तो लडकी विचारी छै बरस की मासूम उमर भर को गई-गुजरी!

इन्द्र—दीन-दुनिया दोनो से गई-गुजरी। इधर की रही न उधर की रही। और दस बरस के अन्दर जरा लडको का ज्यादा खौफ रहता है।

स्मृता—सच, यह तो बडी बुरी रस्म है!

इन्द्र—मर जाना लडकी का इससे अच्छा, कि उम्र भर रँडापे में काटे। और छै-सात बरस की उम्र में बेवा हो जाय जब वह अच्छी तरह समझती भी नही कि क्या हो रहा है, और क्या मुसीबत उस पर पड रही है। कितने अफसोस का मुकाम है। शादी हमेशा बढके करना चाहिए। लडका अट्ठारह बरस का, लडकी कमसे कम तेरहवें में—बल्कि चौदह बरस की। बच्चे भी ताकतवर पैदा हो। और शादी के जो मानी है, उस तरह पर शादी हो। गुडिया-गुड्डो का खेल न हो। यो तो बेवकूफ लोग कपडे के बच्चे बना के ब्याह रचते हैं बिल्ली की शादी करते हैं। अगर इन्सान की शादी के भी यही मानी हैं तो इस अक्ल पर तीन हरफ! शादी-ब्याह भी एक खेल हो गया!

स्मृता—हम तो इस उम्र की शादी में खुश। मियाँ जाने, बीवी पाई, बीवी मियाँ को जाने। नाखून के बराबर बच्चो की शादी क्या, खिलौना हुआ। बडो-बडो की जिन्दगी का एतबार नही। इन जरा-जरा से बच्चो की जिन्दगी का क्या एतबार हो सकता है?

शिव—आपस में मियाँ-बीवी एक हो गये।

इन्द्र—अच्छी बात है, बुराई क्या है?

इतने में एक बूढी मुसलमान औरत आई। स्मृता और शिवरानी और इन्द्र बिक्रम ने कहा—बुआ, सलाम! उसने दुआएँ दी, जीती रहो! सदा-सुहागिन राज करो, भैया तुम नौकरी पर नही गए? इन्द्र बिक्रम ने कहा—नही आज तातील है। पूछा—कामिनी कहाँ है? कामिनी ने सलाम किया। इन्द्र बिक्रम ने कहा—अब कामिनी का ब्याह है। बुढिया बोली—मबारक। मैं सुन चुकी हूँ। लडकपन में कामिनी बिटिया कहा करती थी कि सुन्दर दूल्हा आयगा। तौन सुन्दर ही मिला।

कामिनी—इस बुढिया को भी मेरे लिये जबान थाई। और किसी बात का होशो-हवास नही है, बस यही याद है।

शिव—यह कहती है , तुम झूठ कहती हो।

बुढिया—हाँ, ठीक। जो कोई जरा कह दे कि तेरा दूल्हा काला आयेगा तो बस महनामथ मचाने लगती थी, कि वाह! काला क्यो आयेगा? जैसी में हूँ, वैसा आयेगा। एक दिन किसी के बच्चे को हाथी पर सवार जाते देखा। यह दुलारी दाई की गोद में बैठी थी। वह लड़का बड़ा गोरा था। जरा-सा लड़का था। कामिनी बिटिया कहने लगी—यह हमारा दूल्हा है! हाथी पर यह हमारा दूल्हा आया है।

शिव—तो यह और भी वाकिफकार आई! अब बताओ!

कामिनी—(आहिस्ता से) इस बुढिया का सर। हाथी भी याद है। लड़का भी याद है। अभी बाप का नाम कोई पूछे तो न याद निकले। मेरा बचपन याद है। झूठी कही की।

बुढ़िया—बड़ी बिटिया, जैसा यह चाहती थी, वैसा ही लड़का मिला। बुरी नजर से अल्लाह बचाए, ऐसी सूरत है कि चाँद में दाग़ है, उसमें नही! अल्लाह इनकी जोड़ी बरकरार रखें!

स्मृता—तुमने कहाँ से देखा? क्या आती-जाती हो?

बुढिया—ए दुल्हन, हमारे लडके की सरकार है। हाथी पर नौकर है। आठ रूपे और खाना। और बरस में दो जोड़े। और शिकार पर खाना रसोई से आता है।

शिव—क्या हाथी भी है? खुश है अपने घर से। भरे-पूरे....

इन्द्र—दो हाथी है। एक हाथी और एक पाठा अभी मोल लिया है। क्या सब हमारी सुसरालवालो की तरह से कँगले ही होते है?

कामिनी, शिवरानी और इन्द्र विक्रम सिह मुस्कराए। स्मृता को बुरा मालूम हुआ। और उसके छेड़ने के लिये तो इन्द्र विक्रम ने कहा ही था। स्मृता तुनुक गई। क्या सबके घर में हाथी ही घूमते है? यहाँ हाथी पले हैं! मेरे मैकेवालो के दुश्मन कगाल हो! कगाल वह, जो दान न दे। इससे बढ के दान वह क्या देते कि इत्ती बड़ी लड़की दे दी। हम आज ही यह मुरग घोडी खुलवा के मैंके भेज देंगे। दे ऐसे को जो जस माने। और जो खाये और गुर्राए और फिर कगाल बनाए, उसको देना अकारथ है। कगाल हो उनके बैरी।

कामिनी, इन्द्र विक्रम, शिवरानी, बुढ़िया सब औरतें हँसने लगी। स्मृता भी मुस्कराने लगी। स्मृता के मैंके से इन्द्र विक्रम सिह को मुरग घोड़ी जहेज में मिली थी।

इन्द्र विक्रम ने कहा—यह अच्छी दिल्लगी है। लड़की दी तो क्या ऐहसान किया। हमारे-से आली खान्दान क्षत्री उसको मिलते कहाँ। और अगर मुरग घोड़ी ले

जायँ, तो फिर किसी रोज यह सुनहरी घोडी (जोरू की तरफ इशारा करके) भी खोल ले जायँ।

देर तक आपस में यही नोक-झोक रही। स्मृता ने कहा—किसी की लडकी भारी नही पडी थी। जब हजारो खुशामदें की, हाथ जोडे, पाँव पड़े, तब मेरे मैकेवालो ने लडकी दी।

इस पर कामिनी और शिवरानी ने भाई का जुम्बा किया और बडी दिल्लगी हुई। कहा—यह क्या कहती हो। ए हम तो वो लोग हैं, अच्छे-अच्छे अपनी लड-कियाँ डाली लगाते है। तुम बीवी हो किस खयाल में!

बुढिया—ए तो दुल्हन, हाथी पाले से कोई कगाल हो जाता है?

कामिनी—(बहुत हँसकर) यह क्या जाने क्या ऊँग रही थी! उलटा समझी।

इन्द्र—इन्होंने इधर-उधर से एक बात पैदा करके यह हाँक लगा दी।

बुढिया—इसमें हँसी की कौन बात?

इन्द्र—हाथी तो हमने सुना रनबीर सिंह खुद चला लेता है।

बुढिया—हाँ, भैया, वह तो खेदे के शिकार को जात हैं। फीलवान हैं पूरे-पूरे। जगली हाथी को पकडते हैं। नैपाल गये, खेरीगढ के जगल गये, नान-पारे के नीचे उतर गये। वह क्या डेरात थोडा ही हैं? तोबा, तोबा!

शिव—लो, अब क्या है! मियाँ ठाकुर के ठाकुर, फीलवान के फीलवान!

कामिनी—हाँ, तो लल्लू ठाकुर कोचवान हो गये। अब हम कोचवान लिखा करेंगे।

शिवरानी का पति ठाकुर लाल बहादुर सिंह घोडे की अच्छी सवारी करता था, और घोडे और जोडी निकालने में भी एक ही था।

शिव—क्यो बुआ, उनके घर की औरतें कैसी हैं? लडाका तो नही हैं?

बुढ़िया—नही बीबी! अरे, बडी मिलनसार। घमड नाम को नही! बडी देनेवाली। वो जो धन्नो ठकुराइन हैं, वही घर की मलकिन हैं। सास दुखिया कुछ नही करती। बडी भक्तिन है। धन्नो दुलहिन तो कामिनी बिटिया को कलेजे में रख लेंगी। है बडी तेज। नाक पर मक्खी नही बैठने देती। उनके सामने किसी की चल नही सकती। बडी घर-गिरस्त हैं। कमला उनकी नन्द बडी हँसमुख लडकी है। अच्छे घर गईं। अल्ला राज करना नसीब करे।

स्मृता—तो आज यह एक नई बात मालूम हुई, कि रनबीर सिंह हाथीवान भी हैं। अच्छा तो है। कामिनी को हौदे पर बिठा लेंगे, और खुद हौदे पर।

बुढिया—बिटिया भी 'भैल, बिरी, धत्' सीख जायेंगी।

कामिनी—(आहिस्ता से)—तेरी नानी की आँख! लाई वहाँ से 'बिरी धत्त'!

इन्द्र—रनबीर सिंह के यहाँ का हाथी छोटा है।

बुढ़िया—अभी बढेगा। कोई बीस बरस का होगा।

शिव—हाथी की, सुना, उम्र बडी होती है।

बुढ़िया—ए बिटिया, सवा सौ बरस तलक जीता है। होता भी तो है ढऊ का ढऊ !

इन्द्र—बहुत से जगल हैं—हम खेदे में गये है। मोरग, कजली वन, सिलहट, रगून।

शिव—मस्त हाथी तो सुना खूनी हो जाता है।

इन्द्र—मकना हाथी सबसे ज्यादा उग्र का होता है। उसके दाँत नही होते। और इस किस्म के हाथियो के पाठो के दतली निकल आती है।

स्मृता—दतली किसे कहते हैं ?

शिवरानी—दतली छोटे-छोटे दाँतो को कहते हैं।

इन्द्र—बस, वह दाँत दूध पीने के वक्त हथनी के चुभते हैं। इससे वह दूध नही पिलाती। और ज्यादा दिन तक दूध पीने से मकना और हाथियो से ज्यादा ताकतवर हो जाता है, और इसी बायस से हरामजादा होता है।

शिव—भई हम तो रनवीर सिंह से कहेंगे, कि भैया हाथी का चलाना छोड दो। जोखम है।

इन्द्र—एक बादशाह का हाथी लखनऊ में एक दफा बिगड गया। फीलवान बादशाह-पास गये। बादशाह ने जलेबियाँ हाथ में रखी, और चुमकार के बुलाया। हाथी बकरे की तरह से, बस, कान दबा के आ गया। पकड के बाँध दिया।

बुढ़िया—वह कजल हाथी था। मैंने देखा था।

स्मृता—कजल हाथी कैसा होता है ?

इन्द्र—बहुत बडे हाथी को कहते हैं।

शिव—यह देव के देव पकडे क्योकर जाते हैं ?

इन्द्र—सहल तरकीब है। खेदे में आसानी से पकड लिये जाते है। हाथी के जगल में शिकार को चले। बीस-पच्चीस, सौ दो सौ हाथी साथ हैं। आदमी और फँदैत बन्दूकें और आतिशबाजी लिए हुए हमराह। खबर आई, फलानी झाँकी पर हाथी है। दो-तीन तरफ से लोग बन्दूकें और आतिशबाजी ले के पहाड पर चढ गये, और बन्दूक सर की। हाथी घबराया, और भागा। दूसरी तरफ से फिर बन्दूक चली, और आतिशबाजी दोनो तरफ छूटने लगी। अब हाथी और भी परेशान हुआ। बौखला के उस तरफ आया जहाँ शिकारी हाथी खड़े हैं। उनके पास से होके निकला, तो दो हाथियो के बीच में आया। अब शिकारी हाथियो पर आगे फीलवान बैठा है, पीछे फँदैत। फँदैतो के पास फदे होते है। इस हाथी के फँदैत ने फदा मारा, और जगली हाथी की गर्दन जकड गई। और वैसे ही दूसरे हाथी के फँदैत ने फदा मारा। अब दोनो हाथियो से जगली हाथी जकड गया, और भागा। इधर फीलवानो ने अपने हाथिया को मुगरी से मारना शुरू किया।

शिव—यह क्यो ? अपने हाथी को क्यो मारते हैं ?

इन्द्र—जिसमें खूब तेज चलें, और उस जगली को भगा ले जायें।

स्मृता—और फंदों से गर्दन में फांसी नही लग जाती?

इन्द्र—फंदे अपने काबू में होते हैं। जब चाहा, तग करके गर्दन कस दी और जब चाहा ढीली कर दी।

कामिनी—और जो जगली हाथी ज़ोर से भागे, तो फँदैत गिर न जाय?

इन्द्र—फंदो को अपने हाथी की पीठ से बाँध देते हैं। दो हाथियो को एक हाथी क्योकर खीच ले जायगा? किसी छाल के फंदे होते हैं। बड़े मज़बूत।

कामिनी—भला, मुगरी को हाथी क्या मानते होंगे। वही मुगरियाँ जिससे छत कूटी जाती है?

इन्द्र—इमली की बनी होती है, और उनमें कीलें लगी होती हैं। खैर। बस वह हाथी दौड़ते-दौडते थक गया और थक के ठहर गया। हमने भी अपने हाथियो को रोक लिया। वह चरने लगे। और वह भी साथ साथ चरने लगा। फिर उसको थान या पड़ाव पर ले गये। वहाँ अपने हाथी से फंदा खोल के बड़े तनावर दरख्त से उस फंदे को बाध दिया; और फिर दूसरे हाथी के फंदे को दूसरे दरख्त से बाँध दिया। अब जंगली हाथी जकड़ा हुआ है।

कामिनी—भाग के कहाँ जाए, और किधर से भागे।

इन्द्र—अब वह भड़क रहा है और बेचैन है। नयी मुसीबत पडी है ना। अब उसको सोने नही देते।

शिव—यह क्योकर? हाथी कोई बटेर तो है नही, कि रात को कू करके जगा दिया!

बुढ़िया—नगाड़ा बजाते हैं। सोने नही पाता। हाथी तो यो भी बहुत से आदमियो में सोता नही। अकेले में आराम से सोता है।

इन्द्र—हाँ, बस कई दिन तक जगाया करते हैं। हाथी को सोना हराम हो जाता है। एक तो कैद, जिसका आदी नही; दूसरे नीद हराम। नशा-सा चढता है। तीसरे, जकडा-जकडाया; फंदे पड़े होते हैं। चौथे, आदमी और पालू हाथी। खाना न पीना; और हर वक्त नक्कारे और सूप और आतिश-बाज़ी का सामान।

शिव—देव को काबू में करना है।

कामिनी—जो ज़रा बिगड जाए तो फंदा धरा ही रहे।

शिव—आदमी की क्या हकीकत है भला!

बुढ़िया—आदमी उसके आगे एक भुनगा है।

शिव—जब रनबीर हाथी पर फीलवान की जगह बैठते हैं, तो तुम्हारा लड़का भी साथ होता है या अकेले ही चलाते हैं?

बुढ़िया—यह उनके मन की मौज है।

इन्द्र—अजी वह खासा अच्छा फीलवान खुद है।

बुढ़िया—आज तो इधर ही से हाथी पर बाग जाएँगे।लड़का मेरा आजकल बीमार है। अपने आप ही हाथी ले जाएँगे और इसी तरफ से जाएँगे।

शिव—(इन्द्र से) हम भी देखते, किस वक्त जाएँगे।

बुढ़िया—बस, कोई चार बजे। मैं चुपके से कह जाऊँगी।

शिव—हाँ, मेरी अच्छी बुआ, जरूर कह जाना!

बुढ़िया—कह जाऊँगी। पीछे एक चरकटा होगा, पैदल, और आप मस्तक पर। कभी झूल होती है, कभी खाली गद्दी। कभी गंगा जमनी हौदा। कभी सूँड पर से चढ़ते हैं। बड़े जियाले हैं।

अब सुनिये,कि ठीक चार बजे वह बुढ़िया आई। कहा—बीवी, हाथी तैयार ड्योढ़ी पर झूम रहा है। अब सरकार बरामद हुआ ही चाहते हैं। शिवरानी और स्मृता और घर की नौकर-चाकर औरतें कोठे पर गईं, और कामिनी को इस बहाने से जगाया कि एक सहगी धूम की निकलने वाली है। कोठे के कमरे पर दोहरी-दोहरी चिकों से देखेंगी।

कामिनी—किसकी सहगी निकलने वाली है, बहन?

शिव—कोई जौहरी है, परागदास।

कामिनी—मालूम होता है, अभी देर है। आवाज नहीं आती।

स्मृता—(मुँह फेरकर मुस्कराती हुई) इसमें भी खेदे के पकड़े हुए हाथी होंगे!

6228

शिव—(हँसी जब्त करके) लो! जरूर होंगे।

बुढ़िया—वह सहगी क्या, जिसमें हाथी न हो!

शिव—एक निशान का हाथी बरात के आगे-आगे होगा, और पीछे पीछे भी बहुत से हाथी होंगे।

स्मृता—तुम हाथी चला लेती हो, बुआ?

बुढ़िया—हाँ, मैं खेदे से बेफन्दे के हाथी पकड़ लाऊँ।

कामिनी और शिवरानी और स्मृता बहुत हँसी। इतने में बाजार से किसी ने बाँसुरी बजाई और बुढ़िया ने कहा 'अब आते होंगे' कि वैसे ही हाथी आया।

कामिनी—ऐं। यही सहगी हाथी! वाह!

स्मृता—यह हाथी भी सहगी में जाता है।

कामिनी—अच्छी सहगी है देखी तेरी कालपी औ' बावन पड़े उजाड़।

जब हाथी करीब आया तो जरा बिगड़ा। इन सबने देखा कि रनबीर सिंह फीलवान की तरह मस्तक पर सवार है। हाथी जरा बिगड़ा तो उसने सँभाल लिया। और उसी मुकाम पर रोककर इन्द्र विक्रम सिंह को बुलाया। जब तक आदमी जावे और वह कपड़े पहनें और आयें तब तक सब इस हाथी और इसके फीलवान को देखा की। कामिनी ने भी पहचाना, मगर किसी पर जाहिर नहीं

किया। जान-बूझ के बेवकूफ बनी रही। जब इद्र विक्रम हाथी पर सवार हो लिये और हाथी रनबीर सिंह ने चलाया तो इधर चुहल की बातें होने लगीं; और कामिनी को सबने छेडना शुरू किया। और कामिनी अपने दिल में हँसती थी कि ये अपने जान मुझे बनाती है और मैं उनको बनाती हूँ।

स्मृता—फीलवान का लौंडा बडा खूबसूरत है।

शिव—कामिनी का ब्याह उससे हो जाय तो कैसा?

कामिनी—(जान बूझकर) क्या तुम को हो गया है! बडी बहन होके शरम नही आती हैं, छोटो से दिल्लगी करती हो!

बुढिया०—इसमें दिल्लगी की कौन बात है, रानी?

कामिनी—यह बुढिया तो और भी बारह बरस की बनी जाती है।

स्मृता—लडका तो गोरा है। बहुत खूबसूरत।

शिव—हाँ। और कामिनी की और इस फीलवान की जोडी भी अच्छी है।

स्मृता—फीलवान-सा मालूम भी नही होता।

शिव—हम तो आज इन्द्रजी से कहेंगे कि हमको यह फीलवानवाला बहुत पसन्द है। कामिनी के वास्ते रिश्ता भेजो।

कामिनी—अब मैं उठके चली जाऊँगी।

स्मृता—तुमको इन बातो में क्या दखल है; लडकी की जात को!

कामिनी—बडी वो बन के आई हैं।

स्मृता—अच्छा तुमने इस फीलवान को देखा कि नही?

कामिनी—फीलवान ऐसे ही होते है? मुझे सिड़न बनाती हो? फीलवान मखमल का ऐसा कोट पहनते है कही?

बुढिया—ए रानी-बेटी! हाथी पर जो काम करते हैं उनको सुल्तानी बानात की वर्दियाँ मिलती हैं।

कामिनी—यह बुढिया फिर बोली।

स्मृता—अच्छा, फीलवान नही, तो फिर कौन है?

कामिनी—किसी बडे रईस का लडका मालूम होता है, तुम चाहे फीलवान छोडके चरकटा बता दो।

इस पर बडा फरमाइशी कहकहा पडा। स्मृता और शिवरानी के पेट में बल पड-पड़ गये। बुढिया भी बहुत हँसी। और और वे भी हँसते-हँसते लोट गईं।

स्मृता—यह अच्छी फबती कही। पराये लडके को कोई ऐसा कहता है?

कामिनी—तुम्ही मो कहो, तुम्ही वो कहो।

शिवरानी—अच्छा यह बताओ कि लडका कैसा है?

कामिनी—मुझे दोहरी-दोहरी चिको से क्या मालूम होता?

शिव—इसके साथ ब्याह हो तो कैसा?

कामिनी—मुझे हँसते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?

स्मृता—हँसते ही घर बसते हैं। तुम इसी फीलवान की घर-बसी हो।

कामिनी—तुम आज खूब गालियाँ दो!

बुढ़िया—गालियाँ नहीं, सच कहती हूँ!

शिव—मगर आज तक सिवाय फीलवान के और किसी को मस्तक पर बैठ कर हाथी चलाते न सुना, न देखा।

स्मृता—नई बात तो है।

शिव—कामिनी खूब हाथी पर हवा खाया करेगी।

स्मृता—ले ओ अब फीलवानन बनके भी न हवा खाएगी तो कब खायेगी।

शिव—चलो गई फीलवान को तो क्या हुआ, ऊँची सवारी तो मिली।

स्मृता—और क्या। फीलनशीन तो कहलाएगी।

बुढ़िया—पाठा बड़ी दिल्लगी करता है। अभी बहुत छोटा है। नौ सौ को लिया है। इसमें तीन सौ बीच का दलाल खा गया। अब सवारी होने लगी इस पर। यह जब बहुत छोटा-सा था, तब बिकने आया था। किसी ने मोल न लिया। जब सस्ता मिल जाता। अब दो हाथी हैं। दो आदमी हाथी पर हैं, और दो चरकटे। गाँव से गन्ना कट-कटकर आता है, वही खिलाते हैं। और आठ सेर की रोटी बड़ा पाता है और छै सेर की छोटा। शाम को रोटी दी जाती है। एक-एक रोटी सबेरे के लिये बचा रखते हैं।

रात को कोई आठ बजे के बाद इन्द्र बिक्रम सिंह वापस आये और अपने मकान पर ही उतरे, जब हाथी उनके लिये रोक लिया गया। घर में आये तो शिवरानी ने कहा—मालूम होता है तुम खाना खा के आये हो। नहीं तो तुम और इतनी देर तक वे खाये रहते! इन्द्र विक्रम ने कहा—हमारे दोस्त ने बाग में सवेरे से शाम के खाने का इन्तजाम किया था। वह अंग्रेजी खयालात का आदमी है। खाना-पीना, पोशाक, नौकर, सामान सब अंग्रेजी ढंग का। मेज पर खाना खाता है; मगर हिन्दू आदमी और नौकर। सब अंग्रेजी साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए। मछली पकी थी। बटेर, हिरन के कबाब। हरमुल का कोरमा। दो एक अंग्रेजी फैशन के खाने। अच्छा खाने का शौक रखता है। कई किस्म के मेवे।

शिवरानी ने पूछा—उड़ी भी होगी। उसके बगैर तुम्हारे खान्दान के छत्री कब रहने वाले हैं।

इन्द्र विक्रम ने कहा—वह भी थी, मगर कम-कम, और हलकी विलायती शराब। थोड़ी-थोड़ी, एक जरा सरूर के लिये—यह नहीं कि बोतल की बोतल चढ़ा गये।

शिवरानी ने पूछा—हाथी वहीं और तो नहीं बिगड़ा था?

कहा—नही बहुत सीधा हाथी हैं। पूछा—जब एक छोड दो हाथीवान हैं तो अपने आप फीलवान बनने से क्या फायदा? मुफ्त की जोखम।

इन्द्र बिक्रम ने कहा—जोखम कुछ भी नही है। मश्क हैं। जिस्म में फुर्ती आती है। कभी घोडे पर सवार होकर दो-ढाई कोस कडकडा दिया, कभी हाथी पर हवा खाने निकल गये, बिरो-धत करते हुए। फीलवान या चरकटा भी साथ हो लिया।

आराम करने का वक्त आया तो सब अपने-अपने ठिकाने गये। कामिनी लेटे-लेटे सोचा की अब तक तो कुल बातें शादी के सम्बन्ध में मेरी मर्ज़ी के माफिक हो रही हैं। लडका ऐसा अच्छा मिला कि शहजादियो को भी न मिलेगा। एक तो पढा-लिखा, उजड्ड जाहिल नही, दूसरे चाल-चलन अच्छा। हज़ार सिफतो की एक सिफत तो यह है। और खान्दान का अच्छा। फिर जवाँमर्द छत्री। और खयालात उम्दा। खाने-पीने का शौक। और इस पर लख-लुट नही। मुझे देख ही चुका है, और न भी देखता तो पसन्द करता। हम दोनो में खूब निभेगी। . सुना तो यही है कि धन्नोरानी बडी मिलनसार हँसमुख हैं। जरा मिजाज की तेज तो है। इससे मुझे क्या। सुना, उनकी बहन कमला भी सीधी है। हँ-हँ! अगर मैं किसी जाहिलो के घर जाती, जो औरतों के पढने-लिखने को गुनाह समझते होते, पूरे उजड्ड छत्री होते, कि लडकी मार डालने में ही पुन्न समझते—किसी के साले न बनेंगे!—तो भूत से बत्तर हाल हो जाता। परमेशर ने अच्छी सुन ली। अब मेरे जौहर की, थोडा हो या बहुत हो, कही कद्र तो होगी। जैसा मैंका है, वैसी ही सुसराल।

इन खयालात में कई मर्तबा करवटें जो बदली तो शिवरानी ने एक दफा पूछा—कम्मन, आज तुम्हें नींद नही आती? यह क्या बात है, जब मेरी आँख खुली, तुमको जागते ही पाया।

कामिनी—बहन, मैं आज दिन को जरा सो गई थी।

शिव—हाँ, जब ही करवटें बदल रही हो। सोने का ध्यान करो।

कामिनी—सो रहूँगी। कुछ बेचैन थोडा ही हूँ।

इतने में बारह पर दो बजे।

शिवरानी—अरे, दो बज गये!

कामिनी—हाँ, एक जब बजा तो हमने सुना था।

और एक—दो बजने को कोई दो मिनट गुजरे हुए होगे, इतने में कमरे की क्लाक घडी में भी दो बजे। कामिनी ने कहा—बस यही घटा ठीक दो बजे—और वह दो-चार मिनट उधर क्या और इधर क्या—दो का वक्त है।

शिवरानी—बारह पर दो बजे। अब सो रहो।

एक रोज कामिनी के चचा की लडकी राधिका, जो सिन में कामिनी से कोई दो डेढ़ बरस बडी होगी, देहली से, जहाँ वह ब्याही थी, अपने चचा

गजराज सिंह के यहाँ यानी अपने मायके आई। राधिका कई बरस के बाद मायके आयी थी। कामिनी की हमजोली साथ खेली हुई तो थी ही, अकेले में इन दोनों की बातें हुईं।

राधिका—कामिनी, जब मैंने सुना कि कामिनी की शादी होनेवाली है तो खुशी तो हुई, मगर सोचती थी कि क्या जाने दूल्हा कैसा हो, सास से कामिनी की बने, न बने। अच्छा घर है, कि बुरा घर है। एक दिन मेरी सास ने कहा कि बहू, तेरी बहन ऐसे अच्छे घर जाती है कि राज करेगी; एक और बात यह है कि ऐसा लड़का न मिलेगा। उसने लड़के की इतनी तारीफ की कि मेरा जी खुश हो गया। वह तारीफ़ें करती थी और मेरा कलेजा हाथ भर का हुआ जाता था। उसने कहा, बलज़ोर सिंह का घर बड़ा भरा-पूरा घर है। दूध-पूत, धन-दौलत सब है; और इस लड़के की निस्बत कहा कि मालूम होता है कि जैसे नारायन ने अपने हाथों बनाया है। नारायन का सरूप है और असल छत्री।

कामिनी—बहन, पहले तो मुझे एक ऐसे खूँटे बाँधे देती थी, जो गँवार का लट्ठ और उजड्ड, मूरख जाहिल है। सुनते ही मेरे दिल पर ऐसा असर हुआ कि बेकाबू हो गया, बिलकुल, और हाथ से जाता रहा। सोचती थी कि हे परमेश्वर अब क्या करूँ, किससे कहूँ! कौन बचानेवाला है।

राधिका—ग़जब ही हो गया था। हमें सुनकर रंज हुआ । यह इनको सूझी क्या थी?

कामिनी—भाई लड़ते थे कि हम ऐसे जाहिल को न देंगे। मगर और कोई उनकी तरफ से नही बोलता था। सबने एका कर लिया था। मैं दिन-रात रोया करती थी।

राधिका—वह था कौन, और इन सबको आखिर हो क्या गया था? जान-बूझ के झोंके देते थे। बड़ा ही गजब हो गया था। मैंने भी कुछ-कुछ सुना था।

कामिनी—मैं तो बिलकुल सिड़न हो गई थी। होश बाकी नही थे। मुझे अपना हाल अच्छी तरह याद भी नही है, कि मैं क्या सिडनपन करती थी और किस तरह रहती थी।

राधिका—अब उसका जिक्र ही न करो। मै लड़के को देखती। मगर कहाँ से देख सकूगी। बड़ी तारीफ सुनी है। अब देख ही लेंगे। कोई जल्दी थोड़ा ही है।

कामिनी—एक बात कहूँ?—न कहूँगी!

राधिका—कहो, कहो। मेरा मुर्दा देखे, जो न कहे। बता।—अब यही तो बुरा मालूम होता है, बस, हाँ। क्या?

कामिनी—तुम कही कह दो तो मुझे बराबरवालियाँ बनाने लगें; और मुझे शर्म आये।

राधिका—तुम सिड़न हो। बताओ, कलेजा न पकाओ। अच्छी बात का छिपाना क्या?

कामिनी—मैं देख चुकी हूँ :

राधिका—हां ? (खुश होकर) कहां देखा ? रास्ते में जाते हुए ?

कामिनी—यह न बताऊँगी। बस इतना कह दिया, कि मैं देख चुकी हूँ।

राधिका—अच्छा यह बताओ कि है कैसा ? जैसी तारीफ सुनी वैसा ही है ना ?

कामिनी—बेशक है। बल्कि जो सुना, उससे अच्छा, और कहीं अच्छा। सच यों है, कि तारीफ नहीं कर सकती। एक अच्छा और एक बहुत अच्छा। मैं तो बस देख के दंग हो गई।

राधिका—बड़ा जी खुश हुआ। भला, लाडली का-सा है ? उम्र में तो लाडली बड़ा है, मगर शकल-सूरत उसी की-सी है या नहीं ?

कामिनी—अरी बहन, लाडली कौन चीज़ है। लाडली की असल हक़ीक़त क्या है ? लाडली उसके मुक़ाबिल में कोई चीज़ नहीं है। मैंने तो ऐसा देखा नहीं।

राधिका—हां ? अच्छा ? अब यह भी बता दे कि कहाँ देखा, क्योंकर देखा, किसने दिखाया।

कामिनी—इधर से हाथी पर सवार होकर जाता था। मुझे इन सबने दिखाया। अपने जान तो चकमा देते थे, मगर मैं ताड़ गई। उन्होंने अपने नज़दीक मुझको चकमा दिया और मैंने उनको चकमा दिया। मैं तो दिलो-जान से चाहती थी कि किसी तरह देखूँ। मुझसे कहा, कामिनी, यहां चिक के पास आओ, देखो, एक हाथी जाता है। पहले तो आपस में कुछ काना-फूसी की। मैंने सुन लिया—वो हाथी है। और एक नई बात यह सुनी कि हाथी वह खुद चलाता है। और सुना क्या मानो, अपनी आंखो देखा। भाई को लेने आया था। यहाँ हाथी को ठहरा लिया। भाई भी सवार हो लिये। भाई से बड़ी दोस्ती है।

राधिका—यह कहो, तो तुम देख चुकी हो।

कामिनी—हां, देख चुकी हूँ। और न कहूँगी।

राधिका—बस यही तो ऐब है। मैं मार बैठूंगी। मुझसे क्यों छिपाती है। मुझे उलझन होती है। मैं जो कोई अच्छी बात सुनूंगी तो खुश हूँगी कि बुरा मानूंगी ?

कामिनी—खुश होगी।

राधिका—ए तो फिर इतना छिपाती क्यों थी ?

कामिनी—शर्म आती थी।

राधिका—वाह री शर्म। अच्छी शर्म है। और शर्म किससे, मुझसे। वाह, यह भी कोई बात है।

कामिनी—राजदुलारी को बुलवाते।

राधिका—बुलाओ।

कामिनी—मगर वहाँ कई और भी बराबरवालियाँ हैं। बराबर बराबर की हमजोलियाँ।

राधिका—कमला को तुम जानती हो?

कामिनी—मुझे क्या मालूम?

राधिका—अच्छी औरत है।

कामिनी—वह कौन है?

राधिका—तुम्हारी ननद।

इतने में किसी ने एक गीत की तान छेड़ी।

कामिनी—नींद आती है।

राधिका—अब रात को सोना।

कामिनी—अब हाथी को देखा तो जी खुश हो गया। उनमें से एक बोली, हमारी शादी न हुई होती तो हम माँ-बाप से कहते कि इसी के साथ हमारा ब्याह हो। दूसरी बोली, जो औरत इसको ब्याह के जाय, वह बड़ी खुशनसीब है।

राधिका—उसने तुझको नहीं देखा?

कामिनी—नहीं! वह कहाँ से देखते। मैंने खूब गौर से देखा, और सच यह है कि कोई ऐसी ही बड़ी वह हो तो हो, नहीं तो इसमें कोई शक नहीं, बहन, कि अगर देखो तो जी चाहे कि उम्र भर देखा ही करो। और सच तो यह है कि अँधेरे-उजाले अगर लिपटा भी ले तो चूँ न करो, पी जाओ; मैं सच कहती हूँ।

राधिका—तुम तो रीझ गईं।

कामिनी—और क्या तुम न रीझ जाओ! हजार जान से आशिक न हो जाओ तो सही।

राधिका—जो तुम्हारा प्यारा है वह हमारा प्यारा है।

कामिनी—घरू तक रीझी।

राधिका—ए घरू मुई काहे में है। जब तुम्हारी-सी खूबसूरत चाँद-सी लड़की देखते ही रीझ गई तो और की कौन कहे। और घरू कम्बख्त काहे में है!

कामिनी—हाथ-पाँव ऐसे सुडौल हैं कि मैं क्या कहूँ—देखने से ताल्लुक रखता है।

राधिका—उम्र क्या है?

कामिनी—ए होगा यही कोई बीस-इक्कीस बरस का।

राधिका—जोड़ अच्छी है, इसमें शक नहीं।

—:o:—

आठवाँ अध्याय

ऐन किरयाल में गल्ला।

एक रोज एक पुरानी नाउन ने शिवरानी से पूछा कि कामिनी बीबी के ब्याह का क्या हुआ। शिवरानी ने उस नाउन से कहा—कामिनी का ब्याह तो ठीक-ठाक हो गया, अब पंडित साइत देख दें तो शुभ घडी भँवरी फेरी जावे। नाउन धक् से रह गयी। पूछा, दूल्हा यही है, या कही बाहर। मालूम हुआ कि यही है। नाउन ने खोद-खोद के पूछना शुरू किया। शिवरानी को क्या मालूम था कि यह किस फेर में आई है। सब हाल साफ-साफ बता दिया। उसने सुनकर जरा नाक-भौं चढाई, तो शिवरानी ताड गई कि कुछ दाल में काला जरूर है। यह नाक-भौं चढ़ाना बेसबब नही है। इसमें कोई न कोई भेद है। नाउन से बातो-बातो में यह भी जिक्र किया कि सुनती हूँ, लडका बहुत खूबसूरत है और हाथ-पाँव सुडौल है। उसने भी तारीफ की कि लडके के अच्छे होने में कोई शक नही, मगर एक बात बुरी है। शिवरानी को अब मजबूर होकर पूछना पडा कि वह बात क्या है। नाउन बोली—ए बीबी, मै क्यो बीच में बुरी बनूं। आप लोग अपने आप दरयाफ्त कर लीजिए। मै परजा, आप राजा। आप की जड बुरी करूँ, सबसे बुरी बनूँ। रही-सही जजमानी भी जाय। शिवरानी ने बडा इसरार किया, बहुत-सी कसमें दी, और वादा किया कि भरपूर इनाम दूँगी। इस पर नाउन ने कहा—ऐ बीवी, देखने में तो लडका बहुत अच्छा है। मगर दो बडे ऐब है। एक तो, थू! थू! —मिरगी आती है। दूसरे खूनी बवासीर है। और तीसरा बहुत बुरा ऐब यह है कि जुलाहिन, चमारिन, गड़िन-बेडिन किसी पर बन्द नही। कोई हो! अब आजकल एक घोसिन आती जाती है। गोरी-सी, लाम्बी-लाम्बी। सैकडो ही रुपये उसको खिला दिये, और खिलाता है, और वह चैन करती है। तुमने देखी होगी। दूध बेचने के बहाने जाती है। कहो तो मै आज ही शाम को दिखा दूँ। बस कोई दो घडी में वहाँ जायगी, और आठ-नौ बजे उसके घर से अपने घर जायगी। उसका मर्द जाता रहा है। शिवरानी को ये खबरें सुनकर रंज हुआ। कुछ देर दिल में सोचा कि इन्द्र विक्रम और चचा से कहूँ कि दरयाफ्त तो करें, मगर खयाल हुआ कि शायद झूठ हो, पहले उस घोसिन को तो आने दो। उसकी चाल-ढाल से ही मालूम हो जायगा। नाउन को इजाजत दी कि घोसिन को लेकर बगिया के दरवाजे की तरफ से आना, उधर से न आना। जब वह चली गई तो स्मृता ने आके पूछा—भाभी, आज इस नाउन से क्या सलाह-मशविरे हो रहे थे। घटो बातें

हाल ही न हुई। शिवरानी ने सब हाल बताया, और यस्में देकर कहा, किसी से कहना नहीं, अभी जबान से न निकालना, वह घोसिन आये तो बातो बातो में उससे पूछेंगे। चलो बगिया में बैठें। एकान्त में स्मृता और शिवरानी बगिया में गई और घर की तरफ का बगिया का दरवाजा बन्द कर लिया, जिसमें और कोई न सुने, और घोसिन और नाउन की राह देखने लगी। नाउन अपने वादे पर ही आई और घोसिन को साथ लाई। घोसिन कोई बीस बरस की औरत बडी गोरी चिट्टी, गोल बदन, लम्बा कद, सफेद बगुले के पर की-सी धोती, जिसका काला, चौडा-चौडा किनारा था, पहने हुए आई। दूध की मटकी सर पर। शिवरानी ने कहा—घोसिन, तू बडे सलीके से रहती है। वह मुस्करा-कर बोली—सरकार ही लोगो की बदौलत अपना और गोरु का पेट पालते हैं। मैं अकेली घर में हूँ। एक आदमी को नौकर रख लिया है। वह बैला-गायो की सेवा करता है। मैं दूध दही मलाई बेच के आध सेर आटा पैदा करती हूँ, और पडकर अपने घर सो रहती हूँ। किसी न किसी तदबीर से पेट पालती हूँ।

शिवरानी ने जो उसको गौर करके देखा, तो यकीन हो गया कि औरत बाँकी है। पूछा—तुम्हारे यहाँ गाय ज्यादा है कि भैंस?।

घोसिन—भैंस कोई नही है। दो जोडी गोई से खेती होती है, और गैयन का दूध-दही खिलाती हूँ।

शिव०—यह दूध कहाँ लिये जाती है?

घोसिन—ए बहू, यह रातब हैं। सेर भर दूध ठाकुर के बेटवा के लिये शाम को जात है।

शिव०—कौन ठाकुर के बेटवा?

घोसिन—रनबीर सिंह नाम हैं।

शिव०—उनकी औरत कहाँ है, घर ही में रहती है?

घोसिन—उनका तो बिया ही नही हुआ। घन्नो ठकुराइन उनकी बडी भावज है।

शिव०—घन्नो कितना दूध रोज लेती हैं?

घोसिन—वह हमको अन्दर जाने नही देती। कहती है, यह रनबीर सिंह की दुल्हन है, और जान क्या औल फौल लगाती है। एक दिन मैं गई थी, कहने लगी—जा जा, हमको ऐसी बाँकी घोसिन नही चाहिए।

स्मृता—तुम्हारा मियाँ तो है नही, फिर तुम यह बन-ठन के क्यो रहती हो? मिस्सी की धडी भी जमी है, और सुर्मा भी आँखो में लगा है और मेंहदी भी रची हुई है। घोसिन तो मालूम ही नही होती।

घोसिन—ए बहू, हमको भी पहनने-ओढ़न का शौक है। मर्द नही रहा, नही सही। हम मर जाते तो वह क्या करता, दूसरी करता या न करता? हमको जब हँसने-बोलने को उससे अच्छे मिलते हैं तो हम घोसी काहे को ढूँढ़ें।

स्मृता—इससे तो दाल में काला-काला पाया जाता है। रनबीर सिंह से साँठ-गाँठ ज़रूर है।

घोसिन—बीबी, लो अब हम किसी बडके आदमी को किस तरह न चाहा करें। वह तो मेरे ऊपर जान देत है। कोई सत्तर का महीना पड जाता है। फिर मैं उनको छोड के कहाँ जाऊँ। भला घोसी दाढीजार क्या खाके देगा ?

शिव०—रोज जाती है ?

घोसिन—रस्सिया तुडा के वह तो मुझे घर डाले लेता है !

शिव०—और औरतें भी आती होंगी।

घोसिन—और कोई आये तो लहू पी लूँ। ब्याह करने का था, मैंने जाके कह दिया कि अपना और उस लडकी का लहू-पसीना एक करूँगी। हाथ जोड के कहने लगा कि वह लौंडी, तुम रानी होके रहना। हमने कहा, बस उसका नाम न लेना।

शिव०—ब्याह कहाँ होने को था ?

घोसिन—कोई ठाकुर हैं।

स्मृता—तो तुम शादी नहीं होने देती !

घोसिन—कभी न होने दूँगी। और जो होगी, तो मैं भी घर पड जाऊँगी और आधा-आधा बटा लूँगी। औलाद तो उसके उस जोरू से होगी नहीं। मिरगी की बीमारी है। और मैं कहीं न कहीं से औलाद की फिक्र कर लूँगी। ले, अब देर हो गई, जाने दीजिए। वह अमरैयो के तले सैंकडो चकफेरियाँ कर चुका होगा और बहुत झल्लाएगा। फिर हाथ जोडेगा और कसमें लेगा। कल फिर आऊँगी।

यह तो उधर चलती बनी इधर नाइन ने कहा—सुन लिया, बीवी ?

शिवरानी ने कहा—हाँ सुना। औरत बडी निधडक और बेहया है।

नाउन बोली—उनका काम ही यह है। ये तो लश्कर के साथ रहनेवालियाँ हैं।

स्मृता ने कहा—मगर है अच्छी, बुरी नही है।

इतने में नाउन भी उठकर चल दी। और शिवरानी और स्मृता ने बगिया का दरवाज़ा खोला तो स्मृता को उसके पति इन्द्रविक्रम सिंह ने देखा। उसको यह नहीं मालूम था कि उसकी बहन शिवरानी भी वहीं थी। दिल्लगी-दिल्लगी में बीवी के कान में कहा—मालूम होता है किसी मर्द को इस बगिया में बुलाया था, तभी दरवाज़ा बन्द कर लिया। वह मुस्कराकर बोली—भैना से पूछो अपनी, उन्होंने ही किसी अपने अगले-पिछले को बुलाया होगा। शिवरानी को जो बगिया के अन्दर जाके देखा तो झेंप गया और सोचा कि बीवी बहुत तेज़ वह गई। और इधर स्मृता ने और ज्यादा झेंपाने के लिये शिवरानी से कहा—अरे भाई देखो, तुम्हारे मुख्तारक छोटे भाई क्या पूछते हैं, कुछ ताक

हुआ है। मियाँ और भी झेंपे। कहा—नहीं, मैं कुछ नहीं पूछता। न बड़े का लिहाज, न छोटे का।

स्मृता बोली—फिर ऐसी बात क्यों कही? और लिहाज जो तुम्हारे घर में सबने भून खाया है। हम भी वैसे ही हो गये।

शिवरानी—वाह, भैया, वाह! अच्छे घर कामिनी को झोंका था।

इन्द्र—क्यों, क्या खैर तो? यह क्या बात हुई?

स्मृता—कामिनी का परमेश्वर ही मालिक है। बड़े बूढ़ों ने ढील दे दी, और छोटों का यह हाल है। कितनी तारीफें थीं। ऐसा है और ऐसा है। आज सब सुन लिया।

इन्द्र—अरे भाई, कुछ कहोगी भी?

स्मृता—उसको कोई बीमारी है?

इन्द्र—किसको? रनवीर को? ठाकुरों में तो कोई ऐसा तन्दुरुस्त आदमी नहीं। यह तुमने क्या सपना देखा?

शिव—सपना नहीं देखा। कानों से सुना और उसका सबूत हो गया।

स्मृता—ये सपना ही लिये फिरते हैं।

इन्द्र—अच्छी पहेलियाँ बुझवाती हो, वाह! जिसका सर, न पैर। ऊल-जलूल।

शिव—अच्छा, इसी बात पर जाके देखो तो वह लड़का इस वक्त क्या करता है। दौड़ते जाओ।

इन्द्र—अच्छा, यह माना।

रास्ते में सोचा कि इसके मानी क्या! इन्द्र विक्रम ने वहाँ जाकर सुना, कल से गुमान सिंह तहसीलदार के घर पर हैं। वहाँ गये—सलामालेकुम, कल से कहाँ हो, मियाँ!

रनवीर—अजी एक बेगार में फँसे हैं। मरदुम शुमारी का झगड़ा है। उसी में हम भी मदद दे रहे हैं।

थोड़ी देर बैठकर यह चला आया, और आके सब हाल कहा, और कसमें खायीं कि लड़का अच्छा है।

शिवरानी—अजी लड़का चाहे करोड़ों रुपयों में तौलने के काबिल हो, इससे क्या होता है। जब मिरगी आती है और खूनी बवासीर है तो लड़की को भाड़ में तो झोंका न जायगा।

शिवरानी—परमेश्वर ने बहुत बचाया। हमारी आबरू रख ली। नहीं, हम तो कामिनी को दे ही चले थे। कामिनी तो दुश्मनों को गई ही गुजरी थी। अपनी किस्मत से बच गई। यों तो कोई क्या जानता है कि किसके करमों में क्या बदा है। मगर जान-बूझके तो कोई अपने बच्चे को झोंक नहीं देता।

खैर! इन्द्र बिक्रमसिंह तो कलकत्ते चले गये, इधर हँडिया पकने लगी। गजराज सिंह ने भी सुना और एक हफ्ते के अन्दर ही अन्दर कुछ औरतो को बलजोर सिंह के यहाँ भेजा कि इधर-उधर की बातें करके यह जिक्र भी छेडें कि गजराज सिंह ठाकुर तो कहते है कि हम अपनी लडकी बलजोर सिंह के यहाँ न देंगे। इन औरतो ने यही जाके कहा। कोई आज गई, कोई कल गई। इसी तरह कई औरतें गईं, और सबने यही कहा। तब तो धन्नो चकराईं कि यह क्या बात है। उनके यहाँ एक बूढा होमी कल्यान नाम का नौकर था। उसका लडका गजराज सिंह के यहाँ माली था। धन्नो ने टोह लेने के लिये उसको भेजा। उसने आन के कहा कि खैर, ठीक है, यहाँ वह लडकी न देंगे। धन्नो ने चैनब की माँ को कहला भेजा। उसने भी अफसोस के साथ आके यही कहा। धन्नो को बडा रंज हुआ। इत्तफाक से उसी वक्त रनबीर सिंह बाहर से आये, और धन्नो कुछ कहने भी न पाई थी कि उसने खुद हसरत के साथ कहा—लो भाभी, हमारी शादी का तो फटाका हो गया। धन्नो ने कहा—हम सात-आठ दिन से सुन रहे है। खाना-पीना हराम हो गया। रनबीर सिंह ने एक ठंडी साँस भरी और चले गये। सब मामला भरभंड हो गया था।

बना बनाया घर ही बिगड गया शेख चिल्ली का! मनसूबा होकर बिगड गया था। मगर बडी खैरियत की बात हुई। सिविल सर्जन ने एक दफा खुद गजराज सिंह से बातो-बातो में कहा कि आपके ठाकुरो में रनबीर सिंह नाम का जो लडका है, उससे बढ के तवाना तो इस शहर भर में कोई भी नही है। गजराज सिंह ने बहुत से सवाल किये तो पूरा-पूरा यकीन हो गया कि जो हमने सुना था वह गलत है। आके बीबी से कहा। वह बडी खुश हुईं। इतने में कामिनी की खुशनसीबी से इन्द्रविक्रम सिंह का खत आया कि वह नाउन कुटनी है और ठाकुर जगजीत सिंह डाकू का लडका उसको पढा-पढाकर भेजता है, ताकि कामिनी का ब्याह उसके साथ हो जाय। औरतो ने जो खोज-बीन की तो यह खबर सही निकली, और नाउन को एक रोज इस कदर जलील किया और इतना बुरा भला कहा कि फिर कभी उसने मुँह न दिखाया और जब बाहर निकली तो एक ठाकुर ने अँधेरे में नाक उडा दी—हातृतेरे की! और सारे शहर में उसके कुटनेपने का हाल मालूम हो गया। और गजराज सिंह ने खुद बलजोर सिंह के पास आके उनसे कहा कि बहादुरो और मर्दों का कौल वह होता है कि जान से फिर जायें, मगर कौल से न फिरें। हमने लडकी आपके यहाँ दी, और आपके नामी-गरामी घराने से जो पैबन्द हमसे हुआ वह हमारे लिये बडे भारी फख्र की बात है।

—०—

नवाँ अध्याय

परियो का झुरमुट

फूल खिले, फले शजर, अब्र उठा, हवा चली।
आ गई फस्ले-नौबहार—अव्वल पियादा पा चली।

—पियादे के पाँव से चली तो कहाँ पहुँची? सीधी ठाकुर गजराज सिंह के मकान पर। ठाकुर गजराज सिंह का मकान आज परिस्तान बना हुआ है। सारी खुदाई की परियो का आज यहाँ झुरमुट है। परिस्तान की परियो को भी शरमानेवाली परियो का आज यहाँ जुटाव है। इन्द्र के अखाडे की जितनी थी, सबका आज यही जमाव है।

यह झुरमुट और जमाव और जुटाव बेवजह नही हो सकता। इसकी कोई खास वजह जरूर है। वह वजह यह है कि जब कामिनी के दिल पर बडा धक्का पडा था, जब उसका सोना-खाना हराम था, और अगर सोती भी थी तो सोते से चौंक-चौंक पडती थी, जब कामिनी अपने आपे में न थी, जब कामिनी बिलकुल बेबस और बिलकुल बेकस हो गई थी, जब उसको खुदा जाने क्या हो गया था, जब कामिनी कभी रोते-रोते आँसुओ का तार बाँध देती थी और कभी आप ही आप बरखाश होकर, हँस देती थी, मगर किसी की समझ में नही आता था कि इस बेमहल हँसने रोने का सबब क्या है, जब कामिनी की सारी शोखियाँ वहशत से बदल गई थी, जब कामिनी-सी परी, कामिनी-सी हूर की सूरत ऐसी भयानक हो गई थी कि देखने से डर मालूम होता था—वह कामिनी जिसको एक बार देखने से इन्सान की भूख-प्यास बन्द हो जाती थी, उसी कामिनी की अब यह कैफियत है कि सूरत देखने को जी नही चाहता, वह कामिनी, जो हरदम हँसती और हँसाती रहती थी, अब अगर उससे पूछिये कि इस आह भरने और आँसू बहाने का सबब क्या है, तो अपने टूटे हुए और दुखी दिल से यही जवाब देती—

दिल में इक दर्द उठा, आँखों में आँसू भर आए,
बैठे-बैठे हमें क्या जानिये क्या याद आया!

वह कामिनी जो चुलबुलाहट और शोखी के मारे एकदम कही नही बैठती थी अब घटो जहाँ बठ जाती है, वहाँ से हिलती नही।

यह उस जमाने का जिक्र है जब कामिनी को आशिकी-माशूकी से कोई बहस न थी, यानी जब दुश्मना के नसीब से कामिनी बीमार हो गई थी, और उसकी माँ ने मिन्नत मानी थी कि जिस रोज नीलकण्ठ देखूगी, उसके

सातवें दिन वलिदान करूँगी और वहुआ-वेटिया, लडको-वाला को बुलवाकर खाये पियेंगे—आज यही मुवारक रोज है और शुभ दिन है। यह जल्सा भी यादगार रहेगा। इस रोज जो कमसिन वरावरवालियाँ बन-ठन के आई थी, उनका हाल सुनिये।

शिवरानी निहायत ही नमकीन औरत। सिन कोई चौवीस वरस का। लडकौरी, मगर काठी गज़व की पाई थी। जवर से गादनी की तरह लदी हुई। सर से पाँव तक गहना। वेटी भी मालदार की, वहू भी मालदार की। उसके रूप और निखार की बडी धूम थी।

रमुता जवान कमसिन, कोई उन्नीसवाँ साल, लाम्वा क़द, परीज़ाद। उसकी चाल गजव की थी—इस तरह झूमती हुई चलती थी कि जो देखता था उसका जी खुश हो जाता था।

लाडो, पन्द्रह साल की। एक एक अदा दिल में खुब जानेवाली। गज़व की शोखी। वोटी-वोटी फडकती थी। दम भर एक जगह नही बैठती थी। पारे की खासियत। और वडी हाजिर-जवाव, तेज तवीअत।

जनो, बडी प्यारी छोकरी। अग-अग साँचे का ढला हुआ, प्यार करने के काविल। वीस वरस का सिन, मुरादो के दिन।

केसर, वाइसवाँ साल। मियाना कँद, गहुँआ रग, नमकीनी और बाँकपन लिय हुए—जिस वक्त सीना उभारके चलती थी, एक आलम को क़त्ल करती थी। हर घडी कघी चोटी से दुरुस्त। उसके शौहर की उस पर जान जाती थी। जुल्फ सियाह काली जैसे भँवरा। एडी तक लटकती हुई उसकी चोटी की सजधज विरादरी भर में मशहूर थी।

मोती, पच्चीस वरस का सिन, छै बच्चा की माँ। इसी सबब से उम्र के दिन की दोपहर ढल गई थी। मगर चुलवुलापन गजब का था, बल्कि उम्र के साथ वह भी दूनी तरक्की करता जाता था। हर बात में चुलवुलापन। अपना मद मुटठी में था। उसके सामने मियाँ की एक नही चलती थी। मर्दों से बात चीत करने हँसी मज़ाक-दिल्लगी चुहल में बन्द नही। इत्र की बडी शौकीन। आज इत्र रूह-खस दस रुपये तोलेवाला लगाके आई थी। जिस रास्ते से आई महक गया। दूर तक लपटें आती थीं। कई नौकरानियाँ साथ थी। जहाँ जाती थी बडे ठस्से से जाती थी।

कुन्दन, चौदह बरस की उम्र, नाज़ुक बदन मस्त चाल, पिस्ता से होठ।

खुमारी की अँखियाँ, वो अँगडाइयाँ।
वो जोबन के आलम में सरसाइयाँ॥

पद्मिनी, बाईसवाँ साल। इनके हुस्न के चर्चे थे। दिलरुबा, हर बात में बर्क, खूबियो की खान। गोरे-गोरे गाल लम्बे-लम्बे बाल। भडकीली सजधज,

इत्र की बू-बास। गम्भीर कुछ ज्यादा, शोख़ कम, मगर सूरत देखने के काबिल। बदन आइना-सा दमकता हुआ, गुलेबागें-ख़ूबी लहकता हुआ।

सीता, रँगीली, सजीली, नुकीली छैल-छबीली। उससे ज्यादा बाँकी अदा किसी की न थी, उसके बाँकपन की कसम खानी चाहिए। वज़ा बिलकुल सादी। ज़ेवर कीमती, मगर कम। पोशाक बहुत उम्दा, मगर सूफ़ियानापन लिये हुए। रंग खिलता हुआ। इनके मियाँ को पर्दे का बडा खयाल था।

तारा, हसीन मगर भद्दी, थुलथुल। चेहरा चूमने के काबिल, सुर्ख़-सफ़ेद। मर्दों को घूरने की शौकीन, मगर बद नहीं। हँसमुख। ठठोल हर बात में, एक नज़ाकत के साथ, मगर बदन भी भारी।

बडी बूढी और अधेड औरतें तो मकान में रहीं, मगर ये कमसिन नौ उम्र बाग में आयीं। बाग मकान से मिला था। पक्की चारदीवारी, हर किस्म के मेवों के दरख़्त। दूब बडे सलीक़े और खुशनुमाई से जमी हुई, हरी-हरी घास। तालाब छलकता हुआ, पक्का। लाल-लाल मछलियाँ कसरत से।

लाडो—सुमिरता बहन की चाल कैसी मस्त है। यह मालूम होता है कि मुरैला बदली देखके बाग़ में झूमता चलता है।

केसर—हाँ, क्या अच्छी चाल है। एक बात कहूँ?—न कहूँगी।

लाडो—न कहे तो हमारा ही मुर्दा देखे।

केसर—और जो न कहने की बात हो?

लाडो—(शोख़ी के साथ गुदगुदाकर) कहो, कहो। मैं एक न मानूँगी।

केसर—(मारे हँसी के बुरा हाल था) कहती हूँ, दम तो लेने दो।

लाडो—अच्छा कहो।

केसर—वह एक दिन कहते थे कि जब मैं इन्द्र विक्रम सिंह की बीवी को चलते हुए देखता हूँ तो जी ख़ुश हो जाता है और घंटों घूरने को जी चाहता है। यह मालूम होता है कि मोर झूमके चल रहा है।

मोती—यह कहो! मैं तो तुम्हारे मियाँ को बडा सीधा समझती थी। यह तो अब मालूम हुआ कि इस किस्म के आदमी हैं।

स्मृता—और हमारे मियाँ हमसे कहते थे कि जब केसर सीना उभारके और तनके और बनके चलती है तो मेरा बेअख्तियार जी चाहता है कि गले से लगा लूँ।

इस पर बडा कहक़हा पडा।

मोती—अच्छा तो इससे मालूम हुआ कि केसर के मियाँ सुमिरिता पर रीझे हुए हैं, और सुमिरता के मियाँ केसर पर।

लाडो—हर्ज क्या है। दोनों तरफ़ बराबर हो गया, अब काहे का गिला।

मोती—हमारे मियाँ जो किसी औरत पर रीझें तो हम साफ़-साफ़ कह दें कि तुमको यह औरत मुबारक—हमको अख्तियार है—

केसर—अरे, तुम जो न करो वह थोडा।

मोती—मेरे मियाँ तुम्हारी चोटी पर आशिक है। कहते थे कि केसर की-सी चोटी, देखी न सुनी।

बन्नू—चोटी तो इनकी अच्छी है, मगर ये बनाती-सजाती भी खूब है। इतनी लम्बी चोटी यहाँ किसी की न होगी। और यो तो हम सब जवान है, कोई बुढिया नही। मगर जितनी केसर की चोटी काली है, उतनी किसी की नही है।

लाडो—यह तुमने क्या कहा, कि यहाँ कोई बुढिया नही। और यह (मोटी की तरफ इशारा करके) किन जवानो में जवान है?

शिव—ये तो कुछ ऐसी बूढी जप्पट हो गई है कि सचमुच अधेड मालूम होने लगी है। मेरी इनकी उम्र एक है।

बन्नू—अरे! तुम तो अभी खासी जवान हो। इनमें तुममें दुनिया का फर्क है, मगर चुलबुलापन नही गया है!

केसर—ये इत्र कहाँ से मँगवाती है? हम चाहे जितना खर्च करें हमें ऐसा इत्र नही मिलता। यह खस का इत्र इस वक्त सितम ढा रहा है। बाग भर महक गया।

पद्मिनी—मैं जानती हूँ, ये घर में खिचवाती है।

केसर—सुमिरता, हम तुम्हारे हाथ जोडते है, एक दफा हमारे मियाँ के सामने खूब मस्त होके अकडती हुई चलो।

सुमिरता—हाँ, और हम तुम्हारे पाँव पडते है ज़रा हमारे मियाँ को एक दिन अपनी चोटी को चूमने दो।

पद्मिनी—(हँसकर) वह अपने मियाँ की सिफारिश करती है, ये अपने मियाँ की। दोनो के मियाँ जो सुनें, तो कितने खुश हो।

लाडो—मर्द बडे शक्की होते है। फलाने से क्यो हँसी, ढमाके से क्यो बोली, अमके से क्यो बातचीत की।

बन्नू—सच कहती हो, मगर तुम्हारे मियाँ तुम पर रीझे हुए भी है।

पद्मिनी—और वह कौन है जिसके मियाँ उस पर रीझे हुए नही है।

बन्नू—(बहुत हँसकर) इसके ये मानी कि इनके मियाँ भी इन पर रीझे हुए है। और रीझे जरुर ही होगे। सूरत-शक्ल ही ऐसी पाई है। मै जो मर्द होती और केसर मेरी बीवी होती, तो मेरी तो जान उसपर जाती। चोटी तो ऐसी किसी ने पायी ही नही। बस, दिन-रात चोटी ही को चूमा करती।

पद्मिनी—यह मै नही समझती, कि मियाँ के रीझने के क्या मानी। अगर इसके मानी ये है कि बीवी खूबसूरत है, इससे मियाँ रीझे है, तो यह एक अजब तरह की बात है। वह बीवी खूबसूरत हो या बदसूरत, अगर मियाँ का बीवी

पर रीझना सिर्फ इसी सबब से है कि बीबी गोरी-चिट्टी है तो ऐसे मियाँ से बीवी को क्योंकर दिली मोहब्बत हो सकती है?

बन्नू—यह क्यो? गोरी बीवी को कौन मियाँ पसन्द न करेगा?

पद्मिन—यह मै नही कहती। मेरा मतलब यह है कि मियाँ और बीवी में गोरे और काले को क्या बहस है? जो बीवी गोरी न हो, तो मियाँ उसे मोहब्बत न करे, तो ऐसे मियाँ भी कोई चीज है? मै कहती हूँ कि मियाँ और बीवी की मोहब्बत ऐसी होनी चाहिए कि काले और गोरे की तो कोई बहस ही न रहे।

बन्नू—यह तो खाली-खूली बातें है।

पद्मिनी—नही, नही! बातें नही है। सच कहती हूँ।

बन्नू—गोरी औरत फिर गोरी ही है, और भोडी औरत भोडी। गोरी और काली औरत में तुम्हारे नजदीक कोई फर्क ही नही।

पद्मिनी—अच्छा और जो मियाँ काला-कलूटा, और बेढगी सूरत का हो, तो औरत भी उससे मोहब्बत न करे—इसके ये मानी है? ऐसी औरत को तो भट्टी में झुलस दे।

बन्नू—खूबसूरत मियाँ पाया है, जो चाहो सो कह लो।

केसर—हां! यह तो तुमने बडी हसरत की बात कही। मालूम होता है कि तुम्हारे मियाँ खूबसूरत नही है, और जो है भी तो तुमको पसन्द नही।

बन्नू—तुम्हारी समझ पर से नोन राई उतारनी चाहिए।

केसर—तुम कहती ही ऐसा हो।

बन्नू—केसर अगर तुम्हारी चोटी ऐसी न होती तो तुमको कोई न पूछता।

केसर—(हँसकर) इसकी फिक्र तो तुमको रहती होगी कि कोई पूछे। अजी कोई हमको पूछे या न पूछे, किसी से हमे क्या बहस है! हमको तो बहस अपने मियाँ से है। वह अगर हमको न पूछें, तो जहर खाने का वक्त हो जाय, और वह जो हमको दिल से प्यार करें, तो हम खुश हमारा खुदा खुश।

बन्नू—(बहुत ही हँसकर) 'खुदा खुश'! यह 'खुदा' का लफ्ज कहाँ से सीखा?

केसर—जैसे खुदा, वैसे राम, वैसे परमेश्वर, वैसे अल्लाह।

कामिनी—वैसे गाड।

पद्मिनी—केसर भी फ़ारसी पढी है। उसके मियाँ ने उसको फारसी पढाई है। फारसी तो हम भी पढते मगर अब कौन इस झझट में पडे।

कामिनी—पढ़ने लिखने की बातें करो तो अच्छा, या कि यह कि फलानी के मियाँ ढमकी पर रीझे हुए हैं, फलानी का घरवाला ढमकी पर जान देता है।

कमला—क्या जाने ये मर्द आपस में बैठके क्या बातें करते हैं। हम का जिक्र तो जरूर होता होगा।

बन्नू—क्या जाने क्या वाही-तबाही बकते होंगे। फलाने की जोरू गोरी है, ढमके की काली है, अमके की ऐसी है, ढमके की वैसी है, अमके की बद है ढमके की नेक है।

पद्मिनी—अच्छा फिर, कहते हैं तो कहें।

बन्नू—तुम पर सबके सब लट्टू होंगे। तुम्हारे ऊपर सबके दाँत होंगे। और हमारे मियाँ तो तुम पर जान ही देते हैं। वह तो मुझसे कहते थे कि तुम दूसरा ढूंढ लो, हम तो पद्मिनी को भगा लायेंगे।

पद्मिनी—बड़ी फूहड़ हो।

स्मृता—तुम सब तो दिल्लगी करती हो मगर मैं सच कहती हूँ कि केसर की चोटी और सीना उभारके जाना हमारे मियाँ को बहुत पसन्द है।

केसर—और तुम्हारी मस्ताना चाल पर सब मर्दों की जान जाती है।

कमला—तुम मेरे मुँह से ले गई।

पद्मिनी—भई हम तो जाते हैं। कैसी-कैसी वाहियात बातें हो रही हैं।

इतने में स्मृता ने पद्मिनी का हाथ पकड़ लिया, और कहा—कैसी रूखी-फीकी हो। सूरत शक्ल तो ऐसी पाई, मगर गँवारपना न गया। हँसी-दिल्लगी की बातें हो रही हैं। इसमें कौन-सी बुराई है। कोई गालियाँ नहीं बकता, कोई बेहूदा बातचीत नहीं करता। अपने मियाँ की जो किसी ने हँसी में तारीफ की तो इसमें क्या बेजा है। अभी तो बीस बाइस बरस का ही सिन है। अभी से बुढ़िया बनी जाती हो।

पद्मिनी—(मुस्कराकर) अरे तो इसके क्या मानी कि जो है वह दूसरे को अपने मियाँ के साथ ब्याहने को मौजूद।

मोती—अच्छा अपने-अपने जोड़े पर सबको अख़्तियार है।

इस पर बड़ा कहकहा पड़ा और पद्मिनी बिगड़ती हुई बाग से मकान के अन्दर जाने लगी। मोती दौड़ी कि पद्मिनी को रोक ले, मगर न पा सकी—और मोती का पाँव जो काई में फिसला तो लुढ़क गई, और वह फरमायशी कहकहा पड़ा कि दूर तक आवाज, और मोती बहुत झेंपी।

पद्मिनी—और दौड़ोगी? मुझे भी कोई तारा समझ लिया था कि मारे मुटाई के हिल न सकूँ, गिर पड़ूँ।

तारा—तुम लाख मोटी और थुल्थुल और भारी मुझे बनाओ, मैं कोई सिड़न नहीं हूँ कि बुरा मानूँ। तुम लोगों में एक तो मुझे पहुँचती नहीं। मुझे क्या, मेरे, पासग को नहीं पहुँचती। पहले तुम लोग अपनी-अपनी सूरतों को तो देखो। तुम सब कहती हो कि हमारे मियाँ इस पर रीझे हुए हैं और उस पर रीझे हुए हैं। हमने भी कभी कहा? तो वजह क्या? वजह यह कि हमारे मियाँ कहते हैं कि तरू तुम्हारे गाल ऐसे हैं कि हमने देखे ही नहीं हमारे बड़े नसीब हैं कि तुम-सी जोरू पाई।

सबने मिलकर कहा—अल्लाह! घर की टपकी और बासी साग! और एक और कहकहा पडा। तारा भी मुस्कराई। इस पर केसर ने कहा—एक बात जो तारा ने कही वह किसी ने सुनी ही नहीं—इनके मियाँ इनको तरूं कहते हैं।

इस पर सबकी सब हँस पडी।

बब्बू—कहो बीबी तर्रू! तर्रू कि तर्राक!

सीता—तारा से तर्रू हुई।

लाडो—अब तुरई या कद्दू! लानत। भद्दू कब होगी?

इस पर भी बडी हँसी हुई।

तारा—यह तुम लोग तर्रू क्यो कहते हो। तर्रू हमारे मियाँ ने नाम रखा है, अपने पुकारने के लिये।

सीता—ए क्या 'मियाँ मियाँ' कहती हो! मुसलमान के घर क्यो न जनम लिया! घरवाला क्यो नही कहती हो, दूल्हा क्यो नही कहती हो! तर्रू के घरवाले ने तो यह नाम रखा हैं। नही मालूम तर्रू ने अपने मियाँ का नाम क्या रखा है?

तारा—हमने अपने मियाँ के नाम दो रखे है। दिन को घुग्घू, रात को चिड्डा-गुलखैरू।

इस पर इस जोर से कहकहा पडा कि शिवरानी और कुन्दन जो घर के अन्दर चली गई थी, वह भी बाग में आ गईं।

कुन्दन—यह कहकहा किस बात पर पडा? जल्दी बताओ। पेट में चूहे छूटे हुए हैं। बहुत बडा कहकहा पडा, मै कूदती हुई भागी कि देखूँ कौन बात है।

केसर—अच्छा, तुम और शिवरानी अपने-अपने घरवाले का नाम बताओ।

शिवरानी—इसके क्या मानी?

केसर—तारा के मियाँ का नाम जानती हो?

शिव—हाँ, हाँ, ए लो हम नही जानते?

केसर—वह नाम नही। वह नाम, जो तारा ने रखा है।

शिवरानी—यह भी होता है? एक नाम बाप माँ रखें, एक नाम कही-कही सास-ससुरा रखें, एक नाम किसी किसी का लाड का होता है। नाम है। सरूपनाथ, कहलाते है नन्हें। नाम है बिशेशर दयाल, कहलाते है बबुआ साहब। अब आज यह मालूम हुआ कि जोरू भी नाम रखती हे। अच्छा, वह नाम भी सुन लें।

केसर—दिन का नाम उन्होने अपने मियाँ का रखा है घुग्घू!

इतना सुनना था कि कुन्दन और शिवरानी मारे हँसी के लोट गईं।

शिव—मार डाला। घुग्घू की एक ही कही।

कुन्दन—और यह मियाँ को खिताब मिला है।

शिव—यह दिन का नाम है। और रात का नाम क्या है ?

केसर—रात का नाम, चिड्डा गुलखैरू!

फिर देर तक हँसी रही और सबके पेट में बल पड़-पड़ गये। दिन का नाम घुग्घू, रात का नाम चिड्डा-गुलखैरू!

केसर दुपट्टा सर से हटाकर आहिस्ता-आहिस्ता गाती हुई बढ़ने लगी।

इधर केसर खुले सर झूमती-इठलाती हुई दौर पढ़ती थी, उधर दूसरी तरफ से आवाज़ आई—

रहे किन सौतनियाँ की ओर!
किदर पिया आये न सेजिया मोर,
किदर सौं आये न सेजिया मोर!

यह तारा के गाने की आवाज़ थी। बाग में इन हमजोलियों के सिवा और कोई भी न था। न मर्द, न लड़का तक। न कोई ग़ैर औरतें। जो थीं, नौकर। और कोई बड़ी-बूढ़ी भी न थी, कि लिहाज़ होता, कि उसके सामने न गाएँ। सब बराबर की थीं। इनमें दो-चार के गले में मिठास भी थी। नाज़ुक आवाज़। दो एक रँगीली, दो एक बाँकी। कोई इठलाती थी, कोई रंग-रलियाँ मनाती थी। कोई छल्ली-छलिया खेलती थी, कोई एक-दूसरे से योंही-सी हाथा-पाई करती थी। मालूम होता था एक-एक बोतल चढ़ाए हुए हैं। जवानी के नशे में चूर, और सब खुश, कि कामिनी अच्छे घर जायगी। सबसे ज्यादा कामिनी खुश कि अब सब मामला लैस हो गया।

—— ० ——

दसवाँ अध्याय

'तनी झाँकी-झूँकी कियो मोरे बलम !'

जब सब कार्रवाई ठीक और मामला लैस हो गया तो रनबीर सिंह ने अपनी एक रिश्तेदार राजदुलारी के हाथ जोड़े कि हमें कामिनी को एक दफा पास से दिखा दो तो उम्र भर एहसान मानूँ। यह कामिनी की भी दूर के रिश्ते से कुछ लगती थी। घन्नो और कमला और राजदुलारी ने आपस में साँठ-गाँठ करके कामिनी को राजदुलारी के घर पर बुलाया। पहले तो उसकी माँ ने भेजने से इनकार किया, मगर जब राजदुलारी खुद डोली पर सवार होकर गई तो मजबूर होकर भेजना पड़ा। घर की पालकी-गाड़ी में दोनों सवार हुईं। एक महरी गाड़ी के अन्दर बैठी, दूसरी बाहर, राह में।

राजदुलारी ने कामिनी को छेड़ना शुरू किया—कहो रनबीर सिंह को जानती हो?

कामिनी ने कहा—जो दिक करोगी तो हम इसी गाडी पर घर की राह लॅग।

राजदुलारी बोली—वाह! चला जाना क्या दिल्लगीबाज़ी है?

कामिनी ने कहा—गाडी हमारी, गाडीवान हमारा, नौकर, साईस हमारे। अभी हुक्म दूॅ, अभी गाडी फेर लें।

राजदुलारी ने हॅसकर फिर छेडा—लाए, तो भाग जाने का सबब क्या? ऐसा गोरा चिट्टा दूल्हा मिले कि भूख-प्यास बन्द हो जाय। हम लोग इस फिक्र में है कि तुम्हारे दूल्हा से बढ़के और किसी का हमारे कुनबे में न हो।

इतने में गाडी घडघडाती हुई राजदुलारी के दरवाजे पर पहुॅची, वहाँ धन्नो और कमला भी थी। राजदुलारी ने कहा—कामिनी, अगर तुमको हमारी मोहब्बत है तो इनसे पर्दा न करो। हमारी प्यारी बहन, मै वारी! इतना कहना मानो, नही तो हमें रज होगा।

कामिनी इससे बिलकुल नावाकिफ कि यहाँ क्या गुल खिला है। राजदुलारी के कहने से नीची नजरें किये हुए एक मसहरी पर जिसपर कालीन खुशनुमा बिछा हुआ था, बैठ गई। कामिनी गो बहुत बनी-ठनी न थी, कुॅआरी लडकी, और यह समझ के भी न आई थी कि कोई उसको प्यार की नजर से देखने आयगा, मगर—एक सादगी में लाख जोबन थे, सुभाव की शोखी ग़जब ढाती थी।

आड में रनवीर सिंह उसके जमाल का नजारा कर रहे थे। उसकी एक-एक आवाज़ पर लोट था। कभी भावज जाके, मुस्कराके कहती थी—पसन्द है? और वह मुस्कराकर कहता था—भला यह चीज भी ऐसी है कि कोई इसको पसन्द न करे? कभी बहन किसी बहाने से जाके पूछती थी—देखी? है वैसी ही लडकी, जैसा मैं कहती थी?

कामिनी इनके बार-बार उठ जाने से कुछ ताड गई और ग़ौर से देखने लगी।

कामिनी—ये तुम घडी घडी उठ-उठके जाती कहाँ हो?

भावज—ऐं! अब रॅग लाई, गिलहरी!

कमला—क्या हुआ? क्या कहती है?

भावज—पूछती हैं, ये तुम दोनो उठ-उठके जाती कहाँ हो?

कमला—हॅ-हॅ, यह क्या जानें अपने दिल में क्या समझी।

भावज—अरे परिन्दा तो यहाँ पर मार नही सकता।

कमला—क्या मजाल, और तुमको शक हो तो देख लो।

कामिनी—घडी घडी जो उठ-उठके जाओ और मुस्कराती हुई आओ मेरे दिल में शक पैदा हुआ।

महरी—कुँआरी सयानी लड़की, यह बातें तो सोचा ही चाहें।

भावज—यह बुढ़िया महरी भी दिवानी हो गई है।

कमला—तुझे कौन सूझ पड़ा, महरी?

महरी—नाही, बीबी, हियाँ कोउ आ सकत हैं भला!

कमला—टाँगें काट डाली जायँ। एक के दस मुँह हो जायँ। यहाँ यह बात हो सकती है?

बहन (भावज से)—अपनी वह तस्वीरोवाली किताब तुमने बहुत दिन से नही दिखाई हमें।

भावज—वह क्या रखी हुई है। अच्छा बताओ, इन तस्वीरो में सबसे अच्छा कौन मर्द है और सबमें खूबसूरत कौन औरत है?

कमला और भावज ने जो एलबम की तस्वीरें उलटना शुरू की, तो उनके साथ-साथ कामिनी भी देखने लगी। कमला ने जान-बूझ के अपने पति की तस्वीर पर उँगली रखी, और कहा—मर्दों में तो हमको सबसे ज्यादा यह पसन्द है, और अपनी तस्वीर को दिखाकर कहा—औरतो में यह पसन्द है।

कामिनी (मुस्कराकर)—यह तो तुम्हारी ही तस्वीर है। और यह मर्द कौन तुमने पसन्द किया!

कमला—पसन्द नही किया। ऐसी बातें न करो, कि हमारा आदमी सुने तो बदगुमान हो जाय। बस एलबम भर की तस्वीरो में हमको यह सबसे अच्छा मालूम होता है।

कामिनी—क्या तुम्हारे दूल्हा की तस्वीर इसमें नही है?

कमला—है क्यो नही! (स्वामी दयानन्दजी की तस्वीर दिखाकर) यह है।

कामिनी—ए नही! यह तो किसी सन्यासी की तस्वीर मालूम होती है। यह तो बूढा आदमी है।

कमला—ए कुछ खबर है तुमको? हमारे चौदह बरस के पति को बूढा बनाए देती हो!—और सन्यासी-फकीर बना दिया।

भावज मारे हँसी के लोट-लोट गई कि कमला ने अपने पति को तो ग़ैर मर्द कहके उसकी तस्वीर पसन्द की और स्वामीजी महाराज की तस्वीर दिखलाकर अपने पति की बताई। लाख हँसी ज़ब्त की, मगर ज़ब्त न हो सका। भावज ने औरतो में एक मेम की तस्वीर पसन्द की, और मर्दों में अपने एक चचेरे भाई की जिसको कामिनी ने नही देखा था। अब इन दोनों ने कामिनी से इसरार किया कि तुम बताओ किस मर्द किस और औरत की तस्वीर तुमको पसन्द है। उसने इधर-उधर देखकर कहा—हमको तो इससे अच्छी सूरत इस अल्बम भर में किसी की नही मालूम होती। यह तस्वीर रनवीर सिंह की थी।

कमला ने भावज को आहिस्ता से चुटकी ली। भावज ने कमला की तरफ इशारा किया और ऊँची आवाज़ में कहा—और जो यह खूबसूरत लड़का तुमको मिल जाय, तो कैसा?

कामिनी ने शर्माकर कहा—ऐसी वाहियात बात का हम जवाब नहीं देते।

कमला—अख्खाह। मन भाए, मुँड़िया हिलाए!

भावज—छत्री का लड़का है। छत्रियों भर में धूम है इसकी।

कमला—भला ही-सा नाम है इसका—देखो—याद नहीं आता!

भावज—मगर पसन्द अच्छा किया। अभी कुँआरा है।

कमला—शेर की-सी कलाई, चीते की-सी कमर, हँसमुख, हाथ पाँव सुडौल। अच्छे को पसन्द किया।

भावज—परमेशर करे इसी के साथ कामिनी का ब्याह हो जाय।

कामिनी (झेंपकर)—ए क्यों गालियाँ देती हो?

कमला—भई, उससे बढ़कर खुशकिस्मत कोई औरत न होगी जो इसको ब्याह के जाय।

भावज—हमारी शादी न हुई होती तो बाप माँ से कहते कि अगर यह हमारा दूल्हा और हम इसकी दुल्हन न हुए तो हम ब्याह न करेंगे।

कामिनी—इतना रीझ गईं।

भावज—अच्छा तुम ही बताओ, इनमें सबसे अच्छा है कि नहीं?

कामिनी—मैंने ऐसी सूरत आज तक नहीं देखी। आँखों में मोहनी है। (दबे दाँतों) औरतें इसको जरूर प्यार करें!

इस फिकरे पर उन दोनों ने जोर से कहकहा लगाया। कामिनी बहुत शर्माई। कहने को तो कह गई, मगर फिर सोचा कि यह मैंने क्या कहा, यह जबान से क्या निकल गया। भावज से कहा—तुम लोग खोद-खोद के पूछते हो, और फिर हँसने को तैयार।

भावज—हँसते ही घर बसते हैं। अब हमको फिक्र हुई।

कमला—इनकी बड़ी बहन से कहो।—और तुम खुद ही क्यों न कहो।

भावज—हमारी देवरानी अपने भाई के लिये कह रही है। मैं आज अम्मा से जिक्र करूँगी।

कमला और भावज दोनों की मिली भगत थी। कामिनी अच्छी तरह समझी नहीं कि यह क्या कह रही है। ये गोल-मोल बातें करने लगीं।

एक ने कहा—कामिनी की बहन से इस लड़के की बातचीत करो।

दूसरी बोली—अम्मा से कहूँगी। और यह कामिनी को मालूम ही न था कि एक इस लड़के की चचेरी बहन है और एक भावज और वह खुद ही, आड़ में से घूर रहा है और ठंडी साँसें भर रहा है। रनवीर सिंह बाता ;

करीने से समझ गए कि हो न हो हमारा ही जिक्र-खैर है, इस पद्मिनी सितम की छोकरी ने हमी को पसन्द किया। बेताब और बेकरार थे कि कही जल्द मालूम हो जाता कि यह किसका जिक्र हो रहा है। कही ऐसा न हो कि किसी और को पसन्द किया हो। भावज बहाने से चल दी। कमला और कामिनी अकेली रह गई। भावज ने जाकर रनबीर सिंह से कहा—सच कहना, कैसी परी लडकी है। परमेशर करे यह हमारे घर में आए। आधी रात को, जिस कोने में बिठा दो उजाला हो जाय। चाँद में मैल, इसमें मैल नही। रनबीर सिंह ने कहा—यह तो बताओ, पसन्द किसको इस अलबम में किया? किसकी किस्मत खुल गई, किसका सितारा चमका? उसने कहा—तुम्हारी तस्वीर पसन्द की। सुन नही रहे थे? रनबीर सिंह ने कहा—देखो भाभी, भाँजी न मारना। तुम्हें कही यह हसद न दिल में पैदा हो कि देवरानी हमसे गोरी क्यो आई है। सबसे बढ के रहे। जो कोई घर में आये, कहे कि सब बहुओ में यही अच्छी है। वह बोली—बडे बेईमान तुम लोग होते हो! मै तो इन तरकीबो से टिपस लडा रही हूँ। लडकी दिखा दी, उससे तेरे सामने कबुलवा लिया, कि इस मर्द को औरतें जरूर प्यार करें—और तू ये बेएतबारी की बातें करे! अच्छा यह झगडा हमारा-तुम्हारा तो होता ही रहेगा। सच यह है कि छोकरी बडी कयामत की है। यह तो अगर सचमुच पान खाये तो सुर्खी गले से दिखाई दे। वाह रे सूरत। रनबीर ने कहा—मैं भाई से जरूर कहूँगा और गगा उठा लूगा कि भाभी कहती थी कि अगर मेरी शादी न हुई होती तो तेरे साथ जबरदस्ती ब्याह कर लेती। उसनें कहा—नेकी का बदला तो बदी होता ही है। मैं कमला को उसके पास छोड आई हूँ कि बराबरवालियां हैं, खुलके बात करें। चलो एक बात तो मालूम हो गई कि तुमको वह और उसको तुम पसन्द हो। देखो यह बात पक्की हुई जाती है।

रनबीर सिंह ने कहा—अगर यह बात पक्की हो जाय तो हम माँ-बाप की खुशामद करके तुमको अपने भाई के पास भिजवा दें। बहुत दिन से तरस रही हो।

वह हँस के बोली—बस चुप रहो। हम क्या खुद नही जा सकते। ये बडे सिफारिश करनेवाले आये वहाँ से!

रनबीर सिंह ने कहा—जैसी तस्वीर हमने देखी थी वैसी ही पाया। अब और भी बरस भर ज्यादा हुआ।

भावज ने ताना दिया—तुम तो कहते थे कानी है, फुल्ली है, यह है, वह है, अब अपने हाथो से अपने गालो पर थप्पड लगाओ।

रनबीर सिंह ने कहा—हमसे दो-एक बदजातो ने आके कहा था कि पहले यह लडकी ऐसी थी कि चाँद को मात करती थी। मगर अब कोई पाँच-छै महीने से, जब से चेचक निकली, सूरत बिगड गई और एक आँख करीब-करीब जाती रही।

बस मैंने सोचा कि कानी से कौन ब्याह करे। जीती मक्खी हो तो आदमी जान-बूझ के नही निगलता। अगर बे-जाने कानी से ब्याह हो जाय तो मजबूरी है।

भावज बोली—तुम्हारी अकल क्या सपाट मैदान की चराई को गई थी? इतना न सोचा कि तेरह-चौदह बरस की लड़की और बड़ी चेचक। अब इस अंग्रेजी में किसी पढ़े-लिखे आदमी के घर में भी बे टीका लगाए कोई बच्चा रह सकता है? मगर तुम पढ़े-लिखे बेवकूफो को कोई क्या करे। वह लोग तो अपना मतलब निकालते थे और तुम सिड़ी-सौदाई बनते थे।

देवर-भावजो में तो यह बातें होती थी और इधर कमला और कामिनी में और ही गुफ्तगू मजे-मजे से हो रही थी। जब भावज टाल के चली गई और कामिनी और कमला अकेली रह गईं, तो कमला ने उसके दिल का भेद लेना शुरू किया।

कमला—देखो बहन, हम-तुम बराबर की है। जो दो-चार बरस छोटाई-बड़ाई हुई तो क्या। यह कोई बड़ाई-छोटाई नही कहलाती। हमारी भावज भी बराबर की है। वह हमसे भी पाँच-सात बरस बड़ी है। उनका जरा हमको तुमको दोनो को लिहाज है। अब वह तो इस वक्त है नही। हम ही तुम ह। यह बताओ कि इस लड़के में क्या ऐब है?

कामिनी (शर्माकर)—मुझे नही मालूम। कोई और बातें करो।

कमला—अच्छा इस बात का तुम हमको जवाब दे दो, और बस।

कामिनी (मुँह फेरकर)—हम जवाब नही देते।

कमला (गुदगुदाकर)—देखें तो कैसे जवाब नही देती।

कामिनी (हँसती हुई)—ए, मैं क्या जवाब दूँ, बहन। शर्म-हया भी कोई चीज है कि नही। हम क्या जानें।

कमला—अरे बेवकूफ, अपनी तौर पर पूछती हूँ कि यह लड़का पसन्द है या नही। ऐसा परिया लौंडा न मिलेगा!

कामिनी—ए, परिया न कहो; कोई सुन लेगा। कहेगा, यह कैसी हुड़दगी लड़कियाँ वाही-तबाही बक रही हैं।

कमला—कुछ सिड़न हुई हो? यहाँ सुनने कौन आता है, दीवारें? बताओ? अरी, यह मौका हाथ से न जाने देना। कहती हूँ, पीछे पछताएगी, देख लेना। ऐसी जोड़ न मिलेगी।

कामिनी—तुमने अपना ब्याह वर देख के किया था?

कमला—उसने हमको नही देखा था, हमने उसको देखा था। हमारे भाई ने हमें दिखाया था। मैं खिड़की की चिकों से देखा की। हमारे यहाँ बिलकुल 'अंग्रेजीपन' है—जैसे अगले वक्तो में स्वयम्बर होता था।

कामिनी—ए बहन, हमारे मैके में भी यही हाल है। बाप-भाई सबको अंग्रेजी जैसे चरी हुई है। पर्दे का बहुत खयाल नहीं। मगर हाँ, जो जरा कोई जा से बेजा हो तो सर काटने को तैयार। हमारे बाप का क़ौल है कि लडकी दूर से लडके को देख ले, उसको पसन्द हो और घर के मर्दों-औरतों को पसन्द हो तो बस झट-से ब्याह हो जाय, जिसमें लडकी को इस शिकायत का मौका न मिले कि हमारी मर्जी के बगैर हमको झोंक दिया।

कमला—कितनी अच्छी बात है। भला कोई हिन्दू ऐसा काहे को करने लगा।

कामिनी—कहाँ की बातें। कोई कहे तो आदमी मार बैठे।

कमला—अच्छा, अब बता दे बहन। क्या बुरा क्या है?

कामिनी—अब तुम चाहती हो कि शरम को दूर रखूँ।

कमला—अब बताओ, नही मार बैठेंगे।

कामिनी—(लजाती हुई)—भला कोई भी ऐसा है जो अच्छी चीज को बुरा कहे, या जिसको अच्छा मर्द न पसन्द आवे। इतने मर्दों में मैंने यह तस्वीर कुछ तो समझ के छाँटी—कि बे-समझे बूझे छाँटी? और यह लडका लाखो-करोडो में एक है। इसको कौन पसन्द न करेगा? खासकर कुँआरी औरत।

कमला—कोई शक नही कि इस लडके की जोरू बडी नसीबवाली औरत होगी। शेर है शेर।

कामिनी—रन में सिपाही की जान क्या है, अच्छी विलायती तलवार, जो खूब काट करे। शहसवार की जान क्या है उम्दा अरबी घोडा। बाप-माँ की जान क्या है, होनहार लडका। विद्यार्थी की जान क्या है, विद्या का खूब जानना। इसी तरह कुँआरी लडकी की जान क्या है, अच्छा वर। वह पति जो सूरत में लाख दो लाख में एक हो और सुभाव और गुन में सूरत से बढ चढ कर।

कमला—हमारे दिल की बात तुमने कही।

कामिनी—तुम घडी-घडी पूछती क्या थी?

कमला—फिर हम कोशिश करें?

कामिनी—क्या सचमुच छत्री है?

कमला—छत्री, छत्री। असल छत्री। यह छत्री, इसका बाप छत्री।

कामिनी—क्या जाने कौन छत्री है।

कमला—जो हम-तुम है। कहो गगा भी उठा लूँ? बोलो—है मर्जी? कोशिश करूँ?

कामिनी (फिर शर्माई)—बहुत छेडो नहीं, बहन।

कमला—अब मैं मार बैठूँगी, हाँ।

कामिनी—मैं भला क्या कर सकती हूँ। अपनी मर्जी की तो हूँ नहीं। कुँआरी लडकी कुछ जबान से निकाल सकती है?

कमला—यह मतलब नहीं है। इतना मालूम हो गया कि तुमको पसन्द हैं। बस, अब हम तुम्हारी माँ-बहन से रिश्ते की बातचीत करेंगे। वह अपने यहाँ के कायदे के माफिक तुमको वर दिखाने की कोशिश करेंगे, तुम कह देना—

कामिनी—बहन, हमारे मैके की इस रस्म का हाल किसी और से ज़बान पर न लाना, नहीं मुफ्त की बदनामी होगी।

कमला—मेरे यहाँ तो खुद यही रस्म है।

कामिनी—तुमको इस लडके से क्यो इतनी मोहब्बत है ?

कमला—अच्छी सूरत सब ही को भली मालूम होती है।

कामिनी—नही, कोई बात है जरूर।

कमला—अब साफ-साफ कह दूँ ?—न कहूँगी !

कामिनी—कहो, तुम्हें कसम है, सचमुच, कहो—कि तुमसे इससे क्या नाता है। तुम क्यो इसकी तरफ से घडी घडी कहती हो ?

कमला—यह मेरा भाई है। चचा का लडका, बहन को मोहब्बत न होगी तो फिर किसको होगी ? अब आज से हम तुमको दुल्हन कहेंगे।

कामिनी (हँसकर)—सूत न कपास, कोरी से लट्ठम-लट्ठा। अभी से दुल्हन कहने लगी। ले, अपनी भावज से यह सब बातें न कहना, नही हमसे बनेगी नही।

कमला—वह कोई गैर तो है नही। वह खुद खुश होगी। मगर अच्छा, हम उनसे इतने खुले-बन्दो न कहेंगे।

जब भावज ने अच्छी तरह देख लिया कि बातचीत हो चुकी, तो उनके पास आई। कमला ने पूछा, यह इतनी देर कहाँ रही। कहा—धोबिन के कपडे लिखती थी। तुम्हारी इनकी क्या बातें हुईं। कमला ने कहा—यह इधर-इधर की बातें हुईं, दुनिया की। कही अलबम देखा, कही इस लडके का ज़िक्र किया, यही कुछ, कही कुछ। एक बात अलबत्ता तुमसे कहने के काबिल है। वह यह कि, अब आज से हम उनको दुल्हन कहेंगे। भावज ने मुबारकबाद दी। कामिनी ने बनावट की खफगी के साथ कहा—हमें डोली मँगवा दो, हम जायँगे।

कमला बोली—रो दे, बनिया गुड देगा, हँस दे, बनिया छीन लेगा। भावज भी मुस्कराई—कामिनी, कहने से तुम बुरा मानोगी क्या ? बुरा क्या है, जी ? हम तुम्हारी बहन है, कि नही। हम भला यह चाहेंगे कि तुमको किसी ऐसी-वैसी जगह झोंक दें ? और सच यो है कि मेरा देवर कमला का भाई है। मैं चाहती हूँ, तू मेरी ही ससुराल में आए। अच्छा, चलो, अब शहनशी में चल बैठो। तुम्हारी महरी यहाँ है, कामिनी ? महरी ! अपने घर जाके थोडा-सा बसा हुआ कत्था हमारे नाम से माँग ला। महरी को यो टाल, कामिनी और कमला को शहनशी में ले गई। जब मसहरी पर कामिनी बैठ गई, तो एक दफा ही भावज ने कहकहा लगाया। कामिनी देखती है तो एक मर्द सामने।

जल्दी से कमला को लिपट गई और थरथर कांपने लगी। भावज ने यह कैफ़ियत देखकर झटपट एक दुलाई ओढा दी और देवर से इशारा किया कि ज़रा हट जाओ। कामिनी से कहा—आँखें खोलो, कोई नही है। कामिनी वही दुलाई ओढकर सिकुड-सिकुडाकर फुर्ती के साथ महसरी के नीचे उतर आई।

कामिनी—(बहुत आहिस्ता से) डोली मँगा दो।

कमला—(मसहरी के पर्दे गिराकर)—अब बिलकुल आड है। प्यारे से प्यारे की कसम खा के कहती हूँ कि अब बिलकुल ही आड है।

कामिनी (बहुत गुस्से में)—यह भी कोई भलमसी है ?

कमला—अपनी आंखो की कसम, इसमें कोई बदी की बात नही थी।

कामिनी—चलो बस, चुप रहो। यह सारा फिसाद लाजदुलारी का है। न यह हमको बहाने से बुलाती, न तुम गैर मर्द का और हमारा सामना कराती। मेरी आंखो में खून उतर आया।

कमला—यह तो मेरा भाई है। मुझे नही मालूम था कि ये यहाँ बैठे हैं। यह सब हमारी भावज के करतूत है।

भावज—यह तो मुझी को धरवा दिया !

इतने में रनवीर सिंह से न रहा गया। पुकार ही उठा कि यहाँ घूँघट और हया आखिर कब तक ? कमला और भावज दोनो मुस्कराईं कि यह बीच में कहाँ से बोल उठा। कामिनी बहुत शर्माई। कहा—जो कही मेरे भाई को मालूम हो, तो खून करने पर तैयार हो जाय। रनबीर ने कहा—वह भी राजी है। उनसे आमने-सामने बातचीत हो चुकी है। यह बीवी हैं किस खयाल में ? कामिनी ने भावज से कहा—लाजदुलारी कहाँ जाकर बैठ रही। हमको ज़लील करने को बुलाया। वाह अच्छी बहन है ! राजदुलारी जान बूझ के इस मामले में न पडी ; कि अगर इस इतनी बातचीत से कामिनी बिगड जाय तो मैं समझा लूगी कि बहन जाने दो। इतने में वह भी आई। देखा तो कामिनी एक दुलाई ओढे मसहरी के नीचे खफा बैठी है, और भावज और कमला समझा रही है। जब उसको मालूम हुआ कि रनवीर सिंह और कामिनी की चार आँखें हुईं तो यह राजदुलारी को भी बुरा मालूम हुआ। उसने कहा—अब तुम लोग बहुत बढ़ गईं। यह बात हमारे भी नापसन्द हुई। पराये मर्द का इस तरह देख लेना वाहियात बात है।

भावज—तो बहन, आपस में इतना पर्दा न चाहिए। एक कौम, एक नस्ल ! दर्द-दुख, मरने-जीने के शरीक, कोई ग़ैर कौम का हिन्दू नही। कोई मुग़ल-पठान नही। धोके में ज़रा सामना हो गया।

कमला—हाँ, यह तो कोई ऐसी बात नही है कि इतना बुरा मानें।

कामिनी—मुझे अपना तो बिल्कुल खयाल नही है। मेरा तो दिल साफ़

है। एक छोड अगर सौ भी हो, तो क्या, मैं आँख उठा के न देखूँ। मगर बात अच्छी नही है। जो सुने वह क्या कहे।

कमला—भाई-देवर का यह हाल हम गली-कूचे कहते फिरेंगे? तुम्हारी अक्ल को क्या हो गया है? तुम तो पढ़ी लिखी हो।

भावज—ए, हाँ हमारे दिल का तो इन बातो से कँवल खिलता है, और, तुम जाने क्या समझती हो।

कमला—इनकी चोरी पडी है, जब भँवरी फिरोगी, तब झुकके सलाम करूँगी कि अब कहो कामिनी बीवी वह दिन याद है?

कामिनी—ब्याह के बगैर तुमने दूल्हा से पड-पड बातें की होगी!

कमला—कौन? हमारी भली कही! हम तो उस घर की हैं जहाँ स्वयम्बर तक जायज है। गो होता नही। मगर बूढे भाई अब तक उसकी तारीफ करते हैं। और यहाँ हमारे-तुम्हारे सिवा और कौन है?

राज—अच्छा कामिनी, अब गुस्सा थूक दो। और जरा जरा लहरा-लहरा कर 'इन्दर-सभा' के शेर तो पढो। गला अभी अच्छा है।

कामिनी—बडी बी तो बडी बी छोटी बी सुभान-अल्ला! ये और सब में तेज निकली! मैंने सुना तुम नाचती खूब हो।

राज—अब ये बातें करोगी तो तिगनी का नाच नचाऊँगी।

कमला—हाँ, अब राजी होगी।

भावज—एक साथ की पढी हुई हैं न!

राज—अगर बडी शर्म है तो तस्वीर काहे को पसन्द की? मैं सुन रही थी कि इसको सब औरतें प्यार करेंगी! तुमको ऐसा लडका मिले कहाँ!

कामिनी—अल्लाह! एक तुम और एक (दबे दाँतो) वह लडका—बस दो ही तो हैं!

राज—जी में तो खुश हो गई होगी।

कमला—हाँ, कहती ही जो थी।

भावज—तस्वीर देख-देख के सिसकियाँ भरती थी।

इस पर बडा कहकहा पडा। और कामिनी खुद भी मारे हँसी के बेताब हो गई। कहा—जो किसी और के सामने कहो तो उसको यकीन आ जाय कि बडी हुडदगी लडकी है। फिर कामिनी को हँसी आई।

भावज—बडी खुश है। वह, ठीक-ठीक बात हुई ना!

कामिनी—अब मैं कुछ कह बैठूंगी। (मुस्कराकर) पराई लडकी को अकेला पाकर बनाने लगी मिल के सब की सब।

राज—कुछ चोर तो तुम्हारे दिल में जरूर है।

कामिनी—मैं कहती हूँ, कही कोई जाके अम्मा या हमारे भाई से न जड़

दे। वडा डर मालूम होता है। तुम हमें जाने दो, महरी को न मालूम होने पाये।

भावज—कैसी पगली लड़की है। महरी मुई है यहाँ!

कमला—हम तो अपने मियाँ को व्याह के पहले ही लिपट गई थी। जब अपना ही है तो चोरी काहे की?

राज—बस, हजार बात की एक बात कही! बी कामिनी, बस इसी बात पर जाके चूम लो, तो जानूं मैं!

कामिनी—तुम ही न जाओ। चूम लो जाके।

इस पर सबको बडी हँसी आई, कि झल्ला के कामिनी से न रहा गया, बोल ही उठी।

भावज फिर ज़ीने के पास गई। उसने कहा—भाई परमेश्वर जानता है, यह लौंडिया लाख-दो लाख में फर्द है। तदबीर पट न पड़े। भावज ने कहा—कुछ खैर है, अब तो सब पक्की-पोढी हो गई है। किसकी मजाल है कि बीच में भाँजी मारे। अब व्याह की तैयारियाँ हो रही है। हमने तुम्हारी खातिर से दिखा दी। वह सच कहती है कि जो उसके मैकेवाले सुन लें तो बडा बुरा मानें। रनबीर ने कहा—इस बेचारी को बहुत छेडो नही। इस पर भावज ने ज़ोर से कहकहा लगाकर कहा—कमला, यह कहते है कि इस बेचारी को बहुत न छेडो! अपनी आँखो की कसम।' इस पर ज़ोर से कहकहा पडा।

थोडी देर की चहल पहल के बाद कामिनी अपने घर आई। घर की औरतो ने पूछा—कौन-कौन था। उसने कहा—किसी ग़ैर को नही वुलवाया था। बुलवाने को तो वहुतो को थे मगर मेरे सबब से नही वुलवाया। यह कहकर कोठे पर गई। हसिया से सारा कच्चा चिट्ठा कह दिया, और दिल ही दिल में सोचने लगी कि अगर इससे व्याह न हुआ तो जिन्दगी तलख हो जायगी, बल्कि जीना मुहाल हो जायगा। अब मेरी जिन्दगी का दारोमदार इसी बात पर है। जो इससे भँवरी फिर गई तो जी गई, और नही तो कुढ-कुढ के मर जाऊँगी। यह यूसुफ है तो मैं जुलैखा—ऐसी सूरत ही मैंने आज तक नही देखी। देखना क्या मानी, ज़रा भी खयाल न था कि ऐसी सूरतें भी परमेश्वर ने बनाई है। मगर अन्धा जब पतियाए, जब दो आँखें पाये। अभी कौन जानता है। हाथी छूटे, घोडा छूटे, साईं के सौ खेल।

—०—

ग्यारहवाँ अध्याय

चाँद-सूरज की जोडी यानी दूल्हा-दुल्हन एक सग

बलजोर सिंह, ठाकुर गजराज सिंह, मानसिंह, इन्द्र बिक्रम सिंह, ठाकुर शमशेर बीरसिंह, सिद्धमान सिंह, जगपाल सिंह, नीलकठध्वज सिंह, बलभद्र सिंह, गुमान सिंह, पहलवान सिंह, जालिम सिंह, रनसूर सिंह, खूँखार सिंह—ये सब राजपूत एक जगह बैठकर खा-पी रहे थे। सब जग-जू, खूँखार। कोई घर के युद्ध देखे हुए, कोई मोर्चों पर गोली और तलवार खाया हुआ, किसी के मैदाने-जग में दस दस टाँके लगे हुए, कोई गोली की बारिश देखे हुए, कोई फौज में भर्ती होने के लिये तैयार। गरज कि इस सोहबत में सब फौजी ही लोग थे। मगर बिलकुल उजड्ड नही। सब तलवार के धनी और थोडा-बहुत पढे लिखे और सोहबतयाफ्ता।

बलजोर सिंह ने कहा—हमारा लडका बारात ले जाने पर राजी नही होता। कहता है, अग्रेजी कायदे से शादी होनी चाहिए। कोई बच्चा नहीं है, कि मारूँ-पीटूँ। बारह बरस के को बैद क्या करे, और सोलह बरस के को बैद क्या करे। और फिर होनहार लडका। मुझसे हर तरह अच्छा। इलाके का इन्तजाम ऐसा अच्छा किया कि तारीफ से बाहर है। इन सब में एक बुड्ढा ठाकुर अलबत्ता उजड्ड थे। ठाकुरो के बद नजर से बचाने के लिये, उनमें पुराने जमाने का उजड्डपन बाकी था। उम्र उनकी नब्बे से कम न थी। नीमजान, मगर बूढा तीखा बुड्ढा। चीन-काबुल, ब्रह्म, दकन की लडाइयाँ देखा हुआ। उन्होने जो सुना कि लडका बाप का कहना नही मानता, तो बिगड गये और आव देखा न ताव, गुल मचा के कफन फाड के चीख उठे—मूड काट ले सारे का! अग्रेज बने चले है! फिर अग्रेज के घर में जनम क्यो न लिया!

सब हँसने लगे। इतने में एक बूढे और ठाकुर जिनका बायाँ हाथ चिलियन वाला की लडाई में कट गया था, बिगड गये—सुनो भाई, रनसूर सिंह, वह लडका सच कहता है। हम सिपाहिया को ढोल दमामे और पीं-पीं और नौबत और घूँसे-कक्कड झंयड से क्या काम! हमारा बाजा कडकैतों का कडका, जिससे ऐनो-बैनो के दिल में हो धडका, सच कहता है लडका।

एक ने कहा—वाह रे बुड्ढे, तुकबन्दी अच्छी की! और उसने फिर रनसूरसिंह से कहा—सुनो भाई, यह बाजा-वाजा बारात के साथ बनियो और लक्खीचन्दो को ही सुहाता है—लडके को गहने पहना के घोडे पर बिठा दिया! हमारा लडका गहना पहने, तो मूड काट लूँ सारे का! मियाँ भाई नौशा बना के, सुथना पहना के, रँगे कपडे, मांझे का जोडा डांट के ब्याहने जाते हैं। हम

तो अपने लड़के को बारात के दिन दोहरी तलवारें बँधवाएँगे, और बाजे के बजाय सरकार से तोप साथ ले जायँगे। दुल्हन के दरवाजे पर सख और बाजे के बजाय तोपें दगेंगी और नौबत की जगह वर्दी बजेगी, दोपहर को बिगुल होगा।

नीलकंठधज सिंह ने यह सुनकर जरा छेड़ने के लिये दिल्लगी की बातें की—तो जरूर ठाकुर खूँखार सिंह के लड़के की शादी में तोप जरूर हो! बल्कि एकाध मोहल्ला उड़ा दिया जाय, ताकि शहर भर में यह बात यादगार रहे कि मोहल्ले के मोहल्ले खाक सियाह हो गये, और दो-एक राहचलतो को तोपदम भी कर दीजिए, ताकि और नामवरी हो। पीरूमल ने लखूखा रुपये सर्फ करके सहँगी निकाली, नाम किया, अब तुम इसमें नाम करो। और बिगुल तो वाकई जरूर हो। बल्कि आधी रात को समधियाने में आग लगा दीजिए और आग लगने का बिगुल फौजी कायदे से बजाइए ताकि आधी रात को लोग सोते से चौंक उठें तो सुनें कि ऐसे सूरमा छत्रियो की बारात आई कि मोहल्ले के मोहल्ले सुरंग से उड़ा दिये गये और जो इधर-उधर मिला, तोप के मोहरे उड़ा दिया गया, और समधियाने का झगड़ा ही पाक कर दिया। ऐसी आतशबाज़ी छुड़ाई और आग लगी कि बाँस और शहतीरें जो फटें, लोगो को आवाज आये।

इस पर इस ज़ोर का कहाकहा पड़ा कि दूर तक आवाज़ गई। बैकुंठधज सिंह एक ठठोल हँसोड़े ठाकुर थे। रनसूर सिंह की तकरीर सबको नागवार गुज़री थी। मगर खूँखार सिंह की ज़ीट उससे बढ़ गई। देर तक दिल्लगी रही। गुमान सिंह तहसीलदार ने खूँखार सिंह की खिदमत में अर्ज़ की कि—हुज़ूर के बुलन्द-इकबाल की बरात जिस दिन निकले, इस खादिम को इत्तला हो जाय, ताकि छुट्टी ले लूँ। वर्ना हाकिम अफसर कहेंगे कि तहसीलदार बारात के साथ और आग लग गई।

जगपाल सिंह बोले—ठाकुर साहब, मुझे भी इत्तला कर दीजिएगा, मौक़े वारदात के वक्त समधियाने से भाग जाऊँ।

सिद्धमान सिंह ने हँसकर जगपाल सिंह की बात यों काटी—अरे, साहब, वह समधियाने से अगर आप बच भी गये तो फायदा! और जो रास्ते में तोप मोहरे से उड़ा दिये गये! बेहतर तो यह है कि बारात में शरीक ही न हो। खैरियत इसी में है।

बलभद्र सिंह ने इनकी भी काट की—इसमें बचाव नहीं है। न समधियाने से भाग आने में ही खैरियत है। बारात में शरीक न होने से भी आप नहीं बच सकते है। खैरियत बस इसी में है कि शहर छोड़ दीजिए। क्योंकि यह भी तो अन्देशा है कि मोहल्ले के मोहल्ले उड़ा दिये जायँगे। न जाने आप उस वक़्त किस मोहल्ले में हों।

जब तक यह सोहबत रही, तब तक यही दिल्लगी, यही चुहल रही। हँसते-हँसते लोग लोट-लोट गये, पेट में बल पड-पड़ गये; खासकर नीलकण्ठ धर्जसिंह की तकरीर सुनकर तो किसी से हँसी जब्त न हो सकी। यह जलसा तहसीलदार साहब गुमानसिंह ने इस गरज से किया था कि सब जाने-माने हुए बड़े-बड़े ठाकुरो की सलाह से यह बात तय पा जाय कि ठाकुर रनबीर सिंह की बारात न निकले, और अंग्रेजी कायदे से हो। शादी हो, भँवरी जरूर फेरी जायँ। धार्मिक रस्मो पर कोई रोक नही लगाता, मगर यह बाजा और आतशबाजी, घोडो का स्वाँग—इससे माफ रखे जायँ।

यहाँ वह गुफ्तगू छिड गई कि चुहल और दिल्लगी के सबब से इसकी नौबत ही न आने पाई और खाम्पी के लोग अपने-अपने घर चल दिये। दूसरे दिन रनबीर सिंह की सलाह से गमान सिंह और बलभद्र सिंह, उनके पिता बलजोर सिंह के पास गये और कुल हाल बयान किया कि कल तो वह बात दिल्लगी में टल गई, अब आज हम लोग आपके पास आये हैं। रनवीर सिंह की दिली ख्वाहिश यह है कि बारात न निकले, इसमें आपकी क्या सलाह है। बलजोर सिंह ने इस सुधार को कबूल किया कि छत्री का धर्म तो बस तलवार है। यह बारात और ढोल और ताशा और नौबत और धौसे से कौन गरज है। हमारी नौबत और धौंसा बस कडकैत का कडका है। मगर यह हम मजूर न करेंगे कि वह कहें कि पूजा न हो, पडित न आयें, भँवरी न फेरे जाँय। यह हम न मानेंगे। बारात न हो, न सही। अब रहा औरतो का खयाल, हमारे यहाँ औरतो की कम चलती है। जब बारात दूल्हन के घर पहुँचे, शगून के लिये कुछ बजा दिया जाय। बाकी रस्में जैसी कि पुराने जमाने में होती आई है, वैसी ही हो। तुम लोग अपनी राय के मुताबिक कार्रवाई करो, हम खाना खाने के वक्त अपने दोस्तो और अज़ीज़ो को लेकर समधियाने जायँगे और खाम्पी के चले आयँगे। तुम रात भर रहना।

औरतो ने भी इस राय को मान लिया। दोनो घरो की औरतें समझदार थी मगर उनके रिश्तेदारो की घरवालियो ने इस किस्म की शादी पर नुक्ता-चीनी की, कि अगर ठाकुर की लडकी ब्याहती है तो हमारे बाप-दादा के रस्म के माफिक कार्रवाई की जाय, और जो मेम के साथ शादी करनी हो तो वह दूसरी बात है। हम लोग ऐसी शादी में शरीक न होगे। आखिर में यही बात तय पाई कि गजराज सिंह के गाँव में शादी हो। और वहाँ खेमो और शामियानो और मकानों का बन्दोबस्त हो गया और शादी के दस दिन पहले गजराज सिंह और इन्द्रविक्रम सिंह और गजराज सिंह की भतीजी शिवरानी और उनके मियाँ लाल बहादुर सिंह और गजराज सिंह की बहू स्मृता और कामिनी की बड़ी बहन पद्मिनी और उनके पति शिवदत्त सिंह और कण्ठधज सिंह और

शमशेर बीर सिंह और खूंखार सिंह और उनके घर की औरतें, नौकर-चाकर, सिपाही, गांव में गये। और बलज़ोर सिंह की तरफ से बलभद्र सिंह ने सब के ठहरने का इन्तज़ाम पूरा-पूरा किया। शादी के तीन रोज़ पहले बलज़ोर सिंह, मय नौशा और अपने दूर और नज़दीक के रिश्तेदारों और दोस्तों के, तशरीफ ले गये। शादी के दिन रनबीर सिंह और बलभद्र सिंह और मानसिंह और रनबीर सिंह के दो भाई और एक चचेरे भाई और कमला के पति सरूप सिंह घोडों पर सवार होकर दुल्हन के मकान गये। शहनाई वाले रास्ते में दुल्हन के मकान के पास खडे थे। ये बलज़ोर सिंह की तरफ से थे, ताकि औरतों को अपशकुन का खयाल न हो। ड्योढी पर शहनाई बजी और दूल्हा साहब घोडे से उतरे, तो तलवार कमर से लटकती हुई, जामे की सजधज के साथ केसरिया पाग बाँध, दूल्हा मियाँ, या ठाकुर दूल्हा, या सिपाही दूल्हा, या कप्तान नौशाह साहब घोडे की पीठ से जमीन पर उतरे। उनका घोडे से उतरना था कि गजराज सिंह के सिपाहियों ने बन्दूकों की सलामी सर की और उधर रनबीर सिंह की तरफ से भी उनके आदमियों ने बन्दूकें दागीं। खाना खाने के वक्त कुल बिरादरी के लोग जमा हुए, जिनमें अक्सर फौजी अफसर थ। खाने के बाद दूल्हा जनाने मकान में गये। वहाँ रस्में अदा हुईं, और जिन-जिनको हँसी का रिश्ता था, उन्होंने हँसना शुरू किया (सालियों सलहजों ने):

ये भँवरी फेरने आये हैं या पैंतरे बदलने।

हमको तो जायस का यह बहुरूपिया-सा मालूम होता है।

बचलोहिया बन्दूक मियान में रख ली, चलो ठाकुर बन गये. कौन लडाई फतह की है, ठाकुर साहब?

उमंठा सिंह की कितनी होती है! अब ये बकरे पर चढा ही चाहते हैं।

कहीं कोई छींक न दे!

इन दोनों फबतियों पर बडा कहकहा पडा, और देर तक मियाँ उमंठा सिंह खुद भी दिल में बहुत ही झेंपे, और छींक की भी खूब ही हुई। मगर एक बूढी ठकुराइन को बुरा मालूम हुआ। कहा—लडकियो, जरा समझके, जबान सँभालके, बात करो। छींकने-बींकने का नाम न लो, नाकों को काट डालो! ये तो कहकर चल दी, और उधर रनबीर सिंह को दिल्लगी हाथ आई। कहा—ये काजी साहब नाहक कहती हैं कि अपनी-अपनी नाक काट डालो। यहाँ नाक-वाक इतने में हैं किसको? देखने की नाक सब है, मगर सब—नग, समझ जाओ। इतना सुनना था कि एक शोख ने अजब दिलरुबा अदा से कहा—ए वाह मियाँ नक्कू! वाह मियाँ बडनक्कू, वाह! दूसरी बोली—मुँह के आगे नाक! यह कोई फबती न थी मगर सब की सब इस तरह बेतहाशा हँस दी कि रनबीर सिंह झेंप गये, और उनको कहना पडा कि हम तुम लोगों

स नही जीत सक्ते। एक कहती है और सब की सब हँस देती है। हम हारे!

उनमें से एक बोली—हात् तुम्हारे की! दोहरी-दोहरी सरोहियाँ बाँध क आये थे। आखिर हार माननी पडी!

सुबह को नौशा दुल्हन को लेकर अपने घर आय। दुल्हन के बाप माँ भाई बहनो के रोने और आँसू बहाने ने दुल्हन के विदा होने के वक्त असर का रग जमाया कि बडे-बडे बाँके ठाकुर और तलवरिये राजपूतो तक को रोना आ गया। अब रात का हाल सुनिये।

अपने खान्दान की पुरानी रस्म के मुताबिक घन्नो ठकुराइन दो महरियो का साथ लेकर कामिनी को कोठे पर ले गईं। कामिनी गर्दन झुकाए, चुपचाप, दबे पाँव साथ हुई। घन्नो ने उसको पलग पर लिटा दिया और खुद चली गई और कामिनी के मैके की तुलसा की छोकरी हँसिया से कहा कि जब इनके दूल्हा आयें तब तू नीचे चली आना। रनबीर सिंह को छिपे तौर पर इत्तला दी गई। ये तो, क्या पूछना है, इस तरह आये, जैसे गोला तोप से छूटता है, या तीर कमान से बाहर निकलता है। छत पर आय तो हँसिया ने मुस्करा के कहा—अपनी अमानत—खबरदार! रनबीर सिंह भी मुस्कराये। हुक्म दिया कि तुम बाहरवाली छत पर लेटो, हम दरवाजा बन्द कर लेंग। शायद कोई जरूरत हुई। सब दरवाजे एहतियात के साथ बन्द करके रनबीर सिंह पलग पर आय। कामिनी मुँह छिपाए करवट से सो रही थी। पोशाक बहुत कीमती, बनारसी साडी, सब्ज रग, चारो हाशियो पर कलाबत्तू का काम किया हुआ, बीच में आडी बेल, कारचोब की कुरती, आसमानी रग, फँसी आस्तीनोदार, जवर से गोदनी की तरह लदी हुई, सिर पर छपका, बेंदी, माथे पर झूमर, चोटी में सीसफूल, नाक में नथ, सच्चे मोती-जडा, और कील, कानो में करन-फूल, झुमके, बालियाँ, पत्ते, गले में चम्पाकली, कण्ठा, पचलडी। हाथो में मेंहदी का शोख रग। पोर-पोर छल्ले, पहुँचियाँ, कगन। डँड पर नौरत्तन, जोशन। कमर में तागडी। पावो में कडे-छडे पाजेब। चोटी से पाँव तक एक नूर का आलम था।

जो खुद ही सर से पाँव तक मस्त हो, उनकी मस्ती का खुदा हाफिज है। सोलह बरस की दुल्हन बाईस बरस का दूल्हा। दोनो की उठती जवानी। दूल्हा का मसें भीगती थी, और दुल्हन के उभार के दिन, मुरादा की रातें। उठनी कोपल, नई जवानी। जोबन फटा पडता था।

कामिनी न जो आँख बन्द की और एक करवट से सोई तो फिर वह करवट न बदली। रनबीर सिंह ने गले से लगाकर कहा—प्यारी यह हया और शर्म कब तक, और किससे ? उससे जो सैकडो औरतो मर्दा के सामने हाथ पकड चुका, जिसके साथ सैकडा गवाहा के सामने भँवरी फरी ? उसम

पर्दा कैसा। (जबरदस्ती चूमकर) तुम तो पढ़ी-लिखी हो। अच्छा, इस गर्मी में हमारे हाँ की जाहिल औरतो ने जरी और कारचोब और गहने से लाद दिया, इससे तुमको बेहद गर्मी मालूम होती होगी। हमारा इतनासा कहना मान लो कि कमरे में जाके सादे कपडे बदल आओ।

यह कहकर रनबीर सिंह ने दरवाजा खोलकर हँसिया को चुपके से बुलाया और कहा—इनके कपडे तो बदलो। जरी और कमखाब के कपडे इस गर्मी में और परेशान करेंगे। हँसिया ने जरा झिझकते हुए कहा—सरकार, या तो उधर खुले हुए में निकल जायँ या छत पर चले जायँ। मैं भी अभी बिलकुल जवान हूँ। उम्र में बीवी से भी कम। और आप भी जवान आदमी। ऐसा न हो बीवी को शक हो, तो मैं कही की न रहूँ। रनबीर सिंह मुस्करा के हट गये, और हँसिया ने, जाके कामिनी से कहा—चलके कपडे बदल लो। मुझे जगाके भेजा है।

कामिनी ने पहले बर्फ का ठडा पानी पिया। इसके बाद कमरे में जाके कपडे बदले। शरबती की सफेद साडी। अद्धी की कटाव की हुई आस्तीनो-दार कुरती पहनकर आई और फिर उसी तरह लेट रही। हँसिया दबे पाँव कमरे के बाहर गई। रनबीर सिंह न मुस्कराकर कहा—हँसिया तुम हमारी सुसराल की हो। इस हिसाब से मेरी साली हुई। और साली आधी जोरू होती है। हँसिया ने हँसकर कहा—मैं लौंडी हूँ आपकी।

रनबीर सिंह ने जो अब पत्नी को देखा तो बेअख्तियार कह उठा—

जवर है सादगी तेरे रुखसार के लिये।

शरबती की साडी और अद्धी की कुरती में भी वह जोबन था कि नूर बरसता था। रनबीर सिंह ने गले लगाके कहा—जानी, अब इस कदर सख्ती न करो।

पाँच बजे तारो की छाँव में कामिनी दबे पाँव जाने लगी। दूल्हा ने दो-तीन बोसे लिये, और हँसिया के साथ कामिनी चुपके से नीचे जाके एक पलग पर, जो धन्नो बीवी के पलग के पास बिछा था, सो रही।

—o—

बारहवाँ अध्याय

अपनी बीवी उन्हें दिखा दो

रनवीर सिंह आठ बजे बिस्तर से उठे और ऊपर ही ऊपर होते हुए बाहर आये और बाग की कोठी में जाके पहुँचे। और कपडे पहनकर इत्र मलकर गोल कमरे में आये, तो वहाँ बलभद्र सिंह और गुमानसिंह बैठे थे। एक दूसरे को देखकर मुस्कराया।

बलभद्र—हुजूर की खिदमत में कोर्निश!

र०—(मुस्कराकर)—तस्लीम!

गुमान सिंह—बाछें आप ही आप खिली जाती हैं।

र०—फिर आप जल मरिये।

ब०—रात को शायद हुजूर को नीद नही आई। आँखें सुर्ख हैं। कहिए खैरियत तो है?

ग०—अब भला क्यो किसी को खामखाह छिपाते हो?

र०—बजा इरशाद हुआ। झेंपनेवाले कोई और ही होते होंगे।

ग०—बेहयाई की बला दूर।

ब०—वल्लाह, तुम मेरे मुँह से ले गये। मै कहने को था।

ग०—मगर हुजूर के चेहरे का रग कुछ और ही कह रहा है।

र०—(हँसकर) हमारी समझ में नही आता कि यह आप लोग बकते क्या है?

ग०—तुम लाख बातें बनाओ, मगर सच कहना हम कैसा ताड गये!

र०—क्या खूब! अब आप लोगो ने गोया हमको बना लिया!

ब०—उस्ताद, चेहरा कुछ उतरा-सा नजर आता है। इसका क्या सबब?

र०—शेरो के चेहरे कही उतरते है? ये चेहरे उतरनेवाले है भला? एक घूँसा तान के दूँ तो हाथी का दम निकल जाय।

ब०—बचा, अब यह बताओ कि इस वक्त शर्माए-झेंपे हुए क्यो हो?

र०—पागल हो? कौन? हम कहीं शर्मानेवाले जवान हैं?

ब०—भई, तहसीलदार जरा इनकी सूरत देखना। फरमाते बरमनी हैं।

> क्या जानिए विसाल में क्या बात हो गई;
> आँखें नही मिलाते हैं, शर्माए जाते हैं!

रनवीर—अरे मियाँ, छत्री लोग किसी से शर्मानेवाले है? जैसे शेर बच्चे पहले बने हुए थे वैसे ही अब बने हुए है।

ब०—अब यह बताओ, बीवी वैसी ही खूबसूरत है जैसी सुनते थे ?

र०—ऐं तस्वीर ही देख चुके हो। तुमसे क्या छिपा हुआ है। यार सबसे ज्यादा खुशनसीबी यह है कि नागरी खूब जानती है! और शीन-काफ भी दुरुस्त है। ठाकुरों की लड़की और ज़बान यह शुस्ता! अंग्रेजी में वर्क, यह और कमाल।

ब—क्या आते ही पटर-पटर बातें करने लगी ? बडी शोख लौंडिया मालूम होती है। दो-तीन रात तो कुछ शर्म चाहिए।

गुमान—तो अब हुए भी तो आठ पहर। क्या थोड़ा जमाना है ?

ब०—बजा इरशाद हुआ। आठ पहर गोया बरसों हो गये।

र०—गँवार आदमी हो ना। अरे शर्म-हया भी शर्म हया-सी होनी चाहिए। यह नहीं कि दस-दस दिन जबान से बोलती ही नहीं। हमें तो वहशत हो जाय। मगर कि जो लोग अक्लमन्द है, वह एक घटे में अपने रग और ढर्रे पर ला सकते है।

गुमान—हो बड़े खुशकिस्मत, यार। चाँद-सी बीवी पाई। चैन लिखता है, 'हनीमून' के लुत्फ उठाओ! मगर यह सब कारवाई बलभद्र सिंह की है।

बलभद्र—एहसान फरामोशी न करना। और कुछ नहीं तो एक दफा झमकड़ा ही दिखा दो। हम बलाएँ लेंगे। हमें ख्वाजासरा समझो। बस, और किसी को न दिखाओ।

गुमान—आप में कौन-सी पीरी है, और हमने क्या गुनाह किया है? इन्द्रविक्रम से तो हमने पहले ही पहल जिक्र किया। तुम कहाँ बीच में कूदे पड़ते हो। हमको अवलत्ता कम से कम बोसे लेने का हक है।

रनवीर—क्यो नही! एक नही, बल्कि दो। मुँह धो आओ, जाके। बहू-बेटियो के बारे में बेहूदा बातें बकते हो।

गुमान—अब रग लाई गिलहरी। शादी हो गई ना।

बलभद्र—पाजी के साथ कभी एहसान न करे, बस!

ग०—देखते हो यार, अगर हम तुम इतनी कोशिश न करते तो यह प्यारी दुल्हन कहाँ से मिलती।

रनवीर—कुछ वाही हो गया ? चलो अपनी राह लो।

गुमान—वाह रे सूम!

एक बोसा हमने माँगा, राहे-मौला, वाह जी,
फूटे मुँह से यह न निकला, लेते जाओ शाह जी!

रनवीर—(मुस्कराकर) शाह जी इस वक्त फिर माँगो, और घर देखो।

बलभद्र—लीजिए, बन्दानवाज, मँगता तो बन गए।

गुमान—अरे जालिम हमारा कोई हक है या नहीं? तेरे कारन विम-त्रिम से लड़े, त्रिम-त्रिम से बुरे बने!

रनवीर—अब यह बताइये कि बलभद्र सिंह ने और आपने जो पार्टी देने का वादा किया था वह कब दी जाएगी ?

बलभद्र—कल ही, या अबकी हफ्ते पर रखिए। सनीचर के दिन दावत हो जाय। हम तो होटल में पकवाएँगे। जिसका जी चाहे आए।

रनवीर—अजी हम तो खुले-बन्दा खायेंगे, कुछ पर्वा नही!

गुमान—और हम कब चूकनेवाले हैं भला। अब तो हिन्दुस्तान भर में रिवाज है। कलकत्ते से इसकी कार्रवाई शुरू हुई और अब तो आम है। मरहटा, ब्रह्मन, बड़ी-बड़ी चोटियाँ किये हुए—वेद-पार्टी और छुरी-कांटा होटल में चल रहा है। इसको ऐब नही समझते। और ब्राह्मो और फ्रीमेंसनो के सबब से होटल-बाजी का रिवाज हिन्दुओ में और भी ज्यादा हो गया। याने जिनके-हाँ गोश्त का नाम भी कोई नही लेता, वह मुर्ग और टर्की उडाते हैं। फर्माइशें होती हैं कि मुर्ग के कटलट पकें, डक रोस्ट हो। बाप-दादा सालन के नाम से भागते थे, साहबजादे नाम रोशन कर रहे हैं। अब तो हवा ही ऐसी चली है कि कोई कौम इस तूफान-बेतमीजी से बची नही है। हाँ अलमोड़े की तरफ अब भी पुराना फैशन है। वहाँ के बी ए और एम ए सब पुराने फैशन के। खाने-पीने में वही पुराना रग, मगर खयालात अच्छे।

रनवीर—अच्छा तो पहले तो इतवार को बलभद्र सिंह की जानिब से दावत है, और तुम भई गुमान सिंह अपनी कहो।

गुमान—हमारी लियाक़त उनके बराबर नहीं। हम तो छुट भइयो में से हैं।

बलभद्र—बाईस-तेइस बरस की उम्र में तहसीलदारी करते हो और कहते हो, नालायक हूँ। छुट भइया हूँ। रुपया खर्च करने के वक्त छुट भैया बन गये। आप कश्मीरी बावर्ची बुलवाइये और उम्दा-उम्दा खाना खिलवाइये।

गुमान—यह तो सब-कुछ होगा, मगर यह तो फरमाइये कि जिसने इतनी कोशिशो के बाद चाँद-सी दुल्हन पाई है और ऐसी नवली कमसिन—

बरस पन्द्रह या कि सोलह का सिन,
जवानी की रातें, मुरादो के दिन!

—उनसे बग़ल गर्मानी है—उससे पहले दावत लेनी चाहिए या हमसे?

बलभद्र—भइ हाँ, इन्साफ के तो यही माने हैं!

रनवीर—मैं आपके साथ और हम कब बन्द हैं। दो वक्ता दावत लीजिए। सुबह को सीख के गोला-कबाब, खमीरी रोटी, कमरख की चटनी लहसुन और प्याज और बोतल भर हीग भुनी हुई उसमें मिला दी जावेगी।

गुमान—भइ वाह-वाह! हीग क्या जरा-सी बताई है! बोतल भर हीग के लिये मन भर चटनी चाहिए। आपकी दावत भी आल्हा-ऊदल की रसोई हो गई कि एक वक्त में नौ मन हीग से दाल बघारी जाती है।

बलभद्र—मगर दावत जरा देखिए कैसी आला दर्जे की है। गोला कबाब ...
रोटी और चटनी, वाह साहब, वाह! इस क़दर फजूलखर्ची! दिवाला निकल...

गुमान—भई दिल्लगी जाने दो। अपनी-अपनी दावत का सामान बताओ, कि क्या-क्या होगा। और इसमें आपस में तरमीम की जाय।

बलभद्र—हम तो साफ-साफ कह चुके कि होटल में दावत होगी। अंग्रेजी और मुसलमानी दो किस्म का खाना और हर शै फर्स्ट क्लास। चाहे जो खर्च हो। शैम्पेन पार्टी।

रनबीर—खाली-खुली शैम्पेन से क्या होगा?

गुमान—नाम शैम्पेन पार्टी होता है। और पीने को जो जी चाहे वह पियो।

बलभद्र—जी और क्या। व्हिस्की ब्राडी, जो चाहो पियो। मगर पहले शैम्पेन ही खुलेगी।

गुमान—चाहिए तो यह कि सबसे पहले हम एक खूबसूरत ग्लास में शैम्पेन अपने हाथसे बी कामिनी जान को पिलाएँ। और उसके बाद वह अपने प्यारे-प्यारे गोरे-गोरे हाथो से हमको शैम्पेन का जाम पिलाए। हमको भी कुछ यो ही सरूर हो, और उनकी आँखो में भी लाल डोरे रग जमाएँ; माशूक और आशिक एक दूसरे की जवानी के लुत्फ उठाएँ।

रनबीर—अब आप पिटेंगे।

बलभद्र—(हँसकर) गुमानसिंह तो अब खरी-खरी खोटी-खुली कहने लगे। अजी खैर मजाक तो हो चुका अब रनबीर सिंह कोई दिन दावत का मुकर्रर करें और पागलपने की बातें छोडकर सीख के गोल कबाब और खमीरी रोटी की दावत करें।

इतने में खिदमतगार ने आनकर गुमान सिंह से कहा—तहसीलदार साहब, आपका चपरासी आया है, और कश्मीरी बावर्ची को लाया है। हुक्म हुआ, उन दोनो को हाजिर करो। कश्मीरी बावर्ची से तहसीलदार ने कहा—कहो, पडत, क्या-क्या चीज पका सकते हो?

उसने कहा—सरकार जो हुक्म हो, सब बन सकता है। हजूर का पैसा, हमारी मेहनत।

तहसीलदार—भई जो कहो वह मँगवा दें। उम्दा से उम्दा। मगर भई पकाओ जी लगाके।

बावर्ची पडत—सरकार, हजूर की अमलदारी है। जहाँ से जो चाहे मँगवा लीजिए। कित्ते आदमियो का खाना चाहिए और कब चाहिए। हम तीन तरो का पकाते है। एक, उठाऊ चूला, दूसरे मामूली खाना; और तीसरे तोहफे—कि बरसो याद रखें। जिस क़िस्म का कहिए पक जाय। दग़ल-फसल हम नही जानते। हमारा बाप महाराजा के दरबार में बख्शी था। हम पर यह बिपता पडी है, रसोई बनाने लगे।...

तहसीलदार—हाँ तो पहले खाने का मामला तय कीजिए।

बलभद्र—और वही तोहफा खाना पकाइए, कोई पचास आदमियो के लिय।

इतने में रनबीर सिंह के एक दोस्त तूर, के हां से बग्गी आई और खिदमत गार ने कहा—हुजूर को बुलाया है। गुमान सिंह और बलभद्र सिंह से रुखसत होकर रनवीर सिंह तूर के मकान पर गये, जहाँ नूर भी बैठे थे।

नूर—सच कहना! कैसी सूरत है? है चांद का टुकडा?

रनवीर—वाकई, चांद का सरूप, और चांद का टुकडा और वह सब सुना करते थे, मगर अब आंखो देखी।

नूर—(मुस्कराकर) भला महफिल की देखी हुओ में किससे सूरत मिलती है!

रनवीर—दत नामाकूल!

तूर—क्या बातें हो रही है भई। यह दूद-दबक कैसी?

नूर—हमने इनसे पूछा कि तुम्हारी बीबी चांद का टुकडा है या नही। इन्होन कहा—बेशक है। मैंन पूछा, भला महफिल की देखी हुओ में किससे सूरत मिलती है।

रनबीर—और मैंने जवाब दिया, कि उनकी बहनजी से।

तूर—(कहकहा लगाकर)—भली दोनो खूब हुईं, वल्लाह।

नूर—अच्छा एक बात बताओ। (कान में कुछ कहा)

रनबीर—(मुस्कराकर) अब आप पिटेंग।

नूर—(फिर कान में कुछ कहा) सच बताना।

रनबीर—अपनी बहन से जाके पूछो।

तूर—यह कानाफूसी कैसी? कुछ राजो नियाज की बातें हो रही हैं?

रनबीर—गालियां बक रहा है, वाही-तबाही। अब यह मेरे हाथ से पिटगा।

नूर—पीट लो भाई। मगर एक बात पूछते हैं बता दो। इसमें तुम्हारा कौन हरज है। आखिर दोस्त हो कि नहीं?

तूर—इनकी बीवी के हसीन ोने में तो कोई शक नही। मगर यह इनकी भलमनसी है कि तुम लोगो को नही दिखाते।

रनवीर—तुम अपनी बीवी हमको दिखा दो फिर हम भी दिखा दें।

तूर—हमारी बीवी अब बूढी होन आईं। उनको देखा, क्या, न देखा, क्या।

नूर—और क्या। हम लोगो की बीवियां अब फकत नस्ल बढाने के लिय बच्चा पैदा करने के काम की है। चेहरे पर झुर्रियां पडी हुईं, रूप न रग।

रनबीर—आपके कहन से रूप रग नही है। कोई हमारी आंखो से देख।

नूर—हमारा मकान होता तो हम अपनी बीवी दिखा देते। अरे मियाँ दोस्तो से काहे का पर्दा है।

तूर—अच्छा भई अगर हमारी बीवी राजी हो जायें तो क्या मुजायका है। देखो, अन्दर जावे कहते है। शायद राजी हो जायें।

यह कहकर उठे और पर्दा उठाकर अन्दर गये । उनकी बीवी ने कहा यह कौन-सा शोहदापन है। उन्होने एक बूढी मामा से कहा—तुम जरा जरा सिकुड-सिकुडाके दरवाज़े से झलक दिखा दो । घर में बडी हँसी हुई। मामा ने कहा—सरकार मैं वहाँ मर्दो में कहाँ जाऊँ, भला कोई काम न काज। बुढिया से दिल्लगी कैसी। ये बोले काम-काज इससे बढकर क्या होगा कि हमारी बीवी बनके चलोगी। इस पर बडा कहकहा पडा, और उनकी बीवी तक हँस दी, और यह सलाह दी कि खासदान लेके और कोई भारी-सा दोपट्टा ओढ के जाय और खासदान देके, एक झलक दिखा के चली आये। तुम कहना—ले हमारी बीवी को तो आप लोग देख चुके अब हमको अपनी बीवी दिखाइये। इस पर मामा राजी हो गईं। मियाँ नूर बाहर गये। कहा—भली, हमने राज़ी कर लिया। मगर दूर-दूर की देखा-भाली है। उनसे मैंने कह दिया है कि वहाँ कोई नही है, गिलौरियाँ बनाके लेती आओ । जनाना मकान हो गया है, जरा देर वही बैठो। इतने में मामा जी एक भारी दोपट्टा ओढे हुए खासदान लेके आयी और जल्दी से पटक के चली गईं।

र—देख ली ! अब अपनी बीवी दिखाइये !

नूर—ये आपकी बीवी हैं या आपकी अम्माजान की नानी की फूफी अम्मा ?

रनवीर—अब झपट बुढिया को कहाँ से पकड लाए भई ?

नूर—बुढिया है तो हमारी है और जवान है तो हमारी है। हमने अपनी बुढिया दिखा दी, अब आप—जैसा इकरार हुआ है—अपनी जवान दिखाइये।

रनवीर—ये आपके बाप की बीवी है या आपकी ?

र—क्या बकते हो ? गालियाँ देते हो ?

नूर—नही, वाकई इनके बाप की बीवी है। मालूम होता है किसी मामा या साईसनी पर रीझे थे।

नूर—अब हमारी और आपकी लपाडगी होगी। यह भी कोई शराफत है भला ? पराई जोरू देख ली और अपनी जोरू से पर्दा। बडे वह बनके आये है। अब चलिए अपने अपने घर और दिखाइये !

नूर—अच्छा, चलो। तुम भी क्या कहोगे, हम भी वह दिखा दें कि याद करो उम्र भर।

सबके सब नूर के मकान पर गये। मकान पास ही था। पैदल ही गये।

नूर—ले, बिस्मिल्लाह, अपनी जौजा साहबा को बुलवाइये। कहिये कि शमकदा दिखायें।

नूर—अभी, अभी। मगर उसी तरह जिस तरह आपकी वाल्दा थी, बीबी थीं, मौन थीं, वह आई थी, जैसे कठपुतली के तमाशे की पुतलियाँ आती है।

रनबीर—भई खूब कही। जो कहता है, ऐसी ही कहता है।

नूर—बेशक। खासदान पटक के भागी और इस तेजी के साथ कि गोया कोई दुश्मन उनको गिरफ्तार करने आता था। और उस कीमती और भारी दोपट्टे की जोड़ का पायजामा कितना माकूल था, भई वाह!

रनबीर—(कहकहा लगाकर)—वल्लाह मैं कहने ही को था। मेरी जबान से आप ले गये! मालूम होता है किसी मामा या बूढ़ी दियानी को उनकी बीवी ने अपना या किसी का दोपट्टा ओढ़ा दिया है।

यहाँ से नूर अन्दर गये। वहाँ से मिखा-पढ़ाकर एक साँग बनाकर लाये। ये दोनों सोच ही रहे थे कि देखें, ये किस जप्पट को लाते हैं। यह मालूम था कि कोई पागल तो है नहीं कि अपनी बीवी को लाके दिखा दे।

कोई न कोई दिल्लगी जरूर होगी। रनबीर ने कहा—भई कोई नई बात जरूर होनी चाहिए। अगर मियाँ नूर भी कोई बुढ़िया इसी तरह दोपट्टा या दोशाला या लिहाफ उढ़ाकर ले आयें और वह भी खासदान पटक और फेंक के चल दी तो कोई बात न हुई। नूर ने कहा—बेशक!

इतने में नूर तशरीफ लाये। कहा, भई वह राजी नहीं होती। वह कहती है तुम योंही रोज सुबह को जाकर सबकी जोरूएँ एक सिरे से देखते आओगे ता मैं इसी की हो रहूँगी कि सबको सूरत दिखाती फिरूँ। बन्दी बाज आई। तुम दूसरा निकाह पढ़वा लो और सबको दिखाते फिरो। अब मैं इसको क्या करूँ। कहो फिर जाके कहूँ? खैर! तुम्हारी खातिर है—अभी आती हूँ। कह दिया है कि मैं तुम्हीं से भिड़ के बैठूंगी, किसी और के पास न बैठूंगी। तो भाई साहब अगर आप दोनो साहबों में से किसी साहब को ख्वाहिश हो कि हमारी बीवी साहब से भिड़के बैठें तो बन्दे के कपड़े पहन लीजिए। वह खामखाह मेरे धोखे में आन के भिड़के बैठेगी। मगर हाथा-पाई की सनद, नहीं, दिल्लगी दूर दूर की अच्छी होती है।

रनबीर सिंह ने कहा—हजरत, बन्दे को इससे मुआफ रखिये। आपकी बीवी आपको मुबारक।

नूर ने कहा—अरे भाई जवान औरत है। उन्होंने जवाब दिया—वह जवान हो चाहे बारह बरस की, हुजूर ही को मुबारक रहें। मियाँ तूर ने कहा—हमको अपने कपड़े दे दीजिए, हम भिड़के बैठेंगे।

तूर ने उनके कपड़े पहन लिये, और नूर के पास के घुटने से घुटने मिला लिये। इतने में बीवी साहब तशरीफ लाईं और तूर के जानू से जानू भिड़ाके बैठी। नूर ने नौकर से कहा, तलवार उठा ला, और कब्जे पर हाथ रखकर बैठे। कहा—खबरदार, अगर हाथ लगाया तो सर ही काट डालूँगा। भुट्टा-सा सर उड़ा दूँगा।

इतने में नौकर ने आके कहा—वह नवाब साहब आये हैं जो मन्सूर नगर

की चढाई पर रहते हैं। नूर फौरन् उनकी अगवानी को गये, और दो ही मिनट में गाडी के घड़घड़ाने की आवाज आई।

नौकर—मियाँ तो सवार हो गये।

इतना सुनना था कि नूर की बाँछें खिल गईं।

नूर—(नौकर से)—अरे मियाँ अहमद, क्या आज आपके यहाँ रमज़ान शरीफ है। न हुक्का, न पान, न ख़ातिर-तवाज़े।

नौकर—(बाहर से) हाज़िर करता हूँ।

नूर—कहिये बी साहब, आप हमसे पर्दा क्यों करती हैं। वह तो है नही। ज़रा मुखडा न दिखा दो; मैं सदके !

औरत (उनकी रान से रान भिडाकर *आहिस्ता से कहा)—ये जो सामने* बैठे है, उनको हटा दो !

नूर—अमे ओ राजपूत के ...जरा हट जा यहाँ से।

रनवीर सिंह आड में चले गये तो क्या देखते हैं कि नूर खड़े मुस्करा रहे हैं।

नूर—(उँगली से इशारा करके) खामोश ! (मुस्कराकर) देखो तो क्या दिल्लगी होती है।

रनबीर—मैं तो समझा ही था।

जब रनवीर सिंह भी कमरे से बाहर आ गये, तो ये दोनो आड़ में से इस तरह से देखते थे कि नूर उनको नही देख सकते थे। अब सुनिये, मौका पाकर मियाँ नूर साहब ने इस औरत की दौलत पर हाथ रख ही तो दिया और कहा—तुम कितनी सीधी सादी औरत हो। अरी ज़ालिम, तुम्हारे मियाँ तो हमसे कह गये थे कि तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। बस इसके मानी समझ जाओ।

उसने भी बड़े प्यार से उनकी रान पर हाथ रखा और उनको बडी मोहब्बत के साथ इस ज़ोर से दबाया कि उनकी ज़बान से आप से आप निकल गया 'आह !' और 'आह' कहकर उन्होंने आव देखा न ताव, जल्दी से लिपटा ही तो लिया। और वैसे ही नूर तलवार लेके गुल मचाते कल्ले पर पहुँचे—'खबरदार, मार ही डालूँगा !' रनवीर सिंह भी हँसते हुए पीछे-पीछे गये। नूर वाकई डर गया और एक दफा ही काँप उठा। तलवार की आँच बुरी होती है। हाथ जोड के उठा और भागने को था कि उस औरत ने बुर्का फेंक दिया और रनवीर सिंह और मियाँ नूर साहब ने ज़ोर से कहकहा लगाया और नौकर और सिपाही भी आँगन में हँसने लगे। बुर्का उठते ही मियाँ नूर साहब क्या देखते हैं कि जिसको वह औरत समझे थे वह मियाँ अनवर अली खाँ ख़ाजासरा निकले। नूर इस कदर झेंपे कि जिसकी हद नही। इधर ये लोग क़हकहे पर क़हकहा लगाते थे और मारे हँसी के लोट-लोट जाते थे। जिसको देखो लोटन-कबूतर बना हुआ। अब जो आता है, पूछता है—

१—अरे भई क्या पड़ा पाया ?

२—या इलाही ! हँसी एक ही नहीं रुकती। आखिर कोई सबब तो मालूम हो, हम भी हँसें।

३—कोई बड़ी दिल्लगी की बात है। मालूम होता है मियाँ नूर उल्लू बनाए गये हैं। जभी चुपचाप खड़े हैं ।

४—चुपका बैठा है कबूतर मेरा उल्लू की तरह।

नूर—मौलवी नूर साहब, किबला, तस्लीम !

ख्वाजासरा—उई इन मूँडी काटे मर्दों की ढिठाई तो देखो, मैं इनकी ब्याहता जोरू सामने खड़ी हूँ और दिल्लगी करते हैं।

नूर (हँसकर)—आदाब अर्ज है, जनाब। अजी इधर देखिये, बन्दानेवाज।

रनवीर (बहुत हँसते हुए)—क्यों बच्चा, ये पराई जाइआ को घूरना क्या माने ?

नूर—घूरना ? घूरना कैसा ? रान पर हाथ रख दिया।

ख्वाजासरा—आपने बड़ी जल्दबाजी की वर्ना मादरजाद नगा देखते।

रनवीर—भई वाह, जल्दी कर गये ! लाहौल—

खा—सारा मजा किरकिरा कर दिया।

नूर—अभी ये और बढ़ते, मगर सच कहना ! तलवार देखकर कैसा डरा है ! अबे वा बे गीदी ! हात्-तेरे की !

खा—अब मैं नालिश करने जाता हूँ कि मेरी रान पर हाथ रक्खा। क्या दिल्लगी है।

रनवीर—आखिर तुम समझे क्या थे ! ये समझे थे कि नूर ने वाकई अपनी बीवी और ब्याहता बीवी की डाली लगा दी !

नूर—अरे यारो, क्यों और जलील करते हो। इतनी ही जिल्लत क्या थोड़ी है ?

नूर—क्यों बे बेईमान, तेरी दोस्ती का एतबार क्या ! आखिर तू क्या समझा था। अगर मेरी बीवी समझा, तो यह क्या बात थी। और अगर कोई और बुढ़िया-सुढ़िया समझा, तो यह एकाएक मज़े में आना क्या मानी। इसका जवाब दीजिए।

रनबीर—हाँ, सच यह आदमी खोटा मालूम होता है।

नूर—अब हम आज से याराना ही छोड़ देंगे।

खा—अहा हा हा ! और सुनियेगा। जो कोई अपनी बीवी की इन ऐसे शोहदों से हिफाजत करे तो आप उससे याराना छोड़ दें। यह एक ही हुई। वाह, भैया, वाह !

-रनवीर—तो जनाव हमसे आपसे आज ही याराना तर्क ! जब तक शादी नहीं हुई थी, जब ही तक याराना ठीक था।

नूर—वल्लाह, मारे हँसी के बुरा हाल था।

रनवीर—पहले तो मेरी समझ में खुद न आया, कि ये दिल्लगी छोड़के चले कहाँ गये। फिर मैं समझा कि यह गाड़ी भी दिल्लगीबाजी है।

नूर—अरे भई, नवाबगंज से जनानी सवारियाँ आई थीं। पस, जब गाड़ी से जनानी सवारियाँ उतर गईं और गाड़ी जाने लगी, मैंने फौरन अहमद से कहा—कि फौरन जाके कह देना कि मियाँ तो चले गये।

तूर—(मुस्कराकर) लाहौल विला कुव्वत!

नूर—ले अब दिल्लगी तो हो चुकी,—यह फर्माइये कि आप बने कैसे?

तूर—अरे यार, मैं सीधा-सादा मुसलमान, आ गया चकमे में! लाहौल विला कुव्वत!

नूर—यह नहीं बताते कि इस बुर्कापोश औरत को कौन औरत समझे थे।

तूर—अजी अब क्या बताएँ, कौन औरत समझे थे। अपना सर समझे थे। इसके सिवा और क्या कहूँ। ऐसे उल्लू कभी नहीं बने थे।

रनवीर—नहीं, एक आपने दिल्लगी की, बुढ़िया जप्पट मामा को अपनी बीवी का दोपट्टा ओढ़ाकर भेजा। भोंडी बात! दूसरी भोंडी बात बुढ़िया मामा चली आती है।

नूर—जी हाँ, मगर सच कहना, क्या सूझी।

तूर—अब यह दोनों की साठ-गाँठ थी या नूर ही को सूझी!

नूर—रनबीर सिंह से पूछ लेना।

रनवीर—मुझे तो कुछ नहीं मालूम था। और मैंने तो उनसे कह ही दिया था कि अगर अबकी वही मामावाली दिल्लगी हुई तो कोई लुत्फ न आयेगा।

तूर—हाँ कहा था! वल्लाह इस कदर झेंपा कि मैं ही जानता हूँ। पहले यह सूझी क्या। बस इसी को दो घड़ी का जनून कहते हैं। न यह फिक्र है कि क्या जाने यह कौन है, न यह खयाल कि दिन का वक्त है, दरवाजे खुले हैं। यह क्या हिमाकत है। जैसे एक जनून-सा हो गया है।

नूर—अब चलो रनबीर सिंह के यहाँ, उनकी बीवी को देखें!

तूर—बस माफ कीजिए, जनाब।

नूर—अरे मियाँ, नई दुल्हन है।

तूर—होने दीजिए।

नूर—अब ऐसी नफरत हो गई? वजह क्या, कि ये हमारी आपकी बीवी को देखें और हम आप उनकी बीवी को न देखें?

तूर—तो आप शौक से देखें। बन्दे को माफ फर्माएँ। बिल्ली बख्शे, चूहा बेचारा लँडूरा ही होके जिएगा।

रनबीर—चलिये तो हमें कोई उज्र नहीं है।

नूर—मियाँ नूर को ले जाइये। बन्दे ने भर पाया। देखता हूँ, इधर तो एक घाका नंगी तलवार लिये कल्ले पर सवार है, और उधर बुर्का जो हटा तो मियाँ साहब की पाकीज़ा सूरत नज़र आई।

इस पर बड़ा बड़ा कहकहा पड़ा।

ख़ाजासरा—मुझ बूढ़े ख़्वाजासरा पर तो हुज़ूर इस कदर रीझे थे कि मैं जवान होता तो जागीरें लिखवा लेता। मुझ पर तो हुज़ूर के दुश्मनों की जान ही जाती थी, और मेरा मारे हँसी के बुरा हाल था।

नूर—लाहौल विला कुव्वत!

रनवीर—भला आज की दिल्लगी भी याद रहेगी।

—— o ——

तेरहवाँ अध्याय

जंगल में मंगल

शादी के एक महीने के बाद रनवीर सिंह अपने इलाके गये। कामिनी और कमला को भी साथ लेते गये। रनवीर अपने कीमती वेलर घोड़े पर सवार और बीवी और बहन और हँसिया घर के रथ पर। रथ भी कीमती। नागौड़ी बैलों की जोड़ी, सींगों पर पीतल चढ़ा हुआ। पर्दा नया और बहुत साफ। दरी-कालीनें और चाँदनी का फर्श। पानी की सुराही, उस पर चाँदी का आबखोरा, मुरादाबाद का पानदान। उम्दा-उम्दा देसावरी पान। सफेद कत्था बसा हुआ। चूना छना हुआ, केवड़ा पड़ा हुआ। लखनऊ के मीर निसार हुसैन के दूकान की मशहूर तम्बाकू की गोलियाँ, कि शीशी खोलते ही मुश्क की खुशबू आये। उन पर चाँदी के वरक लगे हुए बिलकुल जैसे मोती। देखने में भी अच्छ और खाने में भी अच्छ। डली कतरी हुई। छोटी इलायची सफेद, बड़े-बड़े दाने, चौघड़े की इलायची। रथ के साथ एक सिपाही, बड़ा-सा लट्ठ लिये हुए। एक पासी। पीछे छकड़ा, उस पर तुलसा महरी, घर की बारन। एक औरत रोटी पकानेवाली, ब्राह्मनी। एक महरा, एक बारी। असबाब की दो बहँगियाँ—एक पर कामिनी का लिखने-पढ़ने का सामान, 'रामायण' 'भागवतगीता' 'प्रेमसागर', 'बारहमासा' नागरी में, और उर्दू में, फिसाना-आज़ाद', 'जामे-सरशार', 'मस्नवी', गुल्ज़ारे-नसीम', 'मस्नवी मीरहसन', 'गृहस्थ आश्रम', 'सैरे-कुहसार', 'अलिफ लैला', 'पद्मावती', हिसाब की किताब', 'जुगराफिया', 'तारीख-ए हिन्द', 'जामे-जहाँनुमा', 'तारीख रूस', और अंग्रेज़ी की कुछ किताबें, एक बहँगी पर कुछ

नमकपारे, कुछ शकरपारे पूरियाँ, तरकारियाँ, अचार, चटनी, मुरब्बा, तली हुई मछली और कबाब।

गर्मी के दिन थे। रनबीर सिंह ने रात के तीन बजे से सफर का इन्तजाम किया, यानी तीन बजे रथ और छकडा रवाना कर दिया, और दो सिपाही हथियार-बन्द इसलिये साथ कर दिये कि तडका होते हुए वापिस आयें। और खुद भी रथ के साथ घोडे पर चले। अँधेरी रात, पिछला पहर, मशाल साथ। हवा तेज थी।

रनबीर सिंह ने चलते वक्त व्हिस्की के दो जाम ठडे पानी के साथ पिये और एक शीशी में आधी बोतल से कुछ कम पतलून की जेब में रख ली। पौ फटने के वक्त इन दोनो सिपाहियो को रुख्सत किया। सिर्फ एक सिपाही और पासी गया। सुबह को घोडा बढा के रथ के पास गये। कमला ने कहा, बडी खुनकी है आज, जैसे सर्दी के दिन होते है। उन्होने कहा—एक तो ठडी-ठडी हवा, दूसरे जगल का वास्ता, खुला हुआ मैदान। और जरा खुनकी आज है भी। चले भी तो पिछले पहर थे। अब इस वक्त भी खुनकी है। धूप निकलने दो, फिर कैफियत देखना। हमने तो चलते वक्त दो जाम पी लिये थे—तबीअत रास्ते भर बश्शाश रहेगी। घोडे की सवारी का क्या कहना! तुम लोगो को तकलीफ तो नही हुई कुछ? कमला ने कहा—नही तकलीफ कैसी? पूछा—'यह बताओ कि खाने को क्या साथ है?' कमला ने कहा—'घबराओ नही, तुम्हारे पसन्द की चीजें हैं। तली मछली और कबाब और पकवान हैं। रनबीर सिंह ने कहा—'कोई ग्यारह बजे, बल्कि दस बजे ही तालाब पर पहुँच जायेंगे। वहाँ पर्दे का मकान भी है। वही जरा नहाएँगे, खाना खायेंगे, बर्फ हमारे साथ है। बस फिर कोई चार बजे ठडे ठड चलेंगे। शाम होते-होते गाँव पहुँच जायेंगे। वहाँ कम-से-कम एक अठवारे तक चैन से रहेंगे। बी कामिनी साहब क्या आराम में है? कमला ने हँसकर, कहा—पूछो! आराम में तो नही है। खासी कटोरा-सी आँखें खुली हुई है!

कामिनी ने मुस्कराकर रथ का पर्दा जरा योही उठाकर रनबीर सिंह को देखा, और दोनो हँसे।

कामिनी—मालूम होता है कुछ मसाला पास भी है।

कमला—कुछ मसाला! यह नही कहती कि बोतलो की बोतलें—और पीपे के पीपे साथ होगे।

कामिनी—साथ का जिक्र नही है। मैं कहती हूँ इस वक्त घोडे पर साथ है। यकीन न आये तो पूछ लो।

रनबीर सिंह—(पतलून से निकालकर) बस इतना मसाला है।

कमला और कामिनी दोनो खिलखिलाकर हँस पडी। कामिनी ने कहा—

मैं तो समझ ही गई थी कि कुछ न कुछ जेब में जरूर होगा। कमला ने हँसकर कहा—तुमने महीना भर में खूब पहचान लिया। यह तो शीशी की शीशी साथ लगाये हुए हैं। क्या रास्ते में भी पी थी? रनबीर सिंह ने कहा—नहीं! नहीं! उस वक्त से छुई नहीं। हाँ, चलते वक्त अलबत्ता उडाई थी।

कमला—कहीं दुल्हन को न पिला देना। तुम तो अंग्रेजी पढे हो। देवी-देवता को मानते नहीं। तुम लोगो का एतबार क्या?

कामिनी—पीनेवाली कोई और ही होती होगी।

कमला—ए मैं हँसती हूँ। अब जरा-जरा ठडक कम हुई। जब चले थे तो बडी खुनकी थी। और हवा से और तेज हो गई थी।

कामिनी—अब कै बजे होगे? धूप तो सारे में फैल गई।

रनबीर सिंह—ठीक आठ बजे हैं। बस दो घटे में दोपहरिया मनाएँगे।

कमला—छकडा कहाँ है? बहँगिया कहाँ है?

रनबीर सिंह—सब साथ ही, बीबी। कहो, यहीं जरा दम ले लें?

कमला—कहो दुल्हन, क्या कहती हो?

कामिनी—अब उसी तालाब पर गाडी रोकना —और चाहे जरा सुस्ता लें।

रनबीर सिंह ने रथवान से कहा—भीकम रथ रोक लो। और कमला से कहा—जरा यहाँ हुक्का पी लें, तुम लोग चाहे खा-पीलो। कोई जल्दी तो है नहीं। कमला ने कहा—भैया, ऐसी जगह जरा रथ रोको कि एक तरफ का पर्दा उठाने के काबिल हो। दम घुट गया।

रनबीर सिंह ने कहा—इससे अच्छी पर्दे की जगह न होगी। तुम पर्दा उठा दो। छकडे से तुलसा और बारन उतरी। रथ के पास आयी। कामिनी और कमला से बातें होने लगी।

तुलसा—ए दुल्हन, मैं ऐंठ गई।

हँसिया—हमको तो सुरसुरी मालूम ही नहीं होती।

तुलसा—रथ के अन्दर पर्दे डाल के बैठी और मुझ बुढिया को खुले हुए छकडे में बिठाया, मैं ऐंठ गई।

कमला—हमको तो सरदी जरूर मालूम हुई, मगर पर्दे बन्द करने से आराम मिला। अच्छा अब पानी मँगवाओ। मुँह धोके तो घर से चले ही थे मगर फिर धो लें तो क्या बुरा है।

रनबीर सिंह—और हमको जरा-सी मछली दे दो तो हम अपना मसाला निकालें। इतने में बहँगी के कहार ने एक प्याले में तली हुई मछली दी और रनबीर सिंह ने एक चाँदी के कटोरे में शीशी से उँडेल के पानी मिलाकर पी और मछली खाई। कहा—तुम लोग चाहे नाश्ता भी कर लो। कामिनी और कमला ने मुँह धोकर पान बनाके खिलाए, और कहा—हम लोग अब

तालाव ही पर पहुँचकर खाएँगे। तुम नाश्ता कर लो। अब थोडी देर तो है ही। रनबीर सिंह ने मुह-हाथ धोकर नाश्ता किया और घोडे पर सवार हुआ। इधर रथ और छकडा तैयार हुआ। कहारो ने बहँगिया लैस करी। काफिला रवाना ही होने का था कि सिपाही ने कहा—सरकार जरा ठहर जाइये। गोरो का रिसाला जाता है, निकल जाने दीजिए। रनबीर सिंह ने बहन और बीबी से कहा—देखो आज एक नई चीज तुमको दिखायें जो कभी न देखी हो। अंग्रेजी फौज जाती है।

कमला—हैं हैं, ये मुए उजड्ड गोरे कही रथ को तो न छेडेंगे?

कामिनी—ए रथ को आड में कर दो।

रनबीर सिंह—नही जी! मजाल है बोल सकें। अफसर साथ होगे। काई लूट पडी है? यह भी नवाबी की फौज हुई, कि जिधर निकल गई सुथराव कर दिया? तुम लोग पर्दा थोडा-थोडा उठाके देखो। यह कैफियत कभी न देखी होगी।

कमला—तुम जानो। हमको तो डर मालूम होता है। हाथी छूटे, घोडा छूटे

इतने में रिसाले के घोडे दिखाई दिये। कामिनी और कमला ने पर्दे में से देखना शुरू किया। घोडे सब सुरग यकरग। सवारो के गाल साफ। दाढियाँ एक सिरे से नदारद। सब रान-पटरी जमाए, चुस्त-चालाक, हथियारो की चमक और आवाज और वर्दियो की शान अजीब लुत्फ दिखाती थी। कामिनी और कमला ने वाकई यह समाँ कभी नही देखा था। जब उन्होंने देखा कि सवार बराबर चले जाते हैं, कोई किसी से बोलता चालता नही, तो वे झिझक पर्दा हटा कर देखने लगी। सवारो को रथ एक नयी चीज थी। रथ और बैलो और रथ के अन्दर की परियो को शौक से देखते जाते थे, क्योंकि कामिनी और कमला पर तो पूरा जोवन था ही, मगर हँसिया भी सितम ढाती थी। सवारो के बाद तोपखाना आया। बडे-बडे गराडील, खूबसूरत जवान। गाडियो की खडखडाहट से कान पडे आवाज नही सुनाई देती थी। सबके बाद बडी-बडी डोलियाँ आयी, जिन पर जख्मी गोरे लडाई में लादे जाते हैं। अँग्रेजी फौज निकल गई, तो कमला और कामिनी बातें करने लगी—

कामिनी—बस, इसी तरह दूसरी तरफ की फौज आती होगी। कैसे-कैसे जवान रन के मैदान में जूझते होगे! बस नन्ही-सी गोली काम तमाम कर देती होगी।

कमला—जिस वक्त गोला चलता हो, तो क्या जानें क्या-क्या विचारे सोचते होगें।

रनबीर सिंह—कुछ नही, उस वक्त सिवाए आगे बढने और मारने के और कुछ नही सूझता।

कमला—ऐसा सत्त सवार हो जाता है ?

कामिनी—क्या जाने इनमें कौन-कौन राँड-बेवो के पूत होंगे जिनकी जिन्दगी और रोटियो का दारोमदार इन्ही पर होगा। कौन उनमें से अपनी नयी ब्याही हुई दो दिन की दुल्हन को इस उम्मीद पर छोड आये होंगे कि हिन्दोस्तान से बुला लेंगे, और कौन-कौन यहाँ से जिन्दा जाए और कौन न जाय!

रनबीर सिंह—जहाँ लडाई छिड जाय, वहाँ भेज दिये जायँ और जाना पड। सिपाही की जान हरदम हथेली पर। लडाइयो के जो नक्शे विलायत के तस्वीरदार अख्बारो में छपते है, उनके देखने से रज होता है कि कैसे-कैसे गुलवदन खूबरू जवान दम के दम में दम तोडते है। देखो, मैं भी जल्द रिसालदारी लेता हूँ।

कामिनी (ठडी साँस लेकर)—क्षत्री का तो धर्म ही यह है।

कमला—हाँ फिर यह तो है ही। राजपूत की जान तलवार है।

रनबीर सिंह—हमारे नाना ने कैसा नाम किया था। काबुल में आज तक उनकी धाक बँधी है। छत्रियो में वह और सिक्खो में गुरु गोविन्द और कश्मीरी पडितो में नन्दराम जिसने अपना सिक्का तक चलाया था, मशहूर है—"सिक्का जद दर काबुलिस्तान नन्दराम' क्षत्री लाख गया गुजरा हो, फिर क्षत्री है।

इतने में गोले की आवाज आई—धनन्न! फिर आवाज आई। थोडी देर में गोलियो की बाढ चलने लगी। कमला और हँसिया डरी। रनबीर ने कहा—मालूम होता है, कही का धावा है। मिली हुई लडाई है। मगर जाडे की फस्ल तो है नही। क्या जाने क्या बात है।

कमला—तुम तो चार बजे चलने को कहते थे। अभी से क्यो उठ खडे हुए ?

रनबीर सिंह—हम समझे थे बडी गर्मी होगी।

हसिया—भैया, कोई डर तो नही है? इधर गोली-वोली तो न आएगी ?

रनबीर सिंह—दीवानी हुई है! वह तो पहुँचे होंगे दो कोस अब।

दो घटे बाद फिर वही फौज मिली। अबकी तोपखाना आधा सडक पर आधा और तरफ वहाँ से जरा दूर। और सवार भी फैले हुए थे। उनमें से होके जो रथ निकला, तो औरतो को जरा खौफ मालूम हुआ कि कही गोरा हाथ न डाल दे। कमला ने कहा—भैया, इन भूतो-बन्दरो में से कहाँ चलते हो? कही कोई हाथ न डाल दे।, गले का हार न निकाल ले। मुए हूश तो होते ही है।

रनबीर सिंह ने कहा—अगर यह खौफ होता तो मैं कोई सिडी था कि जोखम की जगह औरतो को लेके आता? जरा तिरछी नजर से कोई देखे तो भुट्टा-सा सर काट लूँ। छत्री नही कोई बनिये-बनिये है क्या ?

कमला—(हँसकर) राजपूत की रग जोश में आ गई। तुम अकेले क्या बना लोगे ?

रनबीर सिह—जो अकेले-वकेले का खयाल करे, वह छत्री नही। छत्री वह जो बाघ से कछार में जाके लडे। हमारे नाना पैदल बनैले का शिकार करते थे। हम उनके नवासे है।

कमला—हां, बनैले का शिकार तो पैदल करते थे।

रनबीर सिह—इस फौज को देखकर जी भुरभुराता है, कि जगी वर्दी हम पहने होते। भगवान ने चाहा तो वह दिन भी आया चाहता है। इस वक्त ऐसा जोश है कि जी चाहता है कि जिसे छेड के लड पड़ूँ।

कामिनी—(मुस्कराती हुई) पागलपन।

इस पर कामिनी और कमला और हँसिया और खुद रनबीर सिह हँस पडे। इतने में दूर से गोले की आवाज आई, और इधर से भी गोला दागा, तो साथ के सिपाही ने कहा—गोला वर्ज लाग हजूर। इसी झील के पास हमारी दगलेवाली पल्टन से चरखारीवाले जमीदार के नातो से गोला चला था। (दाहिनी रान दिखाकर) यह गोली हमारे लगी थी। यह वही भूमि है। गिरधारा सिह चकलेदार खैराबाद से और पडित दल्लेराम काश्मीरी चकलेदार—दो चकलेदार भेजे गये थे। हम भी सिपाहियो में थे। वह जो सामने उतरालँग ऊँचा-ऊचा टीला है वही गढी थी। अटारी पर से गर्द देखकर उसने गोला बरसाया। दल्लेराम के साथ किदारनाथ काश्मीरी थे। वह आग बरसते ही में फाँद पडे, और राजा भाग गया। यह वही जगह है। आज कितनी बरसो बाद यहां सिपाही देखे।

रनबीर सिह—तो यहां गढी थी? हमको अब तक नही मालूम था।

सिपाही—कई लडाइयां हुईं सरकार यहां।

रनबीर सिह—भला तुम्हारी दगलेवाली पल्टन इस फौज का मुकाबला कर सकती?

सिपाही—हजूर, तोडेदार बन्दूक की इनके रफल की कौन बराबरी। इतना तोड कहाँ। ऐसी तोप कहाँ थी। हाँ, तलवार की लडाई खुले में हो तो ये एक न ठहरे। आड में जाके खाकी वर्दी पहनके दायें-दायें झोक दिया—सुथराव कर दिया! खुले मैदान में तलवार सूतके आयें तो जानें, और यो सिपाही तो हैं ही। तलब अच्छी पाते हैं। गोश्त भर-पेट मिलता है। जोरू बच्चो को खाना-कपडा मिलता है। रम शराब पीने को, सुन्दर छोलदारी रहने को।

झील जब एक गाली के टप्पे पर रह गई तो रनबीर सिह ने अपने बैलर घोडे का कडकडा दिया। फौज से रथ दूर निकल आया था। कमला ने कहा—यह हमको अकेला छोडके कहाँ घोडा दौडा के चल दिये? बूढे सिपाही ने कहा—बहूजी कुछ चिन्ता नही है। गाँव सामने है, कोई डेढ़ घटे की राह पर। सामने गोली भरके टप्पे पर झील सरकारी है, और गोरे तो दूर हैं। कोई डर की बात नही।

कोई आधे घटे से कम में झील के तरफ से गोली की आवाज़ आई। सिपाही ने कहा—यह सरकार ने बन्दूक चलाई। वडी चिडियाँ इस झील पर मिलती हैं! मुरगाबी और पिडकिया और हरियल, कबूतर, गिरगिर और जगली मुर्गी।

इतने में दूसरी गोली चली। रथवान को कामिनी ने हुक्म दिया—भीकम, तेज चलो! उसने बैलो को सनकार दिया। नागोरी बैल, अरबी घोडो के-से तेज़गाम चले तो पलक मारते में झील पर थे। छकडा पीछे रह गया। सिपाही भी गिरता पडता पहुँचा। उन्होने देखा कि रनबीर सिंह शिकार खेल रहे हैं। थोडी देर में दो कबूतर और पाँच मुर्गाबियाँ और बारह चहे लादके आदमी चले। रथ और छकडा और कहार सब झील के पास एक बाग में गये। इसमें इमलाक भी थी दो दालान नीचे और एक बडा और एक छोटा कमरा ऊपर। दोनो कुछ अग्रेज़ी, कुछ हिन्दोस्तानी फैशन से सजे हुए। हर चीज़ करीने के साथ। और कमरो के सामने एक खुशनुमा बरामदा। यहाँ से झील बडी पुरलुत्फ दिखती थी। कामिनी और कमला ने खाना खाया। उधर रनबीर सिंह ने चार चहो का कबाब बरहमन से पकवाया और खाना खाके उसी बरामदे पर कुरसियाँ बिछवाई, और खुद भी बैठा और बीवी और बहन को भी बिठाया।—कि इतने में वही फौज करीने के साथ डबल कूच करती हुई जाने लगी। इस ऊँचाई से फौज का सफ बनाकर मौज मारते हुए दरिया की तरह से जाना, और तोपो की आन-बान और विलायती हथियारो का चमकना और घोडो के शान और लुत्फ देखने काबिल थे। और इन दोनो को अच्छा मौका मिला कि पर्दे की कैद से आजाद होकर, घूँघट हटाकर, इस जमात को देखें। अपना बाग, अपना घर, अपना इलाका, अपना गाँव, आदमी, नौकर-चाकर, सिपाही, औरतें, बावर्ची, बावर्चिन, महरियाँ, सब मौजूद।

पाँच बजे के करीब रनबीर सिंह मछलियो के शिकार को चले। कमला और कामिनी बरामदे से मैदान और झील और बाग और जगल की सैर कर रही थी। बारिन, तुलसा, हुँसिया, बाम्हनी वगैरह के अलावा गाँव की दो काछिनें और एक गद्दन भी अपने मालिक को देखने आयी, कि इतने में जीने से आवाज आई—

'वाह रानी साहब, हमको छोड के चली आईं। बन्दगी!'

सबको हैरत हुई। 'अरे जैनब की माँ, तुम यहाँ कहाँ!'

उसने फिर बन्दगी करके हँसते हुए कहा—एँ। मेरा वहाँ कब जी लगता भला। हम जो कोई आठ बजे गये तो सुना वह बाग गईं। बस यही इक्का किया। राह में मुए गोरे मिले। दम ही तो फना हो गया। जब वह गये, भीड की भीड, तब चले।

कमला—ले, इक्केवाले को डेढ रुपया दे दो।

कामिनी उसके आ जाने से बडी खुश हुई। कहा—हमने तो एक जगह रथ-वथ खोल दिया था। मगर फिर सलाह हुई, चले भी चलो।

उसने पूछा—गोरो की पल्टन मिली थी?

कामिनी—दो दफा। अभी तो इधर से पल्टन गई।

ज़ैनब—गोलन्दाज़ भी थे। बड़ा रिसाला था।

कमला—ए, भुच के भुच बने हुए थे।

हँसिया—एक बार तो हम उनके बीच से आये।

ज़ैनब—हम तो अकेलेपन के सबब से बहुत डरे। उन हूशो का एतबार क्या? जगली तो है ही।

कमला—बोले-बाले तो कुछ नही। मगर हाँ, घूरते हुए गये।

कामिनी—नही। रथ को ही ज्यादातर देखते थे।

ज़ैनब—वर्दियाँ कित्ती अच्छी थी। साज़-सामान से लैस। मै तो पन्द्रह दिन पल्टन में रह चुकी हूँ। ज़ैनब के अब्बा वहाँ अस्पताल में कम्पोडर थे ना!

कमला—(मुस्कराकर) खैर। मै तो कुछ और ही समझी थी।

ज़ैनब—ओई, तुम क्या समझी थी बेटा कि कोई गोरा-वोरा हमको उड़ा ले गया? मुँह जला दूँ पकड के मुए का। छावनी में उनसे कोई नही डरता।

इतने में कमला ने कहा—ए तुलसा बुआ, ये सारस है ना.... तुलसा
ने कहा—'हाँ, बेटा, सारस की जोडी है। पूछा—क्या पालू है? गद्दन ने
कहा—नाही। पलाउ हियाँ जगल माँ कहाँ! कामिनी और कमलापती ने ग
से देखा। कहा—मियाँ-बीवी हैं। नर कौन है इनमें? ज़ैनब की माँ ने कहा
उधरवाला नर है। इनमें एक अजीब खासियत है। जो एक मर जाय,
तो दूसरा फुटियल रहता है। फिर जोडा न दिखाई देगा। नर मर जाय, तो
मादा अकेली रहेगी — और मादा मर जाय तो नर टुटरुटूँ। इतनी मोहब्बत
उसको अपने जोडे से होती है कि फिर दूसरा नही होने पाता। इसी से शिकारी
लोग इस पर गोली नही चलाते। और इसके जोडे का भी यही हाल है। वह
भी बस एक ही के सर होता है। उसका भी कोई शिकार नही करता। तरस
आता है। लोग कहते हैं कि किसी जंगल में एक सारस को किसी बेरहम ने
गोली से मार डाला, तो दूसरे ने जो मादा थी उसके सोग में घास-फूस, पेडो
की लकडी जमा कर के उसकी लाश को तोपा; और चोच में आग लाके उस
ढेर को जलाया; और जब शोले निकलने लगे तो आप भी उसमें जल मरी।'
कमला को बडा ताज्जुब हुआ। कहा, यह तो सत्ती हो गई। वाह-वा, यह
जानवरों तक में इत्ती मोहब्बत होती है। कुछ ठिकाना है! कामिनी उस जोडे को
गौर से देखा की। कि थोड़ी देर में एक जोड़ा और दिखाई दिया; और फिर

एक तीसरा जोड़ा झील के पास देखा। देर तक सारस और हंस की बात होती रही।

तुलसा ने कहा—यह तो हमने अपनी आँखों देखा है कि चकवा-चकवी का जोड़ा रात को बिछड़ा रहता है। दरियाव हो, नदी हो, झील हो—नर पानी के इधर, मादा उधर। चकवा इधर से बोलता है, चकवी उधर से। रात भर सवाल-जवाब रहते हैं। और लोग तो कानों सुनी कहते हैं कि चकवा-चकवी कहानियाँ कहते हैं—कि रात कहीं खत्म हो, तो बिछुड़े हुए मिलें। जैनब की मा ने कहा—देखो इन जानवरों में अपने जोड़े से ऐसा प्यार होता है, और आदमियों को देखो कि मियाँ बीवी जान के दुश्मन हो जाते हैं। जहर खिला दें, कुएँ में ढकेल दें, लोगों को लगा दें कि मार डालो; उम्र भर एक-दूसरे की सूरत न देखें। और इन जानवरों को देखो कि जोड़ा जाता रहा तो बस दुनिया से कोई मतलब नहीं। दिन भर चुगा, चरा, खाया-पिया; रात को सो रहे। यहाँ सत्तर-सत्तर करती हैं। और रात-दिन की दाँता-किलकिल अलग। कामिनी ने कहा—जब जोड़ा मर जाता होगा तो कैसी विपता पड़ती होगी! बस इनकी जिन्दगी ही तलख हो गई। जो ऐसों का शिकार करे उससे बढ़के बेरहम कोई नहीं। एक तो शिकार ही करना कौन अच्छी बात है; मगर मर्द कब मानते हैं। दूसरे ऐसे बेचारे जानवरों का शिकार करना तो बड़ी ही बेरहमी की बात है। यह बात हो रही थी कि बन्दूक की आवाज आई। तुलसा ने कहा—भैया तो मछली के शिकार को गये हैं, यह बन्दूक कहाँ से चली। मालूम हुआ, कि एक साही निकली है, उसका शिकार हुआ। फिर खबर आई कि साही जख्मी होके भाग गई।

जैनब की माँ दो-तीन औरतों को साथ लेके बाग़ देखने गई, तो अकेले में ननद भावजों में यों चुहल होने लगी:

कमला—अरे खूब याद आया! मैं आज सोऊँगी कहाँ?

कामिनी—यह क्यों? इसी बरामदे में! हम-तुम इस बड़े पलँग पर सोएँगे। इसमें तो पल्टन की पल्टन समा जाये!

कमला—चलो बस, ऊपर के दिल से बातें न बनाओ! (मुस्कराकर) बहुत झूठ न बोलो!

कामिनी—और सुनो! अच्छा फिर कहाँ सोओगी, हमको अकेला छोड़कर?

कमला—ए क्यों बनाती हो? बड़ी वहाँ से यह बनके आई है। हम तुम को अकेला छोड़ देंगे, कि तुम रस्सियाँ तोड़कर भागोगी?

कामिनी—(खिलखिलाकर) तुमको यह हो क्या गया इस वक्त? हमको तो शर्म आती है। अब हम ऐसे बेहया हो गये कि तुमको छोड़के चले

कमला—यह तो परमेश्वर ही ने रचा है। तुम्हारी जोड़ी सलामत

कामिनी—चकवे-चकवी क्या करते हैं? क्या उनकी रात नहीं कटती?

कमला—हाँ, अच्छी बात तो है। इधर से तुम कहानी कहो, वह 'हूँ!' करें, फिर तुम 'हूँ, हूँ,' करो, वह कहानी कहें।

कामिनी—मैं तुम्हारा मतलब समझ गई। अच्छा आज सिफारिश करूँगी कि नन्दोई को बुला दिया जाय। कहूँगी, बहन अकेली है, बहनोई को भी बुला लो।

कमला—आप माफ कीजिए। हम लोग अब पुरान हो गये।

कामिनी—ओफ्फोह! बडा रज है इसका। (हँसकर) बडी ठडी साँस भरी।

कमला—जैनब की माँ कहाँ धम्म से पहुँच गई!

कामिनी—उसको हमारे बगैर चैन कहाँ? बडी नेक औरत है, और बउब्बर। किसी काम में बद नही। इसी को भिजवाक नन्दोई को बुलवा लें।

कमला—चलो, बातें न बनाओ। दुआएँ माँग रही होगी कि कहीं रात जल्द आये। हमारे भाई को बहुत छडा न करो।

कामिनी—हम तुम्हारी बातो से साफ समझ गये कि सिफारिश चाहती हो। ध्यान तडके से उन्ही की तरफ है। अब आज तो रात किसी तरह काटो। कल हम न बुलवा दें तो हमारा जिम्मा!

कमला (हँसकर)—आज शाम देर में होगी।

जैनब—क्यो देर में होगी शाम। वाह तुम अकेली हो, इससे शाम देर में हो।

कामिनी—जब से तुम गई हो, तब से ये हमको छड रही हैं कि शाम आज देर में होगी।

इतने में रनवीर सिंह आये। ऐं! जैनब की माँ यहाँ कहाँ? उसन कहा—जहाँ राजा, वहाँ परजा। जहाँ सरकार, वहाँ लौंडी। बहन से पूछा, खाने को यहाँ क्या पका है? उसने कहा—चावल, रोटी, गोभी और लौकी की भजिया। सरसो का साग। उरद की दाल। आलू का भर्ता। मुर्गाबी और चहे। कल बकरा जरूर मारा जाय। रनबीर सिंह ने कोठे पर से आवाज दी—जरा दरयाफ्त तो करो, नीचे क्या पका है! आदमी ने कहा—सरकार, मछली तली जाती है, और गरम-गरम कबाब।

जब खाना पक गया तो नीचे का खाना भी रनबीर सिंह ने मँगवा लिया और ह्विस्की के साथ पहले कबाब और मछली खाई। फिर दूसरे कमरे में जाके रोटी और मुर्गाबी और चहे और थोडा-सा साग खाया, और कैंथ की चटनी उसी वक्त बनवाई। इधर कामिनी और कमला चौके में खाने बैठी। रनबीर सिंह को खाने-पीने का बहुत विचार न था कि चौके ही में खाएँ और कपडे उतारें। बुजुर्गों के सामने लिहाज के सबब से कभी जाहिरदारी करनी पड़ती थी, वर्ना आजादी का खयाल ज्यादा था, और साहबज भी ज्यादातर इसी खयाल के लोगों से थी। कोई आठ बजे के वक्त जब मालिक और नौकर

सबने खाने से छुट्टी पायी तो कमला ने कहा—मालूम होता है इन सारसो की जोडी इस बाग में रहती हैं। एक टहल रहा है, कुछ चुग रहा है अच्छी तरह दिखाई नही देता। कामिनी ने गौर कर के देखा। कहा—एक उधर वाला एक ही टाँग से खडा है। इस पर जैनब बोली—सरकार, एक बावर्ची अपने मालिक के लिये एक दिन मुर्गी पका के ले गया—तो उसमें एक ही टाँग। दूसरी टाँग बावर्ची चख गया। बावर्ची चोर तो होते ही हैं। पूछा—अरे इसकी टाँग कहाँ है? बावर्ची बोला—सरकार सुना नही, मुर्गी की एक ही टाँग! दूसरी टाँग तो उसके होती ही नही। मालिक ने झल्ला के बावर्ची को साथ लिया, और घूरे के पास जाके कहा—ले, एक टाँग की मुर्गी हमें दिखा तो दे! इत्तफाक से एक मुर्गी उस वक्त एक ही टाँग से खडी थी। बावर्ची ने कहा—यह देखिये, यह एक ही टाँग की मुर्गी खडी है। मालिक ने लकडी से जरा 'हुश' जो किया, तो मुर्गी दोनो टाँगो से भागी। उसने कहा—देख वो दोनो टाँगें मौजूद हैं। जरा से 'हुश' कर देने में दोनो टाँगें दिखाई दी कि नही। बावर्ची बोला—सरकार को जब यह तरकीब मालूम थी, तो दस्तरखान पर 'हुश' क्यो न कर दिया, दूसरी टाँग भी हो जाती। मुझे पकाते वक्त यह तरकीब मालूम न थी, नही, मैं भी 'हुश' कर देता, दूसरी टाँग भी पक जाती। जरा से 'हुश' कर देने में मेरा क्या नुकसान था!

कामिनी और कमला और हँसिया बहुत ही हँसी, और रनबीर सिंह ने भी दाद दी कि बावर्ची बडा हाजिर जवाब था। टाँग की टाँग चट कर गया और मुर्गी की एक टाँग कायम रखी। अच्छा लतीफा हुआ। एक शख्स अपने पडोसी की बकरी हलाल कर के चख गया। उसके दोस्त ने कहा, यार चखने को तो तुम चख गये, मगर पडौसी कयामत के दिन बकरी की गवाही अल्ला मियाँ के सामने दिलवाएगा, कि यही चुरा के हलाल करके खा गये। उन्होने कहा—आप तो पागल हैं, जब कि पडोसी शिकायत करेगा, मैं कान पकडके बकरी उसके हवाले कर दूँगा, कि लो अपनी बकरी, और क्या किसी की जान लोगे! इस लतीफे पर भी कहकहा पडा।

जैनब—ए हाँ, अपनी मुर्गी बुरी न हो तो पराये घर अडे क्यों दे?

रनबीर सिंह—और क्या। यह तो बताओ, तुम लोगो ने मछली भी खाई?

कमला—हाँ खाई। अब आज हम अपने हाथ से पकाएँग। अब सर्दी के दिन आये। मछली की बहार है।

जैनब—एक तरह देखो तो सर्दी शुरू हो जानी चाहिए थी। दो दिन से पुरवाई जो नही चली है। नही तो दस बजे रात तक गर्म हवा परसो तक चली थी।

रनबीर सिंह—इस मौसम में दुलाई की सर्दी हो जाती थी।

कामिनी—कल क्या जाने माहे का शिकार होगा।

रनबीर सिंह—हम तो इसी झील पर खेलेंगे। और शिकारियो को हिरन के शिकार को भेज देंगे। बस शाम को कबाब पकें।

कामिनी—बटेर और चहे और फाख्ता और हरियल सबसे हिरन अच्छा। एक की जान जाय तो दस आदमियो का पेट भरे।

कमला—हाँ, है तो ऐसा ही। और मुट्ठी भरके जानवर मारे तो क्या! क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। मुर्गी की जान गई और खानेवाले को मजा न आया।

रनबीर सिंह—हरियल और चहे और फाख्ता का गोश्त खूब होता है।

जैनब—और तीतर का गोश्त राजा कैसा होता है।

रनबीर सिंह—बहुत अच्छा। खास तौर से काले तीतर का।

कामिनी ने अपने पति से बडा इसरार किया कि कल जिस तरह हो हिरन का गोश्त जरूर पके। बहुत दिन से नही खाया है . कोई साल भर हुआ होगा। रनबीर सिंह ने कहा, आज से महीना भर तक खाओ। तुमने पहले क्या न कहा? हम कल से हिरन का गोश्त पाट देंगे। यह कौन मुश्किल बात है।'

कोई ग्यारह बजे के करीब सबने आराम किया, और खुले मैदान और जगल बयाबान की हवा ने वह लुत्फ दिखाया कि गोया घोडे बेचके सोये थे। रनबीर सिंह शिकारियो को लेकर चार बजे से तारो की छावें में शिकार खेलने गये। सब सामान शिकार का साथ था। शाम को रनबीर सिंह शिकार से वापिस आये। दो हिरन और कई मुर्गाबियाँ और इसी तरह के जानवर साथ। कई किस्म का गोश्त पका। हिरन के कबाब कामिनी ने बडे जायके के साथ खाये, और दूसरे दिन तारो की छावें में शहर रवाना हुए। दो दिन वहाँ रह कर कमला अपनी सुसराल गई।

चौदहवाँ अध्याय

बोसेबाज़ी पर तकरार

विगाड भी नही उनका बनाव से खाली
न जाओ आशिको-माशूक की लडाई पर।

आशिक और माशूक के लफ्ज की इन उर्दू शायरा ने ऐसी मिट्टी पलीद की कि अब लोग बुरे मानो पर इसको इस्तेमाल करते है, हालाँ कि इन दो लफ्जों से बढ़के प्यारा और कोई लफ्ज सारी दुनिया में नही है। अब यह फ़र्माइए

कि कामिनी और रनवीर-सिंह में आशिक कौन है और माशूक कौन? आप कहिएगा कि रनबीर सिंह आशिक और कामिनी माशूक। हम कहते हैं, यह गलत है। दोनो आशिक और दोनो माशूक। कामिनी रनवीर सिंह पर जान देती थी या नही? वशक, रनबीर सिंह के नाम पर आशिक थी। रनबीर सिंह को तहे-दिल से कामिनी का इश्क था या नही? जरूर था। इससे कोई इनकार ही नही कर सकता कि इस दर्जे का इश्क किसी को कम होगा। कामिनी की एक-एक अदा पर उनकी जान जाती थी, हरेक छब दिल को लुभाती थी, पस, कामिनी रनबीर सिंह की आशिक, और रनवीर सिंह कामिनी के आशिक। रनबीर सिंह कामिनी के माशूक और कामिनी रनबीर सिंह की माशूक। दोनो आशिक और दोनो माशूक हुए या नही?

जिस रग-ढग और जिस लिबास, जिस पोशाक में कामिनी होती थी, रनवीर सिंह को उसकी सूरत देखते ही गोया कारूँ का खजाना मिल जाता था। और रनवीर सिंह की बातचीत कामिनी को हर हालत में प्यारी लगती थी। एक रोज कामिनी घर के कोठे पर हँसिया से बातें कर रही थी और कह रही थी कि क्या जाने कहाँ चले गये। इस वक्त जी नही लगता। वह होते तो उनके खाली देखने ही से तबीअत बदल जाती। अगर इस वक्त आ जायँ तो जान में जान आये। हँसिया ने कहा—आते ही होगे। इन्हें तुम्हारे बगैर कब चैन आयेगा? कही यारो-दोस्तो में बैठ गये होगे।—इतने में घोडे के टापो की आवाज आई, और हँसिया ने कहा—वह आ गये! कामिनी की बाछें खिल गईं। रनबीर सिंह सीधे कोठे पर आये। हँसिया से कहा—साईस से जाके हमारा रेशमी रूमाल ले आ।' हसिया का जाना था कि कामिनी को लिपट कर चूमके कहा—तुम्हारे बगैर दम भर चैन नही आता। खाना खाकर जब अकेले में बैठे तो यो बातें होने लगी।

कामिनी—इस वक्त जी नही लगता: आओ 'नक्श' खेलें।

रनबीर सिंह—हम कहने ही को थे।

कामिनी—मगर तुम बेइमानी करने लगते हो।

रनबीर—बजा। हम बेइमानी करते हैं कि तुम?

कामिनी—हम बद-बद के खेलेंगे।

रनवीर—तो फिर शुरू हो, बिस्मिल्लाह। हम कब बन्द हैं।

कामिनी—घी कहाँ गया? खिचडी में।

रनबीर—घी-वी मैं नही जानता, और खिचडी और दानेदार घी रहने दो। हम तो बोसा बदते हैं। दस-दस बोसे!

कामिनी—वाह, बडे होशियार! हर तरह अपनी ही जीत।

रनबीर—यह काहे से? अगर हम जीते तो हम तुम्हारे प्यारे-प्यारे

के बोसे लें। तुम जीतो तो तुम अपने होठो से हमारे गोरे-गोरे गाल चूम लो।

कामिनी—अल्लाह, बडे गोरे। अच्छा मजूर।

'नक्श' खेलने लगे। कामिनी तीन बार जीती, और तीनो बार मुस्करा-मुस्कराकर पति को चूमा।

रनबीर—हमको शर्म आती है कि हम मर्द होके औरत से 'नक्श' में हार जायें।

कामिनी—चलो बस, अब बनाओ न बहुत।

रनबीर—तुमको चौसर भी प्यार करता है।

कामिनी—इसमें क्या शक है।

रनबीर—तुम औरतो में ऐसी हो, जैसे पत्तो में यह पत्ता (पान की बिबिया दिखाकर)।

कामिनी—(मुस्कराकर) मुझे भी सब बीबियो में पान ही की बिबिया अच्छी मालूम होती है।

रनबीर—हुस्न के साथ बाँकपन लिये है ना!

चौथी बार रनबीर सिंह ने 'नक्श' में बे मानी की। उनका कायदा था कि शतरज, चौसर, गजीफा, पचीसी, चाहे जिसके साथ खेलें, उसमें बेइमानी जरूर करते थे। और बद-बदके कभी नही खेलते थे। 'नक्श' में उन्होने यह बेइमानी की कि अपने पत्तो में से एक पत्ता फेंक दिया और कहा इक्कीस का नक्श! कामिनी उनकी घातो से वाकिफ थी, उसने देख लिया, और कहा वह पत्ता फेंका, मैंने देख लिया! बडे बेइमान हो! रनबीर ने कहा हम कुछ नही जानते, हमारा इक्कीस का नक्श है। यह कहकर बोसा लेने ही को थ कि कामिनी जन् से वह हो रही। यह भी पीछे दौडे। मगर उसने दरवाज़े बन्द कर लिये। औरतें जो घर में नौकर थी, उनको मियाँ-बीवी के तनहाई के कमरो से क्या काम। मगर हँसिया दराजो से देख रही थी। उसने अपनी हमजोली रधिया से यो बातें की —

हसिया—देखती हो क्या छुली छुलैया हो रही है मियाँ-बीवी में।

रधिया—फिर इसके दिन ही है। मगर राम ने यह जोडी अपने हाथ से बनाई है।

हँसिया—मियाँ तो पलँग पर लेटे, बीवी अभी रूठी हुई है।

रधिया—ए रूठना-मनाना कैसा! मियाँ और बीवी की लडाई जैसे सावन भादो की झडी।

हँसिया—आज बडी ठठक है!

रधिया—तभी तो यह छुली-छुलैया की उमग है!

अब सुनिये कि रनबीर सिंह एक पलँग पर लेटे और कामिनी ने अपन कमरे के दरवाजे बन्द कर लिये और इनके-उनके सवाल-जवाब होने लगे।

कामिनी—जब देखो, बेइमानी।

रनबीर—झूठे की ऐसी-तैसी।

कामिनी—वेश बाद।

रनबीर—ले अब दरवाजा खोलो।

कामिनी—(मुस्कराकर) हम बेइमानो से बात नही करते।

रनबीर—अच्छा, खेल को जाने दो। यो बोसा दो, लो आओ।

कामिनी—ना, हरगिज नही। जब तुमको दो-एक दिन बोसे को तरसाऊँगी तब यह पत्ते उडा देना और बेइमानी करना छोडोगे।

रनबीर—अच्छा, अब ऐसी बात न होगी, मैं सदके, दरवाजा खोलो।

कामिनी—(तुनुककर) हजार बार समझाया कि 'सदके' का लफज न कहा करो, मुझे बुरा मालूम होता है, मैं अलबत्ता तुम पर से वारी हो जाऊँ तो बात है।

रनबीर—अच्छा अब इसी बात पर बोसे दे दो!

कामिनी—यह न होने का। हमें भी जिद आ गई।

रनबीर सिह ने दूसरे कमरे में जाकर एक पर्चे पर लिखा—

'मैं सदके और तुम पर वारी प्यारी
हमें दस बोसे अज-बहरे-खुदा दो।'

यह लिखकर हँसिया को दिया और कहा जाके दे दे। यह कहकर एक कमरे के अन्दर से होकर छत पर मसहरी पर लेटे। छत ऊँची, दीवारें नीची, बाग के तरफ का पूरा-पूरा लुत्फ मसहरी पर से आता था। मसहरी बहुत कीमती और इतनी बडी कि तीन आदमी आराम से आराम करें। फर्श सुथरा साफ-शफ्फाफ, सफेद। छत पर वही मुश्को से छिडकाव किया हुआ। चाँदनी के नीचे मसहरी पर फूल, और चँगेरो में से चमेली के हार, पानी से तर-बतर। चाँदनी खूब निखरी हुई। कोरी सुराहियाँ बालू की बनी हुई—फिल्टर के पानी से लबालब भरी। उनमें असगर अली की दूकान का केवड़ा पडा हुआ, सफेद साफ कपडा लपेटा हुआ—सिरहाने के पास रखी हुई। एक छोटी और खुशनुमा मेज पर एक खूबसूरत से कन्टर में असली 'गुलाबी' रखी हुई। और कीमती कीमती कट-ग्लास, और बर्फ। पान्दान उम्दा करीने से रखा हुआ; तम्बाकू की गोलियाँ, मोती की-सी आबोताब; कत्था केवडे से बसा हुआ, चूना साफ किया हुआ, छोटी इलायची चौपडे की।

अब इधर का हाल सुनिये कि हँसिया रुक्का लेकर गई। कहा—सरकार खोलिये, चिट्ठी लेके आई हूँ। कामिनी ने पूछा—सच बताना, कोई और तो साथ नही है। उसने कहा—जी नही, और कोई नही है। कहा, अगर और कोई हुआ तो मार ही डालूँगी। यह कहकर दरवाजा खोल दिया और रुक्का पढा, तो फडक गई। और कुछ देर बाद जवाब यो लिखा :—

'हमें जिद है कि हम बोसा न देंगे,
कभी हरगिज न कुछ तुमसे बदेंगे।'

हँसिया ने रनबीर सिंह को जवाब में यह पर्चा दिया तो पढ़कर मुस्कराये और दिल में बहुत ही खुश हुए, और सोचने लगे 'न देंगे' और 'बदेंगे'—कितना अच्छा काफिया है। इसका जवाब यों लिखा—

'तुम्हें जिद है कि म बोसा न दूँगी,
अगर हम आप से ले लें तो क्या हो?'

कामिनी ने भी जवाब को नज्म करके भेजा

'पराये माल पर लछमी नरायन!
बड़े वह बन के आये हो, च-खुश! वाह!'

इसका जवाब

'कभी अब तक न की जिद हमसे लेकिन
न मानी आज तुमने बात जानी,
लिपट जाओ गले से आज झटपट,
हसीनों की हो तुम सरताज, जानी!'

पढ़कर कामिनी दरवाजे बन्द करके दबे पाँव उस छत पर आई जहाँ रनबीर सिंह लेटे थे और दबे पाँव जाकर बोसा लिया।

रनबीर—अब क्यों आई? अब वह जिद कहाँ गई?

कामिनी—(एक और बोसा लेकर) जिद कैसी?

रनबीर—जिद काहे की थी?

कामिनी—जिद यह थी कि 'नक्द' का बोसा हम न देंगे। 'नक्द' के जो बोसे हमसे माँगोगे तो हम न लेने देंगे, और यों हम चाहे अपनी खुशी से हजारों बोसे तुम्हारे लें और तुम हमारे लो। बस यही जिद है।

रनबीर—रूठ बहुत जल्द जाती हो।

कामिनी—तुम्हारी नाक।

इस बातचीत के बाद रनबीर सिंह ने एक नौकरानी को पुकारा और बर्फ के दो टुकड़े माँगे। खुद जामे-शराब डालकर पिया और बीबी को सुराही के पानी में बर्फ डालकर पिलाया। जब नौकरानी चली गई, तो रनबीर सिंह ने कहा—हम दोनों को उस वक्त क्या हो गया था? जरा-सी बात पर रूठ गये, भई वाह! और यह न समझे कि हमने बोसा लिया तो क्या, और तुमने लिया तो क्या! तुमको यह जिद, कि हम ही जीत में रहें! बात की बात। अब तुम अपनी अक्लमन्दी को देखो कि मैं हारता तो फायदा तुम्हारा होता, और मैं जीतता तो कौन-सा नुकसान तुम्हारा था। बस, एक दफ़ा ही रूठीं तो—

इन तिलों तेल ही न था गोया. आपसे मेल ही न था गोया!

कामिनी—पहले तो मैं समझी कि तुम हँसिया को समझा-बुझाके लाए हो। मैंने उसको कस्में दी और जब खूब यकीन हो गया कि वह अकेली ही आई है तब मैंने दरवाजा खोल दिया। उसने वह पर्चा मुझे दिया। पढते ही मैं फड़क गई 'तुम्हें ज़िद है कि मैं बोसा न दूँगी अगर हम आपसे ले लें, तो क्या हो।'

रनबीर—यह कोई बहुत उम्दा शेर नही है। लेकिन एक बात इसमें ऐसी पैदा हुई है कि मजा दे जाती है। अगर पुराने फैशन के किसी शाह के सामने यह पढ़ो तो वह इसको पसन्द न करे।

कामिनी—अजी, वह पसन्द करे या न करे, हमको तो पसन्द है। बस पढने घू मे खुश हो गई। फड़क उठी। तुम्हारी इन्ही बातो पर मेरी जान तुम पर जाती है। परमेशर जानता है कि यह शेर पढकर फिर मुझसे न रहा गया।

रनबीर—रूठे दिलबर को मनाना कोई हमसे सीख ले।

कामिनी—हाँ यह तो ठीक है, इसके तो हम भी कायल है।

रनबीर—अब यह बताओ कि आज का रूठना रिसाना हमारी तुम्हारी दोनों की बेवकूफी थी या नही?

कामिनी—नही, बेवकूफी नही। यह एक जिद की बात थी। और यो देखो तो वह बात ही क्या थी। दस-दस बोसो का झगडा। अब हँसी आती है।

रनबीर—(हँसकर) क्या दिल्लगी की बात है।

कामिनी—मुझे खुद हँसी आती है।

रनबीर—यह रूठना खुद तुम्हारा लौंडियापन था।

कामिनी—(तुनुककर) मेरा लौंडियापन था और तुम्हारा लौंडापन नही था?

रनबीर—मैं जो तीन बार हारा तो जरा झल्ला गया।

कामिनी—यह तुमसे कहा क्योंकर जाता है?

रनबीर—यह क्या?

कामिनी—तुम हारे तो तुम्हारा क्या बिगडा। अरे, मैंने तीने दफे बोसे लिये तो तुम हार में काहे में रहे?

रनबीर—(गले लगाकर) अपने सर की कसम खाके कहता हूँ कि मैं खुद यह सोचता था। मगर उस वक्त शैतान सर पर सवार था। ... और उस वक्त बेअख्तियार जी चाहता था कि बोसे लूँ।

कामिनी—अजी अब जाने भी दो। कुछ हँसी आती है, कुछ रंज होता है।

रनबीर—यह दिल्लगी भी उम्र भर याद रहेगी।

कामिनी—और मैंने जो वह बेवकूफी की पर तुमको क्या सूझी!

रनबीर—कसम से, रूठने में वह मजा आता है कि दिल ही कुछ उसके मजे खूब लूटता है।

कामिनी—हैं तो ऐसा ही।

रनबीर—कितनी रूठी हुई थी कि मालूम होता था, दो दिन तक न बोलेंगी। ले, जरा ठंडा-ठंडा पानी तो पिलवाओ।

कामिनी—(गिलास में सुराही से पानी उँडेलकर) लो।

रनबीर—बे बर्फ के तो हम पानी पीते ही नहीं।

कामिनी ने एक औरत को बुलाया। उसने बर्फ का पानी पिलाया। एक तो योंही पानी बर्फ हो रहा था। अब इतना ठंडा हो गया कि अगर कोई और पीता तो दाँतों का खुदा ही हाफिज़ था। मगर ये इसके आदी थे। डेढ़ गिलास पी गये। आधा गिलास जो बचा था वह कामिनी को दिया। मगर ये दो घूँट से ज्यादा न पी सकी।

रनबीर—हम कितने खुशनसीब हैं। चाँदनी रात कैसी निखरी हुई कि वाह, वाह! और इधर बगल में एक चाँद, उस चाँद से कहीं बढ़के जिस पर निसार हैं। उधर कामिनी, जिसको मनोकामिनी भी कहते हैं, फूली हुई। बाग़ क्या मोहल्ला भर महक रहा है, और इधर कामिनी, अस्ल कामिनी की ज़ुल्फ अंबर की लपटें आ रही हैं। बाग के फूलों की खुशबू के अलावा जूही, बेले चमेली के फूल और हार जो पलंग पर बिछे और इधर-उधर रखे हुए हैं, उनकी खुशबू अलग मस्त कर रही हैं। अजीब बहार की रात है। इस वक्त जैसे किसी ने हमको करोड़ों रुपये दे दिये हैं। एक बात इस वक्त सोचता हूँ कि जिन बदनसीब औरतों के प्यारे पति जाते रहते हैं उन बेचारियों के दिल पर क्या गुज़रती होगी। हमारी सलाह तो यह है कि

रनबीर सिंह अभी पूरी बात कहने भी न पाये थे, कामिनी ने यों इनकी बात काटी

कामिनी—चलो, बस, अब चुप रहो। यह तुमको क्या सूझी। कहाँ हँसी-खुशी की बातें कर रहे थे, कहाँ बीच में यह बकने लगे।

रनबीर—अच्छा अब और तरफ ध्यान करो।

कामिनी—यह तुमको सूझा क्या?

रनबीर—चलो जाने दो।

कामिनी—किस खुशी और आराम में इस वक्त लेटे हुए थे और क्या तुमने तबीअत को परीशान और मज़ा किरकिरा कर दिया। (ठंडी साँस भर कर)—क्या सूझी।

रनबीर—वह गोरों की फौज याद है, जहाँ बाग जाते थे, उस दिन देखी थी?

कामिनी—हम तो सुनते थे कि बड़े हूश होते हैं, मगर उनमें से कोई मिनका तक नहीं। कान दबाए चले गये।

रनबीर—यह अंग्रेजी राज है। सोना उछालते चले जाइये, अन्धेर नगरी

थोडा ही है। जब अफसर साथ होते हैं और फौज जाती है, तो गोरे मिनक नही सकते। हाँ, अकेले जब बिला-अफसर के तीन-चार गोरे शिकार खेलने जाते हैं, तब अलबत्ता जरा दांद मचाते हैं। तो वह भी कभी कभार।

कामिनी—तुमने कभी कोई लडाई देखी है?

रनबीर—हाँ, मसनूई* जगें देखी हैं।

कामिनी—अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। तुमको तो मैं जानती हूँ कोई फौज में अभी भर्ती भी न करे।

रनबीर—वाह वा! क्यो न भरती करे! अब ऐसे नन्हें भी नही है। और गोरो में तो हमसे कही छोटे-छोटे भरती होते हैं।

कामिनी—तुम फौजी वर्दी में बिलकुल अंग्रेज मालूम होने लगो।

रनबीर—और तुमको अगर मेमो की पोशाक पिन्हा दी जाय तो यह मालूम हो किसी बड अंग्रेज अफसर की मिस बाबा है।

कामिनी—(बहुत मुस्कराकर) अब तो तुम गालियाँ देने लगे। नही, सच कहती हूँ, फौज की वर्दी तुम पर बहुत सजे, और तलवार-वलवार और य और वो—पूरे साहब बहादुर मालूम होने लगो।

रनबीर—खुदा वह दिन दिखाए कि हम फौज में भर्ती हो रहें।

कामिनी—तुम ऐसे को तो फौज में नौकरी न करनी चाहिए।

रनबीर—यह काहे से?

कामिनी—जिसको घर में खाने भर को रोटियाँ हो, उसको जान-जोखम की नौकरी न करनी चाहिए।

रनबीर—और यह जो बडे-बडे करोडपति अंग्रेज फौज में भर्ती होते हैं?

कामिनी—करोडपति तो काहे को होते होगें?

रनबीर—अल और ड्यूक के लडके वो-वो नौजवान जिनके पास साठ-साठ घोडे हैं और हजारो रुपय की बाजी हार जाते हैं और उफ् तक नही करते।

कामिनी—फिर नौकरी क्यो करते हैं?

रनबीर—उनको बहादुरी का शौक होता है। नाम पैदा करने का वलवला, कौमी जोश, मुल्क पर जान कुरबान करने का दिली खयाल। कुछ रुपय के लिए थोडा ही सब नौकरी करते हैं। वह ढाई-सौ की माहवारी तनखाह में भला पचास-पचास घोडे कोई पाल सकता है? दो सौ रुपये तनख्वाह के तो दस घोडो के बांधने में निकल जायँ, और हार-जीत के हजारहा अलग।

कामिनी—तो ये नाम के वास्ते फ़ौज में भरती होते हैं? अपने मुल्क पर गोया सदके हो जाते हैं।

---

* कवायदवाली झूठमूठ की जग, जिनमें सिपाहियों को असली लडाइयों लिये चुस्त और होशियार बनाया जाता है। (अनु०)

रनबीर—और क्या। हमारे दिल में बडा वलवला पैदा हुआ है कि किसी जंग में शरीक हों,—और छोटी नौकरी किया न चाहें—रिसालदारी एकाएकी मिला न चाहे। हाँ, अगर बहुत बडी सिफारिश हो, तो शायद शिप्पा लड जाय, वर्ना बहुत मुश्किल है। कायदे के खिलाफ।

कामिनी—अगर तुम फौज में भर्ती हो तो हम कहाँ रहें?

रनबीर—जहाँ हम रहें, वहाँ तुम रहो।

—— ० ——

पन्द्रहवाँ अध्याय

चाँदी के पायों के तीन बादी चोर

रनबीर सिंह ने उठके जिन शराब और अदरक की शराब (जिंजर वाइन) और नीबू का अरक (लेमन जूस) मिलाकर एक गिलास बनाया, और बहुत-सी बर्फ उसमें डाली, और आधा गिलास पीकर बीबी को दिया और कहा—हमी को रोए जो इसको न पिये। कामिनी धक से रह गई। सोचा, कि यह आज इनको हुआ क्या! आज तक कभी एसी जिद न की थी—आज यह कसमा कसमी कैसी! मगर क्या करती, प्यारे पति ने इतनी बडी कसम दी थी, य अगर जहर भी देते तो उसे अमृत समझकर पी लेती। मजबूर हैं। फौरन् गिलास लेकर आँखो से लगाया और एक घूँट पीकर कहा—कि जैसे कलेजे तक को ठडा कर दिया। याही ठडक क्या कम थी, और इसने तो बिलकुल ठिठुरा ही दिया। रनबीर सिंह ने कहा—तुम्हारे कलेजे को ठडक पहुँचायी है, मगर हमारे कलेजे का तो हाल कहो, कि उसको कितनी ठडक पहुँची, कि तुमने बिला उजर हमारा कहना मान लिया। कामिनी ने जवाब दिया—यह कौन बडी बात है। अगर संखिया दो तो अमृत समझकर आँख बन्द करके पी जाऊँ। तुम्हारा कहना न करूँ, भला यह भी कोई बात है। मगर एक बात मुझे कहनी है, वह इस वक्त न कहूँगी, फिर कहूँगी। रनबीर सिंह ने फिर इसरार किया कि तुम तो बस एक घूँट पीके रह गई। कोई कडवी चीज तो है नही। उम्दा जायकेवाली चीज है। ऐसा शरबत भी कभी न पिया होगा। कामिनी ने दो घूँट और पिये, और बाकी रनबीर सिंह पी गये, इसके बाद उन्होने ब्राडी का जाम बर्फ के साथ लिया और कामिनी से कहा—जानी! कौन देखने आता है—जरा-सी पी लो! इससे कामिनी ने इनकार किया, मगर जब रनबीर सिंह ने हद से ज्यादा इसरार किया तो होठो के पास लाई। ये

जब काश लेने को झुके, तो कामिनी ने फेंक दी। और उनसे चार आँखें हुईं तो मुँह बनाकर कहा—'यह बुरी चीज है। वह पहली चीज, अच्छी थी! उन्होंने कहा—वह शरबत है यह शराब है। वह और यह— और इतने में कामिनी बोली—यह क्या अन्धर है कि तीन चोर चाँदी का पलग चुराये लिये जाते हैं।

रनबीर—क्या? (अचम्भे में आकर) क्या कहा?

कामिनी—तीन चोर चाँदी का पलग चुराये लिये जाते हैं।

रनबीर—अब रग लाई गिलहरी।

कामिनी—तीन चोर। एक नही हुए, तीन-तीन!

रनबीर—(हँसकर) ठडा पानी पियोगी?

कामिनी—अरे वह तो सब कुछ होगा जी, ये मुए तीन चोर चाँदी के पायो का पलग चुराये लिये जाते हैं, और कोई मिनकता तक नही।

रनबीर—पकडे जायेंगे। और पलग है किसका?

कामिनी—या तो सूरजनारायन का है, या शायद चाँदका परशाद का हो।

रनबीर—(बहुत हँसकर) बडी दिल्लगी हो रही है। सूरजनारायन का पलग तीन चोर लिये जाते हैं।

कामिनी—चाँदी के पायो का पलग।

रनबीर—(एक जाम और लेकर) चाँदी के पायो का पलग कल हम भी निकलवाएँगे।

कामिनी—बडा अन्धेर हो रहा है, और कोतवाली पास।

रनबीर—(मारे हँसी के लोटते हुए)—कोतवाली पास और चोरी हो जावे! और अन्धेर है।

रनबीर सिंह ने हँसिया को आवाज दी। हँसिया आई। कहा—आज जरा बीबी साहब की कैफियत तो देखो! इतने में कामिनी ने उसको देखकर फिर वही बाँग लगाई—अरे हँसिया, यह आज क्या अन्धेर हो रहा है—कि तीन चोट्टे चाँदी के पायो का पलग लिये जाते हैं।

हँसिया—क्या? क्या लिये जाते हैं?

कामिनी—तीन चोट्टे चाँदी के पायो का पलग चुराये लिये जाते हैं।

हँसिया—(मुस्कराकर) क्या भग पी है?

कामिनी—अरी दीवानी, तीन चोर और एक चाँदी के पायों का पलग।

रनबीर—(आहिस्ता से)—पूछो किसका पलग है?

हँसिया—वह पलग जो चोर ले गया किसका है?

कामिनी—मैं तो जानती हूँ, सूरजनारायन का है या चादका परशाद का।

रनबीर—(आहिस्ता से)—पूछो कहाँ से चोरी गया?

कामिनी—कहाँ से, कहाँ से लगाया है। कोतवाली से, और कहाँ से!

हँसिया—(हँसकर) —आज कुछ पी है जरूर।

रनबीर—लो हँसिया, तुम भी पियो। (फूल के कटोरे में, ब्राडी उँडेल कर) लो, पी जाओ, आज की माफ है।

हँसिया—यहाँ यह जान पडता है कि जैसे बैकुण्ठ में बैठी हूँ। कैसी महकें चली आती है कि वाह! अच्छे-अच्छे राजा-बाबुओ को यह बात नसीब न होगी।

रनबीर—हाँ साहब, तो यह बडा अन्धेर हो रहा है। फिर अब इसका इलाज ?

कामिनी—तारो की छाँव छाँव लिये जाते है।

रनबीर—दूर की सूझ रही है आज।

कामिनी—सितारो की छाँव-छाँव!

हँसिया—(हँसती हुई) कभी की आदत नही है।

रनबीर—मगर सच कहना, चाँद में और इनकी सूरत में कोई फर्क मालूम होता है? हमको तो नही मालूम होता। खुदा जानता है हमसे बढके खुशनसीब कोई नही है। दूर-दूर तक ऐसी औरत न होगी। सरापा साँचे का ढला हुआ। कपडो से नूर छन-छनके बरसता है। सर से पाँव तक तूरानी, नूर से भरी हुई, नूर ही नूर बरसा रही हो जैसे, सब तन-मन नूर गदन नूर का फव्वारा, गला नूर का। तबीअत नूर की पायी है। सच है कि—आप अल्लाह ने बनाई है!

थोडी देर में हँसिया उठके चली गई, और मियाँ-बीवी ने आराम किया। ठडी-ठडी हवा के झोके चल रहे थे। चाँदनी निखरी हुई थी।

सुबह को मुँह हाथ धोकर कामिनी बाग के सहन में आई। अखबार पढ रही थी। और हँसिया मौलसरी के दरख्त में झूला झूलती थी, कि रनबीर सिंह घोडे से उतरे, और वह भी बाग में आये। कामिनी ने मुस्कराकर कहा—हवा खा आये! ये भी मुस्कराये और आके कामिनी के पास बैठे। और एक अखबार यह भी पढने लगे। पढते-पढते अचानक ही कहा—अरे!—कामिनी चौकन्नी हुई। पूछा—क्या पढा? खैरियत तो है? कुछ बोले नही, मगर दाँतो के तले उँगली दबाई। और फिर गौर से पढकर जोर से बोले—अरे-रे-रे! बडा अन्धेर हो गया! अब कामिनी चिल्लाई—ए तो कुछ कहो भी तो भलेमानस, हमारा जी घबराता है! रनबीर सिंह ने फिर जोर से कहा—ऐसा अन्धेर हमने सुना ही नही था। अखबार वाला लिखता है कि सूरजनारायन चाँदका परशाद का चाँदी के पायोवाला पलग तीन चोर उठा ले गये! यह कह कर जोर से एक कहकहा लगाया। कामिनी असल में समझ गई, मगर हँसी को दबाकर बनावटी लापरवाही से पूछा—किसका पलग चोरी गया? उन्होंने हँसते हुए कहा—सूरजनारायन चाँदका परशाद का पलग।

कामिनी—होंगे कोई। मैं तो डर गई कि जाने क्या लिखा है। इतने में हँसिया भी झूले से उतर आई और समझ गई कि कलवाली बात पर बना रहे हैं। खुद भी जाके मुस्कराकर पूछा—कैसा पलँग चोरी गया, सरकार? उन्होंने बताया—चाँदी के पाये हैं, और सूरजनारायन का पलँग। उसने पूछा—और ले कौन गया, सरकार? कहा—तीन चोर। एक नही, मुए तीन-तीन चोर, यह फिकरा कहकर रनवीर सिंह बहुत हँसे, और हँसिया भी खिलखिलाकर हँस पड़ी। कामिनी बोली—मालूम होता है, कोई दिल्लगी की बात है। पलँग कैसा और ये चाँदी के पाये कैसे? और सूरजनारायन कौन है? और वो तीन चोर कौन, कुछ याद है? कल की बात याद होगी!

हँसिया—पहले तो मैं समझी नही कि क्या कहते है, फिर ताड़ गई।

इतने में धन्नो आ गई, और इन सबने बात टाल दी। मियाँ-बीबी की बात धन्नो के पूछने की नही है। रनवीर सिंह भावज से दिल्लगी करने लगे—कि तुमको बड़ा अफसोस है, भाभी कि भाई के बदले हमको क्यो न ब्याह के आयी! और मैं सच कहता हूँ कि मुझसे-तुमसे दम-भर न बनती! वह बोली—कुछ सिड़ी हो गया है लौंडे, अब तू कुछ सुनेगा जोरू के सामने। बंदर-सा मुँह, बिज्जू की-सी आँखें! इस पर कामिनी भी हँसी, और धन्नो और कामिनी और हँसिया झूला झूलने लगीं। आहिस्ता-आहिस्ता गाने लगीं। जब धन्नो ठकुरानी घर के अन्दर गयी, तो रनवीर सिंह ने फिर बनाना शुरू किया—अजी बी कामिनी साहब, कहिये वह पलँग क्या हुआ? (मुस्कराकर) यह तुमको सूझी क्या? और बड़े इसरार के साथ फरमाती थी कि तीन चोर—एक नही मुए तीन-तीन चोर, कोतवाली के पास, और सूरज नारायन चाँदका परशाद कौन? हँसिया और खुद-बदौलत खूब हँसे। कामिनी ने कतई इनकार किया—कि, हम जानते ही नही, हमने कहा ही नही, हमें मालूम ही नही। तब रनवीर सिंह ने रात का हाल सब कह सुनाया कि—दस-दस बार तुम यही कहो कि एक नही, मुए तीन-तीन चोर! एक नही, मुए तीन-तीन चोर! हँसिया ने भी इसकी गवाही दी। मगर कामिनी इनकार ही करती गई, कि—मैंने कुछ नहीं कहा।

जब रनवीर सिंह कसमें खाने लगे कि जरूर कहा, तो कामिनी ने एक दफा ही पलटके कहा—अच्छा, कहा, खूब किया। और नही कहा, तो अब कहते हैं, और सच भी यही है कि तीन चोर चाँदी के पायो का पलँग चुराये लिये जाते हैं। जाइये, अब फिर कहते हैं! (हँसकर) आप हैं किस फेर में मियाँ साहब! 'मियाँ साहब' के लफ्ज पर रनवीर सिंह और हँसिया दोनों को बहुत हँसी आई।

रनवीर—अब तुम बनती हो, झेप मिटाती हो। अच्छी तरह याद न

कामिनी—मैं सच कहती हूँ—तीन चोर पलँग लिये जाते थे। चाहे बद लो?

रनबीर—आइये बदते हैं! सौ-सौ रुपये, अच्छा पचास-पचास रुपये।

कामिनी—पचास-पचास रुपये हम नहीं जानते। हम कोई कंगाल नहीं हैं। हम गाँव-गाँव बदते हैं। एक-एक गाँव बदो! मगर बेईमानी की सनद नहीं!

रनबीर—जो कोई झेंपता है और झेंपके फिर दूसरे को बेवकूफ बना के झेंप मिटाना चाहता है, उससे हम बहुत नाराज हो जाते हैं। साफ झेंपे हुए हैं, मगर बन रहे हैं।

कामिनी—मैं तुमसे सच कहती हूँ, तुम हार जाओगे। अच्छा, तो बदते क्यों नहीं हो?

रनबीर—अच्छा, आओ बदते हैं। योंही सही।

कामिनी—हाथ पर हाथ मारो।

रनबीर—(हाथ पर हाथ मारकर) मैं भर लूँगा, बीवी साहब!

कामिनी—मैं भी भर लूँगी, मियाँ साहब।

हँसिया बहुत हँसी, कहा—ये हार जायँगी। तैश में आकर हाथ मार तो लिया है, मगर हारी धरी है—और ये देवेंगी नहीं।

रनबीर—नहीं! क्या दिल्लगी है? मैं ज़ेवर न उतार लूँगा?

कामिनी बोली—और मैं नालिश कर दूँगी।

कामिनी ने हँसिया को भेजकर धन्नो रानी को बुलवाया, और कहा—गवाह रहना। एक शर्त बदी गई है। धन्नो ने पूछा—वह क्या? उसने कहा—पूछो! रनबीर सिंह ने पीने-देने का ज़िक्र तो नहीं किया मगर और सब बातें कह दीं। धन्नो भी बहुत हँसी। ये तीन चोर और पलँग कोई पहेली है—या भँग पी है? कामिनी ने कहा—तुम भी बद लो! हमने तो एक गाँव बद लिया है। धन्नो ने फिर चन्द सवाल किये और कहा—हमारी समझ में तो कोई पहेली नहीं। मगर, हाँ गवाही है। कामिनी ने कहा—इसका फ़ैसला तुम्हारी राय पर है। अगर तुम न कह दो कि कामिनी कुँवर जीत गई, तो हमारा ज़िम्मा। उसने कहा—अच्छा, यह हमने माना। अब देखें ठाकुर रनबीर सिंह जीतते हैं या कामिनी कुँवर ठकुराइन। अब यह न मालूम हुआ कि गाँव से मतलब क्या है। कितना बड़ा गाँव कैसा गाँव, किस आमदनी का गाँव। रनबीर सिंह ने कहा—चाहे जितना बड़ा हो, मतलब तो जीतने से है। नाम तो होगा कि इतनी बड़ी शर्त ठाकुर बल्ज़ोर सिंह की लड़की, ठाकुर रनबीर सिंह राना बहादुर, धन्नोरानी ठकुराइन के पति . वह, तोबा, तोबा! (गालों पर थप्पड़ लगाकर) पति नहीं, देवर, चमड़े की ज़बान थी, फिसल गई। धन्नो ने मुस्कराकर कहा—यह रसां-रसां थप्पड़ लगाने की सनद नहीं। हमारे हाथ हों और तुम्हारे गाल! रनबीर सिंह बोले—हमारे गाल हों और

तुम्हारे होठ। उसने मुस्करा कर कहा—मुँह बनवा आओ!' थोडी देर फिर धन्नो ठकुराइन ने झूला झूला और चली गई।

कामिनी ने अलहदा जाकर रनबीर सिंह को बुलाया और कहा—देखो, यह बात पढे-लिखे आदमी के अक्ल के खिलाफ की। माना कि हिन्दुस्तान की बाज कौमो में बडी भावज से इस तरह की दिल्लगी करना जायज है और खाली-खूली हँसी दिल्लगी में कोई हर्ज भी यो देखने में नही मालूम होता, दो घडी की दिल्लगी है, मगर गँवारपन जरूर है, उजडपना जरूर है। चाहे शहर में बराबर रिवाज हो, और है ही, मगर बुरा रिवाज है। बडी भावज की इज्जत करनी चाहिये, न यह कि 'हमको चूम लो, हमको लिपट जाओ।' बेहयाई की बात है।'

रनबीर सिंह बीवी की बात गौर से सुनते रहे। जब ये कह चुकी तो उन्होंने गले लगाके चूम लिया, और कहा—तुमने इस वक्त लाख रुपये की बात कही। वाकई यह भलमनसी के खिलाफ है। हमारी बडी बेवकूफी है। वजह क्या? वजह यह कि लडकपन से यही सुनते आये हैं। इसी के आदी हैं, बस! अब आज से न कहेंगे।

कामिनी ने कहा—हाँ, अक्ल के तो यही माने हैं। यह कौन दिल्लगी में दिल्लगी है! जिसकी इज्जत करनी चाहिए, उससे कहते हैं, हमको लिपटके प्यार कर। वाह-वा! अपने भाई से यही कहोगे कि जरा अपनी जोरू आज भेज देना? नही कहोगे, ना? मगर भावज से कहोगे कि—आ दिलजानी, खटोले पर सो रह! इस पर रनबीर सिंह को बडी हँसी आई। लोट-लोट गये! पेट में बल पड-पड गये। कहा—सच तो यो है कि यह बडी बुरी रस्म है।

गरज यह कि जब रात आई तो रनबीर सिंह ने कहा—ले अब अपना वादा पूरा कीजिए, और गाँव लाइये! वह बोली—बजा। गाँव लाइये की अच्छी कही। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। अब दो-दो गाँव बद लो!

रनबीर—अब तुमने बेइमानी पर कमर बाँध ली!

कामिनी—(आसमान की तरफ इशारा करके) वह, वह सात सितारे हैं! चार पलँग की सूरत, तीन एक के बाद एक। वह तीनो चोर हुए। और पलँग चाँदी के पायो का है या नही? सूरजनारायन व चाँदका परशाद आसमान पर हैं या नही? अल्ला मियाँ आसमान पर है या नही—बन्दगी! अब गाँव लाइये!

रनबीर—(शरमाकर) लाहौल विला ... अरबी में उन्हें 'सब्आ सैयारा' कहते है, संस्कृत में सप्तऋषि।

कामिनी—मैंने तो जान-बूझके बार-बार कहना शुरू किया था तुमको पूरा-पूरा यकीन हो जाय, कि मुझे तेज हो गई। मैंने तो वह

फेंक दी थी। जो-जो मैं कहूँ कि इस अन्धेर को देखो कि तीन चोर एक पलँग को उठाए लिये जाते हैं, उस कदर तुमको और यकीन होता जाय.. ..ले अब गाँव लाइये—दूसरे दिन धन्नो ठकुराइन और हुँसिया ने सुना तो बडी दिल्लगी हुई, और रनवीर को वादा पूरा करना पडा। गाँव का तो उनको जरा भी खयाल न था, क्योंकि घी कहाँ गया? खिचडी में। मगर हार जाने का बडा अफसोस था।

अब सुनिये कि दूसरे दिन एक ऐसी बात हुई जिसका हाल रनवीर सिंह ने बीवी और माँ-बाप किसी पर जाहिर नहीं किया था। सिर्फ अपने बडे भाई को लिखा था। मुद्दत से उनकी तमन्ना थी थी कि फौज में भर्ती हो जायें। चुनाचे कई बार उन्होंने बीवी से बातो-बातो में जिक्र भी किया था। बडे से बडे फौजी अफसरो से मुलाकात थी, और चूँकि जवान-खूबरू था, पूरा डील-डौल, मजबूत चौडा-चकला, हाथ-पाँव खूबसूरत, सुडौल, सिपाहगरी के फनों में फर्क, शहसवारी में बे मिसाल—बडी जबरदस्त सिफारिश पहुँचाई गई, और उनके नाम जगी मोहकमे की तरफ से तार आया कि तुम २८ नम्बर रिसाले के रिसालदार मुकर्रर हुए, एक हफ्ते के अन्दर हाजिर हो। उन्होंने खुश-खुश बीवी को भी इत्तला दी। धन्नो ठकुराइन और अपनी माताजी से भी कहा। बाप और भाई को चिट्ठी लिखी और अपने जान-पहचान के दोस्त फौजी अफसरो को भी इत्तला दी। इनके यहाँ की औरतें तो इसकी आदी ही थी, उनके लिये कोई नई बात न थी। मगर कामिनी को यह सुनकर रज हुआ कि पति से कुछ दिनो के लिये जुदाई होनेवाली है।

—— ० ——

सोलहवाँ अध्याय

नौचन्दी जुमेरात

रनवीर सिंह की माँ को जरा भी दिल में अफसोस न था कि लडका फौज में भरती होने जाता है, बल्कि बुलाकर नसीहत की, देखो बेटा, तुम्हारे बाप यहाँ इस वक्त नहीं है। वह लडाई-भिडाई में लड-भिड रहे हैं। मैं औरतजात हूँ। मगर तुम्हारी तालीम में लाखो रुपया खर्च किया गया है। छत्री के धर्म का खयाल रखना। इसी में हमारा नाम और आबरू है। इसी से हमारी इज्जत है, और इसी से हमारी रोटियाँ चलती है, यह नहीं है तो हम कोई चीज नहीं। अगर इसका खयाल न रखा तो दूध न बख्शूँगी। इनके यारो-दोस्तों को इसका

रंज जरूर था कि एक दोस्त और रनवीर सिंह का-सा दोस्त सोहबत से जुदा होता है, मगर इस बात की खुशी थी कि रनबीर सिंह ने फौज में ऐसा इज्जत का ओहदा पाया, जिसकी इनको मुद्दत से आरजू थी। हाँ, कामिनी को अलबत्ता रंज था कि रनबीर सिंह से जुदाई होती है। गो रनबीर सिंह ने कह दिया था कि मऊ (जहाँ की छावनी में ये तायनात हुए थे) जाते ही बुलवाऊँगा, मगर इस महीना-बीस रोज की जुदाई भी इसको शाक थी। रात को एकान्त में मियाँ-बीबी में ये बातें हुई—

रनबीर—जब से यह खबर तुमने सुनी है, तब से जैसे तुम खुश नहीं हो।

कामिनी—मैंने तो उफ् तक नहीं की।

रनबीर—मगर तुम्हारे रंग-ढंग, बातचीत और चेहरे से साफ जाहिर है।

कामिनी—अच्छा यह बताओ कि अपने आदमी की जुदाई किस बीवी को शाक न गुजरेगी?

रनबीर—जुदाई कैसी? मऊ की छावनी कदम भर पर है। जाके कोई उम्दा कोठी पसन्द करके तुमको बुलवा लूँगा।

कामिनी—अच्छा तो मैं कुछ कहती थोड़ा ही हूँ।

रनबीर—चलो कल तुम्हें नौचन्दी जुमरात की सैर दिखायें। रुस्तम नगर की चढ़ाई पर एक मकान मोल लिया है, वहाँ से बैठकर सैर देखना। चिकें पड़ी हुई हैं।

कामिनी—जैसा कहो। मगर मेरे सर पर हाथ रक्खो, जल्द बुला लोगे। और जो दो चार दिन अभी कोठी न मिले?

रनबीर—तुम इस कदर इसरार क्यों करती हो। मुझे तो खुद ही इसका खयाल है। तुम गो यहाँ कभी कमला कभी राजदुलारी, कभी अपनी किसी बहन, कभी किसी भावज से दिल बहलाओगी, मैं तो वहाँ बिलकुल अजनबी हूँगा। हरदम तुम याद आओगी। तुम्हारे बगैर दम भर चैन न आयेगा। अब हमें खुशी-खुशी जाने दो। चलो, कल तुम्हें नौचन्दी दिखला लाएँ। बहन को भी बुलाएँगे। जैनब की माँ को भी ले लेंगे।

रनबीर सिंह दूसरे रोज अपनी रवानगी की तैयारी करने लगे, और बीवी के जरा दिल बहलाने के लिये चार बजे गाड़ी पर सवार होकर रुस्तम नगर में लाय। कमला और जैनब की माँ भी थीं। मकान में बिठाकर खुद किसी दोस्त से मिलने गये और कह गये कि अभी आता हूँ। इन लोगों ने जो देखा तो वह भीड़-भड़क्का—कि वाह!

कामिनी—ए यह तो मेला है।

जैनब—बड़ी भीड़ें होती हैं।

कमला—वह हाथी आता है।

जैनब—अभी हाथी शहर में हैं। इक्का-दुक्का होंगे।

कामिनी—मऊ की छावनी तो दूर नहीं है?

कमला—ए यह क्या बोदी-बुजदिली औरतों की तरह काँपी जाती हो?

जैनब—अजी हाँ, वो बात ही कौन है।

कामिनी—जब से सुना है, परमेशर जानता है, मेरा जी ठिकाने नहीं।

कमला—दिल को ढारस दो। मर्द सबके बाहर जाते है।

अब लोगों की भीड और आमद-रफ्त ज्यादा होने लगी। नौचन्दी जुमेरात की कैफियत अजब लुत्फ दे रही थी।

कामिनी—यह कैफियत तो तुमने आज तक देखी ही न थी।

कमला—बडी भीड रहती है। अब यह हुजूम कब तक रहेगा?

जैनब की माँ—बस, कोई बारह बजे, एक बजे तक। (कामिनी से) तुम तो गई हो! जब नन्ही-सी थी, कई दफा तुम्हारे नाना तुमको ले गये हैं।

कामिनी—डोली पर डोली और पीनस पर पीनस चली जाती है। कितनी बग्घियाँ-गाडियाँ आके गयी।

जैनब—इस शहर की रजब की नौचन्दी मुल्को मुल्को मशहूर है।

इतने में रनवीर सिंह का घोडा दूर से दिखाई दिया। मुश्की बैलर जवान। काठी और साज नया, और कीमती। उस पर रनबीर सिंह का-सा खुशरू जवान रान पटरी जमाए सवार।

कमला—लो भैया आये।

जैनब—ये अलबत्ता, रईस मालूम होते हैं। किस शान से बैठे हैं।

कमला—तीनो भाई अच्छे है, मगर इनकी बात ही और है।

जैनब—दुश्मनों की आँखों में खाक, और तो नहीं जानती—इत्ते मर्द इधर से गये, एक तो पाता नहीं है। एक लकात अभी गये न थे? जी चाहता था, दो घूलें मार के घोडा छीन लें, और साईसों में नौकर रख लूँ।

कमला—और बैठा किस तरह था! कमर टेढी, आँखों में दम।

जैनब—भैया जहाँ जाके खडे हो जायें, यह मालूम हो, कोई बडा सरदार आता है।

ये बातें हो ही रही थी कि रनवीर सिंह खट्-खट् करते हुए कोठे पर आये!

कमला—आये राना रनवीर सिंह बहादुर, आये!

जैनब—अभी तुम्हारी तारीफें हो रही थी कि इत्ते मर्द उस वक्त से गुजर गये कोई तुम्हारी जूती की फटफट को भी नहीं पहुँचता।

रनबीर—हम हैं ही ऐसे। (मुस्करा कर) मगर जैसे हम हैं, वैसी हमने जोरू नहीं पाई।

कामिनी—कहते हुए शर्म नहीं आती?

रनबीर—जबसे हमने शादी की, जैसे चाँद-सूरज को ग्रहन लगता है, वैसे ही हमको ग्रहन लगा। कहाँ यह हमारा सूरज का-सा चेहरा, और कहाँ बीवी साहब!

कामिनी—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू न बनो बहुत।

जैनब—यह तो हठधर्मी है, साहब! बीवी तो ऐसी चाँद-सी मिली हैं जिसका जवाब नहीं। देखने से भूख-प्यास बन्द हो गया। अल्लाह जानता है, चाँद में दाग़ है, इनमें दाग़ नहीं!

कामिनी—बहुत खुशामद न किया करो!

कमला—यह नौचन्दी तो हमने इस धूम की आज ही देखी! हर नौचन्दी को आया करेंगे।

रनबीर—ज़रूर आया करो। सैर की सैर देखो और दिल का दिल बहलाओ।

कमला—नौचन्दे जुमेरात—पीरों की करामात! सुनते थे, मगर आज आँखों से देखी।

रनबीर—गाड़ी पर तुम दोनों बैठ लो। और जैनब की माँ को साथ ले लिया करो। यहाँ आदमी नौकर-चाकर मौजूद ही है।

कामिनी—नौचन्दी जुमेरात, सब जुमेरातों की रानी।

रनबीर—यह वही मसल हुई—"अनन्ता गाजी!"

जैनब—तुम लोगों में सब बरतों से सहल और मज़ेदार बरत अनन्त चौदस का बरत होता है। नमक के सिवा और जो चाहे वह खाओ और चाहे जितनी बार खाओ! दूध, बालाई, शक्कर पराठे। एक मौलवी साहब ने भी, जो कभी लाला के यहाँ नौकर थे, बरत रक्खा, कि मज़े से मामा पुल्तियाँ उड़ाएँ, तर माल खाने में आये। एक नमक साल भर में एक दिन न मिला, न सही! बरत रखा, और दिन भर मुँह चलाते रहे। माल मुफ्त, दिले-बेरहम। फिर मुफ्त को कौन पूछता है! गरज़े कि मौलवी साहब रेवा-खत्मी हो गये—बड़े खुश! यह दिल में जम गया कि हिन्दुओं का हर त्योहार मज़ेदार है। खाने-पीने की बड़ी बहार है। अब रोज़ दुआएँ माँगने लगे कि अल्लाह करे, जल्द हिन्दुओं का कोई त्योहार आये तो मोहन भोग खाने में आये। उनकी दुआ खुदा ने कबूल की। और हिन्दुओं का वह त्योहार आया जिसको शिव बरत कहते हैं। मौलवी साहब ने बड़ी खुशी से बरत रक्खा। सात बज गये, आठ बज गये, नौ बज गये, दस बज गये। अब मौलवी साहब की कोई फ़िक्र नहीं लेता। जब इनकी आँतें कुलहु अल्लाहु पढ़ने लगी, तो बहुत झल्लाए। शागिर्दों से कहा, भई आज कोई हमारा हाल ही पूछने नहीं आता। न बालाई, न मिठाई, न मेवे। यह माजरा क्या है? शागिर्दों को बड़ी हँसी आई। कहा—मौलवी साहब, आज खाना कहाँ! आज तो बरत है, और बरत भी निर्जल

पूरा। निर्जल के यह मानी कि पानी तक न पियें, खाना तो रहा अलग। खाने का तो आज कोई जिक्र ही नही है। मौलवी साहब ने सर पीट लिया कि बर्फी, और लड्डू, और बालाई और मिसरी-मेवा तो खैर—वह रोजमर्रा का मामूली खाना! दाल-रोटी भी नदारद है!

कामिनी—हमको सब दिनो से अच्छा इनकी सालगिरह का दिन मालूम होता है। मगर अब नौचंदी जुमेरात को भी हम सालगिरह के बराबर समझेंगे। आज तबीयत बडी खुश हुई, जैसे लाखो रुपये मिल गये।

रनबीर—क्या जाने सालगिरह के दिन इतनी खुशी लोग क्यो करते हैं?

कामिनी—और खुशी न करने का क्या सबब?

रनबीर—यह कि जिन्दगी का एक बरस और कम हो गया।

कामिनी—वाह यह खुशी सालगिरह के दिन क्या कम होती है कि एक बरस और परमेश्वर ने दिखाया है? तुम जो कहो, हम अब हर नौचन्दी को आएँगे और हर नौचन्दी को हमारी तरफ से त्योहारी खाना हुआ करेगा।

रनबीर—चलो, इससे बढकर क्या है। हम बहुत खुश।

कामिनी—ताज्जुब यह है कि तुमने आज तक इसका जिक्र भी नही किया कि रजब की नौचन्दी क्या चीज है।

रनबीर—लखनऊ की नौचन्दी जुमेरात, खास कर रजब की नौचन्दी दूर-दूर मशहूर है। मगर शहर के बीचोबीच इसका लुत्फ है। और यहाँ इन गली-कूचो से तबीअत घबराती है। और इसके साथ एक बात और भी है। बेपर्दगी का भी किस कदर खयाल है।

कामिनी—हाँ, यह एक नई बात है। उधर तो इतनी अंग्रेजियत कि खाना भी अंग्रेजी और पीना भी अंग्रेजी और घोडे की सवारी भी अंग्रेजी और शतरंज भी अंग्रेजी, चालें और हँसना भी अंग्रेजी, और इधर पर्दे का यह खयाल। इसके क्या मानी, जिसके ऐसे खयालात हो, वह पर्दे का इतना खयाल क्यो रखे!

कमला—मैं भी यही कहती हूँ।

रनबीर—तुम भी यही कहती हो, और यह भी यही कहती है। मगर तुम दोनो इन्साफ से कहो कि जब बाग हमारे साथ जाती हो तो वहाँ हम पर्दे का कौन-सा खयाल रखते है? जब गाँव में होती हो तो वहा क्या पर्दा होता है? अब रहा शहर, यहाँ यह बात है कि जितने हमारे यार-दोस्त है, उन सबके यहाँ पर्दा होता है। हम खामखाँ नक्कू क्यो बनें?

कामिनी—(चुहल के साथ) जो किसी की बीवी बदसूरत या काली-कलूटी हो, तो खैर, और जिसकी बीवी चाँद का टुकडा हो, वह क्यो शर्माए?

इस फिकरे पर सब हँस दिये, और रनबीर सिंह भी बहुत हँसे। इन दोनो मियाँ बीवियो में यह नोक-झोक हुआ करती थी।

कामिनी दोहरी-दोहरी चिकों में से सैर देख रही थी कि फकीर यह कहता हुआ निकला कि बाबा जो चुन्नशाह को आज पेट भर पुलाव खिला देगा उसकी मनोकामना पूरी हो जायगी। आज नौचन्दी जुमेरात, पीरों की करामात है। भाई हिन्दू मुसलमानो! आज सवाब कमाने का दिन! यह नौचन्दी जुमेरात है—"लैल तुतल-कदर" के बाद सब रातों की सरदार! और बाबा यही दिया-लिया काम भी आता है, यही कुछ रह जाता है।

कामिनी—हमारे शहर के फकीरों की सदा भी अजब सदा होती है। मनोकामना भी कहते हैं, "लैल्तुल-कदर" भी कहते हैं।

जैनब—और जिसको देखो, वह चुन्नाशाह! यह नाम सबको पसन्द है।

कमला—हाँ यह मेरे दिल की बात कही!

रनबीर सिंह—इसमें कोई शक नहीं कि यहाँ कई चुन्नेशाह हैं?

कामिनी—नौचन्दी जुमेरात को इन फकीरों को भी बहुत कुछ मिल जाता होगा। कहाँ तक लोग न देते होंगे।

जैनब—फूलों के हार गजरे, बद्धी, कंगन, मिठाई, रोटी, कबाब, सारी दुनिया की शैं होती हैं। साकी फक्त हुक्के के दम पिलाने में महीना भर का खर्च पैदा कर लेते हैं। तँबोली, साडीवाले, येन्को, थोडी देर अच्छी भीड हो जाती है। क्या नौचन्दी जुमेरात का नाम सुना नहीं?

कामिनी—नाम तो सुना मगर इतनी भीड और यह धूम धाम नहीं देखी थी।

कमला—खासा मेला है।

जैनब—यहाँ यह तो है ही।

कामिनी—नौचन्दी जुमेरात और पीरों की करामात।

रात को कोई दस बजे तक यह काफला यहीं रहा। इसके बाद घर गये। चार रोज रनबीर सिंह ने कामिनी को बहुत ढाढ़स दी। माँ के पास घटा-दो घटा रोज बैठे। दोस्तो और रिश्तेदारों से मिले। फौजी अफसरो से मुलाकात की। जिले के हाकिमों से मिले। सब सामान लैस किया।

जिस रात तारों की छाँव में रवाना होने को थे उस रात का हाल कोई कामिनी के दिल से पूछे। जैसे कोई ऐसी शै किसी की खो जाती है जिसके बगैर वह एक दम चैन में न रह सके। दिल को तसल्ली देती थी, मगर जरी देर के बाद काबू जाता रहता था। रनबीर सिंह बराबर गौर से देख रहे थे कि कामिनी आज बहुत बेकरार है। न वह शोखी, न वह प्यार की बातें, वह दिलरुबाई के घातें, न वह चुहल। समझ गये कि खुदा जाने दिल में क्या सोचती है, और इस बेचारी के दिल पर क्या असर है। आखिरकार उनसे न रहा गया और समझाने लगे। कामिनी चुपचाप सुना की, किसी बात का जवाब न दिया। कुछ कहना चाहती थी, मगर दिल इस कदर उमड़ आया

था कि जबान से कोई लफ्ज नही निकलता था। रनवीर सिंह ज्यादा छेड़ना भी नही चाहते थे, कि शायद उसके नाजुक दिल पर कोई बुरा असर पैदा करे और चलते-चलाते दोनो को और भी ज्यादा रज हो।

जब चार का गजर बजा तो कामिनी, करीब था कि रो दे। मगर अपने आप को बहुत ही जब्र किया कि उनके सफर के जाने के वक्त कोई ऐसी कार्रवाई न करनी चाहिए कि उनको और भी ज्यादा कलक हो। जब दरबान ने बाहर से आवाज़ दी—तुलसा बुआ, सरकार से कह दो कि ठाकुर बलभद्र सिंह और तहसीलदार साहब और ठाकुर इन्द्रबिक्रम सिंह आये। गजर बज गया तो कामिनी समझ गई कि—

"जुदाई की घडी सर पर खडी है।"

अब उसका दिल और भी बेकाबू हो गया। अब न बात करने का मौका रहा, न कुछ कहने-सुनने का। क्योकि अगर रनवीर सिंह का ही मामला होता तो मुमकिन था कि दो एक रोज़ न जाने देती। मगर अब तो गुमान-सिंह और बलभद्र सिंह और इन्द्र विक्रम सिंह दरवाजे पर आ गये। दिल में सोचा कि बलभद्र सिंह और गुमान सिंह खैर आये ही थे, मह भाई को क्या सूझी कि मेरे पति की जुदाई के कारन बने। रनवीर सिंह कामिनी के दिल का हाल समझते थे। अब यह मौका था कि दोनो के दिल भरे हुए आँखे डबडबाई हुई—मगर दोनो अपने को सँभाले हुए। रनवीर सिंह ने गले लगाकर बोसा लिया, और बहुत ही आहिस्ता से बोसे का जवाब देकर कामिनी न पत्थर कलेजे पर रखकर 'खतो को न तरसाना।" कहने को थी मगर सिर्फ 'तर—' का लफ्ज कहने पायी थी, "—साना' मुँह से न निकल सका, और इस कदर आँसू आँखो में भर आये कि तमाम दुनिया अँधेरी नजर आती थी।

इतने में दरबान ने फिर आवाज़ दी। रनवीर सिंह ने सुनी, मगर कामिनी इस कदर भावो में डूबी और खोई हुई थी कि अबकी दफा दरबान की आवाज न सुन सकी, और रनवीर सिंह रवाना हुए—मगर कदम उठाना मुहाल था। दो कदम चले और पीछे फिरके देखा तो कामिनी बुत बनी हुई खडी है, मगर आँसू है कि उमडे चले आते है कोई इन्तहा ही नही। दिल का अजब हाल था। माँ से मिले। उन्होने असीस दी। भावज-बहन, सगे-सम्बन्धी सब रान रंग। उन्होने कहा—मैं बाहर से अभी आता हूँ। ये बाहर गये, दोस्तो से कहा—अरे यार, अभी एक घटा है मैं अभी आया।

अब इधर कामिनी का हाल सुनिये कि हँसिया ने मुँह धुलाया और रूमाल से आँसू पोछे तो क्या देखती हैं कि रनवीर सिंह गायब। अरे, क्या चले गये? हाय, इन आँसुओ से परमेशर समझे, मुझे एक दफे नजर भर के देखने भी न दिया। लोहे के दीवार बन गये। रनवीर सिंह का दिल भरा हुआ था ही,

और खासकर जब कामिनी की बेबसी देखी थी कि आँसू पोछ रही है और वह बाढ के तरह उमडे चले आते है, और इनको इस कदर भी वक्त नही कि जाके इस सुन्दरी के आँसू पोछें। घर में ये कह ही गये थे कि मै अभी बाहर से आता हूँ। सीधे छत पर गये और कामिनी को अलैहदा ले जाकर कहा—ले ज़रा हँसके मिल तो लो, आज का सफर हमको गराँ न गुज़रे। कामिनी को इससे बढकर न्यामत और क्या मिल सकती थी। जी खुश हो गया। समझी थी कि जल्दी के सबब से चल दिये और मै आँसुओ की वजह से आँख भर कर देख न सकी, अब जो अपने प्रान-प्यारे को पाया तो गले से लगाया और कहा, अगर अब रोऊँ तो सज़ा देना—हँसी खुशी जाओ और हमें जल्द बुलाओ।

माँ और भावज और बहन से फिर बिदा होकर और पान खाकर रनबीर सिंह मऊ की छावनी को रवाना हो गये।

—— o ——

सत्रहवाँ अध्याय

रन की जमीन

रनबीर सिंह रोज़ एक खत भेजते थे और कभी कभी तार भी आता था। कामिनी भी रोज़ खत लिखती थी। इनकी सास और भावज और कमला सबसे खत किताबत थी, और अक्सर खतो में उन्होने लिखा कि कामिनी और कमला को बुलवा लेंगे। दोनो खुश थी, मगर यह मालूम था कि कोई अच्छी कोठी नही मिली है, ढूंढ रहे हैं, मिलते ही बुलवा लेंगे।

एक रोज़ कामिनी खत पढ रही थी कि रनबीर सिंह के कई खत आये, जिनमें एक खत कामिनी के नाम भी था। कामिनी ने हमेशा की तरह खुश-खुश खत खोला, जिसमें मुख्तसर तौर पर लिखा था—

'मेरी प्यारी जानी, आज मैंने चौतरफा कोठी ढूँढी कि कोई दिलकश बँगला या खुशनुमा कोठी किसी उम्दा जगह पर छावनी के पास मिले तो किराये पर लूँ और तुमको फौरन बुलाऊँ, क्योंकि अब देखने को बहुत जी चाहता है। यों तो कई बँगले और कोठियाँ खाली हैं। मगर एक निहायत ही खुशनुमा बँगला दरिया के किनारे ऐसा अच्छा मिला है कि जिसका जवाब नही। एक हफ्ते में खाली हो जायगा। फौरन् तार दूंगा। तुमको खुद आकर ले आऊँगा। दो दिन की छुट्टी ले लूँगा। इसमें शक नही कि हमारी तुम्हारी जुदाई बहुत जल्द हुई और यह थोडे दिन की जुदाई भी खल गई .

कामिनी को गोया करोडो रुपये मिल गये। पति से मिलने की बडी खुशी हुई। कमला को फौरन् बुलाया और खुशी-खुशी खत सुनाया। उसने कहा—मैं भी उनसे पूछके चलूँगी। यकीन तो है मान लें। कामिनी को यह जुदाई बडी शाक गुज़री थी, मगर इस खत के आने से गो ज़रा-ज़रा ढारस हुई। कमला से देर तक बातें करती रही। दोनो बेहद खुश थी।

दूसरे दिन सवेरे एक कौवे ने छत की मुडेर पर बैठकर काँव-काँव जो शुरू की तो कमला ने कहा—जो आज भाई का खत बुलौवे का आए तो दूध-बलाई खिलाऊँ। इत्तफाक से उसी वक्त डाकिया खत लाया और महरी ने नीचे जाकर खत लिया और कामिनी को दिया। पढा तो यह लिखा था—

'मेरी प्यारी जानी, आज इस खत में, जो मैं बडी मोहब्बत से तुमको लिख रहा हूँ, एक नई बात यह है कि इसको मैंने भूमिका से शुरू किया है। पति-पत्नी के खत में भूमिका की बडी ज़रूरत है, और वह भूमिका यह है—कि जो लगाव फूल को खुशबू से, औरत को जोबन से, धनी को दान-पुन्न से, फकीर को सन्तोष से, गृहस्थ को नेकचलनी से, आँख को नूर से, बादशाह का इन्साफ से, वज़ीर को खैरख्वाही से, शेर को पजे से, जाम को सरूर से, हसीनो को अपने हुस्न के गरूर से, मोती को आब से, बाग को गुल से, सुराही को 'कुल-कुल' से, स्वर्ग को अमृत से, खान को जवाहर से, पेड को फल से, दुआ को असर से लगाव है, वही क्षत्री को जग से है। जो राजपूत लडाई से डरे वह शेर है, जिसके पजा नही; सीप है, मगर बिना मोती का; पेड है मगर बे फल का — यानी बेकार चीज है। जिस आँखो में नूर नही, वह आँख क्या, जिस शराब में सरूर नही, वह शराब क्या। राजपूत का धर्म यही है कि रन के मैदान में जाय, तलवार के मुँह मरे और जिन्दा आये, तो भी नेकनाम हो, मगर दुश्मन को पीठ न दिखाये। ब्रह्मन जल-सूर; छत्री रन-सूर।

'इस सबक का मतलब यह है कि आज मेरा कलेजा बाग-बाग है, ऐसी खुशखबरी सुनने में आई कि खत लिख रहा हूँ और मेरी बाँछें खिली जाती है। जो बात मैं लडकपन से चाहता था, वह पूरी हुई। दिल की आरज़ू बर आई। इस वक्त तबीअत नौजवान माशूको की तरह बल कर रही है।

'लडकपन से मेरे दिल की तमन्ना थी कि मैं किसी लडाई में शरीक होऊँ। क्योकि, जिस राजपूत के बदन पर गोली का निशान या तलवार का ज़ख्म न हो वह पूरा-पूरा छत्री नही मालूम होता। क्षत्री की बडी बडाई यह है कि रन-के मैदान में जख्मी हो। मोर्चे और धावे से जो बेज़ख्म खाये आये वह क्षत्री नही। जितने ज़ख्म उतने गोया तमगे मिल गये। यह आरज़ू मुद्दत के बाद पूरी होनेवाली है। और अस्ल क्षत्री की यह भी एक पहचान है कि उसके घर की औरतें उस रोज़ जश्न करें और खुशी मनाएँ, जिस रोज घर से मर्द

युद्ध को जाय। अगले वक्तो में यूनानियो में यह कायदा था कि जब स्पार्टा शहर से कोई लडका फौज में भरती होकर जग के मैदान में जाता था तो माँ लडके को विदा करते वक्त कहती थी—कि यह ढाल जो साथ लिये जाता है, या तू इसके साथ आना या इस पर आना। मतलब यह कि या तो फतेह करके मय ढाल के आना, या तेरी लाश इस ढाल पर लदके आये।

'जो तो स्पार्टा वाले शेर-नर पैदा होते थे। सिक्खो की माँ लड़को से कह दिया करती थी कि बेटा मोर्चे से भागके आओगे तो दूध न बख्शूँगी। बहादुरो की औरतें भी बहादुर होती हैं। बाप-बेटा दोनो धावे में शरीक हैं। लडके को गोली लगी और गिरा। बाप ने देखा कि जवान बेटा चल बसा, बहू बेवा हो गई, माँ का एक ही लडका—वह जाता रहा, अब नामलेवा पानी-देवा कोई नही है, घर का चिराग गुल हो गया। मगर वाहरे बहादुर, उफ् तक न की, उसी तेवर और ठाठ से लडता रहा। जब लडाई खत्म हुई तो बेटे की बेकफन लाश के पास गया, और लाश को जो खून से भरी हुई थी, कलेजे से लगाकर कहा 'बेटा, जिस तरह तुमने सरकार के नमक का हक अदा कर दिया और यह नाम किया कि रन में गोली-तलवार खाये पडे हो, उसी तरह भगवान करे हम भी तलवार के मुँह मरें। तुम्हारे दादा की रुह इस वक्त खुश है कि पोते ने सिपाहियो की इज्जत रख ली। फौज का करनैल यह देख कर उस बूढे जमादार से बहुत ही खुश हुआ और कहा—सच्चे सूरमा ऐसे ही होते है!' जिस जिस ने यह देखा कि बेटे की लाश को कलेजे से लगाकर उसके जियालेपन की तारीफ करता है, उसको रोना आने लगा कि न लाश पर आँसू गिराता है, न रज करता है। घर भर में एक लडका और ऐन जवानी में मर गया,—बल्कि और उसके जीवट की तारीफ करता है और दुआ माँगता है कि मैं भी इसी तरह तलवार के मुँह मरूँ। इसके लिये बडा दिल, बडा जिगर चाहिये।

'आज सुबह जो मैं बिस्तर से उठा तो तबीअत रोज से ज्यादा खुश थी। और अभी यह खबर आई कि हमारा रिसाला समुन्दर-पार लडाई में शरीक होने को तैयार रहे, जिस वक्त हुक्म आये, फौरन् रवाना हो जाय। उस वक्त से यह दुआ माँग रहा हूँ कि हुक्म तो भगवान करे फौरन् आये, मगर इतनी मोहलत मिले कि तुमको देख लूँ। "इतनी फुरसत दे कि हो लें गुल से ुक आजाद हम।" अगर तुमको एक नजर भी देखकर गले लगा लूँ और बोसा लेकर बिदा लूँ, तो समझूँ कि करोडो मिल गये। और खुश-खुश जाऊँगा, क्योंकि जग में जाने की जो खुशी है, मेरा दिल जानता है या मै जानता हूँ। हाँ, उसके साथ ही अगर हिन्दुस्तान से रवाना होने के पहले तुमको नजर भर के देख लूँ तो समझूँ कि बडा खुशनसीब हूँ। फौज के कर्नल से आज सब दर्याफ्त ७.९७

ही रात को या कल सुबह कुल हाल तफसील से लिखूँगा और अगर एक दिन की छुट्टी मिली, जिसकी कि उम्मीद नही तो रस्सियां तोड कर पहुँचूँगा।

'इस वक्त दो किस्म के खयालात मेरे दिल में आते जाते हैं। एक यह कि मेरा दिल खुशी से भरा हुआ है, कलेजा हाथ भर का हो गया है और उस घडी को दिल खुशी से बुला रहा है, जब मैं जहाज़ पर सवार हूँगा और हमारी फौज के लोग बडी खुशी से नारे बुलन्द करेंगे। और एक तरफ याद आती हो कि तुमको देख लेता। जब से यह खबर आई है, यही दो ख्याल दिल में हैं कि तुम सबको देखूँ—और बस, जग जग। गोलो की आवाज़ कान में आये, दुश्मन से मुठभेड हो जाय, तो दिल का वलवला निकले। और बस, दूसरा खयाल वही है, एक दफा तुमको गले से लगाकर चूम लूँ और माँ से रुखसत हो लूँ; भाई-भावज, बहन, बहनोई, रिश्ते-नाते के अपने प्यारो से मिलूँ और जहाज़ पर सवार होकर यह जा, वह जा।

'तुम इसका खयाल कुछ न करना। यह तो हमारे-तुम्हारे खान्दान में होती आई है। इसका कौन अन्देशा है। अभी तक तो यह भी नही मालूम है कि हमको कहाँ जाना होगा। मगर यह मालूम हो गया है कि समुन्दर-पार जाना होगा। समुन्दर की लडाई नही है, और न हिन्दुस्तान में जग होगी, चाहे कही हो। जब लडने ही को चले, तो जैसे लका, वैसे काबुल, वैसे हिन्दुस्तान। सब एक-से।

'मैं पूरा-पूरा हाल कल तक लिखूँगा। अभी सिर्फ इतनी खबर मालूम हुई है कि किसी जग पर जाना होगा और वह लडाई समुन्दर पार होगी। जिस दम हुक्म आये, फौरन् रवानगी के लिये सब तैयार रहें। हमारी फौज में इसका बडा जोश है। अदना से आला तक के दिल में हद से ज्यादा जोश-खरोश हैं। सब तुले हुए—कि इधर हुक्म पावें, उधर रवाना हो। इस रिसाले की बडी तारीफ है। कई लडाइयाँ फतह करके आया है। हमारे रिसाले में अक्सर अफसर नौजवान हैं और अक्सर ऐसे भी हैं जो कभी जग में शरीक नही हुए हैं। मैं भी इन्ही नौ-सिखियो में हूँ।

'देखो इस खत का जवाब तुम क्या भेजती हो। अपने बाप-दादा भाई और नाना और मेरे ददिहाल और ननिहाल के लोगो ने जो कारवाइयाँ रन के मैदान में की हैं, उनको याद करो। बस, मैंने कल ही एक कोठी किराये पर ली थी और तुमको तार भेजने को था कि चली आओ—कि इधर यह खबर आई। माताजी के नाम अलैहदा खत भेजा है। कमला को बुलाके समझा देना। तुम्हारी याद, मेरी प्यारी, कभी नही भूलती।'

रनबीर सिंह का यह खत क्या आया कि गोला आया। कामिनी की रगत पढते-पढते फक हो गई, और चेहरे पर बडी उदासी छायी। कमला फौरन् समझ गई कि कुछ दाल में काला जरूर है। कामिनी ने दो बार खत

पढा और पलगडी पर लेटकर तुलसा से पानी माँगा। कामिनी के हाथो के तोते उड गये। मगर, चुप साधे रही। जब दो-चार मिनट में दिल को जरा सकून हुआ, तो कहा—लो वहन फटाका हो गया। सोचे क्या थे, हुआ क्या! कल वह खत आया, जी खुश हो गया। मनौतियाँ की कि जल्द आयें और साथ ले जावें। हम-तुम दोनो खुश-खुश रहते थे। आज कुछ और ही गुल खिला। हुक्म आया कि समुन्दर-पार लडाई पर जाने को तैयार रहो। कमला और कामिनी दोनो ने एक ठंढी साँस भरी। कई मिनट तक चुप रही। इसके बाद कामिनी ने जगह-जगह से खत सुनाया, और कभी कामिनी ने कमला को ढारस दी, कभी कमला न कामिनी को। कामिनी ने कई बार खत का जवाब लिखना चाहा, मगर सतर दो सतर लिखकर फाड डाला। मर्जी के माफिक देर तक न लिख सकी। आखिरकार दिल को जरा ढारस देकर मुख्तसर जवाब यों भेजा।—

'मेरे कलेजे से ज्यादा प्यारे जानी,

"शक्ले-उम्मीद तो कब हमको नजर आती है,
सूरतें-यास भी बन-बन के बिगड जाती है।"

'परसो जो तुम्हारा खत आया तो उसने वह काम किया जो साँप काटे हुए के साथ जहरमोहरा करता है। मरते को जिला लिया। आज जो खत आया, उसने वह काम किया जो मृग-तृष्णा रेगिस्तान के प्यासे मुसाफिरों के साथ करती है कि मारे प्यास क जान होठो पर आने के बाद एक दफा देखा—वह सामने दरिया लहरें मार रहा है, दौडे तो जिसको दरिया का पानी समझे थे वह रेगिस्तान नजर आया। कुछ और लिखती मगर दिल इस कदर उमडा आता है कि कुछ लिख नही सकती। परमेश्वर वह दिन जल्द दिखाये कि हममें तुममें यकजाई हो।

'तार भेजा करो। तुम्हारी कमला भी कल से आई है। कल से इस वक्त तक खुशियाँ मनाई थी, आज यह खत आया। खैर, जो परमेश्वर की मर्जी। वह कौन दिन होगा कि जिस तरह तुमने पीठ दिखाई थी, उसी तरह मुँह दिखाओ!

तुम्हारी प्यारी
कामिनी।'

छः रोज के बाद तार आया कि मैं आज जहाज पर सवार होता हूँ। सब खैरियत है। कल और तार भेजूगा। उनके घर में तो सबको मालूम हो गया था कि रन के मैदान में जाते हैं, अब रवानगी का तार फिर आ गया। दूसरे रोज तार आया कि 'हम पेरम के टापू में दाखिल हुए। यहाँ की कौमो के लोगो ने एक बृटिश जहाज पर गोलियाँ चलाई थी। उन्ही से जग है। पूरा-

पूरा हाल फिर लिखूँगा।' इसके बाद एक और तार आया—'तुम्हारे दो तार पहुँचे। खैरियत मालूम होने से तसल्ली हुई। आज दुश्मन से और हमसे जग हुई। उनके सत्तर जख्मी हुए हमारे बावन। उनके सात मरे, हमारे पाँच। उनकी तादाद ज्यादा है।' इस तार के आने से जरा फिक्र पैदा हुई। घर भर को चिन्ता हुई। इन्द्र सिंह बुलवाए गये। कामिनी की सास ने कहा—बेटा, तुम्हारी बहन ने तो क्या जाने क्या पढा, तुम तो पढो! इन्द्र बिक्रम ने पढ कर सुनाया और देर तक बातें होती रही, और यह खबर दूर-दूर मशहूर हुई। गुमान सिंह और बलभद्र सिंह ने भी सुनी। पहले इन्द्र बिक्रम सिंह के पास गये। सुना था कि बलजोर सिंह के मकान पर गये हैं, यहाँ आये। अन्दर से बुलवाया, तार पढा। सबकी ही राय हुई कि मुकाबला बेढब है—सत्तर और बावन इधर-उधर के जख्मी और सात और पाँच इधर-उधर के मरे हुओ की तादाद। मालूम होता है, वह भी लडनेवाले हैं। इन्द्र बिक्रम सिंह ने बहन और उसकी सास और भावज को तसल्ली दी, कि घबराने की कौन बात है, जग में तो यह हुआ ही करता है। धन्नो ठकुराइन और कमला और रनबीर सिंह की माँ और कई औरतें देर तक यही बातें किया की, और खाना खाकर अपनी-अपनी जगह पर सोईं।

सुबह को उठकर इन्द्र बिक्रम सिंह दौडे आये और कहा—मैंने सपने में देखा कि रनबीर सिंह बडी शान से फौजी वर्दी पहने तमगे लगाये, सरपट घोडा दौडाए चले जाते हैं। मुझे देखकर घोडे को रोक लिया। मैंने कहा—अरे यार, ये तमगे इतनी जल्दी कहाँ से मिल गये! हँसकर कहा—हमने चार लडाइयाँ सर की, उसके सिले में मिले हैं।

औरतो के दिल में तो झट ऐसी बातें बैठ जाती है। सबको यकीन आ गया। एक हफ्ते के बाद तार आया कि—हम खैरियत से हैं। जग के मैदान में हैं, और दुश्मन भागते जाते हैं। घर में खुशी के शादियाने बजने लगे। इसके बाद फिर तार आया और इन्द्र बिक्रम सिंह के नाम फिर खत आया, बडा लम्बा-चौडा खत, जिसमें और बहुत सी बातो के अलावा यह भी लिखा था कि हमसे और एक कप्तान से रोज बहस होती है। यह हमारा दिली दोस्त हो गया है। आज की बातचीत हुई, लिखता हूँ। बलभद्र सिंह और अपनी बहन को यह खत दिखा दना।

कप्तान—यूरोपियन के मुकाबले में दरअस्ल कोई हकीकत हिन्दुस्तानी की नहीं है।

रनबीर—यह आप क्या कहते है, और किस दलील पर?

कप्तान—हमारे गोरो और अपने तिलगो का मुकाबला कीजिए।

रनबीर—जी, तो इस भरोसे भी न रहिएगा। एक तिलगा दो गोरो को लडा दे!

कप्तान—(हँसकर) बजा!

रनबीर—हिन्दी बड़े सूरमा होते हैं। सिखों को देखिये। तमाम दुनिया में किसी कौम की फौज से दबने नहीं रहेंगे। गोरखा पल्टन से बेहतर पल्टन हो ही नहीं सकती। हम छत्री लोग तलवार के मुँह मरना ऐसा समझते हैं जैसे मुर्दा जी उठा। हिन्दी ऐसे गये-गुजरे नहीं है कि मुर्दे से बत्तर समझे जायें। बुन्देलखंडियें क्या किसी कौम से कम हैं। बैसवाड़े के ब्रह्मनों का एक दुनिया में नाम है।

कप्तान—हम यह नहीं कहते कि हिन्दी कमजोर या बोदे होते हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि वक्त पर जो फुर्ती हमारा गोरा जंग के मैदान में दिखाएगा वह हिन्दी सिपाही नहीं दिखा सकता। सिक्खों के हम कायल हैं। गोरखा पल्टन बेशक तारीफ के काबिल है। राजपूतों की बहादुरी तो मसल ही बन गई है। मगर हम, फिर, हम ही हैं।

रनबीर—कल वह बुड्ढा क्या कहता था?

कप्तान—हमने सुना नहीं।

रनबीर—कहता था कि इस टापू को आज तक किसी ने फतह नहीं किया। सिर्फ एक दफा यह टापू क़ब्जे में आया था जो गोरखा और छत्रियों ने फतह किया था। इस टापू के बाशिन्दे गुलाम रहने के आदी नहीं थे। पहले-पहल उनको बहुत खला। टोने-टोटके को माननेवाले लोग हैं—छत्रियों और गोरखों को देवता समझने लगे। कहता था कि सात दिन तक लाखों आदमियों ने मुकाबला किया, और इधर सिर्फ दो जहाज एक पर तीन सौ राजपूत, एक पर ढाई सौ गोरखा। मगर ऐसा मुकाबला किया कि बैरी के दाँत खट्टे हो गये। टापू के बाशिन्दे जान पर खेल-खेल गये, मगर छत्रियों और गोरखाली पल्टन का लोहा मान मान गये।

कप्तान—चीनवालों की लड़ाई में अंग्रेजों ने क्या किया?

रनबीर—बड़ी बहादुरी की, इसमें कोई शक नहीं।

कप्तान—योरप की कुल फौजें बहादुर हैं।

रनबीर—हमारे देखने में तो मान्टीनीग्रो से बढ़के कोई योरप की क़ौम जरी नहीं है।

कप्तान—जरी तो अफ़ग़ान भी हैं मगर हूश, उजड्ड। और उनकी हरकतें गोली मारने के काबिल। रूस ने हजारहा तुर्की कैदी बनाए, मगर सबको छोड़ दिया। उसमान पाशा ने जो चिट्ठी कैदखाने से लिखी थी वह पढ़ने के लायक है। लिखा था कि घर में मुझे कभी ऐसा आराम नहीं मिला, जैसा इस कैद खाने में है। और एशियावालों की कारवाई को देखा कि हमारे एक कप्तान को काबुलियों ने कैद किया और जब भागने लगे तो उस बेचारे को कत्ल कर डाला यह उजडपना और मूजीपन है या नहीं।

इसके छै रोज बाद खत आया कि 'अब फिर दुश्मन ने पहले से भी ज्यादा मुखालफत पर कमर बाँधी है और उनकी तादाद भी ज़्यादा होती जाती है। यह ख़त भी अपनी बहन को जरूर दिखा देना। उनके नाम एक कच्चा चिट्ठा अलग भेजूँगा।' इन्द्र विक्रम सिंह ने बहन को यह खत भी दे दिया। इसके पढते ही रग फक हो गया। रात को नीद न आई।

कामिनी ने लाख-लाख जतन किये कि जरा आँख लग जाय, थोडी देर नीद आये, मगर पलक तक न झपकी, नीद तो रही अलग। बराबर करवटें बदला की। कभी इस करवट कभी उस करवट सोई। नीद का नाम नही। और नीद आये क्योकर, दिल तो ठिकाने ही नही। मोहब्बत बुरी चीज होती है, एक दम चैन नही। दिल उमडा आता था।

तुलसा बारिन चुपके चुपके यह हाल देख रही थी। समझ गई कि इस तार और इस खत ने यह गुल खिलाया है। इस बेकरारी और बेचैनी का यही कारण है। इतने में कामिनी ने जल्द-जल्द करवटें बदली और आहिस्ता आहिस्ता कराहने लगी।

तुलसा से अब न रह गया। बचपन से पाला-पोसा था, और उसके माँ-बाप के नमक से घर भर पला था। सारे कुनबे की परवरिश होती थी। माँ की-सी ममता की। यह भी कुलबुला के उठ बैठी। कामिनी समझती थी कि रात ज्यादा भीगी है, पिछला पहर करीब है, तुलसा सो गई होगी। मगर उसके उठने-बैठने से दिल को जरा ढारस हुई, कि कोई बात करनेवाला तो है।

तुलसा बारन ने समझाया कि बेटा नीद का ध्यान करो। दिल का ढारस दो, सँभालो। दो घूंट पानी पी लो, आँख लग जाय। अब पिछला पहर है, कोयल बारम्बार कूक रही है। कामिनी ने ठडी साँस भरके कहा—बुआ, कोयल ही के कूकने से तो कलेजे को कोई और भी मसोसे लेता है। रह रह के हूक उठती है। इसी ने तो और भी बेचैन कर दिया। और नीद ही मुई आ जाती तो यह सारा रोना काहे का था। दिल को बहुतेरा ढारस देती हूँ, मगर जब दिल भी माने। और मैंने इसीलिये मिन्नत और चिरौरी कर-कर के कहा था कि मुझे भी साथ लेते चलो। हाय, बुआ, मेरे दिल का हाल मेरा परमेश्वर ही जानता है। . मुझे पूरा-पूरा यकीन है कि अगर वह मेरे दिल के सच्चे हाल से वाकिफ़ हो जायें तो सीधे चले आयें, इस तरह मुझे कभी न तड़पायें।'

तुलसा ने मुँह धुलाया, और आधा गिलास ठडे पानी का पिलाकर कहा—बेटा, नई-नई बात है। इससे यह सारी बेचैनी है। नही तो किसका दूल्हा दिन रात उम्र भर पाँव से पाँव बाँधे रहता है। हमारे ही पडोस में एक पावँनी रहती है। उसके दो-दो लड़के—दोनो रिसाले में नौकर है, एक कप्तू

में है, एक मऊ की छावनी में। बडा लडका तीन बरस के बाद आया, छुट्टी लेके, यहाँ दो महीने रहके चला गया। तुम्हारी नई-नई बात हुई है। इससे तुमको खलता है, और खला ही चाहे। उन दोनो की दुल्हन घर में बैठी हैं। क्या करें बेचारी, सिपाही की जोरुआ, बिछडे हुए दूल्हा का कब तक दुख करें, इन दोनो को दो-दो बरस, डेढ डेढ बरस अकेले रहने की आदत पड गई है। तुम घबराओ न बेटा। देखो, तार आया, चिट्ठी भी आई। सब हाल-अहवाल आया करेगा। तुम्हारे फूफा कितने दिन लडाई में रहे। काबुल गये और समुन्दर पार गये और कलकत्ते गये, और यहाँ-वहाँ गये, यहाँ-वहाँ रहे। तीस-और छै, बरस पल्टन ही में नौकरी की। किन किन चढाइयो पर गये, और परमेसर को बचाना था गोलियाँ फूलों की बरखा हो गईं। जब उसकी दया होती है, तो साँप के मुँह में उँगली डालो तो साँप न काटे, और चार दिन के बिछडो की कौन बात है। बहुत से गये, बहुत से चले आये। अब उधर ध्यान न करो। मोने का ध्यान करो।

कामिनी ने फिर एक ठडी साँस भरी और कहा—तुलसा बुआ, हँसिया से कहो ज़री पानी और पिला दे। तुलसिया की नेवासी हँसिया ने बर्फ का ठडा-ठडा पानी पिलाया। कामिनी पलगडी पर लेटी, हँसियाँ ने हौले-हौले चप्पी की। दिल को ज़रा-ज़रा सकून हुआ। आँख लग गई।

जब कामिनी ने इतनी परेशानी और हैरानी के बाद आराम किया तो हँसिया थोडी देर के बाद पलँगडी से उतरी और हलकी दुलाई ओढा दी, और अपनी नानी से कहा—यह दुल्हन को आज क्या हुआ! सम्बन्धू सब के बाहर जाते हैं। इन्होंने कोई सपना देखा है। ये इत्ती व्याकुल काहे को हैं? बात करते फूट फूटके रोना आता था। मै तो डर गई कि दैया राम! यह क्या हो रहा है! लडाई पर गये, गये हज्जारो जाते हैं। और इत्ते कौन ढेर दिन हो गये। ए अभी आज ही तो तार आया और अभी से इस दुखिया की यह गत हो गई।

तुलसा न कहा—लडकी, जुम्मा जुम्मा अभी आठ दिन हुए पैदा हुए को, तुम य बात क्या जानो! दिल का मिल जाना उपद्रव ढाता है। और फिर अभी छै महीने तो नही हुए जिस दिन से भँवरी फेरी, उस दिन से अलग नही हुए। हस की-सी जोड़ी जहाँ ये वहाँ वो। यो तो दुल्हा-दुल्हन को आपस में प्यार होता ही रहता है। इनका-सा प्रेम देखा न सुना। जहाँ एक का पसीना गिरे, वहाँ दूसरा लहू गिरान को तैयार। और पहला-पहला वास्ता, अभी इनको बहुत खलेगा। यो जो कोई कही जाय, तो आदमी को बहुत न खले, और यह तो समुन्दर पार जाना है। सुना, वहाँ घोडमुँहे आदमी होते है। दरिया, समुन्दर, झील के अन्दर रहते है। कही समुन्दर का ओर न छोर। याह तो मिलती

नहीं। कही पहाड से अगन-बोट टकराया, तो माझियो ने हुल्लड़ मचाया कि—भैया, कश्ती डूबती है: जिसको जो कुछ दान-पुन करना हो, करो। गगा मैया रूठी हुई, बडे क्रोध में है। और मुसाफिरो ने अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, पैसा, जिसकी जो समाई हुई, वह उसने समुन्दर में फेंक दिया। जो कोई पापी अगन बोट में हुआ, तो डूब गया, नहीं तो पुन्न आड़े आया, बड़े-बूढो का दिया-लिया काम आया!

हँसिया ने जो ये डरावनी बातें सुनीं, तो बदन के रोंगटे खडे हो गये, थरथर कांपने लगी। कहा—दैया! घोडे के मुंह के आदमी! ऐ वो मुए कैसे होते होंगे! मैं देखूँ तो मर ही जाऊँ! नानी, यह तो भैया ने अच्छा न किया। कल की दुल्हन दुखिया को घर में छोड़के समुन्दर के पार चले गये। मैं भी कहूँ, ये इतना काहे को कुढती हैं। यह कहाँ जानती थी कि यह बिजोग है! अब तो लिए, मेरे हाथो के भी तोते उड गये। दैया रे दैया! कहाँ सागर, कहाँ बाढ। कहाँ बारह बरस की दुल्हन दुखिया कुढ रही है! बडे कठिन से नीद आई! जैसे जल को मछली ढूँढती है, वैसे तडप रही थी। अब जो तुमने समझाया, तो मेरी समझ में आया। कोई जतन ऐसा हो कि जल्दी लौट आवें।

इतने में कामिनी ने सोते-सोते कहा—भैया, भैया! देखो, देखो, देखो! बस, 'देखो' के लफ्ज तक निकला था, कि तुलसा ने कहा—ए बेटा, अब सो रहो! कामिनी करवट लेकर फिर सो रही! उसको नीद में बर्राते हुए हँसिया पलँगड़ी पर गई और आहिस्ता-आहिस्ता बदन दबाने लगी। जब कामिनी अच्छी तरह सो गई, तो पलग से उतरकर हँसिया ने नानी से कहा—दुल्हन कुछ सपना देख रही है। उसने कहा—जाके नीचे से किसी को बुला ले। इस तरह न चिल्लाना, कि ये जाग उठें। आसानी से जगा के बुला ला। हँसिया जाके एक महरी को बुला लाई। तुलसा ने कहा—बहनी, तुम और हँसिया तनिक जागत रहो। जब से वह चिट्ठी-चपाती आई है, दुलहिन बहुत व्याकुल हैं। नीद नही आती थी, तत्तो-थम्बो करके सुलाया, बदन दावा, पानी बरफ का पिलाया। जब जाके नीद आई। अब भी सपने में बर्रा रही थी।

हँसिया और महरी जागती रहीं। तुलसा रात भर की जागी थी, सो रही। पौ फटने के वक्त हँसिया की आँख लग गई। महरी खूँटा बनी हुई बैठी रही। इतने में कामिनी ने करवट बदली, और लेटे ही लेटे अँगडाई ली, और कटोरा-सी आँखें खोल दीं नारायन का नाम लेकर उठ बैठी। वैसे ही तुलसा भी कुल-बुलाके उठी और हँसिया को जगाया। मगर अल्हड जवानी, बारह-बारह तेरह-तेरह बरस की उम्र, रात की जगी हुई, करवट बदलके सो रही। तुलसा ने फिर जगाया। महरी बोली—सोने दो बहन, रात भर की जागी हैं; अभी अभी तो आँख लगी है। वह मसल नही है—लड़कपन खेल में खोया, जवानी नीद भर सोया, बुढ़ापा देखकर रोया: समझ नादान परदेसी!

कामिनी ने आहिस्ता-आहिस्ता कहना शुरू किया—हे मेरे ठाकुरजी-महराज, मैं तुम्हारे कँवल-रूपी चरनो को, जो फूलो से भी अधिक कोमल हैं, हिरदै में रखती हूँ। तुम्हारा चरन छोड़कर दूसरा कोई ध्यान करने योग्य नही है। जो कोई इन चरनों को याद व ध्यान व सुमिरन करता है, वह भागवान होकर किसी देवता, दैत्य, मनुप, पशु-पछी आदिक किसी को भी नही रहता। तुम्हारे चरनों के परताप से मन मेरा क्रोध मोह लोभ में, जो अधर्म की जड़ हैं, नही फँसता। गंगा, जमना, नर्वदा और सुरसुती सब तीरथ तुम्हारे चरनो में हैं। वह चरन तुम्हारा सब दुख अपने भक्तो का दूर कर देता है। जिस समैं तुम्हारे चरनो का ध्यान करती हूँ, उस समैं मनोरथ मेरे पूरन होकर कोई इच्छा बाकी नही रहती। मैं आपको उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाला सब जगत का जानकर दण्डवत करती हूँ।

यह कहकर अपने हाथ देखे और हाथो को चूमकर नाज़ो-अदा के साथ पलँगडी से उठी। महरियाँ पीतल के कलसों में कुएँ से पानी भर लाईं। कामिनी ने मुँह हाथ धोकर स्नान किये, और कहती गई : हर गंगे! हर गंगे! भागी-रथी पाप काटेंगी! गोमती! जो राम राम कहेगा, सदा सुखी रहेगा। नहा-धोकर साफ-सुथरे कपड़े पहने, चादर ओढी। महरियो ने पूजा का सामान लिया —बेल-पत्र, फूल, चन्दन, अक्षत, रतन-दीप, नवेद, जल। महरियो को लेकर मंदिर गई। महादेव को फल चढाया, टीका लगाया। फूल, अक्षत, बेल-पत्र, दूध, भग, धतूरा चढाया। आरती की। इतने में मन्दिर में आरती होने लगी, घटा और शख बजने लगा। कामिनी ने प्रार्थना की, कि—हे गौरीनाथ, मेरा सुहाग तुम बनाए रखो, सोने का छत्र चढाऊँगी। लड़ाई जीत के अच्छी तरह घर आयें, जिस तरह पीठ दिखाई है, उसी तरह मुंह दिखाएँ। कामिनी ने तीन बार परिक्रमा की, और घर की राह ली।

और खूबसूरत तो थी ही—और कैसी खूबसूरत? लाखो में एक। आँखों में वह मोहिनी, कि जिसने देखा वह आप ही आप कह उठा कि—वाह, क्या नारायन की महिमा है! कैसी-कैसी मिट्टी की मूरतें बनाई हैं। खैर, मन्दिर हो चाहे मस्जिद, भट्टी चाहे जुआर-खाना, चाहे साधु-सत की सगत : अच्छे-बुरे सब कही होते हैं। इस मन्दिर में भी एक कमसिन आदमी, जिसका सरनलाल नाम था, एक अपने ही शोहदे को साथ लेकर आया था। कामिनी को जवान और खूबसूरत देखकर पीछे हो लिया; और मौका पाकर आवाज़ कसा : आज यहाँ सन्नाटा था, कोई औरत घूरने को न मिली। मगर अब घूरा-धारी का मौका है। चलो तडके-तडके बोहनी हो गई। बूढी महरी तुलसा सुनते ही आग हो गई। कहा—पूत, किसको घूरते हो? मैं दादी के बराबर, यह (हँसिया की तरफ दिखाकर) तुम्हारी लड़की, यह (कामिनी की जानिब इशारा करके) तुम्हारी छोटी बहन के बराबर। इनमें किसको घूरता है?

सरनलाल वैसे गुर्गा था, मगर बहुत शर्माया। और जैसा शोहदों का कायदा है, झेंप यों मिटाई कि 'अम्बे! अम्बे! अम्बे! जय जगदम्बे! कहता हुआ चला गया; जिसमें लोग समझें कि बड़ा पूजाधारी है: यह न कोई समझे कि शोहदा है, मन्दिर में औरतों को छेड़ता है, उलटे लेने के देने पड़ें; मन्दिर से ज़लील होके निकले जायें। क्योंकि मन्दिरवाले और मन्दिर के जानेवाले लुच्चापन जायज नहीं रखते, और औरतों को आम तौर से माँ-बहन समझते हैं। और यों तो नेक अन्दर बद। इससे दुनिया खाली नहीं।

कामिनी को इस बदमाश का आवाज कसना बड़ा बुरा मालूम हुआ। तुलसा ने कहा—यह मुआ हत्यारा एक न एक दिन निकाला जायगा, दाढ़ीजार!

कामिनी बोली—बुआ, यह ऐसा पापी है कि मन्दिर तक में खोट की बातें नहीं भूलता। क्या जाने इसके कोई माँ-बहन है कि नहीं!

तुलसा ने कहा—दैव जाने! राँड का साँड बना घूमता है मुआ।

तुलसा और कामिनी दोनों को बुरा मालूम हुआ; मगर हँसिया के दिल में इस नौजवान गोरे चिट्टे लौंडे की एक-एक अदा खुब गई। सोचने लगी कि शक्ल-सूरत अच्छी है, हाथ-पाँव खूबसूरत, नख-सिक से दुरुस्त; क्या बुरा है। क्या प्यार का तीर कलेजे के पार हो गया।

घर में आकर सास को पयलागन की। उसने असीस दी; ठंडी सुहागन रहो, सुखी रहो! सास से जुदा होकर कोठे पर गई और तुलसा से कहा—बुआ, रात हमने सपना देखा कि जैसे एक पट्-पट् मैदान है.... उसके आगे और कुछ कहने को थी कि तुलसा ने कहा—दुलहिन, दिन को सपने का हाल कहने से मुसाफिर राह भटक जाते हैं। कामिनी खामोश हो रही।

थोड़ी देर में उसकी ननद, रनबीर सिंह के चचा की लड़की, कमला आई। यह कामिनी की हमजोली थी। आते ही पहले चची से मिली, पूछा—भैया की कोई चिट्ठी आई? सब हाल सुनकर पूछा—छोटी भौजी कहाँ है?

धन्नो ने कहा—कोठे पर।

कमला कोठे पर गई। ननद-भावज मिली।

कमला—भौजी कुछ उदास-सी दिखती हो। बड़ी दुबली हो गई हो। तुलसा बुआ, क्या अपनी दुल्हन का खाय का नहीं देत हो?

तुलसा—बेटा तुम समझाओ। घुलके काँटा हुइ गयी। बाहर इधर-उधर सबके मर्द जाते हैं। क्या एक अकेले यही गये?

कमला—भौजी यह कौन बात है? तो छत्री के घर जनम क्यों लिया? सर से खेलो, मुँह से बोलो! छत्री वह जिसकी महतारी पूत से कहे कि —रन में बैरी को पीठ न दिखाना, बाप-दादा का नाम न डुबोना। जो तुम उदास रहोगी, भौजी, तो हम चले जायँगे।

कामिनी—रात सपना देखा कि जैसे रन-भूमि में तुम्हारे भाई सुरग घोड पर सवार—और क्या जाने के सौ घोडे उसी रग के और हैं, और सब पर अफसर और सवार और बहुत से अग्रेज और गोरे, और एक दफा ही बिगुल बजा और गोले चलने लगे—दन्-दन्, दन् दन्! और क्या देखती हूँ कि एक सवार भाले में एक सर लटकाए हुए घोडा दौडाता चला आता है। यह कटा हुआ भयानक सर देखकर मै डर गई, तो उन्होने अपना घोडा आगे बढाकर मुझसे कहा—तुम इस युद्ध में कहाँ पहुँची। यहाँ यमदूत की अमलदारी है। फरिश्तो के पर जलते हैं। एक नन्ही-सी सरसों-बराबर गोली जान ले लेती है। तुम परमेश्वर की राह पर मुझे छोड दो, और इस गोलो और तोपो की आग से बचो। मैंने तुमको याद किया और जिठानी से कुछ कहा जो अच्छी तरह याद नही है कि बस आँख खुल गई और कलेजा बल्लियो उछलने लगा, और सोचा कि इस प्रेम को देखो कि सपने में भी मुझे न भूले। अब मुझे उनका यमदूत कहना याद आता है तो आठ-आठ आँसू रोती हूँ, दिल काबू से बाहर हो जाता है।

कमला—सपने का कौन ठिकाना। कभी कुछ, कभी कुछ। मगर दिल की बडी कच्ची हो। तनिक ढारस रखो।

कामिनी—(मुस्करा कर) एक दिन हमारे मुंह से भी 'तनिक' का लफ्ज निकल गया, तो बहुत हँसे। कहा, बाप ने इतना पढाया लिखाया और गँवारी बोली अभी तक न गई। यह 'तनिक' कहाँ से सीखा। मैना तोते को पढा-पढा के कहाँ तक आदमी बनाओगे।

कमला—मेरी जबान भी भैया ने टोक-टोक के दुरुस्त की। इन परजा औरतो से बोलने में फिर ध्यान नही रहता।

कामिनी—तुम्हारे आने से जरी दो घडी दिल बहला। अब मैं तीन चार दिन न जाने दूंगी। यही रहो, हाँ, रात को जो ननदोई राजा न याद आयें। इसका हमारे पास कोई इलाज नही है।

कमला—मैं तो पूछके आई हूँ। सास से पूछ लिया है। तीन-चार दिन छोड कहो अठवारे भर रहूँ। बे-पूछे पक्की-पोढी किये थोडी आई हूँ। तुम इतना कुढो नही। भौजी यह तो होता ही आया है। मर्द लोग बाहर जाते ही आते रहते हैं। लडाई पर जाते ही हैं।

कामिनी—जो कल भी खैर सल्ला का खत आ गया, तो अम्मा से पूछके दोपहर को बाग में खुशियाँ मनाएँगे।

कमला—वह घटा बजा। हमारा दिल ही गवाही देता है कि चिट्ठी आएगी। न आये तो जभी कहना। लो वह कौआ बोला। जो चिट्ठी आ जाय कि वह आते हैं, तो सोने से तेरी चोच मढा दूँ, दूध भात खिलाऊँ-भर भर थारी। उड जा, न सता!

इधर ये बातें हो रही थी कि उधर दोपहर की तोप दगी—धनन्ना। दोनो एकदम से बोल उठी जय काली की! तुलसा बोली—शगुन होता जाता है। घटा बजा, कागा बोला; तोप चली। कल नौ बजे के इधर ही आते हैं।

कमला—तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर, बुआ।

कामिनी—कही आयें तो जान में जान आये।

कमला—फिर हँसी-खुशी जरूर बाग चलें। बढ़ी सुन्दर पकवान पके। हँसी-दिल्लगी रहे, शाम को लौट आयें बस।

इतने में मैके से एक ब्राह्मनी आई और उसने पकवान पकाना शुरू किया।

ब्रह्मनी—सब अच्छी तरह हैं। दुलहिन, मुंह उतरा-सा है।

कमला—भैया जो बाहर गये तो खाना-पीना छोड दिया।

ब्रह्मनी—वाह, कोउ बाहर जावत नही, एक यही गये? परमेशर के बडे-बडे हाथ है, दुलहिन। हाँ, लडाई हो—ऊ मसल नाही कहत है, कि काउ गोला बाजत हैं। तौन फुरफुर गोला ही हैं। और जाय का को नाही जावत हैं। जेंह की जहाँ बदी होय। तुम फिकर न करौ, दुलहिन। सुन्दर भोजन करौ, अनन्द से रहौ। मलका विक्टोरिया का बडा इकबाल है, कोई का बाल न बाँका होई।

कमला—आज चिट्ठी भी आई, तार भी आया, कि खैरियत है।

ब्रह्मनी—चलो बस, छुट्टी भई।

कामिनी—तुलसा बुआ, हँसिया से कहो, देखे, खाने में क्या कसर है। आज बडी देर हो गई। रसोइया आया नही, न कहला भेजा, कि पक्का कर लेते।

तुलसा—दुलहन हँसिया नही है। मौसी के घर आज गई है।

कामिनी—तुम देखो जाके, यह हमसे बेपूछे क्यो चली गई। आने तो दो।

कमला—यह बुरी बात है। पूछके चला जाय। और जो कोई काम उससे होता? यह भी कोई बात है भला?

कामिनी—आने दो, हम समझ लेंगे। यह आज नई बात हुई। कभी बेपूछे नहीं जाती थी। आज कही नानी से किसी बात पर लडके तो नही गई।

तुलसा—नही।

कमला—नीचे होगी। जरा आवाज दे ले।

तुलसा—ए महरी, हँसिया नीचे है?

महरी—नाही।

कामिनी—देखो, बाग में होगी। जल्द जाओ।

बारन—सरकार, वहाँ भी नही है।

कामिनी—तुलसा, क्या तुमसे पूछके गई है?

तुलसा—नही। कल से गई है। जानती हूँ, मौसी के घर गई होगी।

कमला—चिट्ठी आ जाय तो जान में जान आए।

कामिनी—आती ही होगी। तुम इस वक़्त अच्छी आ गईं। मैं जो आज मन्दिर गई तो वहाँ एक पापी ने आवाज़ा कसा। ऐसा बुरा मालूम हुआ कि जी चाहे, आँखों को तलवे के तले मल डालूँ। जो कहीं घर के मर्द सुन लें, तो जीता न छोड़ें। मुआ पापी!

कमला—था कौन?

कामिनी—सुनती हूँ, कोई सरन है।

तुलसा—मैंने भी मुंह पकड़के काट ही डाला।

कामिनी—तुलसा ने कहा,—पूत किसको घूरते हो, अम्मा के बराबर को?

कमला—क्या घूरता था?

कामिनी—ए पास आके मुआ कहने लगा: अब इस वक़्त बोहनी हुई। एक सूरत अब कहीं घूरने को मिली। बस चलता तो ज़हर दे देती।

कमला—पापी, कमबख़्त।

कामिनी—ऐसों को ज़रूर सज़ा होनी चाहिए, जिसमें फिर जुरंत न हो कि किसी की बहू-बेटी पर आवाज़ा कसें। जो कहीं अपने छोटे देवर से कह दूँ तो मार ही डाले। मगर हमारा दिल तो साफ है। या हम जानते हैं या परमेशर, औरों से कोई मतलब नहीं। मगर इस मुए पापी को जो कोई पीट दे तो मैं खुश हूँ।

कमला—उस पर परमात्मा की मार न पड़े तो सही।

तुलसा—जाने दो बेटा। जो जैसा करेगा वह वैसा पाएगा।

महरी—यह है कौन दाढ़ीजार?

तुलसा—वह मुआ सरन; उसकी टिकटिकी निकले!

कामिनी—मगर तुलसा बुआ ने खूब कच्चा किया! बस फिर चुपके से भाग ही गया। हँसिया कहती थी कि छिपा हुआ था। मैंने तो देखा भी नहीं कि मुआ कौन था, कौन नहीं। अब नाम सुना है। इससे बदला लेना चाहिए। ऐसे लोगों पर खुदा की मार!

कमला—इसी से तो मर्द लोग हम लोगों को किसी जगह जाने नहीं देते, कि कहीं कोई आवाज़ कसे! वह सब जानते हैं ना।

कामिनी—जो नेक हैं, उनको किसी का डर नहीं है। अगर कोई घूरेगा तो उसकी आँख परमेशर फोडेगा। हमारा क्या बिगडेगा। और यों जो औरतें बद हैं, उनको चाहे सात पर्दों में भी रखो तो क्या होता है। जिनके यहाँ पर्दे का बडा खयाल है, उनके यहाँ क्या होता है! पर्दा दिल का चाहिए। मगर हाँ, यह भी नहीं कि रात को मन्दिरों में जाय या फिर यह कि डोली बहाने से मँगाई और खाला जान या फूफी-अम्मा का बहाना करके पहुँची क्या जाने कहाँ। जैनब की माँ हमसे सब कह चुकी है। नेक अन्दर बद, सब जगह पाओगे।

इतने में इन्द्रविक्रम सिंह बहुत खुश-खुश आये और कहा, 'लो मुबारक! रनबीर सिंह का मैदाने-जंग से तार आया कि मुझे साहब कमाण्डर-इन-चीफ ने विक्टोरिया क्रास का तमगा दिया। अब मेरे नाम के साथ 'वी० सी०' लिखा जायगा। एक लडाई में मैंने अपने कर्नल की जान बचाई और दुश्मन को एक ऐसे मोर्चे से हटा दिया, जिससे वह हमारी कुल फौज को पस्पा कर सकते थे। घर भर में खुशी के शादियाने बजने लगे। गजराज सिंह और उनका बडा लडका और इन्द्रविक्रम सिंह और बलजोर सिंह और बलभद्र सिंह और गुमान सिंह और हरनाम सिंह और अर्जुन सिंह ने फर्माइश की कि भई, मिठाई मँगाओ!

बलभद्र सिंह—जरूर मँगवाइए।

मान सिंह—हमारे चपरासी को भेजो कि काने की बर्फी और दीना के दही बडे लाए।

बलभद्र—इनका नाम भी लिख लेना! बर्फी और दही बडे का ताल-मेल कितना अच्छा है।

खूँखार सिंह—वाह कैसे छत्री हो, भई! जरा-सी खबर सुनी, चलिए मिठाई की फर्माइशें होने लगी। मिठाई कैसी?

गुमान सिंह—विक्टोरिया क्रास मिलने की खुशी हुई।

खूँखार—कोई खुशी नही होती। न खुशी, न रंज होगा। क्या खाजासरा के ही लडका पैदा हुआ है? छत्री रनसूर होते ही है। कर्नल की जान बचाई तो कौन बडा कमाल किया!

गुमान सिंह—(मुस्कराकर) इनमें उजडपन की बू नही जाती!

बलभद्र—अजी, तो अब मिठाई मँगवाइए, उम्दा पचमेल। हम सब खाएँगे, बस, एक आपको (खूँखार सिंह) न मिले!

गुमान—हाँ, बस मेरे दिल की बात कही।

बलभद्र—इनके नजदीक तो खुशी की बात हुई नही। विक्टोरिया क्रास का मिलना न मिलना यकसाँ है। मगर हमारा कलेजा गज भर का हो गया।

खूँखार—अभी जुम्मा-जुम्मा आठ दिन की पैदाइश, तुम क्या जानो! रन-भूमि कभी आँखो देखी है?

गजराज—अरे साहब, तो आप बीच में भाँजी क्यो मारते है? आप न खाइएगा, चलो बस छुट्टी हुई। मालूम है आप बहुत बडे ठाकुर है।

बलभद्र—वाकई, रनबीर ने बडा नाम किया।

गुमान सिंह—ठाकुर रनबीर सिंह, वी० सी०।

इतने में साहब जज की चिट्ठी बलजोर सिंह के नाम आई कि अखबार में अभी-अभी मैंने पढा कि आपके लडके रनबीर सिंह को विक्टोरिया क्रास का खिताब मिला। मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ कि मिस्टर रनबीर सिंह ने ऐसा

नाम, और खान्दान का नाम रोशन किया। गजराज सिंह को मुबारकबाद कह दीजिए।

गुमान—लीजिए, इतना बडा जज, वह मुबारकबाद का खत भेजता है और ठाकुर खूंखार सिंह के नजदीक कोई बात ही नही।

गुमान सिंह—जी हाँ।

खूंखार—अजी, ये जज क्या जानें! सिविलियन लोगो को जग से कौन बहस?

गुमान सिंह—अक्ल तो है अच्छे-बुरे के पहचान की!

खूंखार—बनियो की तरह रुपया वसूल किया कीजिए!

गुमान सिंह—हम बनिए है, यह कहिए! अजी हम मजिस्ट्रेट है, जिस दिन कहो, चालान कर दूँ। सूबेदारी-ऊबेदारी रक्खी रहे। आटे-दाल का भाव मालूम हो जाय!

बलभद्र—मजिस्ट्रेट।

खूंखार—अजी, बनिए है।

गुमान सिंह—(हँसकर)—बनिए हैं! भेज दूँ एक मजकूरी, (कानिस्टिबिल) एक अदना-सा मजकूरी? अगर न गिरफ्तार कर लाए तो हमारा जिम्मा।

खूंखार—भुट्टा-सा सर उडा दूँ मजकूरी वजकूरी का!

बलभद्र—क्यो नही! छत्री हो, हाथी लटेगा, कहाँ तक लटेगा?

गरज यह कि गजराज सिंह ने पाँच रुपये की मिठाई मँगाई, और अन्दर बाहर यहाँ वहाँ सबने खाई। इन्द्रविक्रम सिंह ने कामिनी को तार दे दिया, और जज साहब ने जो खत भेजा था, वह भी दिया। कामिनी से ज्यादा खुशी किसको होनी! कमला को फौरन बुलाया। जैनब की माँ भी खबर सुनकर दौडी आई।

जैनब—बीवियो, मुबारक। शीरीनी खिलवाइए।

कमला—तुमको भी मुबारक!

कामिनी—तुमने कहाँ सुना?

जैनब—पकडिया टोले मिठाई गई थी। मैंके में आपके वहाँ सुना तो मै दौडी आई। शिवरानी बीबी बडी खुश है।

कमला—खुशी की तो बात ही है।

कामिनी—एक खुशखबरी तो सुनी।

जैनब—खुदा अच्छा ही अच्छा करेगा। यो ही रोज अच्छी अच्छी खबरें आया करेंगी।

कमला—कल जुमेरात है। कल, जैनब की माँ, उम्दा खुशबूदार खुटियाँ बनवाके तुलसा बुआ के हाथ शहीद मर्द के ताक पर ले जाना। हमने मन्नत मानी थी।

जैनब—मै सरे-शाम आ जाऊँगी। हार फूल गजरे भी मँगवा रखिएगा।

कामिनी—(मुस्कराकर) क्या समझ है! अपनी-अपनी समझ।

कमला—अच्छा, तुम अपनी समझ रहने दो।

कामिनी ने रनबीर सिंह का तार और जज साहब का खत कई बार पढ़ा।

जैनब—गोली-गोला, अल्लाह ने चाहा, तो फूलों की बरखा मालूम होने लगे!

कमला—परमेशर करे तुम्हारी दुआ कबूल हो!

जैनब—खिताब क्या मिला?

कामिनी—विक्टोरिया क्रास।

जैनब—नहीं, हमने तो कुछ और सुना है।

कामिनी—'वी॰ सी॰'। वो इसके यही माने हैं।

जैनब—यह रिसालदारों को मिलता है?

कामिनी—जो कोई हो, जो कोई बहादुरी का काम करे!

कमला—चाहे कोई हो?

कामिनी—कोई हो।

इस खिताब के मिलने से घर-भर क्या, शहर भर में खुशी के शादियाने बजने लगे। क्योंकि रनबीर सिंह ऐसा सजीला जवान था और सबसे झुकके मिलता था और फौजी वर्दी उस पर ऐसी सजती थी कि जो देखता था उसको प्यार करने लगता था।

० ० ० ० ० ० ०

हँसिया इश्क के तीर से ऐसी घायल हो गई कि एक दम भी सरनलाल के बगैर चैन न आया। मंदिर में जो उससे आँख लड़ी तो तीर कलेजे के पार हो गया। तुलसा, यानी अपनी नानी से पूछा न गुछा। फौरन अपनी गुइयाँ गुलबिया महरी के पास गई, जो उसकी हमजोली और दुख-दर्द की शरीक थी। उसने कहा—आज क्या दुनिया जाती देखी! किधर से सूरज निकला है? यह कहाँ भूल पड़ी। मैं तो समझती थी कि दुल्हन ने अपने घर डाल लिया। वह बोली—ए बहनी, हमसे उनसे तो अब नहीं बनती। जब तक निबाह सकी, निबाहा, अब नहीं बनती। और नानी इस बुढ़ापे में ऐसी चिड़चिड़ी हो गई है कि उठते जूती, बैठते लात। इस घर से मेरा कलेजा पक गया। अब मैंने एक ठिकाने नौकरी ठहराई है। वह जो सरनलाल है, उनकी नौकरी है। टहल तो हमसे होगी नहीं, बर्तन रगड़े न जाएँगे उनके यहाँ। काम बस यह है कि लड़कों को खिलाए और ऊपर का काम करे। तीन रुपया, खाना और कपड़ा।

गुलबिया सरनलाल का नाम सुनकर मुस्कराई। कहा—बहनी! जो सरन के यहाँ दो दिन भी टिक जाओ तो मैं जरीमाना देने को तैयार हूँ। वह बड़ा नटखट लौंडा है। तीन रुपये का महीना और खाना कपड़ा कैसा! तुम्हारी उम्र

की लौडिया को तो वह चाँदी के गहने से गोदनी की तरह लाद दे! उसका एतबार न करना। ले-देके अपना मतलब निकालके सब छीन लेता है। और बदनामी बडी! तूने उसका नाम लिया और मैं खटक गई। मैं ये पापड बेल चुकी हूँ। फुलिया मालन उसकी कुटनी है। उसको भेजके मुझको बुलाया। घर में औरतो में गई, काम करने लगी। मुझसे एक दिन कहा—महरी हमारी कोठरी इस तरह से बनाई है कि बाहर से रास्ता है। मैं क्या जानूँ कि उसके दिल में पाप है। मै गगरा लेके गई तो—कोठरी निगोडी बडी लम्बी-सी—चट कहा: महरी बुआ, उधर पर जाके गगरा रखना! 'बुआ' सुनकर मैं चौकन्नी हुई कि मैं छोटी उम्र की औरत, मुझे बुआ क्यो कहा। और जब मैंने देखा कि पीछे-पीछे चला आता है, तो और भी खटकी। अब मैं डरी कि यह मर्द, मैं औरत, अकेली, जनाना मकान, दूर। राम, मेरी लाज रख लेना! जैसे ही गगरा चौकी पर रक्खा, ए बस मेरी बैयाँ पकड ली। मैंने हाथ झटकके कहा—ए वाह, लाला, चलो हटो, बस! लगा चिरौरी करन, हाथ जोडने। होते-होते पाँव पर गिर पडा। कहने लगा, मेरी कसम है, इतना दूँगा कि तुमको रखन की जगह न मिलेगी। और यहाँ सिवा हमारे और तुम्हारे और कौन देखता है! मैने कहा—लाला, ऊपरवाला तो देखता है! ले, बस जाने दो। नही घर में औरतें कहेंगी कि क्या करने लगी। और तुमको कमी काहे की है, लाला? घर की क्या बुरी हैं? सैकडो से बढी हुई और कितनी बिचारी नेक। हम परज लोगा पर क्यों रीझते हो? न शकल, न सूरत, न लत्ता-कपडा गत का। इतने में किसी ने पुकारा तो जल्दी से बाहर चला गया। और मैं भी भागी। जान छोडके भाग आई। जो मर्द आया था उसने सरन लाला को और मुझको आगे-पीछे निकलते देखा तो मुस्कराया। मैं तो कट गई, कि वह क्या जाने क्या समझा होगा। अब घर में जो घुसी तो सरन की औरत बडी तेज हुई। गरम होके कहा—क्यो री, अभी तक वहाँ क्या कर रही थी? लाला के पाँव दबाती थी कि चप्पी करती थी? मै और भी मर गई, कि कर तो डर, न कर तो राम के कोप से डर। चार आने पैसे मुझे दिये कि जाके सेर भर मटर की फलियाँ ले आ। उन दिनों में नई-नई चली थी। मेरे आँसू भर आये। मैंने कहा—बहू, मैं नौकरी न करूँगी। लाला की नीयत अच्छी नही है। मैं बदनामी नहीं चाहती। मुझे वहाँ घेर लिया था। राम ने मेरी लाज रखी। लाला की भावज भी सुनती थी, वह मुस्कराई। कहा, इसको क्या हो गया है? बारह बरस की जोरू, नुकीली सुन्दर घर में है, और यह इधर-उधर बारिना नाउना कहारिनो को ढूंढता फिरता है! लाला को बुलाके भावज ने बहुत डाँटा, कि तेरा-सा शोहदा हमारे कुनबे में और कोई नही है। अरे, तुझे जरा लाज नही, बेगैरत! यह कल की आई हुई महरी, आज नौकरी छोडे देती है। इस घर में जाके क्या रुसवा

करेगी! तेरी बारह बरस की परी बनी हुई जोरू—और तू महरी-महरी को पकड़ने फिरता है! शरम निगोड़ी भून खाई! गिरहस्ता के ये काम नहीं है, ज़रा-ज़रा-सी बहुएँ, जवान बेटियाँ, इनमें तू हुड़दंगा करता है! घर बदनाम हो जाएगा, तो कोई लड़का-लड़की न ब्याहने जायगा। चुपचाप सुनता रहा। सुनके कहा, भौजी यह झूठ बोलती है। यह तो आप मुझसे चिरौरी करती थी। जब मैंने न माना तो यह आग आके लगाई। बस इतना सुनना था कि बहनी! देह जर उठी, और मेरे मुँह से बेसमझे बूझे निकल गया—दाढ़ीजार, बस! यह सुनकर उसकी भावज ने उसकी तरफ देखकर कहा—थू है! चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है। यह टके की महरी दाढ़ीजार बनाए और हम सुनें! और सुनें न तो क्या करें! जो तू ऐसा न होता तो इसकी मजाल थी कि यह कहती। मुँह न इसका झुलस देते! मैं चुप, सुनती गई। मगर फिर उस दिन से उनके घर न गई, कि कौन अपनी आबरू खो आए!

हँसिया ने जो यह बातें सुनी, तो दिल में और खुश हुई और सोचा कि गुलबिया तो सिड़न है। ऐसा मौका हाथ से दिया। ये मौके घड़ी-घड़ी थोड़ा ही हाथ लगते हैं। ठान ली कि फुलिया मालन से मिलके मतलब निकाले। गुलबिया से कहा—बहनी, लौंडा तो नटखट है, यह तो मालूम हुआ। मगर अपना दिल साफ हो तो कोई क्या कर सकता है। क्या उसके पास कोई तोप लगी है? हाँ, मन्तर-जन्तर से हमारा दिल फेरके मतलब निकाले तो और बात है।

गुलबिया ने कहा—तेरे पास कहाँ से सँदेसा आया? अरी दिवानी, वहाँ ढोल के अन्दर पोल है। न देगा, न दिलाएगा। खाली-खूली ठायँ-ठायँ है। पछताएगी। हँसिया, याद रख मेरा कहना। तेरी नीयत डाँवाडोल मालूम होती है। यह बता कि तूने उसको देखा है कि नहीं?

उसने कुल किस्सा कह सुनाया और कहा, कि—चाहे कोई मुझे डिबिया में बन्द करे, चाहे सात पर्दों में रखे। मैं उससे जरूर मिलूँगी। मेरी उस पर जान जाती है। मैंने मर्दों में ऐसा नहीं देखा। चाँद में मैल, उसमें मैल नहीं। मुझे किसी तरकीब से उस तक पहुँचा दो, मैं तेरी। लौंडी हो जाऊँ बहनी, मुझे वह बाजरे की रोटी एक वक्त खाने को दे, मैं उसकी लौंडी बनके रहूँगी, और कहीं का मोहनभोग नहीं अच्छा। उसके यहाँ का सूखा कौर सोने का कौर मालूम होगा। मैं तो देखते ही अपने आपे से जाती रही। जी चाहता था, वहीं लिपट जाऊँ। तू बड़ी बदनसीब है कि भरी थाली को धक्का दिया, आई हुई लछमी को लौटा दिया।

गुलबिया ने कहा—जो इतना रीझी है तो आज ही सही। वह तो दिन-रात इस फिक्र में रहता है। और तेरी-सी लौंडिया को तो छूटते ही कलेजे से लगा ले। अब तुझको रोकना मुश्किल है। पछताएगी। देख लेना, रोते न बनेगी।

हँसिया बोली—रोती कोई और होगी। मैं राज करूँगी। उसका-सा है कहाँ। मेरी तो जान उस पर जाती है। बहनी, कोई उपाय ऐसा करो कि काम बन जाय। गुल्बिया ने कहा, यह तो कोई ऐसी मुश्किल बात नहीं है। सीधी फुलिया के पास चली जा।

थोडी देर के बाद हँसिया अपनी गुइयाँ से रुखसत हुई और सीधी मालन के घर पहुँची। मालन तो इस फेर में रहती ही थी। नन्द-भावज, सास, लडकी, दामाद सब उसके इस बुढ़ापे की हरकतो के नाराज थे। इस बारह बरसवाली छोकरी को अपने यहाँ देखा तो बडी खुश हुई। बडे आव-भाव से बिठाया। कहा, बेटा आज यहाँ भूल पडी! तुलसा अम्मा कैसी है? उसने कहा—चची, कुछ न पूछ। नानी को तो बुढभस लगा है! अभी ससुरे से गौना आया ही नहीं, और कहती है—तू चली जा। मालिन ने ताज्जुब में आकर कहा—ऐसी भारू पड गई लडकी को! निकाले देती है! ऐसा भी कहीं होता है।

हँसिया बोली—हमको चची कही नौकर रखा देती, हम ऐसी नानी की सूरत न देखते। आध सेर आटे से लगा दो। मालन की बाछें खिल गईं। दिल में बडी खुश हुई कि मार लिया है, चलके डाली लगाऊँगी। हँसिया की तसल्ली की, कि घबराने की कोई बात नहीः मैं अभी-अभी नौकर रखा दूँगी। जैसी उसकी लडकी, वैसी मेरी।

यह कहकर चादर ओढी और फूलो और हारो की टोकरी लेकर चली। पाँव की उँगलियो के बिछवे और अनवट की आवाज आती थी। राह में कहा—सरन लाल के घर में नौकरी है। चलके अपना पक्का-पोढा कर ले। बडे देनेवाले हैं। ऐसी नौकरी न मिलेगी।

सरन लाल के तो नाम पर यह उधार खाये हुए थी। जैसे कारूँ का खजाना मिल गया। मालन को बहुत दुआएँ दी, और कहा—जो नौकर हो गई तो उमर भर जस मानूँगी। बस, चलते ही रखा दो। जो उनका जी चाहे वह दें। मालन ने पूछा—तेरे दूल्हा कहाँ हैं? वह बोली—कौन जाने कहाँ है. जाने जीता है कि सरग गया, और होय भी तो क्या! ब्याह पर मैं दस बरस की थी। वह सतवें में था, अब मैं तेरहवी में हूँ। वह दस बरस का है। "सैयाँ हमारे झूलना झुलत हैं, हम ही झुलावन हारी!" मेरे किस काम का!

छोट बलम, बड नार रसिक, रसीली मद-माती
कोसत गोद पसार सास ससुर पत माती!

इतने में जैनब की माँ दोनो को मिली। अरी बिटिया, तुम भली आनि [illegible] फुलिया के साथ कहाँ जाती हो! कहीं इसके फेर में न पड़ना। [illegible] मन्तर नहीं है, और तुम्हारे सिन की छोकरी तो [illegible] तुमको बचाए। यह तुम किसके फंदे में फँसी हो। [illegible]

कहती। उनके मुँह दर मुँह कहती हूँ। तुम्हारी नानी कहाँ है? चलो, दुलहिन के पास हमारे साथ।

फुलिया ने ताने के अन्दाज से हँसकर कहा—तुम हमारे फंदे से बची रहना। ऐसा न हो कि तुमको भी फाँस लूँ। उसने कहा—हमको तुम बिचारी क्या खाके फाँसोगी! हाँ, इस लौडिया को खूब ढब पे ले आई हो। इसका खुदा ही मालिक है। अब इसका बचना मुश्किल। अरी दिवानी हुई है! चल!

हँसिया ने तुनककर कहा—ए हटो भी वाह! डगर बजार में अलई का पलुआ बक्कत हो! जैनब की माँ ने समझा-समझू के अपनी राह ली। इतने में रास्ते में गुलबिया मिली। जैनब की माँ ने कहा—ऐ गुलबिया, तुम्हारी गुइयाँ तो गई-गुजरी। दीन की रही न दुनिया की। अभी-अभी मैंने फुलिया मालन के साथ देखा। धीमे-धीमे कुछ गाती जाती थी। मैंने डाँटा, बल्कि फुलिया को बुरा मालूम हुआ। मालूम हुआ तो होवे। हँसिया उसके पट्टो में कहाँ से आई? न तो दुल्हन के मैके में हमने उसको कभी देखा, न सुसराल में। बुरी फँसी। तुम भी समझाना।

गुलबिया ने यह तो साफ-साफ नहीं कहा कि यह सारे काँटे मेरे ही बोए हैं। फुलिया का मैंने ही नाम बताया। बल्कि जाहिर में अफसोस किया और कहा—अब फुलिया कोई कुटनी तो है ही नहीं कि उससे डर हो। और यों जिसका पाप, उसका पाप। जो जैसा करेगा, वैसा पाएगा। जैनब की माँ रसूखियत जताने के लिए कामिनी की सुसराल गई। कामिनी की जरा आँख लग गई थी। एक बारिन बैठी पाँव दबा रही थी।

कमला एक पलग पर चूडीवाली से चूडी पहन रही थी। जब चूडियाँ पहन के चूडीवाली को सलाम किया तो जैनब की माँ ने कहा—बेटा, खैरसल्ला? बहुत दिनो बाद देखा। अच्छी तो रही? और सब खैरियत। क्या दुल्हन आराम में है?

कमला ने कहा—हाँ, जरा अभी आँख लग गई है। तुमने जैनब की माँ, हमारे यहाँ आना ही छोड दिया। उसने कहा—अब किसी दिन आऊँगी।

कमला ने पान दिया। इतने में कामिनी ने करवट लेके कहा—क्या जैनब की माँ है? सलाम बुआ। उसने कहा—जीती रहो! दूधों नहाओ, पूतो फलो। अल्लाह सुख देना नसीब करे। राज करो। यहाँ वहाँ दोनो जगह सुख रहो। दिन को तो दुल्हन सोती न थीं!

कामिनी पलग से उठ बैठी और रात के जागने का हाल बयान किया।

तुलसा सामने आई तो उसने पूछा—कहाँ से आती हो? जैनब की माँ ने कहा—घर ही से आती हूँ। आज हँसिया नहीं दिखाई दी? क्या कहीं गई है? सासुरे तो नहीं गई। तुलसा बोली—बडी देर से देखा नहीं। क्या जाने कहाँ गई?

कामिनी ने कहा—हमको तो उसकी तरफ से फिक्र हो गई। वह तो सिवाय अपनी माँ या किसी और औरत के कभी बाजार भी अकेली नही जाती थी। आज क्या जाने क्या हुआ। और कोई लडाई झगडे की बात भी नही हुई। गई तो कहाँ गई। जैनब की माँ ने कहा—तुमन भी नौजवान लडकी जरा से बच्चे के हवाले कर दी। मैंने यही सुना कि मियाँ बालक हैं। तुलसा झल्लाकर बोली—कुछ सिडन हो गई हो? बाईस-तेईस बरस का मर्द है, क्या दूध पीता बच्चा है? रगून देस गया था, अब चिटठी आई है। आता होगा। जैनब की माँ ने कहा—भई, हमसे तो बेक्हे नही रहा जाता। हम अभी बडे हुजर की डयौढी से घर जाते थे। ए रास्ते में क्या देखती हूँ कि हँसिया चली आती है, और पीछे-पीछे फुलिया मालन। उससे शिकायत करती आती थी कि नानी न नौ बरस के लडके से हमारी भँवरी फिरवा दी, और वह हँसिया को कही लिये जाती थी। मेरे पाँव-तले से मिट्टी निकल गई कि ओह! यह क्या हो रहा है। अरे, मैंने कहा, बेटा कहाँ इत्ते वक्त? कही इस फुलिया के चक्कर में न आ जाना। ए वह और मालन दोनो न मिलके उलटी पलटी सुनाना शुरू की। जो मैं जरी ठहरी रहूँ, तो टेंटुआ ही ले ले। यह अच्छी बात नही है। वह मुई बडी कुटनी है। वह जो हिन्दू लोडा नया बिगडा है, सरनलाल, उसी के यहाँ लेके जाती है। हँसिया को दबाओ!

कामिनी—यह गुल खिला! वह तो आज सवेरे हमको मिला था। यह हँसिया को क्या हो गया! यह तो ऐसी थी नही। और यह फुलिया कौन है? क्या मालिन है? पहले हमारे यहाँ आती जाती थी। अब जब से मेरे देवर ने ललकारा कि खबरदार यहाँ आई, दहलीज के अन्दर कदम रक्खा, तो टाँगें काट डालूँगा, तब से नही आई। वह मशहूर कुटनी है।

जैनब की माँ—हाँ, मेरा तो जाना है, और वह निगोडा सरन दिन-रात इसी फिक्र में रहता है। बारह बरस की जवान खूबसूरत जोरू को छोडके चमारियो को ढूढता फिरता है। मुआ राँड का साँड। मुझसे भी एक दिन कहा था कि जैनब को बहुत दिन से नही देखा। हमने कहा—जवान लडकी हम बूढी, औरतो की तरह से मारी-मारी नही फिरती है। बदजात आदमी कहन लगा—बहुत दिनो से नही देखा। अपने दिल में कहा—तेरे पास क्या आग लगाने आती।

तुलसा—दैया क्या सुन रही हूँ। हँसिया कहाँ पहुँची!

कामिनी—रजीत को किसी बहाने भेजो कि चुपके से खबर लाये कि हँसिया कहाँ है।

जैनब की माँ और यारिन ने बूढे सिपाही रजीत को समझा-बुझाकर रवाना किया और इधर आपस में या बातें होने लगी—

कामिनी—जैसे अब तक यकीन नही आता। यह हँसिया को

तुलसा—(जैनब की माँ से) तुम अपनी आँखन देख्यो रहे ?

जैनब—ए लो और सुनो ! ए हमसे बातें ही जो हुईं।

कमला—और दिन-दोपहरे—यह क्या हुआ ? बस वह फुलिया फांस ले गई।

कामिनी—यह फुलिया कौन है ?

तुलसा—देविया माली की औरत। वह अधेड-सी मालन जो ताल पर मिली थी।

कामिनी—अरे वह देवी माली की जोरू ! वह कुटनी है। दूर कर कम्बख्तन को मुँह से तो नही मालूम होती है। सच कहते हैं—आदमी के अन्दर क्या है, कौन जान सकता है।

कमला—यह हँसिया को कहाँ मिल गई। और यह उस इत्ती-सी लौंडिया ने क्योकर आसमान में थिगली लगाई, न ऐसी बदकार औरतो का साथ, न संग। समझ में नही आता।

बारिन—औरत को बिगडते देर नही और सुधरते देर नही।

तुलसा फूट-फूटके रोने लगी। कामिनी और कमला और जैनब की माँ ने समझाया। बारन ने मुंह धुलाया। इस बुढौती वक्त उसने वह बात सुनी कि मर जाने के बराबर है।

कामिनी ने समझाया कि अभी आने तो दो। देखो तो कहती क्या है। अब तो यह चाहिए कि किसी तरह बिलकुल हाथ से न जाती रहे। ऐसा न हो कि उम्र भर के लिए बेबस हो जायें। बहुत डाँटना नही। एक बात का खयाल रहे कि यह अब इस तौर पर चुपके से बाहर न निकल सके, और हमारी बुढिया को न मालूम हो। बडी शर्म की बात है। वह अपने दिल में सोचेंगी कि वाह अच्छा संग-साथ है। पहरेवालो से कह देंगे कि जब ये बाहर जाने लगें, फौरन् रोक दें। कमला और बारन की भी यही राय हुई। मगर जैनब की माँ और तुलसा की सलाह यह थी कि उसको उसकी सुसराल भेज दें, जिसमें उसकी रोक-टोक भी रहे और वहाँ सरन लाला और फुलिया मालन न होंगी और अपने मर्द के पास रहेगी। और हम भी न इस तरह से जलेंगे। जिसका माल है उसके पास रहे।

कामिनी ने कहा—हम सोचते थे कि दूल्हा को भी यहाँ बुला लेंगे। बाग का काम उसके सपुर्द कर देंगे। मजे से दोनो मियाँ-बीवी यहाँ रहा करेंगे। मगर इसने तो वह गुल खिलाया कि अब उसके रखने की जुर्रत नही हो सकती। वह तो जैसी है, खैर, मगर इसमें अपनी ही बदनामी है।

कमला ने कहा—खाली-खूली बदनामी ही नही। इस तरह की औरतें तो कलंक का टीका लगाती है। जहाँ जायगी वहाँ कहेगी कि बीवी को भी ठीक कर दूँगी, दुल्हन से भी तुम्हारी तारीफ करूँगी। यह-वह, इसी तरह की अट-की सट उडाकर सारे शहर में बदनाम कर देती है।

अब सुनिये कि जो सिपाही हँसिया की तलाश में भेजा गया था वह वापस आया। कहा, हँसिया अपनी गुइयाँ गुलबिया के घर से कहीं गई है।

जनब की माँ ने कहा—मालूम होता है गुलबिया हरामजादी को भी इस भद की खबर है। देखो, बातों-बातों में टटोलेंग, कि यह हो क्या रहा है। यह एकाएकी हँसिया की कायापलट क्या हो गई, मैं जहानियाँ-जहान गश्त लगाती हूँ। उड़ती चिड़िया के पर गिन लूँ। है इस मुर्दार गुलबिया का फेर जरूर। मने जो कहा कि हँसिया को आज फुलिया कुटनी के साथ देखा तो गुलबिया बड़ी तीखी होके कहने लगी—कुटनी वह वहाँ से हो गई, किसका कुटनापा किया? मैंने कहा—वह कुटनी! उस मुई का कुटनापा मैं तो मुँह दर मुँह उससे कह चुकी हूँ, तू काहे को तीखी होती है? अब सुना कि पहले गुलबिया के पास हो आई थी। जरूर से! मगर एक बात है—जिसका नाम है वह बद नहीं। देखो, उसका पीठ-पीछा है।

कामिनी—सिपाही से पूछ, तुझसे किसने कहा कि गुलबिया के यहाँ गई थी?

बारिन—उससे गुलबिया ने आप कहा कि आई हती, मुला चली गई।

कमला—यह नहीं बताया कि कहाँ गई, किसके साथ गई, क्या कहके गई?

बारिन—सिपाही कहता है—यह कुछ नहीं बताया, और चली गई।

कमला—कहो फिर जाए दरियाफ्त करे और गुलबिया को अपने साथ ले आये।

बारिन—दुलहिन, सिपाही रोटी खात है। खाय ले तो जाय।

जैनब की माँ—बस कोई तरकीब से उसके ससुरे को भज दो! वहाँ कोई एसा-वैसा काम करेगी तो मारी जायगी।

कामिनी—उसके मद को बुलावा लेंग, और उसके सपुर्द कर देंगे कि तू जान, तेरा काम जाने, जवान को यों छोड़ना अच्छा नहीं।

जैनब—ए बीबी, अभी कौन-सी ऐसी जवान हो गई। कहाँ की जवानी एसी फट पडी। बारह बरस की उम्र, निगोडी कौन जवानी की उम्र है। खत रियो-कायथो में अभी बारह बरस की कुँआरी बैठी हैं। क्या मजाल कि जरा राह से बेराह हो। आँखो में हया शरम। औरतों तक से अच्छी तरह बात नहीं करती। हमने चौदह-चौदह पन्द्रह-पन्द्रह बरस की लडकियाँ देखी हैं, जो मर्द की सूरत से वाकिफ नहीं, मगर साथ आबरू के रहती हैं। जरा-सी लौंडिया और दीदे की इस कदर सफाई। कलयुग इसी का नाम है।

इधर तो यह हँडिया पक रही थी, अब उधर का हाल सुनिये कि सरन-लाला ने बाग में एक मुख्तसर दालान कोठी बनवाई थी जिसमें अपने यारो-दोस्तो को लेकर बैठते थे। इस बाग का एक बड़ा फाटक बाजार की तरफ था, और दो दरवाज थे। एक दरवाज पर दरजिनें बैठकर सिलाई का काम करती थी, और दूसरा दरवाजा जो उधर गली के अन्दर था—उसका नाम

चोर दरवाज़ा—उस तरफ से सरन लाला के दिल-बहलाव का सामान हाज़िर होता था, यानी बदकार और बदचलन औरतें इसी तरफ से आती थी और किसी को कानोकान खबर नही होती थी । गली का रास्ता । वहाँ रास्ता भी बहुत नही चलता था। इसी चोर दरवाजे से फुलिया मालिन हसिया को लेकर बाग में दाखिल हुईं और आते ही दरवाज़ में कुडी लगा दी। सरनलाल बाग की सैर कर रहे थ। एक बहुत बारीक कलकत्तेवाली कीमती धोती, कोई पन्द्रह रुपये जोडी की सफेद बगले के पर की सी, काली किनारी, और मलमल का हलका रँगा हुआ कुर्ता दो रुपये सिलाई का बखिया किया हुआ । बाल भँवरा से काले—उनमें हिना का तेल छोटे गधी की दूकान का, सोलह रुपये सेरवाला पडा हुआ, दाहने हाथ की छँगुलिया में हीरे की अँगूठी, पाँव में पाँच रुपयेवाला बूट, कान में नागसर के इत्र की फुरेरी, मुँह में खुशबूदार पान, हाथ में मेंहदी लगी हुई। इस शान से यह रँगीला जवान अपने बाग में टहल रहा था—फुलिया को देख कर खुश हुआ। पूछा—'क्या डाली वाली भी लाई हो कि खाली-खूली सूरत दिखाने आई हो?

फुलिया बोली—कही हम मालिनें खाली हाथ भी आती हैं। और फिर एसी सरकार में वह डाली लाई हूँ कि भूख-प्यास बन्द हो जाय, नागपुर के सगतरे, और सिलहट के गोले भूल जाओ।

सरन—उतरे हुए तो नही हैं?

फुलिया—ए अभी अच्छी तरह गदराए भी नही हैं।

सरन—अच्छा फिर डाली कहाँ है?

फुलिया—कही अलग बैठो यहाँ ठीक नही है।

सरन—अभी बन्दोबस्त किये देता हूँ। सिपाही तुम फाटक बन्द कर दो। सिर्फ खिडकी खुली रहे, और दरजिनो की तरफ का दरवाज़ा भी बन्द हो जाय। जो कोई आये उसको टाल दो। या हमें खबर हो जाय।

सिपाही ने हुक्म की तामील की और फुलिया ने हँसिया को बुलाया। हँसिया, शर्माती-लजाती मौलसरी के दरख्त से जिसके दिय के नीचे वह खडी थी आई।

सरन लाला ने जो उसकी उठती जवानी और प्यारी-प्यारी सूरत और गोरे-गोरे गाल और नमकीनी और सीने के थोडे-थोडे उभार को देखा तो बाछें खिल गईं। कोठी के अन्दर मसहरी पर जाके बैठा और वही इन दोनो को बुलाया। हँसिया दरी के फर्श पर बैठ गई। सरन ने हाथ पकडकर मसहरी पर अपने पास बिठा लिया। फुलिया फर्श पर बैठ गई। सरन ने हँसिया का हाथ पकड लिया।

सरन—यह तो बडी शर्मीली है।

फुलिया—यह बातें क्या जानें। अभी बच्चा है।

सरन—क्या बात ही नहीं करना जानती? जबान है या नहीं?

फुलिया—बोलो बेटा। लाला से खुलके बातें करो। अब नहीं, थोड़ी देर में बोलेगी और पट-पट बोलेगी। हमारे सामने बोलो तो हमारा कलेजा हाथ भर का हो जाय, कि हमारे बच्चे ने हमारे सामने बातचीत की।

सरन—अच्छा जबान ही दिखा दो।

फुलिया—दिखा दे, बेटी। दिखा दो, पूत।

हँसिया—कौआ ले!

सरन और फुलिया दोनो हँस पड़े।

सरन—छोकरी शोख मालूम होती है।

फुलिया—पहला-पहल वास्ता है, शर्मीली है। कभी मर्द की सूरत तो देखी नहीं, डरती है। रहते-सहते से शर्म दूर हो जायगी।

सरन—इत्र मलोगी?

फुलिया—ए हैं, इत्र पर तो जान देती है, दिन-रात इत्र, फूलो के हार, गजरे,—कगन, फूल-फुलेल!

अपने नौकर महीनलाल को सरन लाला ने बुलाया। यह भी कम-उम्र और नमकीन था।

हँसिया को लाला की बगल में देखकर मुस्कराया। लाला ने कहा—इत्र की जो सदूकची बाहर है, वह ले आओ। वह ले आया।

फुलिया ने कहा—इतने बड़े लोमड हुए, आदमी न बने। मुसलमान सच कहते हैं कि नाऊ और खिदमतगार मुसलमान होना चाहिए। हिन्दू पोगा। सुन्दर दरी बिछी है—उस पर नगे पैर आया—सब सत्यानास।

सरन लाला भी खफा हुए। बड़ा बदतमीज है। तू रोज-ब-रोज गधा होता जाता है। दरी को साफ कर!'

महीनलाल ने झाड़ू से पावो के निशान मिटा दिये और पानदान से पहले हँसिया फिर लाला फिर फुलिया को गिलौरियाँ दी। बसा हुआ कत्था, बसा हुआ चूना, इलायची, पान सफेद उम्दा दिसावरी, करारे, जायकेदार। इसके बाद सरन ने सन्दूकची खोलकर रूहे-खस का इत्र, दस रुपये तोलेवाला, हँसिया के कपड़ो में मला और धीरे-धीरे कुर्ती के अन्दर हाथ डालकर इत्र मलना शुरू किया। हँसिया जरा सिकुड़ने लगी, तो फुलिया ने डाँट बताई। ए इत्र लगाने दे, छोकरी! मोहल्ला भर महक गया! बस रियासत के यही माने है कि खाय और खिलाय। अच्छा पहने, अच्छा खाय। चैन करे! और जो रखके मर गये, टुइयाँ-सी जान निकल गई, तो रुपया और ईंट सब एक है।

सरन ने कहा—हँसिया, अगर हमारी होकर रहो, तो इसी बाग में मक— बनवा दूँ। दो चारपाइयाँ, एक मसहरी, पाँच-छै मोढ़े, दो कुर्सियाँ ले दूँ

बैठने को कमरा सजा दूँ, टाट, दरी, कालीनें, तस्वीरें। एक सोने का कमरा। खाना पकाने के लिए औरत रख दूँ। एक बारन टहल को हो, दिन-रात रहे। सवेरे दाल-रोटी सालन, तरकारी खाओ, शाम को पूरी-कचौरी, भजिया, दूध-दही, शकर, चीनी, अचार, मिठाई खाओ, दारू पियो। शराब चाहे दिन-रात पिया करो, कुछ पर्वा नही। इसके सिवा गहना बनवा दूँ—चाँदी के छल्ले करनफूल, बाली, चम्पाकली, चूड़ियाँ, कटक की चाँदी के कडे सब बनवा दूँगा। और अगर भलमसी से रहो तो गाँव-गिराँव तुम्हारे नाम हो जायें। पहनने को जो चीजें पसन्द हो, पहनो—साडी, बनारस का माल, कामदानी के दोपट्टे, ढाका की मलमल। किसी चीज को तरसोगी नही। चैन करोगी।

इतने में घडघडाती हुई गाडी की आवाज आई और यह मालूम हुआ कि कि जैसे गाडी बाग के अन्दर आ गई। फुलिया ने भागने की कोशिश की। हँसिया ने भी मसहरी से नीचे कदम रक्खा। मगर सरन ने इन दोनो को रोका। कहा—बैठो। यहाँ परिन्दा पर नही मार सकता।—वैसे ही महीनलाल दौडता हुआ आया।

सरन—क्यो, क्यो, खैरियत तो है। क्या हुआ? कौन है?

महीन—सरकार, बडे लाला आ गये। फाटक की खिडकी के अन्दर आके पूछ रहे है कि कहाँ है?

सरन—लाहौल विला—यह बुड्ढा कहाँ से आ गया!

महीन—क्या कहें हम लोग। यह कोठी तो सब बन्द है।

सरन—ऐन करियाल में गल्ला लगाया। कह दो कसरत कर रहे हैं। फुलिया, तुम और हँसिया जरा इस कमरे के पर्दे की तरफ खडी हो जाओ। महीनलाल दरवाजा खोल दो, और लाला से कहो, चलिये बुलाते है।

बडे लाला उधर से, सरनलाला इधर से। उन्होने कहा—सरन भैया, मुनीम से दस हजार रुपये लेके, दो सिपाही साथ लेओ, और इसी गाडी पर स्टेशन चले जाओ। रेल के जाने को अभी घटा भर है। कानपुर का टिकट लेओ। वहाँ परमेशरीदास हीगामल की दूकान पर जाके दस हजार का जो असबाब हमने लिख दिया ले लो। नेपाल के राना आते है, शादी है। उनको दो तरह के थान हजारो के चाहिये ब्याह के लिये। बीस हजार तक के मिलें तो ले लो। दूने हो जायँगे। यह कपडा बँगलौर बम्बई कानपुर किसी मडी तक में नही है, हम टोह लगा चुके है। कम्पू में बस परमेशरीदास हीगामल की दूकान पर है। कल ही लदाय लाओ।

सरनलाला और ही फिक्र में थे। उनको हँसिया की चाह थी। टालने को कह दिया कि लाला, अब कल पर रखो। इस वक्त कब कपडे पहनूँगा, कब जाऊँगा!

बडे लाला बोले—देर न करना। नाही पंस चालीस हजार पर पानी फिर जायगा। एक जोडा कपडा ले लो। लिहाफ-दुशाला रख लो। धोती का जोडा रख लो। मजे से गगाजी नहाओ, माल लो, चले आओ। सरन ने फिर टाला—हमारी तबीअत अच्छी नही है। बाप ने कहा—डघोढे दर्जे का टिकट ले लो। सरन मजबूर हुए। अब वे महीनलाल से कहा—डघोढे दर्जे में कानपूर जाने का हुक्म है। एक जोडा रख लो।

हँसिया को दो रुपया और फुलिया को एक देकर रवाना किया। कहा—हँसिया, हमको भूलना नही। हम कल ही आ जायँगे। क्या करें, इस वक्त बूढे को दौलत बढ़ाने की पडी है। लालच!

हँसिया और फुलिया ने बिदा ली तो जाते वक्त हँसिया ने कहा—यह जो सामने तालाब है, उसकी दो-चार लाल-लाल मछलियाँ पकड दो।

सरन ने दूसरे आदमी को हुक्म दिया कि लाल-लाल मछलियाँ तालाब से निकालने में देर होगी इसलिए वह अचारी, जिसमें लाल और अबलक मछलियाँ है, इनको दे दो।

हँसियाँ खुशी-खुशी मछलियो की अचारी लेके चली। फुलिया मालिन अपनी नयी चेली हँसिया को बाग के इसी चोर दरवाजे से बाहर ले गई। रास्ते में दोनो खुश कि अच्छा कम्पा मारा। हँसिया ने दो रुपये नकद पाये और एक रुपये की अचारी मिली, और आठ-आठ आनेवाली दस मछलियाँ—आठ रुपये ये हुए, और इत्र और खातिरदारी अलग। छोटी जात की औरत, ऐसे अमीर की सोहबत में जो इस कदर खातिर हुई तो दिमाग आसमान पर पहुँच गया।

फुलिया—सच कहना, कैसा अच्छा सुभाव और क्या मिजाज है!

हँसिया—बडा देनेवाला है। उससे बहुत मिलेगा।

फुलिया—यह डाढीजार बुढवा न जाने कहाँ से आयगौ। सरन लाला को भी रज हुआ। करते क्या, जाना पडा।

हँसिया—भला आ जायँगे कल तक, कि दो चार दिन बाद!

फुलिया—बेटा, बीच-खेत आयें। दिल की लगी बुरी होती है।

हँसिया—तो मकान बना देंगे, कि झूठ-मूठ!

फुलिया—कुछ सिडन है? अरे एक मकान क्या, दस बन जायँ, कोठियाँ बनवा दें, कमी क्या है?

हँसिया—हाँ, बडा देने वाला मालूम होता है।

फुलिया—हमें न भूल जाना। एहसान मानना।

हँसिया—देख लेना, दीदी। चाँदी की दीवारें उठवा दूँ, घर तुम्हारा भर दूँ, तो सही।

ये मजे मजे की बातें करती हुई हँसिया फुलिया के साथ उसी के कमरे

तक आई। वहाँ एक औरत बरोठे में बैठी थी। उसने कहा, मालिन, हम तो देर से आसरा लगाये बैठी हैं। बीवी ने बुलाया है। बच्चे को बुखार आया, इस पर हकीम ने दस्तो की दवा दी। अब जो देखा तो चेचकें निकली हैं।

हँसिया—क्या मुसलमाना के घर भी जाती हो?

औरत—काहे? काव मुसलमान की जान ही नाही होत है?

हँसिया—नही, मैंने इससे पूछा कि मुसलमान तो मानते नही।

मालिन—अब सब मानते हैं। हमारी जजमानी कई बरस से मुसलमानो के यहाँ हैं। अब कल तो नही, परसो मुझसे मिलना। और हाँ, किसी को छाँह भी न देना।

हँसिया विदा लेकर अपने सरकार गई। कामिनी और कमला और तुलसा और बारिन और ज़ैनब की माँ ने गौर करके देखा।

ज़ैनब की माँ—जैसे कोई कोई पडोस में इत्र लगाता है।

बारिन—(मुस्कराकर) भल महकत है।

कमला—हँसिया लाल-लाल मछलियाँ कहाँ से लाई?

हँसिया—बिकाऊ हैं बीवी। दो रुपये को सब देता हूँ।

ज़ैनब की माँ—इनको क्या करोगी, बेटा?

बारिन—(मुस्कराकर) भूँज के खैहे।

हँसिया—(शर्माकर) पालूँगी।

कमला—दाम दे दिय?

हँसिया—दिखाने लाई हूँ।

कामिनी—कौन बेचता है?

हँसिया—मेरी एक गोइयाँ।

कामिनी—क्या नाम है?

हँसिया—रमिया।

कामिनी—कौन लोग हैं?

हँसिया—काछन हैं।

कमला—क्या लाल मछलियाँ उसके खेत में पैदा होती हैं?

हँसिया—नही बीवी, कही से पाय गई?

कामिनी—रमिया तो यहाँ कोई आती नही।

हँसिया—यही माली के पास आई थी।

कामिनी—बारिन, जावे माली से पूछ तो रमिया कोई है?

हँसिया—कहो तो मछलियाँ फेर दूँ।

कामिनी—मैं कौन कहनेवाली?

ज़ैनब—रमिया कौन है यह?

कामिनी—अरे वह रहती कहाँ है?

हँसिया—अब क्या जानूँ बीबी।

कामिनी—गोइयाँ जो है तेरी।

इतने में कमला ने पूछा—तुलसा बुआ कहाँ चली गईं? कामिनी ने जो अब तक खामोश बैठी थी, कहा—काम को गई है, आती होगी जरा देर में। बारिन ने नीचे से आके कहा—बहुरिया, माली कहत है, मैं नाही जानत हौं—रमिया को आय। जैनब की माँ ने कहा—बटिया पड गई! अरे, तू कहाँ गई थी हँसिया?

कामिनी ने हँसिया को अलग कोने में बुलाया और कसमें दे-देके पूछने लगी। पहले तो उस छोकरी ने हाल छिपाया। आयें-बायें-शायें बकने लगी। रफ्ता रफ्ता इतना कबूला कि फुलिया के घर गई थी, वही से यह अचारी लाई है, और इत्र भी उसी ने मला था। यह टोह पाकर कामिनी ने भरें देनें शुरू किये। अरी सिडन, मुझसे न छिपा। साफ-साफ कह दे, मैं बात बना लूँगी। नही तो तेरी नानी हड्डियाँ-पसलियाँ तोडके धर देगी। मगर सच-सच कह दे तो मैं बचा लूँ।

हँसिया—फुलिया ने चलती बिरिया पानी के धोके पिला दी थी।

कामिनी—यह गुल खिला। अच्छे, फिर पीके कहाँ गई? और इत्र कहाँ मला?

हँसिया—सरन लाला के पास। वहाँ पुडिया देने गई थी, मैं भी योही चली गई।

कामिनी—अच्छा, तो इसमें ऐब कौन-सा है? वहाँ उसने इत्र मला होगा।

हँसिया—हाँ, बस! और कोई बात भी हमसे नही की। फुलिया ने ये मछलियाँ लाके हमको दी, हमने ले ली।

कामिनी—कुछ उसने तुझसे हँसी-दिल्लगी की?

हँसिया—यह कहा, कि तुम हमारे घर में नौकरी कर लो। मैंने कहा—साहब, मैं अपनी सरकार को छोडके कही क्यो कर जा सकती हूँ।

इतने में तुलसा आई। कहा—दुलहिन, इस मुए सरन लाला का बाप न आय जाय, तो यह छोकरी हाथ से गई थी। और वह फुलिया तो इसी में अपनी जजमानी खो बैठी। वही इसको भी ले गई थी। सरन लाला का बाप आ गया, उसने सरन को बम्बू भेज दिया। तब बला टली। नही यह तो बाप दादे के नाम पर पानी फेर चुकी थी। अब तुम जानो, तुम्हारा काम जानें। इससे हाथ धोया—इसके मर्द को आदमी भेजे देती हूँ—वह चाहे निकाल दे, चाहे ले जाय। मैं अब इसकी सूरत न देखूँगी। मरे हुए और जीते, सबका इसने नाम बद किया।

जैनब ने तुलसा को समझाया कि अब इसकी रोक-थाम करो। लडकी है,

उमसिन, नादान है, फुलिया के साथ चली गई। चलो, अब जाने दो। अब जो हँसिया, तुम ऐसी बुरी सोहबत में जाओगी, तो तुम जानोगी, बस! इत्ता याद रखो!

रात को कामिनी से हँसिया ने कहा—दुलहिन, वह तो घर बना देने को कहता है, गहना बनाये देता है, गाँव गिराँव मेरे नाम लिखे देता है। मुझे दो रुपये दिये, इत्र मला, मछलियाँ दीं, और बड़े लाला जो न आते तो हमको काहे को जाने देता! यह बात मुझे अपने आदमी से कहाँ मिलेगी! वहाँ चक्की पीसना, मोटा खाना, मजूरी करना और चना-बना छटकना है। यह इत्र वहाँ कहाँ, और लाल-लाल मछलियाँ कहाँ, और यह सुख कहाँ?

कामिनी ने कहा—यह सब दो दिन की बातें हैं। इतने में जैनब की माँ जो कमला के बाल गूँथ रही थी, आई और इसके बाद कमला भी आई। कामिनी ने इन दोनो से कहा कि उसने तो इस पर जादू कर दिया। यह तो कहती है, कि वह मकान बनवा देगा, और गहने से लाद देगा, और इलाका इसके नाम लिख देगा, और यह भी रानी बनकर सुख करेगी। अपने मर्द के पास क्या करेगी जाके, वहाँ नाज कूटने-फटकने के सिवा और क्या है! और खाने को जवा और मटर, और यहाँ पर सुख होगा, गाँव मिलेगा। जैनब की माँ ने कहा—घर की पिडकी बासी साग।

कमला बोली—चार जूतियाँ वहाँ मिलेंगी, कुतिया।

कामिनी ने कहा—हँसिया इस भरम में अपने को न रख! एसे मर्द भला किसके हुए हैं, जिसने अपनी ब्याहता जोरू का ख्याल न रखा, वह किसका खयाल रखेगा? जिसने ब्याहता जोरू की मौजूदगी में इधर-उधर की बाजारी औरतों से दिल लगाया, उसका एतबार क्या? वह ब्याहता बीवी जो उम्र भर जीते जी जुदा नहीं हो सकती जो मर्द का आधा अंग है जिसका पचासों-सैकड़ों मर्द-औरत के सामने हाथ पकड़ा और देवी देवता को बीच देकर कहा—यह हमारी और हम उसके—जब तक इसकी हमारी ज़िन्दगी है, किसी औरत को बद निगाह से न देखूँगा। जब उसी का न हुआ, तो तुम्हारा क्या होगा। तुम्हारी ऐसी क्या जाने कितनी आयी और चली गयीं। दो दिन तुमको भी दस पाँच रुपये दे देगा। बस, निकाल बाहर करेगा। यह तो रोज का काम इसका है। तुझको खूबसूरत और नमकीन देखा और अभी नई जवानी तेरी है। यह चार दिन की चाँदनी है। फिर वही उजाला पाख। दस पन्द्रह रुपया मिले या दो चार लाल मछलियाँ देके फुसला दिया तो क्या। उम्र भर को गई गुज़री। कोई टके को न पूछगा। फिर पछताए भी न बनेगी। सब में थू-थू होगी। एसे मर्द भला किसी के होते हैं। और जो तू यह समझे हुए है कि मकान बना देगा और गहना बना देगा और उम्र भर की रोटी [illegible] है अल्ला-अल्ला खैर-सल्ला है। सब सुना हुआ है। हाय, तुझे क[illegible]। समझ[illegible]

ही में नही आता गई गुजरी। सच कहती हूँ। सारी आबरू खाक में मिल जायगी, और उम्र भर ऐसी मुसीबत में रहेगी, कि सारी उम्र रोया करेगी। रोते न बनेगी। यह बता, तुझमें कौन बात है कि उसकी ब्याहता बीबी में नही हैं। कैसी गोरी-चिट्टी, खूबसूरत कमसिन। सौ दो सौ में एक। जब उसका होके न रहा तो टके की औरत तुझको क्या समझेगा? चार दिन में इस तरह निकाल देगा, जैसे दूध में से मक्खी को निकाल देते हैं। बस ठोकरें खाया करना। फुलिया ने तुझको तबाह कर दिया।

जैनब की माँ ने भी बहुत समझाया कि अरी, देख किस मोहब्बत से तुझको समझा रही हैं—जैसे कोई बहन को समझाती है। ये पढी-लिखी रानियाँ हैं, हम नीच कौम मूरख जाहिल हैं। जो ऊँच-नीच ये समझें बूझेंगी, हम नही जान सक्ते। हम अधे लोग हैं, ये किताबें पढती हैं। और जो तेरे मकसूमो में यही बदी हो, कि गली-गली ठोकरें खाये, तो कोई क्या कर सकता है। तू जाने, तेरा काम जाने।

कामिनी—बहू-बेटियाँ निकल जाती हैं तो कोई क्या कर लेता है। आप बदनाम होती फिरती हैं, किसी का क्या जाता है।

जैनब—जी हाँ, यह तो महरी की लडकी, कहारी है।

कामिनी—हमने ऐसे बद काम में किसी को पनपते न देखा। सब का अजाम तबाह ही देखने में आया।

जैनब—भीख माँगते देखा। भीख भी नही मिलती।

कामिनी—भीख भी नही मिलती। और जब तक अपनी चारदारी में साथ इज्जत आबरू रहे, तब तक सबकी नजरो में नेक समझी जाती है। मोटा-झोटा खाय और चैन से रहे।

जैनब—अब हँसिया, उसके पास न जाना। अब तक जो बदनामी हुई सो हुई अब भी इज्जत-आबरू नही गई है।

हँसिया तुनुकके दूसरे कोठे पर मछलियाँ लेके चली गई।

जैनब की माँ ने कामिनी से चुपके से कहा—दुलहिन, अब यह रोके से नही रुक सकेगी। अग्रेजी अमलदारी हैं, पाँवो में बेडी डाल नही सकते। कैद कर नही सकते। यह बिलकुल उसके बस में हो गई। तेवर तो इसके देखो जरा।

कामिनी ने कहा—जैसा करेगी, वैसा पायेगी। मगर कितनी जल्द बदल गई। सरन ने जादू ही कर दिया। रोएगी।

कमला ने कहा—थोडे ही दिन में भीख माँगने लगेगी।

जैनब—ए आखिर हम भी तो किसी जमाने में बारह तेरह बरस की थीं। मर्द की सूरत देखकर दम निकलता था।

कमला—ऐसी तो यह भी नही। क्या चटपट काया पलट हुई। ऐसी छोकरी का कोई एतबार नही। यह तो बहू-बेटियो को बदनाम कर दे!

कामिनी—जैनब को माँ, तुमको देखकर झिझकी या नही ।

जैनव—जरा नही। यह मालूम होता था कि फुलिया मालिन से लाखो बरस की मुलाकात है।

कामिनी ने कहा—और कैसी तुनुकके चल दी, कि जैसे हमारी बराबर वाली है। शराब पी और लाल मछलियाँ लाई और कैसी खुश-खुश इठलाती हुई आई कि गोया जग जीतके आई थी। यह लौंडिया हाथ से गई।

थोडी देर में कामिनी ने एक महरी को हुक्म दिया कि जाके हँसिया को बुला तो ला। उसने आके कहा—सरकार, चौतरफा ढूँढ आई, कही पता ही नही चलता। और बाहर सब कही ढूँढा, पता ही नही चलता। जाने कहाँ चली गई।

कमला ने कहा—अच्छा, फिर तलाश कर। बाहर जाके पूछ। मालियो से दरयाफ्त कर। किसी न किसी से पता लग जायगा। वह फिर गई, और वापिस आकर कहा—सरकार, कुओ में बाँस डाल दिये, मगर कही पता ही नही। जाने धरती खाय गई, आसमान खाय गया!

अब सबको फिक्र हुई। फिर ढुँढवाया, मगर कुछ पता नही। फुलिया मालिन के घर एक आदमी को भेजा कि बहाने से जाके फूल और पुडिया माँग लाए। वह वहाँ से बैरंग वापिस आया। कहा, फुलिया घर में नही है। किसी-किसी को यकीन हो गया कि फुलिया के साथ फिर सरन के पास चली गई होगी। मगर थोडे ही अर्से में नीचे से एक महरी ने आके कहा—हँसिया निगोडी अंगूर की टट्टी के नीचे सो रही है। दो-चार औरतें जाके जगा लाईं। मालूम हुआ नशा तेज हो गया है। मछलियाँ बाहर के तालाब में फेंक दीं। सलाह इस वक्त यही हुई कि सर पर पानी डाला जाय। इसके बाद बर्फ का पानी जरा पिलाया और सुलाया।

तीसरे दिन हँसिया का फिर पता न था। गो सबने मिलकर उसको ले-दे की और बहुत कुछ समझाया-बुझाया, मगर उसका दिल ऐसा बेकाबू हो गया था कि न रहा गया। सोचा, कि आज तीसरा दिन है, लाला आ गए होंगे। इस तरह गई, जैसे तीर कमान से, या गोला तोप से। दिन से फुलिया मालिन के घर पहुँची। फुलिया देखते ही फड़क गई, गले से लगा लिया। कहा—तुझको ढूँढती थी! एक खुशखबरी सुनाऊँ। वह आ गये। वह आदमी भेज चुके हैं कि उस परी को लेकर आओ जो मछलियाँ ले गई और मुछियाँ दे गई थी। फिर आदमी दौडा आया। अभी-अभी दौडा आया था, कि कहा है, कि जल्दी लेकर आ, लाला बेचैन है।

हँसिया—दिल को दिल से राह है भी।

फुलिया—अब तो बडी-बडी मसलें याद करती है। वाह री, हँसिया!

हँसिया—ऐसा न हो, हवा खाने चले गये हों।

फुलिया—ए नहीं, रास्ता देख रहा होगा।

खैर, जैसे-तैसे ये दोनो पहुँची। सरन लाल के यहाँ एक औरत सावन का गा रही थी। इस औरत का नाम गोरा था।

हँसिया—(झिझककर)—कोई औरत बैठी है।

फुलिया—बैठी रहने दे हमारा क्या करेगी।

हँसिया—शायद लिहाज करते हो!

फुलिया—कौन, सरन? वह अपने बाप का लिहाज करनेवाला नहीं।

हँसिया—हमको शरम आती है।

फुलिया—वाह, नाचने चली, घूँघट काढके। अरे, यह भी कोई ऐ ही होगी। यह किसी पर बन्द नहीं है।

हँसिया—यह हमसे जलेगी।

फुलिया—जला करे!

इतने में सरन लाल फुलिया मालन के पास आये, देखा तो हँसया मौजूद है। दिल खुश हो गया। हँसिया को लिपटाकर पूछा—सच कहन है चूजा कि नहीं? गोरा ने कहा—क्या कहना है! अरे तू भी कन्हैया ब हुआ है। अच्छा हम सब अब कल आयेंगे। बस, जाने दो। जब फुलिया इसरार किया कि—बैठो, चली जाना, वह ताड़ गई कि अब ज्यादा बैठूंगी वह सरन के खिलाफ होगा। कहा—एक काम है, फिर मिलूँगी। एक ज और पीकर रवाना हो गई।

बारह बजे हँसिया ने बिदा ली। फुलिया उसको साथ लेकर ड्योढ़ी पहुँचा आई। यहाँ कुओ में बाँस डाले गये, मगर हँसिया कहाँ। एक ब के करीब ये पहुँची। सब जागते थे। ऊपर गई तो तुलसा जल मरी कामिनी का चेहरा सुर्ख हो गया। कमला गौर से देखने लगी—अल्लाह! लिबास, यह इत्र की बू-बास!

हँसिया नशे में थी ही, कामिनी ने जो दम दिया तो कबूल दिया कि सर के यहाँ गई थी। इस वक्त तो उनमें से कोई न बोली। मगर सवेरे कामि ने आड़े हाथो लिया। बहुत ही खफा हुईं, और लानत-मलामत की।

और बहुत ले-देकर के कामिनी ने हँसिया को घर से निकाल दिया।

तुलसिया हँसिया की जानी दुश्मन और खून की प्यासी हो गई थी, चाहती थी कि हँसिया को निकाल बाहर करे। एकदम उसके घर में रहने रवादार न थी।

कमला और घर की सब महरियाँ और कारिनें और औरतें उसके दम भ रहने के भी खिलाफ थीं।

हँसिया बहुत रोई। कहा, मुझ पर किसी ने जादू कर दिया। मुझे मालूम नहीं था कि मैं जाती हूँ, और वहाँ कौन था, क्या हुआ और मैं क्योंकर और किसके साथ आई और शराब पी या नहीं पी, मैं बिलकुल बेबस थी, मुझे माफ कीजिए।

इस तरह पर वह मक्कारा रोई-गिड़गिड़ाई कि सबको पूरा-पूरा यकीन हो गया, कि जादू किया गया। मगर कामिनी जादू-टोने को नहीं मानती थी। समझी कि शराब पिलाकर किसी ने एक चुल्लू में उल्लू बनाया। सबकी सलाह से यह राय पक्की हुई कि एक कोठरी में यह रहे और साबित करे कि उसके मिज़ाज में बदी नहीं है। तब तो उसका कुसूर माफ किया जायगा, वर्ना घर में आने न पाएगी।

—— ० ——

अट्ठारहवाँ अध्याय

बाग़ में आदमी न आदमजाद सरन औ' कामिनी-ए-हूरनज़ाद

एक रोज कामिनी नहा-धोकर पूजा करके, सफेद बगुले के पर से कपड़े पहने—मलमल की किनारी, जिस पर कटाव का हलका काम किया हुआ था, आबे-रवाँ की चोली, शरबती की सफेद कुर्ती, आस्तीनों पर महीन कटाव की बेल बनी हुई है, चन्दन के खड़ाऊँ पहन—छत पर बैठी 'मस्नवी' पढ़ रही थी। बदली के सबब से सूरज की किरनें छिपी हुई थीं। इतने में एक गाड़ी घड़घड़ाती हुई आई और दरवाज़े पर ठहरी। कामिनी ने कहा—तुलसिया, देखो तो कौन आया है। इधर पर्दा कराया गया, और एक अधेड़ औरत, कोई चालीस बरस के सिन की, उतरी। महरी के साथ-साथ सीधी छत पर आई।

कामिनी ने कहा—यह क्या जाती दुनिया देखी। आज किधर से सूरज निकला! कहाँ भूल पड़ी? कमला को पुकारा और कहा, ज़रा यहाँ आओ, देखो तो कौन आया है।

कमला इठलाती कमरे के बाहर आई, तो मुस्कराके कहा—अल्लाह, गोरा बहन आई है। आज क्या जाती हुई दुनिया देखी!

कामिनी ने कहा—भई हमने भी कहा था।

गोरा कुछ ऐसे भड़कीले कपड़े पहने हुए आई थी, जिनमें ज़रा-ज़रा गँवारपन की भी बू आती थी, और जैसे कि इस खान्दान की औरतों में अर्से से कोई नहीं पहनता था।

अब कामिनी की सुसराल और मैके दोनों में सादे पहनावे का ज़्यादातर

रिवाज और पर्दा था, और इनके मर्दों को जो अंग्रेज़ी पढ़े लिखे थे, सादगी ही ज्यादा पसंद थी। बिंत और गोखरू और करन और चम्पा और लचका और पट्ठा—इनका कम रिवाज था।

गोरा ने पूछा—कामिनी क्या तुम रोज बिला नागा पूजा करती हो और नहाती हो? हमसे तो आज इस सर्दी में कभी न नहाया जाय! और पूजा भी सर्दी के सबब से नहीं निभती। और इसमें फायदा ही क्या? मुसलमान औरतें कहती हैं—मन में फरीद, बग़ल में ईंटें! यह सच है—मन चंगा तो कठौती में में गंगा!

माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, सब तीरथ हैं पानी
कहत कबीर सुनो भई सन्तो, चार दिन वेद कहानी।

दिल की सफाई चाहिए।

कामिनी ने यह सब सुनकर यह जवाब दिया—दिल की सफाई तो सबसे पहले चाहिए ही। इससे कौन इन्कार कर सकता है। मगर जिस्म की सफाई के लिए नहान-धोने पूजा करने की भी जरूरत होती है, और जिस्म की सफाई को भी मदद मिलती है। इसमें कौन बुराई है—कि तड़के-तड़के सोके उठ, सुबह की हवा खाई और सवेरे-सवेरे नहाए। गर्मियों में तड़के का नहाना अक्सीर है। अगर सर्दी में रोज न नहाए तो दूसरे दिन तो जरूर ही नहाए। अब पूजा का हाल सुनो। नहा धोके एक पाक साफ सुथरी जगह पर बैठे। वहाँ पर फूल बहुत से रखे हुए हैं। खुशबू ही खुशबू आती है और देखने में भी भले मालूम होते हैं। तरह-तरह की खुशबू और तरह-तरह के रंग। आँखों को भी लुत्फ आता है और सूंघने से दिमाग को तरावट मिलती है। अब चन्दन रगड़ा गया। उसकी खुशबू और भी ले उड़ी, जैसे सोने पर सुहागा। इसके बाद गूगल की खुशबू से मकान भर महक गया। वबा दूर हो गई। अब घी काफूर की बत्ती जलाई। इसकी खुशबू आई। अब सुनो कि बाज आदमी दिन चढ़े, सोके उठते हैं और जब उठते हैं तो तबीअत परेशान होती है। गर्मी के दिन हैं धूप बिस्तर पर आ गई और वह धूप ही में पड़े हैं। उठे तो धूप देखकर साये में जाके पड़ गये। महीना महीना भर नहाते नहीं। बदन पर मैल तबीअत भारी, सर बोझल। महीनों बदन खली-बेसन से मला नहीं गया। खुशबू बरसों से नाक तक नहीं पहुँची। अब बताओ कितना फर्क हो गया। जमीन आस्मान का फर्क है या नहीं। हम तो अगर एक दिन भी न नहाएँ और फूलों और गूगल और इत्र की खुशबू न हो तो तबीयत परेशान हो जाय—दम चैन न आए।

गोरा ने इतनी बातें सुनकर उनकी बड़ी तारीफ की कि कामिनी तुम तो इस काबिल कि कहीं रानी महारानी हो जाओ, कई मुल्कों और बड़े से बड़े राज का बन्दोबस्त कर लो, कई आदमियों ने हमसे कहा, कि इस शहर में दो जने

इस काबिल है कि बादशाह वजीर कर दिये जायें। औरतो में कामिनी और मर्दों में सरन लाला।

सरन लाला का नाम सुनकर कामिनी के कान खड़े हुए, और जो बात कह रही थी और जो तबीअत के खयालात थे, और तरफ बदल गये। गोरा ने जो इसके चहरे की रगत बदली पाई तो और भी छेडा। कहने लगी—अभी कल ही की बात है, कि एक औरत ने मुझसे कहा कि बहन जो कामिनी और सरन का जोड होता तो ओ हो हो, क्या अच्छी बात होती! बस चाँद-सूरज की जोडी बन जाती।

अब तो कामिनी से न रहा गया। बोली—बहन, तुमको ऐसी बात न करना चाहिए। जिसकी शादी हो गई हो, उसको यह कहना कि फलाने के साथ जोडा लगाया जाता, ढिमके के साथ लगाया जाता—यह कौन बात है भला?

गोरा ने कहा—अरी दीवानी, तूने सरन को देखा ही नही है। जभी बढ-बढके बातें बनाती है। जो कही एक दफा देख ले और फिर प्यार न करन लगे, तो झुकके सलाम करूँ। अच्छा यह बताओ, कि मुझे तुम कैसा समझती हो? कभी कोई बात मेरे खिलाफ सुनी? कोई बदी की बात? कोई बुरी राह चलते देखा? किसी से मेरी किसी तरह की शिकायत सुनी? कभी हमारे आदमी ने डाँटा, दबाया कि तू गैर मर्द से क्यो हँसती-बोलती थी?—इसका जवाब दो।

कामिनी ने कहा—हमने तुम्हारी कोई बदचलनी नही सुनी, कभी कोई बात तुम्हारे खिलाफ सुनने में नही आई। मुझे झूठ बोलने से क्या गरज! इसके बाद कमला से पूछा कि अब बताओ, तुमने मुझे कुराह चलते तो नही देखा?

उसने मुस्कराकर कहा—हमने उडती से खबर पाई थी कि गोरा किसी जाट के साथ निकल गई। इस चालीस-बयालीस के सिन में यह मुँह काला किया। बूढे मुँह मुँहासे लोग देखें तमाशे। इस पर सबने ज़ोर से कहकहा लगाया। और गोरा ने मुस्कराकर कहा—दिल्लगी न करो, जो पूछें वह बताओ।

कमला बोली—यह वाहियात बात पूछना ही बेहूदगी है। घर गिरिस्ता से यह सवाल ही करना फजूल है। अपना क्या बुरा है जिसके साथ उम्र भर काटनी है। और यो तो 'नेक-अन्दर बद' और 'बद-अन्दर नेक' सब जातियो में है।

गोरा ने कहा—अच्छा, अब तो तुम दोनो जानती हो कि मैंने इतनी उम्र में कभी कोई बात ऐसी नही की जिससे आबरू में बट्टा लगता। फिर क्या सबब है कि मैं सरन लाला की इतनी तारीफ करती हूँ, और मैं साफ़-साफ कहती हूँ कि मै उस पर रीझी हुई हूँ। मैंने अपने मर्द तक से कह दिया, और मै सच कहती हूँ कि मेरी तो उस पर जान जाती है। . . बस, बदी के पास मैं नही फटकती, हाँ, खाली-खूली प्यार करने को तो जरूर जी चाहता है।

यह कहकर गोरा ने दो-एक बार सिसकियाँ भरीं, और कामिनी ने यह बात कही कि, हम भी देखते!

देखिये, यह वही कामिनी है जिसको सरनलाला के नाम से नफरत थी, जो सरन को हमेशा कोसा करती थी और जब सरनलाला का नाम आता था तो बुराई के लफ्ज जबान पर लाती थी; यह वही कामिनी है जो उस दिन से सरन की दुश्मन हो गई थी जिस दिन से उसने मन्दिर में उस पर आवाज़ा कसा था और घूरा था; यह वही कामिनी है जो तुलसा की छोकरी हँसिया को समझाती थी कि उसके भर्रे में न आना। और अब वही कामिनी फर्माती है कि—हम भी देखते! इस शौक को तो मुलाहज़ा फर्माइए कि—हम भी देखते!

यह सब गोरा की जादू भरी बातों का असर है कि कामिनी तक की ज़बान से कहलवा लिया—हम भी देखते! गोरा की बाछें खिल गईं।—यह क्यों—इसका सबब आगे खुद ही मालूम हो जायगा।

गोरा—क्या तुमने सरू लाल को कभी नहीं देखा?

कामिनी—देखा तो है मगर दूर से। अच्छी तरह नहीं देखा; है गोरा ... 'गोरा-चिट्टा' कहने को थी, मगर 'गोरा' तक कहके चुप हो गई।

गोरा—तुमने हमारे प्यारे माशूक को देखा है, कमला?

कमला—हाँ, देखा है। इससे तो कोई इन्कार ही नहीं कर सकता, कि हज़ार दो हज़ार में एक है। ऐसी सूरत पाई है, कि वाह! मगर हमको-तुमको क्या!

कामिनी—हमको तुमको की बात नहीं; बात यह है कि इन्होंने तो उसको आसमान पर चढ़ा दिया है।

गोरा—(सिसकियाँ भरके!) अपनी आँखों की कसम खाके कहती हूँ कि जो इस दम देख पाऊँ तो झप् से कूद के लिपट जाऊँ। परमेश्वर ने उसे अपने हाथ से बनाया है!

कामिनी—मोहिनी इसी का नाम है। जब ही हँसिया रीझी हुई है।

गोरा—हँसिया निगोड़ी काहे में है! वह कौन है जिसको यह तमन्ना नहीं कि दो गाल उससे हँस बोल न ले; और मुझ-ऐसी को तो वह खयाल में भी नहीं लाता। वह तुम-ऐसी ढूँढ़ता है। और वह क्या ढूँढ़ता है, औरतें खुद उसको ढूँढ़ती हैं। लांबा कद! सर बड़ा सरदार का। अभी यहाँ खड़ा हो जाय, बाज़ार भर में सबसे दो मुट्ठी ऊँचा।

कामिनी—उस दिन मन्दिर में देखा था; मगर वही, कनखियों से। और मुझे उसका घूरना उस वक्त जैसे तीर-सा लगता है।

गोरा—कहती हूँ, ना, कि मैंने आज तक ऐसी सूरत ही नहीं देखी, और तुम्हारा तो नाम लिया, और ठंडी साँसें भरने लगा। कहता है

लाख रुपया खर्च हो जाय, मगर एक दफा कामिनी को गले से लगा लूँ और हाथ जोडके बस इतना कहने पाऊँ कि—प्यारी, हमारी जवानी और जान की क्यो दुश्मन हुई हो! हमने कोई कसूर नही किया! बस, इतने गुनहगार जरूर है कि तुमपर मरते है। अगर मरनेवाले का जिलाना गुनाह न हो, तो जिला लो, वर्ना एक दफा ही मार डालो। यह तो वह खूब जानता है कि तुम उसके हत्थे न चढोगी अच्छा, तो फिर दूर ही से जरा मुखडा दिखा दो! इसमें न कोई हर्ज है, न बदी। मुफ्त का एहसान, और मै लडके की कसम खाके कहती हूँ कि जहाँ तुम्हारा जिक्र हुआ, और बस, ठडी साँसें भरने लगा। एक दिन तो रोने लगा

कामिनी—(हँसकर) ए हटो भी, हममें ऐसी कौन-सी बात है! जब वह लाखो खर्च कर सकता है तो हमसे कही अच्छी उसके गुलामो को मिल सकती है।

गोरा—यह हम न मानेंगे। तुममें वह बात है कि लाखो में नही, करोडो खर्च करने से भी नसीब न हो। अच्छा अगर वह एक दिन आँख भरके दूर से तुम्हें देख ले, तो क्या हर्ज है? हमें उस पर बडा तरस आता है। बस, तुम्हारा नाम सुनते ही उसके दिल पर अजब तरह का असर होता है। और जो कही अँधेरे-उजाले उसको मिल जाओ, तो, जानती हूँ, अपनी जान दे दे, गले से लिपटे, तो शायद दो दिन तक न छोडे।

कामिनी—ए है, दो दिन तक! मै तो मर ही जाऊँ! ए हाँ, दो दिन तक जब मर्द गले

कामिनी ने यह बात आधी ही कही कि चुप हो रही। गोरा ने जो देखा कि अब यह इस कदर बढने लगी, और खुली-खुली बातें करने लगी, तो समझ गई, तबीअत बदली। पहले तो चुप हो रही, और दिल में बहुत बुरा माना। इसके बाद बिगडी। अब सुनते-सुनते यहाँ तक नौबत पहुँची, कि हँस हँसके और चबा-चबाके बातें करने लगी।

गोरा ने कहा—कामिनी, मै जानती हूँ कि जो मोहब्बत इसको तुमसे है, उसका दसवाँ हिस्सा भी मजनूँ को लैला की न थी, नल को दमयन्ती का यह दिली प्यार न था, जो उसको तुम्हारा है। वह कहता है, मुझे सच्चा प्यार है, जैसा भाई को बहन का होता है बस, अब चाहे मार डालो, चाहे जिला लो!

कामिनी ने कहा—गोरा बहन, वह कुछ सिडी हो गया है, पागल हो गया है। खुद गोरा चिट्टा खूबसूरत, जोरू परी, परिस्तान की परी, मैंने देखी है। फिर वह मुझ पर क्यो इतना रीझा हुआ है?

उसने जवाब दिया—कामिनी, हमने माना, कि उसकी औरत देखने-सुनने में बहुत अच्छी है, और सचमुच की परी ही है। मगर सच कहती हूँ, कि उसकी सूरत तुम्हारे तलवो को भी नही पहुँचती है। कहाँ तुम, कहाँ वह। जमीन आसमान का फर्क है। इसको भी जाने दो। दिल का आना और मौत का

आना एक है। परमेशर न करे कि किसी का दिल किसी पर आये। हमारे पड़ोस में एक डोमिनी रहती है। बहुत जवान है, और बड़ी नमकीन और खूबसूरत, और बडी चुलबुली। पड़ौस के एक लौंडे की उस पर जान जाती थी, एक तहसीलदार का लड़का। उसने बरस भर तक कोशिश की। कुछ मतलब न निकला। डोमिनी की छोकरी रोज उसके इश्क का चर्चा सुना करती थी, कि जान देता है—रातों को रोया करता है, दिन-रात बेचैन रहता है, खाना-पीना हराम हो गया है। होते-होते एक दिन इसको तरस आया, और कहा—बुला भी लो! बरसों से जान देता है; अब मुझे उस पर रहम आ गया; बुला भी लो! लोगों ने जाके उसको खुशखबरी दी, और कहा: चलो, तुम्हारी किस्मत बुलन्द हो गई! सुनते ही मारे खुशी के जामे में फूले न समाया। पहले तो यकीन न आया; कहा—यारो, फकीरो से दिल्लगी अच्छी नही होती; हम जिन्दगी से बेज़ार हैं। और तुम लोगो को छेड़-छाड़ की सूझती है। कसमें खायी कि वह बुला रही है। मगर यह तो मजनूँ हो रहा था, यकीन न आया। लोगो ने जाके उससे कहा कि—उसको हमारे कहने का यकीन नहीं आता। कहा, अच्छा मैं खुद चलती हूँ। यह कहकर, खूब बनी-ठनी और निखरी। पाजेब को छमछमाती और अकडती-इठलाती चली, और कहा: हम अपने दीवाने को आप चलके खुश कर देंगे। 'छम-छम' की आवाज़ से समझा कि दिल्लगीबाज़ो ने किसी बाज़ारी औरत को दिल्लगी देखने को भेजा है। मगर जैसे ही इस शोख-शग औरत ने मकान के अन्दर कदम रक्खा और दोनो की चार आँखें हुईं, तो फौरन लिपट गया, और ज़ोर से चीख मारकर दम निकल गया!

कामिनी—अरे! हैं-हैं! मुफ्त में बेचारे की जान गई। लेना एक न देना दो।

गोरा—ए तो सरन का हाल भी यही होना है। वह बचेगा नही।

कामिनी—तो हमको तो अब डर मालूम होता है। जो मैं मिली और उनके दुश्मनो का दम निकल गया, तो इस बेचारे की जान गई और हमारी बदनामी हुई।

गोरा इतनी बात से ताड गई कि मतलब हासिल हो जायगा। मार लिया है। धीरे-धीरे हमारे ढर्रे पर आती जाती है। मालूम होता है कि यह इस बात पर राजी थी कि सरन से मिले, मगर डर यह है कि ऐसा न हो कि कहीं उसकी जान जाय और मैं बदनाम हूँ। जो यह डर निकाल दिया जाय तो राह पर आना आसान बात है। कहा—तहसीलदार के लडके की तरह ऐसा जनून नही हो गया है कि जान दे डाले। हाँ, जो देर होगी, तो यह भी सिडी हो जायगा। हमारी सलाह यह है कि तुम मिल लो और उसकी जवानी पर तरस खाओ। और उसकी जवान औरत की जान बचाओ! नही तो दो जानें जायँगी। और तुम्हारा कोई फायदा न होगा। और कोई ऐसी बात नही। ज़रा सूरत दिखा दो। बदनसीब का अगर ऐसा ही दिल उमड आया, तो बहुत करेगा, चूम लेगा।

फिर उससे क्या होता है। एक-दो दफा तुम चूम लेना, दो-चार दफा वह चूम लेगा, चलो छुट्टी हुई। कोई कानो-कान सुनगा भी नही। और मैं मरी तो नही। जो कोई नेकी-बदी हुई, तो मैं तो मौजूद हूँगी। । पहले तो यह होगा नही, और जो उसका जी ललचाया तो मैं डाँट दूँगी—कि सरन, खबरदार, यह क्या बात है। चूमा-चाटी तक रहो। बस, क्या मजाल, कि जरा आग बढ सके। मैं तुम्हारी दुश्मन तो हूँ नही। चाहती फकत इतना हूँ कि उसकी जान बचे और उसकी जोरू बिचारी रँडापा न भुगते। इस लफ्ज़ का सुनना था, कि कामिनी ने एक ठडी साँस भरी, और कहा कि, गौरा बहन, तुमने तो आज ही मार डाला। मैं सोचती हूँ कि जब उसकी यह कैफियत है तो हमसे बढके पत्थर का दिल किसी का नही, जो हम उसको अपनी सूरत देखने को तरसाएँ। मगर ऐसा न हो, कि हाथ पकडते ही पहुँचा पकडे । यह रँडापे का लफ्ज जो तुमने इस बेचारे की बीवी के लिये कहा, उससे एक तीर-सा कलेजे पर लगा। परमेशर तुम्हारे सरनलाला को हजार बरस की उम्र दे और उसकी जोरू सदा सुहागन रहे।

गौरा ने हँसकर कहा—'तुम्हारे सरन' की अच्छा कही। तुम्हारा सरन लाला है कि हमारा। तुम्हारा नाम सुनकर सिसकियाँ भरता है, या मेरा नाम सुनकर। मुझ बुढिया को लेकर क्या करेगा। बीस-बाईस-चौबीस बरस से ज्यादा उम्र की औरत से बात ही नही करता, वह तो पटाखा ढूँढता रहता है। तुम ऐसी को।

इस पर कामिनी और कमला दोनो मुस्कराईं। कामिनी ने कहा—गो उम्र में जरा योंही-सी बडी हो, मगर नमकीनी अभी नही गई है। अदा वही है, बाँकपन वही है।

गौरा बोली—एक दिन, कोई दो बरस हुए, मेरे गालो पर हाथ फेरा था। बडा चचल है।

कामिनी ने कहा—अब खुलती चली गौरा बीबी!

गौरा—हमारे दिल में बदी नही है। दिल की सफाई से कह दिया।

कामिनी—हाँ, हाँ, मैं क्या जानती नही हूँ।

गौरा—जिस दिन तुमसे दो-दो बातें होंगी, उसका कलेजा हाथ भर का हो जायगा। यह समझ लो कि जान में जान आ जायगी। जैसे सूखे खेत पर दौंगरा बरस गया।

कामिनी—तुमसे उससे कब की मुलाकात है?

गौरा—जब से मैंने उसको देखा है, तबसे हजार जान से आशिक हूँ। बेदेखे जरा चैन नही आता। जो चार दिन न देखूँ, तो बेताब हो जाती हूँ।

कामिनी—यह मोहिनी आँखो में है। क्योकर देखें।

गौरा—मैं क्या मर गई हूँ। मैं तो दिखा दूँगी।

कामिनी—मेरी अच्छी गौरा बहन, दिखा दो!

गौरा—ए मेरा जिम्मा है! ए लो अच्छी आई। यह तो उस पर एहसान है!

कामिनी—मगर इस खूबसूरती से मुलाकात हो कि कोई कानों कान न सुने। चुपचुपाते। और एक बात और याद रहे। चूमने-चाटने की सनद नहीं है। बस, दूर-दूर, अलग-अलग।

गौरा—अरे वह दिन तो आने दो: जो अपने आप न लिपट जाओ तो कहना, गौरा झूठी निकली। एक दफ़ा देख तो लो, सच-झूठ का हाल मालम हो जायगा। मैं तो कहती हूँ, कोई औरत ऐसी नही जो उसकी सूरत देखके रीझ न जाय। कलकत्ते की महीन धोती, बड़ी कीमती, शरबती का बारीक कुर्ता, सोने के बटन लगे हुए, कीमती सफेद टोपी दोपलडी। इत्र में डूबी हुई। हाथो में मेंहदी अक्सर लगाता है। और बडी खातिर का आदमी है। बाप किसी बात को टोकता नही। माँ की आँखो का तारा, घर भर का प्यारा।

कामिनी—ऐसे को तो कलेजे से लगा ले—और वह एक मुच्छी ले तो हम दो लें। कब देखेंगे!—अब तो शौक बढता जाता है!

गौरा—अच्छा तुम ही कोई दिन मुकर्रर कर दो!

कामिनी—मैं यह सोचती हूँ कि जो शख्स अपने ऊपर जान दे और नाम सुनते ही परेशान हो जाय और दुआएँ मांगे कि वही जल्द मुलाकात हो, उसको तरसाना किस मजहब में जायज है। हाँ, बदी की बात का दिल में ध्यान न लाए। परमेशर के सामने भी नेक और आदमियो के सामने भी। हम उससे अच्छी तरह मिलेंगे।—बातें करेंगी, अपने हाथ से पान लगा के दूँगी, खुशबूदार पान, छोटी इलायची पडी हुई। बसा हुआ कत्था। चलते वक्त अगर चूमा-चाटी भी हो तो खैर, मगर भलमन्सी के साथ।

गौरा—बस, बस। यही तो हम भी चाहते है। इसका जी भी खुश हो जाय और तुमको कोई बुरा भी न कह सके और दो की जानें भी बच जायें।

कामिनी—देखें, कैसा है? तुमने तो बड़ी तारीफ की है। जी चाहता है इसी वक्त देखती; पर लगा के देख आती; शौक बढता जाता है।

गौरा—तुम्हारी सास कर डर हैं; नही, इस वक्त भी देख सकती हो!

कामिनी—अब कल रात पर रखो; जिसमें कोई फजीता न हो।

गौरा—तुम चलोगी कि हम उसको औरत बनाके ले आयें।

कामिनी—मैं खुद चलूँगी। सौ बहाने है। तुम कल सबेरे आओ तो मैं तुमको जगह दिखा दूँ। एक बाग है। बस वहीं तुम रात को उसको ले आना। और चली जाना। तुम्हारे सामने बातचीत करते हुए मैं झेपूँगी। वहाँ दो औरतें नौकर होंगी; और वह और मैं।

गौरा—(बहुत खुश होकर) बस, बन गई बात। चलो बस।

कामिनी—है न सलाह की बात? चुपचुपाते कार्रवाई हो जायगी। और जो वह ऐसा न निकला, जैसा तुमने कहा था, तो उम्र भर सूरत न देखूँगी। देख,हमें बदनाम न करना।

गौरा—मुझे कुछ तुमसे दुश्मनी है, वाह। मगर, हाँ, हर चीज देखने के काबिल है।

कामिनी—देखा चाहिये, लाँबा कद है कि नही। मुझे ठिंगना आदमी पसन्द नही है।

गौरा—ठिगना नही है। मैं कहती हूँ, पचास-साठ आदमी खडे हो जायँ, सबसे ऊँचा हो। और फूल-सा सुर्ख-सफेद। लाल आगरा-से होठ, जैसे बीरबहूटी।

कामिनी—और मेरे ऊपर इतना रीझा हुआ! क्या जाने तुम क्या कहती हो। क्या उसको और नही मिल सकती है?

गौरा—मिल तो सकती है हजार। मगर तुम्हारी-सी कहाँ मिले? और इतना दिल भी तो किसी पर नही आया है। अगर तुमको हजारवाँ हिस्सा भी उसकी मोहब्बत का, जो तुमसे है मालूम हो जाय, तो कभी न छोडे! सब कल ही मालूम हो जायगा। कल कुछ दूर थोडा ही है। अच्छा तो मैं कल रोटी-बोटी खाके आ जाऊँगी।

गौरा इन सब से बिदा होकर डोली पर सवार हुई, और सीधी सरन लाल की बगिया गई, और चोर दरवाजे की राह से दाखिल हुई। चोर दरवाजा उस दरवाजे का नाम था जहाँ से इस बदमाश के पास कुटनियाँ, बदकार औरतें बदचलन लोग और इसी किस्म के आदमी जाया करते थे।

गौरा ने उसके आदमी से पूछा—कहो, लाला कहाँ है?

उसने मुस्कराकर कहा—एक चिडिया आई है, अभी भडकती है। लासा-कम्पा लगाके फाँसा चाहते हैं।

गौरा ने कहा—अरे, उसको दिन रात सिवा औरतो के बुलाने के और भी कोई काम है?

उसने कहा—उनके काम ये-ये हैं एक औरतो को मिलाना, दूसरे शराब पीना, तीसरे दुआ माँगना कि बडे लाला, उनके बाप, मर जायँ।

गौरा ने कहा—वह कब मरनेवाला है! वह मर जाते तो हम सब चैन ही न करें! बुड्ढा अमृत पीकर आया है। इतने में सरन ने जो गौरा की आवाज सुनी, तो पुकारा—यहाँ आओ, यहाँ आओ! कहो, क्या खबर लाई? बेटा कि बेटी! गौरा बोली—वह कन्या रासी कोई और होते होंगे! लो मुबारक, कामिनी रानी कल तुम्हारी बग़ल में होगी। यह खुशखबरी सुनकर, सरन लाल उछल पडे। कहा—झूठी हो! हमें खुश करने को कहती हो। देखो, निरास न करना!

गौरा—तुम तो सिडी हो! अरे कल बगल में बैठी होगी! न बैठी

हो, तो नाक-कान बदले हूँ ! सरन ने उसका बहुत शुक्रिया अदा किया, और गौरा न कहा—ले, इसी बात पर आनके लिपट तो जा ! सरन ने पाँव से इशारा किया। गौरा ने इधर-उधर देखा तो सरन की आराम-चौकी के पास एक जवान औरत सिकुडी-सुकड़ाई बैठी पाई। धक से रह गई ! काटो तो लहू नही बदन में ! कमरे के सब दरवाजे बन्द थे। अँधेरे में कुछ दिखाई न दिया, और यह रोशनी में से आती भी थी। सरन ने जो गौरा की परेशानी देखी, तो समझ गया कि इस औरत को देखकर घबराई हूँ । दूसरे कमरे में उसे ले गया और कहा—तुम घबराओ नही मैं उससे कह दूँगा कि यह दिल्ली की औरत है। और इसको यहाँ छोडकर उससे जाकर कहा—यह औरत दिल्ली से आई हूँ । तुम नाहक उससे डरती हो । वह तुनुककर बोली—ए दूर हो! झूठे, जमाने भर के लपाडिये ! हमसे उडता हूँ ! यह वह हिन्दुनी है, गौरा जिसका नाम है। कढी हुई धोतियाँ, सारियाँ, कुर्तियाँ बेचती है। हम उसकी कब्र तक से वाकिफ हूँ। जभी तो मैंने दुलाई से मुँह लपेट लिया ! गौरा यह सब सुन रही थी। सरनलाल को यह नही मालूम था कि गौरा सुन रही है। उससे जाके कहा—लो मैं कह आया कि यह दिल्ली की रहनेवाली है । वह तुमको क्या जाने भला ! गौरा जली-भुनी तो बैठी ही हुई थी। और भी आग भभूका हो गई ! कहा—मुझे दीवानी न बना ! मैं सब सुन रही थी। उस मुर्दार ने मेरा नाम तक बता दिया, और तू आन के चकमें देता हूँ। माना कि मै रुपयेवाली नही हूँ, किसी बडे घर की नही हूँ, काढने का पेशा करती हूँ, मगर घर-गिरिस्थो में तो जाती हूँ। कोई बुआ कहती हैं, कोई अम्मा कहती है, कोई बहन, कोई भाभी। जो यह बात खुल जाय, तो मैं कही मुँह दिखाने के क़बिल न रहूँ।

सरन ने तसल्ली दी कि हम उसको समझा देंगे, मगर अब तुम सचमुच बता दो कि क्या बातचीत हुई।

गौरा—बातचीत यह हुई कि तुम सोलहो आने के मालिक हो। पाँचो घी में। जान-जोखम थी। मैं डरती काँपती थी कि देखिये क्या होता है। बहुत सँभलके और समझ-बूझ के मैंने छेडा—कि इस नहाने-धोने और पूजा-पाठ से क्या होता है, दिल साफ होना चाहिए। वह बोली, हाँ, यह तो ठीक है मगर रोज के नहान से आदमी तन्दुरुस्त रहता है। बीमारियाँ पास फटकने नही पाती, पूजा में फूल और गूगल और काफूर की खुशबू से आदमी चाक रहता हूँ। चन्दन कितनी अच्छी चीज हूँ। मैंने कहा—तुम कही की बादशाह होती तो खूब होता। सब यही कहते हैं कि बादशाह वजीर के काबिल दो आदमी है—औरतो में कामिनी और मर्दों में सरन लाला।

सरन—(गौरा को जोर से लिपटाकर) क्या सूझ-बूझ है, प्यारी ! बस, तुम पर से वार जाय , क्या अच्छी सूझी है ठहरो, मैं इस औरत को बिदा कर

दूँ तो फिर निडर होकर बातें करे। सरन लाला ने चुपके से अपने आदमी को कहा कि इस औरत को दो रुपये देकर विदा करो, कहो, कि लाला की तबीअत अच्छी नहीं है, कल बातचीत होगी। उसने दो रुपये देकर बिदा किया। अब गौरा ने बेतकल्लुफी से कहना शुरू किया

गौरा—जैसे ही तुम्हारा नाम सुना, चेहरे की रंगत बदल गई। न बोली, न चाली। फिर मैंने कहा—वह तो इस काबिल है कि तुम्हारा-उसका जोडा होता, मगर न हुआ। इस पर बहुत बिगडी, बुरा-भला कहा और अपनी सास से

सरन—(माथा ठोककर) अरे, कह दिया !

गौरा—कहने जाती थी। मैं पाँवो पर गिर पडी, चिरौरी की। किसी तरह नहीं मानती थी, तो मैंने एक औरत से, जो उसकी नौकर है, कहा कि समझाओ। उससे दो अशरफियाँ ठहरी। उसने अलग ले जाके समझाया, जब जाके जान बची। होते-होते मैंने फिर टटोला। मगर वही भडक थी। फिर मैंने बातो-बातो में तुम्हारी तारीफ करनी शुरू की, कि ऐसा है और वैसा है, और मैंने कहा, कि खाली उसका जिक्र करने में कौन-सा हर्ज है। नाम लेने से तो धँस नही पडेगा। दुनिया की बातो में से एक बात यह भी है। जब मैंने कहना शुरू किया कि उसकी जान जाती है, उस की जवानी पर रहम करो, वह जान तुम्हारे फिराक में दे देगा और उसकी जवान जोरू अभी बच्चा है, वह राँड हो जायगी और दो खून तुम पर होगे तो कहा—फिर बताओ, मैं क्या करूँ। मैंने कहा—बस, दूर से जरा झलकी दिखा दो, वह आँख भर के तुमको देख ले। उस पर बडी खराबी के बाद राजी हो गई।

सरन मारे खुशी के उछल पडा। सच कहो ? ओ हो हो हो ! (और भी खुश होकर) लखोखा रुपयें हमें मिल गये ! तुम सलामत रहो ! जान डाल दी !

गौरा—जब मैंने तुम्हारी बहुत तारीफ की तो कहाँ तो नाम सुनने से रंग बदल जाता था, कहाँ एक दफा ही सिसकी भर के कहा हम भी देखते !

सरन (बहुत ही उछलके)—अरे, यह मैं ख्वाब देखता हूँ या सचमुच है ! अगर मैं भलेमानस का हूँ तो तुम्हारा उम्र भर गुलाम रहूँगा।

गौरा—कल मैं सवेरे जाऊँगी और सब पक्की-पोढी करके आऊँगी। जगह देख आऊँगी और तुमको ले चलूँगी।

सरन—तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर !

गौरा—अभी इतनी भडक बाकी है कि पहले कहने लगी कि बस, दूर-दूर से बातें करूँगी। फिर कहा, अच्छा, एक दफे चूम भी ले तो कोई हर्ज नहीं है। जब वह हम पर जान ही देता है तो मैं इतना पत्थर का दिल क्यों करूँ ?

सरन—(हद से ज्यादा खुश होकर) सच कहो ! मार लिया है। कहीं कल की शाम जल्द आए ! रात काटे न कटेगी।

गौरा—ले जरा-सी पिलवाओ तो।

सरन—अभी लो। कोई है? उस कमरे में गिलास और बोतल और सब सामान रक्खो। अगर रात भर जीते रहे और खुशी के मारे जान न निकल गई तो कल रात को कामिनी के साथ ढाल रहे होगें। जान तक निकालके कदमो पर रख दूँगा। और यह तो मुझको पूरा-पूरा यकीन हैं कि इधर मुझे देखा और उधर रीझ गई।

गौरा—मैं तो यह कह आई। कहने लगी, उसकी जोरू तो खुद लाख-दो-लाख में एक है। तो वह क्यो मुझ पर इतना रीझा हुआ है?

सरन—फिर तुमने क्या जवाब दिया?

गौरा—मैंने कहा, यह सच है। उसकी जोरू लाख-दो-लाख में एक जरूर है। मगर जो बात तुममें है, वह उसमें कहाँ। जमीन-आसमान का फर्क है। और तुम पर उसका दिल आया हुआ है। जान देता है, रोता है। और अगर तुम उसको न मिली तो इसमें शक ही नही कि उसकी जान जाएगी।

सरन—तुमने वह काम किया जो किसी से भी न होता। बेदाम का गुलाम कर लिया। कल की शाम होगी भी, या होवे ही गी नहीं? जान निकालके कदमो पर न रख दूँ तो जभी कहना।

सरन लाला और गौरा विलायती शराब पी रहे थे, गजक खा रहे थे, और दोनो बहुत ही खुश थे। सरन तो इस सबब से कि सोने की चिडिया हाथ आएगी, और गौरा की खुशी का सबब यह था कि ऐसी कारगुजारी की कि कामिनी-सी पारसा को जिसके कदम धो धो के पीने की अच्छे-अच्छे शाहजादे तमन्ना रखते थे, ढर्रे पर ले आई। और यह कुछ कम खुशी की बात न थी कि सरन उसकी इस कारगुजारी से खुश था। हजारो की दे निकलेगा। ये दोना खा-पी ही रहे थे कि मिर्जा साहब और समर आये।

समर—अल्लाह, बी गौरा साहब बैठी हैं। कहिये, क्या नक्शे हैं? आज तो वल्लाह का जोबन है। और सरन लाला की तो धूम है। काले सर की एक न छोडी।

मिर्जा—कन्हैया हैं अपन वक्त के। वाह रे सरन लाला। वल्लाह, तेरी भी धूम है। जब देखो नई।

जन-नौ कुन, ए दोस्त, दर हर बहार
कि तकवीमे पारीना नायद बकार।

गौरा—अब फारसी मत बोलो।

मिर्जा—कसम खुदा की, तुम पर अब तक वह जोबन है कि सत्रह अट्ठारह बरस की मालूम होती हो। क्या काठी है।

गौरा—हाँ, और तुम ऐसे चार पैदा हो चके।

इस फिकरे पर बडा कहकहा पडा। सब लोट लोट गये।

मिर्जा ने कहा—ले, भई सरन लाल अब इनको सँभालो, अब हम भी फबतियाँ कहने लगेंगे। तुम्हारी ये माशूक हैं, इससे हमने समझा दिया। हम भी कहेंगे।

अब सरन ने कहा—कही इसे भरोसे भी न रहिएगा। आप एक कहेंगे तो ये सौ कहेंगी।

गौरा बोली—हजार में। हम बन्द होनवालो में नही हूँ।

समर ने कहा—अजी तुम्हारे दुश्मन वन्द हो—तुम हजारो को बन्द कर दो। तुम्हारे सामने कोई जबान खोल सकता है भला, क्या मजाल। य क्या शय हैं और मैं क्या चीज हूँ, और सरन किस खेत की मूली हैं। तुम हाजिर जवाब लोग हो साहब।

गौरा ने कहा—आज बरसो के बाद यह एक कद्रदान मिले। ए तुम सलामत रहो हमारे कद्रकरन वाले। मगर यह चुपचाप बैठना क्या मानी। जाम चले।

सरन न इन दोनो को भी जाम दिये। अब जाम पर जाम चलन लगा। आखिरकार वह दोनो पी पिलाकर रुखसत हुए। और सुबह को गौरा मुँह हाथ धोके, किराये की गाडी पर सवार होकर कोई दस बज के करीब कामिनी के पास आई।

कामिनी ने कहा—मुझे रात को नीद नही आई और सपन में दखा कि सरन लाला सामन खडा हाथ जोडके कह रहा है कि अगर मार डालना है तो वैसा कह दो, और अगर यह मजूर है कि मैं कुछ दिन जि दा रहूँ तो जरा गले से लगा लो। बस उसने गले से लिपटाया ही था कि चौकीदार कम्बख्त ने शोर मचाया जागते खँखारते रहो! जो मेरा बस चल्ता तो खड-खडे चुनवा देती, मगर बेबस थी। बडा रज हुआ, कि हाय, दो घडी और क्यो न लिपटाए रहा सुपना ही सही।

गौरा बोली—क्यो घबराती हो। अब थोडी देर और है। ग्यारह बजा ही चाहते है। आधा दिन और है। फिर तो तुम और सरन एक जगह हावें होगे। वह भी रात भर तडपता रहा। घडी घडी चौकीदार से पूछ क्या बजा होगा? रात आँखो में कटी। कभी इधर करवट बदली, कभी उधर। मेरी नीद भी हराम कर दी। मैं दिलासा देती जाती थी कि घबराओ नहीं। इतनी भी बेचैनी नहीं चाहिए। जरा सो रहो। मगर वहाँ नीद कहाँ? ज्या-ज्या रात भीगती थी शौक बढता जाता था। सवेरे गजरदम तडके जरी मेरी आँख लगी थी कि मुझे जगाया। आँख जो खुलती है तो देखती हूँ कि पाँयती बैठा हुआ पाँव दबा रहा है। मैंने कहा—क्यो काँटो में घसीटता है? हाथ जोड

कि अब जल्दी जाओ। मैंने सोचा कि जिसके हाँ जाऊँगी वह क्या कहेगा! पर तुमने न कुछ कहा, मगर और सब घर में क्या कहते कि अभी कल हो गई हैं, तडका नहीं होने पाया कि आज फिर मौजूद हुई। मैंने टाल दिया, अच्छा किया।

कामिनी हँसी और अपनी खुशी जाहिर की कि वादे की सच्ची निकली, बल्कि अगर और सवेरे आई होती तो और तसल्ली होती। हमने जो वादा किया है वह पूरा उतरेगा। उसमें फर्क न पडेगा। देखें तो, है कैसा।

उसके बाद कामिनी ने तुलसा और जैनब की माँ को बुलाया और गौरा को उनके साथ किया और कहा इन दोनों को जगह मालूम है, जिस तरह य कहें उस तरह तुम सरन लाला को शाम को लाना। चिराग जले के बाद। मगर उस बाग के हाते में जरा हौले-हौले बोलना। यह बताओ कि पीके सरन लाला बहक तो नहीं जाते कि गुल-गपाडा मचे और मुफ्त का फजीता बैठे-बिठाए हो। हमारी और उनकी दोनों की आबरू जाय!

गौरा ने समझाया कि—हमारा जिम्मा है, अगर वह चूँ भी करे तो जो चोर की सजा वह हमारी सजा। खातिर जमा रखो! जितना कहेंगे उतना ही होगा। बाल भर फर्क न पडेगा हाय, देख ही लोगी।

यह कहकर गौरा चली और जैनब की माँ और तुलसा उसके साथ हुईं।

यह वही कामिनी है जो अपने पति की जुदाई के सदमों से रातों को चौंक-चौंक पडती थी। यह वही कामिनी है जिसने मन्दिर में तुलसा से कहा था बुआ, यह ऐसा पापी है कि मन्दिर तक में खोट की बात नहीं भूलता। जरा ही सी देर में—

किधर की तबीअत किधर हो गई!

अब सुनिए कि शाम को जैनब की माँ और तुलसा किराये की गाडी पर सरन लाला और गौरा को बिठाकर एक बाग में ले गईं। पक्की सडक से उतरकर ये चारों अँधेरे में बाग की तरफ चले। चलते-चलते सरन न कहा—भई वल्लाह, अच्छी जगह तजवीजी! बिलकुल बीहड। यहाँ तो कोई किसी को मार भी डाले तो कानों-कान खबर न हो। ऐसी बातों के लिये यही जगह मुनासिब है। अब यहाँ चाहे नाचो, चाहे गाओ बजाओ, जो चाहे सो करो।

अब बाग की एक गिरी हुए दीवार की राह से खाई फाँदके दाखिल हुए तो सन्नाटा पडा हुआ। और अन्दर आये। जैसे-तैसे बाग की छोटी-सी कोठी में पहुँचे। वहाँ भी अँधेरा पडा हुआ। इस औरत ने चुपके से तुलसा से कहा कि चलो, बुलाती हैं।

जैनब और तुलसा दोनों सरन और गौरा को छोडकर कामिनी के पास गईं। तुलसा ने आनकर कहा—चलो, उस कमरे में बुलाती हैं।

इतना सुनना था कि सरन का गज भर का कलेजा हो गया। मारे खुशी के आँसू डबडबा आए। उसने दो दफा, उम्र भर में, कामिनी को देखा था, और दोनों दफा इश्क का तीर कलेजे के पार हो गया था।

तुलसा ने कामिनी के पास से आके सरन के सामने गौरा से कहा—कि उन्होंने जैनब की माँ को मारे लिहाज के लौटा दिया और उससे कहा, कि यह मर्द झाडा फूँक करने आया है और कुछ पूजा भी करेगा, तुम दूसरे मजहब की हो, जरी दूसरे कमरे में चली जाओ। उसको यों टाला। मुझसे कुछ पर्दा नहीं है। तुम्हारे सामने खुलेंगी नहीं। जो तुम जरा देर को बाग में टहलो, तो वह शर्म खोलके मिलें।

सरन ने फौरन कहा—गौरा, चली जाओ। वह बोली—मैं खुद जाती हूँ। तुमको नई दुल्हन मुबारक। चैन करो। हमको न भूलना।

यह कह कर गौरा बाहर चली गई और मारे खुशी के फूली न समाई। सरन को साथ लेकर तुलसा ने एक मोमबत्ती जलाई, और इतनी देर में यह पहला ही मर्तबा था कि उस बाग और कोठी में रोशनी हुई।

तुलसा उसको एक और कमरे में जहाँ घटाटोप अँधेरा छाया हुआ था और जो इस रोशनी के सबब से कम हो गया था, ले गई। पहली बात जो रोशनी में लाला सरन ने देखी यह थी कि एक कुरसी पर दीवार की तरफ मुँह किये कामिनी सैंकडो नाज़-अन्दाज़ के साथ बैठी है। शरबती की गुलाबी तगी हुई चादर, जिस पर कामदानी का भारी काम किया हुआ था, सर से पाँव तक ओढे, इत्र से डूबी हुई, चौथी की दुल्हन बनी हुई बैठी थी। जैसे ही सरन ने अन्दर कदम रखा उसने चादर से और भी अपने चेहरे को छिपा लिया। और इस छिपाने और हाथ के उठाने में जो चूडियों की आवाज आई तो उस आवाज ने सरन के कलेजे पर तीर का काम किया और दिल हाथ से जाता रहा, और बेकरारी बढ गई। मगर तुलसा ने इशारा किया और उसने भी सोचा कि माशूको को ज्यादा छेडना ठीक नहीं। तुलसा के साथ-साथ एक और कमरे में गया। वहाँ भी अँधेरा छाया हुआ। उस बत्ती की रोशनी से मालूम हुआ कि एक पलग बिछा हुआ है। बोतलें चुनी हुईं, गजक का सामान भी है; पानी की सुराहियाँ भी रखी हैं। शराब और पानी पीने के गिलास भी हैं। एक दफा उसने सोचा कि हे भगवान यह सपना है, या सचमुच कामिनी की सेज बिछी हुई है। तुलसा ने उसको पलग पर बिठाकर कहा—सरकार बैठें, मैं जाके उनके छडे उतरवा डालूँ। क्योंकि अभी-अभी चूडियाँ बोली थीं; जो छडे भी बोलेंगे तो बडा फजीता होगा। वह भी अभी आती हैं। और मैं जाके रोशनी लिए आती हूँ। तुलसा के जाने के आध घडी के बाद सरन लाला को बग्घी के धडधडाने की आवाज आई। चौकन्ना हुए कि यह क्या आफत आई! कामिनी ने तो इतना

इन्तजाम किया कि शहर से दूर आये, गाडी सडक पर ठहरी। यहाँ परिन्दा पर नहीं मार सकता। जैनव की माँ और गौरा तब से पर्दा किया। कहीं ऐसा न हो कि यह सब मेहनत बेकार जाय, और गैर आदमी आनके मजा किरकिरा कर दे। खैर से गाडी रुक गई और दो ही तीन मिनट में घडघडाती हुई चली और जब इतनी दूर निकल गई कि घडघडाहट की आवाज कान तक न पहुँची तब उनकी जान में जान आई। चलो, बडी बला से छुटकारा मिला। फिर एक दफा सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि कामिनी चली गई हो। हाय अगर ऐसा हुआ तो इसी बाग़ में मर जाऊँगा। यहीं दम निकलेगा। माशूक तो है ही। शायद दिल में आ गई हो कि यह बुरा काम है। दिल पर आ गई, सवार हो गई हो।

इतने में आवाज आई चोर! चोर! और कई आदमी दौड पडे, और सरन लाला काँप उठे कि ग़जब हो गया। ए, चोर कम्बख्त कहाँ से मरा पिटा आ गया! सोचा, कि ऐसा न हो कोई इस कोठरी को खोले और हम धर लिये जायँ। इश्क और कामिनी दाना को भूल गये और काँपने लगे। किसी ने आनके दरवाज़े पर एक दो धप्पड मारा। बस अब तो उनकी जान ही पर बन गई। आधा लहू सूख गया कि अब धर लिये गये। आखिरकार मालूम हुआ कि कोई अफीमी ऊँघ गया था, किसी माली ने उससे दिल्लगी की, वह चौंक उठा और चोर! चोर! करके दौडा, और माली भी उसे बनाने के लिए पीछे दौडे। अब फिर जान में जान आई। तरह-तरह के खयालात उसके दिल में उठ रहे थे, कि अचानक तभी एक किस्म की आवाज ने उसको फिर जिन्दा कर दिया। वह आवाज़ क्या थी, वह छडों की थी।

सरन ताड गये कि तुलसा ने अब कामिनी रानी के छडे पावँ से निकाले। अब हमारा माशूक नाज से आता होगा, अजब अन्दाज से आता होगा। गो अंधेरा घटाटोप छाया हुआ था, मगर ये आँखें जमा-जमा के देखते थे। जरा दूर की भी आवाज धमाके की आई और उनके कान खडे हुए और शौक की आग भडकी। एक एक मिनट एक बरस के बराबर मालूम होता था। इतने में दरवाज़े के खुलने की आहिस्ता से आवाज आई और सरन लाला का कलेजा बल्लियों उछलने लगा।

कामिनी आन कर पलँग पर बैठी।

इधर कामिनी ने पलंग पर कदम रखा, उधर इत्र की खुशबू से सरन लाला का दिमाग अत्तार का तबेला बन गया। और जोश की आग भडकी और उन्होंने आव देखा न ताव, ऐन मस्ती में—और वह मस्ती जो इन्सान को अन्धा कर देती है—हाथ बढाया। अँधेरे के सबब से हाथ पलंग की पट्टी पर पडा। सँभलकर ये आगे बढे, और चाहा कि कामिनी को अपने करीब घसीटें। कामिनी

तो सरन पलग पर चित गिरे! वैसे ही कामिनी ने फिर सरन को उठाया और इस जोर से दबाया कि सरन की ज़बान से हाय मरा! निकल गया। और कामिनी ने उनको चित से पट करके हफ्ते गाँठ लिये और दो घस्से ऐसे दिये कि सरन ने अबकी ज़ोर से शोर मचाया। अरी गौरा, दौड, मैं मरता हूँ, गौरा दौड! मगर कोई जवाब ही नही देता।

सरन ने फिर शोर मचाया, मगर बेकार। अब कामिनी ने पजाबी सवारी भी गाँठ दी। और सरन ने कहा—अब जान गई। और कामिनी ने डडे लगाने शुरू किये। एक-एक डडे पर सरन कहता था—हाय! अरे, किस बला में फँसा! गौरा! अरे गौरा! अरे, यह कहाँ फँसा दिया!

किसकी गौरा और कहाँ की गौरा, कोई हो तो बोले! इतने में कामिनी ने अब इनको लपोटे लगाने शुरू किये। और मारे थप्पड़ो के मुँह लाल कर दिया। और फिर डडो पर डडे लगाए। इतने में एक आदमी ने दरवाजा खोल कर रोशनी दिखाई। और सरन लाला कफन फाडके बोले—गौरा!

यह कहकर उस शख्स पर जो नज़र डाली, जिसको यह कामिनी समझे हुए थे, तो देखते है कि एक लडनिया सैयदी पहलवान तगड़ा जवान ऊपर चढा हुआ है। दम तो योंही फना हो गया था, अब रहा-सहा और भी फना हो गया। रोशनी तो गुल हो गई और सरन लाला को खटपट खडबड की आवाज आने लगी। उन्होने जी कडा करके कहा, भई तुम कौन लोग हो और हमारी जान के क्यो दुश्मन हुए हो? इस पर उस सैयदी ने और दबाया, और खडबड कम हो गया। इसके बाद सैयदी पलँग से उतर गया।

किसी ने पलँग को ज़ोर से पटक दिया, तो सरन लाला गिरे और पलँग को कोई बाहर ले गया। अब उन्होने बहुत शोर-गुल मचाना शुरू किया; और उनको यह भी मालूम हुआ कि कुल कोठी बन्द कर दी गई। यह अमीर आदमी, पोनडो के रईस, मकान, कोठी, बाग, इमलाक, जागीर, गाँव, परामेसरी नोट, लखूखा नकद, जवाहरात, ज़ेवर, आदमी, नौकर-चाकर, मर्द-औरत, घोडे, टट्टू, बग्घियाँ, फर्श-फरोश, सारा अमीराना ठाठ मौजूद; हर वक्त दो-चार मुसाहिब पास। एकाएक ऐसी मुसीबत में पड गये कि आदमी न आदमज़ाद, नौकर न चाकर; एक कोठरी में पडे हुए, चौतरफ़ा से बन्द। सन्नाटा; उल्लू भी नही बोलते। पुकारते हैं तो कोई जवाब देनेवाला भी नही। कही से आवाज भी नही आती। न पलँग, न कुरसी, न बिछौना। सूझता ही नही कि कहाँ है, कहाँ नहीं है। टटोल-टटोलके इधर-उधर जाने लगे। बहुत ही बेकरार; तबीअत हद से ज्यादा परेशान। मौत का सामना। बहुत ही शोर-गुल मचाया। आखिरकार अपनी मुसीबत पर उसको रोना आने लगा। हे भगवान, मैं कहाँ हूँ और किस जुर्म में इस सजा को पहुँचा! हाय!

जो सुकडी-सुकडाई, गर्दन झुकाए, बडी शर्म और हया के साथ—जिसमें बनावट ज्यादा असलियत कम थी—बैठी थी, अब और भी सिकुड गई। उन्होंने बाजू पकडकर यों कहना शुरू किया

प्यारी कामिनी, मेरे जैसे हजारों हजार, बल्कि मुझसे कही बेहतर, तुम पर बल्कि तुम्हारी एडी-चोटी पर सदके। मुद्दत से तुम्हारी मोहब्बत के जाल में गिरफ्तार हूँ, तुम पर मरता हूँ। आज जरा जान में जान आई। गो इस वक्त यहाँ इस कदर अँधेरा था कि हाथ नही सूझता था, मगर जबसे तुमने इस कमरे को रौनक बख्शी, कोठी भर रौशन हो गई। मालूम होता है कि कोहेनूर हीरा किसी ने यहाँ लाके रख दिया, या चाँद का टुकडा इस कमरे में आ गया। जान तक हाजिर है। अगर बस चलता तो कलेजा काटकर तुमको कलेजे में धर लेता। जब इतनी मेहरबानी मेरे हाल पर की है तो एक जरी-सी इनायत करो। मुझ अपने गुलाम को अपना मुखडा चूमने दो। बस उसके बाद अगर और कोई फरमाइश करूँ तो अब्रू के इशारे से कत्ल कर डालो। इस वक्त मेरे दिल का अजब हाल है। एक तो तुम्हें इश्क की मस्ती, दूसरे यह मस्ती कि तुम-सी उठती जवान परी बगल में है। हम और तुम जब एक पलँग पर रान भिडाए बैठे हो तो दिल क्योंकर काबू में रहे। तीसरे तुम्हारी यह चोटी, यह काली नागन, यह दिल डसनेवाली साँपन। इसके इत्र की खुशबू और भी मस्त किये देती है, मारे डालती है। यह कहकर सरन लाला ने बहुत ही मस्त होकर गले लगा ही लिया।

क्या अधर हो रहा है। रनबीर सिंह रन के मैदान में है और वहाँ हर दम अपनी चाहती बीवी को दिल से याद किया करते है, और यहाँ उनकी इज्जत आबरू का शीशा चकनाचूर हो रहा है। भगवान जाने बात क्या है, मगर बात बेढब हो रही थी। शहर से कोसो दूर, अपना न बेगाना।

सरन, एक बेगाना मर्द, तुलसा भी पास नहो, गौरा और जैनब पहले ही अलग कर दी गईं। कमरे में एक जवान मर्द और एक जवान औरत दोनो एक पलँग पर। सितम का सामना है। खैर, पहले तो सरन लाला जरा झिझके, फिर हाथ बढाया। मगर आग और फूस का साथ क्या! जब रहा न गया तो गले लगा ही लिया।

कामिनी जो अब तक दुबकी बैठी हुई थी, अब उससे भी न रहा गया और अपने आप सरन के गले में हाथ डाल दिया। अंधा क्या माँगे, दो आँखें। इस चौथी की दुल्हन का खुद मस्त होकर उसके गले से लिपट जाना, बस, गजब ही तो हो गया। ज्यों-ज्यों सरन लाला मस्त हो-होके लिपटाते थे, कामिनी और ज्यादा जोर करती थी, यहाँ तक कि कामिनी का जोर सवाया हो उठा, और फिर एक दफा ही कामिनी ने जो छाती से छाती भिडाके अब जोर दिया

हो सरन पलंग पर चित गिरे! वैसे ही कामिनी ने फिर सरन को उठाया और इस जोर से दबाया कि सरन की ज़बान से हाय मरा! निकल गया। और कामिनी ने उनको चित से पट करके हफ्ते गाँठ लिये और दो घस्से एसे दिये कि सरन ने अबकी ज़ोर से शोर मचाया। अरी गौरा, दौड, मैं मरता हूँ, गौरा दौड! मगर कोई जवाब ही नहीं देता।

सरन ने फिर शोर मचाया, मगर बकार। अब कामिनी ने पंजाबी सवारी भी गाँठ दी। और सरन ने कहा—अब जान गई। और कामिनी न डडे लगाने शुरू किये। एक-एक डडे पर सरन कहता था—हाय! अरे, किस बला में फँसा! गौरा! अरे गौरा! अरे, यह कहाँ फँसा दिया!

किसकी गौरा और कहाँ की गौरा, कोई हो तो बोले! इतने में कामिनी ने अब इनको लपोटे लगाने शुरू किये। और मारे थप्पडो के मुँह लाल कर दिया। और फिर डडो पर डडे लगाए। इतने में एक आदमी ने दरवाज़ा खोल कर रोशनी दिखाई। और सरन लाला कफन फाडके बोले—गौरा!

यह कहकर उस शख्स पर जो नज़र डाली, जिसको यह कामिनी समझे हुए थे, तो देखते हैं कि एक लडनिया सैयदी पहलवान तगडा जवान ऊपर चढा हुआ है। दम तो योही फना हो गया था, अब रहा-सहा और भी फना हो गया। रोशनी तो गुल हो गई और सरन लाला को खटपट खडबड की आवाज़ आने लगी। उन्होने जी कडा करके कहा, भई तुम कौन लोग हो और हमारी जान के क्यो दुश्मन हुए हो? इस पर उस सैयदी ने और दबाया, और खडबड कम हो गया। इसके बाद सैयदी पलँग से उतर गया।

किसी ने पलँग को ज़ोर से पटक दिया, तो सरन लाला गिरे और पलँग को कोई बाहर ले गया। अब उन्होने बहुत शोर-गुल मचाना शुरू किया, और उनको यह भी मालूम हुआ कि कुल कोठी बन्द कर दी गई। यह अमीर आदमी, पोतडो के रईस, मकान, कोठी, बाग, इमलाक, जागीर, गाँव, परामेसरी नोट, रुपया नकद, जवाहरात, जेवर, आदमी, नौकर चाकर, मर्द-औरत, घोडे, टट्टू, बग्घियाँ, फर्श-फरोश, सारा अमीराना ठाट मौजूद, हर वक्त दो चार मुसाहिब पास। एकाएक ऐसी मुसीबत में पड गये कि आदमी न आदमज़ाद, नौकर न चाकर, एक कोठरी में पडे हुए, चौतरफा से बन्द। सन्नाटा, उल्लू भी नही बोलते। पुकारते हैं तो कोई जवाब देनेवाला भी नही। कही से आवाज़ भी नही आती। न पलँग, न कुरसी, न बिछौना। सूझता ही नही कि कहाँ हैं, कहाँ नहीं हैं। टटोल-टटोलके इधर-उधर जाने लगे। बहुत ही बेक़रार, तबीअत हद से ज्यादा परेशान। मौत का सामना। बहुत ही शोर-गुल मचाया। आखिरकार अपनी मुसीबत पर उनको रोना आने लगा। हे भगवान, मैं कहाँ हूँ और किस जुर्म में इस सज़ा को पहुँचा! हाय!

इस परेशानी में कभी बैठ जाता था, कभी इधर-उधर टटोलके रास्ता ढूंढ़ता था। अँधेरे में रास्ता कहाँ। इधर टक्कर खाई, उधर टक्कर खाई। यह गिरा, वह गिरा। कभी सर में चोट लगी, कभी पाँव में। अब इस कदर आजिज हो गया कि जार-जार रोने लगा। इतने में एक बजा, और उसने एक दरवाजा पाया और जान पर खेलकर उसको खूब जोर से धमधमाया। इस आवाज को सुनकर एक आदमी ने शोर मचाया अरे, कौन है? दरवाजा तोड़े डारत है! इनकी जान में जान आई कि परमात्मा का शुक्र है, इन्सान की आवाज तो सुनाई दी। कहा—भाई, हम एक मुसीबत के मारे हैं। हम पर रहम करो और दरवाजा खोल दो!

इतना सुनना था कि उसने और भी शोर मचाया—खान साहब! खान साहब! अरे देवी भाई हो! इन्होंने आवाज सुनी। उसके जवाब में किसी ने कुछ कहा, जो इनकी समझ में अच्छी तरह न आया। मगर मुर्दे से जिन्दा हो गये—कि कहीं दरवाजे तो खुलें। बला से, चोर ही बनाए जायँ, मगर इस काल-कोठरी से कहीं नजात मिले। अब उन्होंने दो आदमियों को बातें करते सुना। एक ने कहा इस कोठी में कोई भूत है! दूसरा बोला, कोई भूत नहीं, तुम्हारा सर है! इस पर ये बोल उठे—भाई हमको बचा लो! तब तो दूसरा बोला—अरे यार, सच कहते हो! अब तू कौन है? जवाब दिया—भाई, मैं मुसीबत का मारा हूँ। पूछा—बोलता कहाँ से है?

सरन ने मारे घबराहट के कहा—मुँह से। वह बोला—मुँह से नहीं तो और कहाँ से बोलेगा! तू है किस जगह? कहा—कोठी में बन्द हूँ।

इन दोनों की राय हुई कि कोई आसेब जिन है। खान साहब को, जो कोठी के दारोगा थे, बुलवाया। वह परेशान होकर आये और जब 'आसेब' का नाम सुना, तो बहुत झल्लाए कि हम मीठी नींद सो रहे थे खामखा दो बजे जगा दिया! आसेब की एसी-तैसी! कसमें खाकर कहा, अच्छी तरह आसेब की आवाज आती है। ओ बे आसेब, बोल!

सरन ने कहा—जनाब खाँ साहब, मैं आसेब नहीं हूँ। आदमी हूँ! अब तो खाँ साहब भी चौकन्ना हुए। ऍं ए! मैं तो तुम लोगों का झूठा समझता था। मगर यह तो ठीक निकला। फिर अब दरवाजा खोलो, ना।

एक ने कहा—सरकार, न खोलो। तड़का होने दो। दूसरे ने कहा—साहब मालियों को बुलवा लो।

माली और कुल बागवाले बुलवा लिए गये। और चिराग आया, और मशाल जलाई गई और दरवाजे खोले गये। खोलते-खोलते जब उनके कमरे का दरवाजा पास आया तो किसी ने ईंट हाथ में ली। किसी ने ढेला, किसी ने लठ ताना। एक माली ने मेंहदी काटने की कैंची ले ली, और कहा—लोहे से

भूत भागता है! अब डरते-डरते सरन लाला, बल्कि यों कहो सरन का भूत खोला गया। रोशनी तेज थी। देखा तो एक नौजवान, खूबसूरत आदमी, उम्दा लिबास पहने हुए, इत्र में डूबा हुआ। आप कौन? कहा, हजूर, मैं क्या अर्ज करूँ कि कौन हूँ। मुसीबत का मारा हूँ। आप लोगों ने मेरी जान बचाई, वर्ना मैं तो इस कँदवाने में मर गया होता।

खाँ साहब ने कहा—अगर आप इन्सान के जिस्म में किसी मुर्दे की रूह हैं तो इसमें शक नहीं कि कोई पाक रूह हैं, खबीस रूह नहीं हैं। उसने कहा, जनाब खाँ साहब, खुदा गवाह है। मुझे आपने जिन्दा कर लिया। इतने में एक माली ने उनको देखकर कहा—क्या सरन लाला है? अरे लाला, तुम कहाँ?

सरन—कौन, पूरन माली? खैर, कोई पहचाननेवाला तो है।

पूरन—अरे हजूर, हम तो बाप-दादा के नमक खाए हुए हैं।

खान—पूरन, तुम पहचानते हो इनको?

पूरन—हजूर, बीस बरस तक नौकरी की है।

खान—आप इस खाली कोठी में आये कहाँ से? और क्यों आये? और बन्द क्योंकर हो गये? यह माजरा क्या है? हमारी समझ में कुछ नहीं आता। दो बजे रात को आप इस कोठी में कहाँ से बन्द हो गये?

सरनलाला ने खान साहब को अलैहदा ले जाकर कुछ-कुछ हाल बयान किया और कहा, मेरे साथ दगा की गई। अब आप मेहरबानी करके एक आदमी मेरे साथ कीजिए। मैं इन सब के लिये सौ रुपये इनाम दूँगा।

खान साहब आदमी भलेमानस थे। कहा, आप रईस के लड़के होकर अपनी इज्जत इस तरह खोते हैं। कसम खुदा की, मैं अगर इस वक्त चाहूँ तो गड़े-खड़े आपको जलील करडालूँ। सारी इज्जत खाक में मिल जाय। आप पराये मकानों में आके बदफेलियाँ करते हैं। फिर आप चाहे हजारों खर्च कीजिए, क्या होता है। ले, खबरदार जो अब कभी ऐसा बेहूदा काम किया! और वह गँधी कौन है! यह सब है क्या मामला। आपकी गर्दन सूजी हुई है।

सरन ने कहा—शर्म आती है कहते हुए। वह पहलवान, मैं [illegible] क्या जानूं। उसने डडे लगाने शुरु किये।

तीन बजे के वक्त सरन लाला खान साहब के टट्टू पर सवार होकर चले। और पूरन माली उनके साथ हुआ। रास्ते में पूरन ने उनसे कहा—लाला, आज हजूर यहां कहां! हम पच समझे कि भूत है। जान निकल गई। देखा है तो सरन लाला! अरे, लाला यहां कहां! [illegible] कि हुजूर यहां कहां [illegible]

सरन लाला पूरन के मिलने से [illegible] पूरन ने खान साहब और [illegible] मालियों से कह दिया कि यह [illegible] है, [illegible] इसकी क्या इज्जत है। वर्ना [illegible]

देते। उनको यह भी अफसोस था कि पूरन माली ने हमको इस हालत में देखा। रास्ते में अपने ऊपर अफसोस करते जाते थे कि यह क्या हरकत हमसे हुई। बुरे काम का बुरा नतीजा है। दिल ही दिल में कसमें खाते जाते थे कि अब कभी ऐसे काम के पास न फटकेंगे। अब से आये, घर से आये। पूरन माली हर कदम पर नसीहत करता जाता था, और उसकी नसीहत उनको तीर की तरह लगती थी। मगर ज्यों-त्यों करके पाँच बजे के पहले सरन लाला मकान पर पहुँचे। फाटक खुला और आदमी, नौकर-चाकर सब दौड पडे।

चौकीदार ने कहा—सरकार, बडी ढूँढास पडी। बडे लाला ने खाना नही खाया। आदमी दौडाए गये। हुजूर कही न मिले। एक और आदमी ने कहा—सरकार, ऐसा न किया कीजिए।

ये सीधे कोठी में आये। मिर्जा और गौरा और लाला गोपीचन्द बैठे है। वहाँ देखा लैम्प रोशन है।

मिर्जा साहब—अरे, यार, कन्हैया हो, वल्लाह!

सरन—(खिदमतगार से) एक सौ रुपया पूरन माली को दो। एक सिपाही को साथ कर दो कि जहाँ यह जाय, यह रुपया ले जाय। फौरन इस हुक्म की तामील करो। और बोतल लाओ। हम मुर्दादिल हैं। इस वक्त खिदमतगार तो हुक्म की तामील के लिए गया। और इधर मिर्जा साहब ने बोतल उठाकर एक गिलास में खूब उँडेली, और कहा—सरन, बस एक साँस में पी जाओ!

सरन तो वाकई मुर्दा से थे, फौरन पी गये, और पीकर कहा—भई, जान में जान आई। परमात्मा ने जान बचाई। किस मरदूद को यकीन था कि सवेरा होगा।

मिर्जा ने कहा—अब मैं जूते से खबर लेता हूँ।

सरन—दुबले मारें शाह मदार। भाई, खुदा हर भलेमानस को इस मुसीबत से बचाए।

मिर्जा—मुसीबत! हमने तो गौरा की जबानी एक खुशखबरी सुनी थी और तुम्हारी किस्मत पर रश्क कर रहे थे।

सरन लाला ने एक गिलास और चढाई और सारी आप बीती कह सुनाई। कामिनी का नाम नही लिया, न गौरा ने कामिनी का जिक्र किया था। दोनो ने यही कहा कि एक ऐसी औरत है जिससे बढकर हसीन दूसरी इस शहर में नही पैदा हुई।

सरन की दास्तान सुनकर सब को रज हुआ। और सरन ने आँखो में आँसू लाकर गर्दन दिखाई, जो डडो के सबब से सूज गई थी। और जब उसने रोते हुए कहा कि मेरा सारा बदन दर्द कर रहा है और गालो पर जोर-जोर से लप्पड और थप्पड लगाए गये, तो सबको बहुत ही अफसोस हुआ।

गोपी—भई, खोलके बताओ तो इसका बन्दोबस्त किया जाय। यह तो खराब बात हुई।

मिर्जा—आखिर साथ कौन ले गया था, इसका पता लगाइए।

समर—अब पता-वता रहने दीजिए और फजीता होगा। साथ तो गौरा ले गई थी, और यह कोई दुश्मन नही, मैं जानता हूँ। इनके साथ खुद दगा की गई, और गौरा को कानो-कान खबर नही।

सरन—कोठी चौतरफा से बन्द, बाग सुनसान। एकदम सन्नाटा। आदमी का नाम नही, अपना न बेगाना। जिस काल-कोठरी में हम थे, वहाँ अँधेरा घुप पडा हुआ था। जी घबरा जाता था। कुत्ते तक की आवाज नही सुनी। दो दफा रोया। गौरा को बडी हसरत से पुकारा मगर जवाब नदारद।

गोपी—तुमको पहले ही रवाना कर दिया था, गौरा बीवी।

गौरा—मुझसे पहले तो कहा कि कमरे के अन्दर न जाओ, हमारी बीवी तुम्हारे सामने उनसे बातें करने में शर्माएँगी। मै कोठी के बाहर ही के कमरे में रही। थोडी देर के बाद मुझसे किसी औरत ने आके कहा कि—यह हुक्म है कि तुम गौरा और फलानी-ढमकी को लेकर जाओ। मैंने कहा, मैं जरा मिल तो लूँ। कहा, कुछ सिडन हुई हो? वहाँ परिन्दा तो पर मार नही सकता, तुम्हारी हमारी कौन कहे। मैं समझी, मतलब हासिल हो गया। खुश होकर गाडी पर सवार हुई। सोचती जाती थी कि सरन लाला से आज इनाम लूँगी। अब यह क्या मालूम था कि उनके दुश्मन इस तबाही में पडेंगे। जो मैं जानती तो मर जाती, वहाँ से न टलती। वहाँ इस बिचारे का क्या हाल हुआ होगा।

सरन—गौरा के सर की कसम, यह किस मरदूद को उम्मीद थी कि तड़का होगा। पहले तो लोग मुझे भूत समझे। मैंने कहा था ना, अभी, जब दरवाजा खुला और मैंने अपनी बीती बयान की तो दारोगा ने आदमियो और मालियो को बहुत डाँटा। इतनी बडी बात हो गई और तुमको जरा खबर नही। अगर कोई किसी को कत्ल करके डाल दे, तो भी तुमको खबर न हो, और हम और मालिक तो धरे जायँ।

मिर्जा—आखिर कुछ तो हाल मालूम होना चाहिए। यह औरतो का काम नही है। मगर इतने में दरबान ने कहा—सरकार कोई आया है और सरकार को बुलाता है। पूछा—कौन है, भई? जाकर देखा तो हँसिया। देखते ही गले से लगाया और यह भी लिपट गई।

गौरा—कौन है? कोई नई करी तो नहीं है? मैं सामना न करूँगी।

मिर्जा—अरे भई कौन साहब है?

सरन—साहब नही मुसम्मात हैं।

मिर्जा—कौन मुसम्मात?

हँसिया—तुम्हारी छोटी बहन।

मिर्जा—कौन है नई।

हँसिया—(सरन के कान में चुपके से) मैं तो दिन ही को भागने को थी मगर न आ सकी। ऐसा ही बिजोग पड गया। मैं तो रस्सियाँ तुडाके आती, जो अपने बस की बात होती। मैं भला वहाँ कब ठहरनेवाली थी। सबके सब हमारे दुश्मन हो गये हैं। एडी से चोटी तक होने दो। हमको तो तुमसे काम है।

सरन—अच्छा अब कचहरी बरखास्त।

मिर्जा—अरे, हँसिया आई होगी। अब मेरा यार किसकी सुनता है भला? अच्छा भई, रुखसत!

उन्नीसवाँ अध्याय
क्षत्रीपन की रग ने जोश किया

कामिनी आज कुछ उदास-सी मालूम होती है। कोई बीमारी ईश्वर की दया से किसी किस्म की नही है। बात भी ऐसी नही हुई कि दिल बेकाबू हो जाता या परेशानी का कोई खास सबब होता। क्या बात थी कि ठडी-ठडी साँसें भरन लगी। थोडी देर सास के पास बैठी, वहाँ से कोठे पर आई और यहाँ कमला और जैनब की माँ से दिल का हाल कहन लगी। इन्ही दो चार से साफ-साफ दर्द-दुख का हाल कहती थी।

कमला—क्यो उदास क्यो हो?

कामिनी—हमें खाना-पीना, पहनना ओढना हँसना-बोलना कुछ अच्छा नही मालूम होता। यो तो जो खाती थी वह खा सकती हूँ और खाती ही हूँ। जो पहनती थी वह पहन सकती हूँ। कोई रोकनेवाला नही, मगर मैं सोचती हूँ कि अगर मैंने सोलह सिंगार किये भी तो क्या, किसको दिखाऊँगी। जब वह जिस पर मेरी जिन्दगी का दारमदार है, मुझसे मजिलो दूर है, कहाँ मैं, कहाँ वह। तो मैं किसके लिए सिंगार करूँ। मैं अपने दिल को हर तरह ढारस देती हूँ, समझाती हूँ, बहलाती हूँ, कि यह कोई नई बात नही है। मगर दिल नही मानता।

कमला—दिल को न समझाओगी तो क्या करोगी। जहाँ तक हो सके दिल को काबू में रखो। नही तो और भी ज्यादा परेशानी होगी।

कामिनी—मैं अपने दिल का हाल किससे कहूँ। लाख-लाख समझाती हूँ मगर दिल काबू में नही आता।

इतने में जैनब की माँ आई। कामिनी ने थोडी देर दिल बहलाने के लिए जैनब की माँ से इधर-उधर की बातें की।

[illegible]। उसने कहा—आज खबर तो मैंने [illegible] के घर गई थी। वहाँ उनका लड़का जो [illegible] घर आया। खुशी के शादियाने बज रहे हैं। [illegible] छोटे-बड़े सब खुश हैं। यह [illegible] की तरह, या खुदा जाने कहाँ लड़ाई थी। [illegible] और, भाई, बेटे, बहनों से घर भरे और [illegible] मिन्नतें खुशामद कर रहे हैं कि बेटा तुम [illegible] ज़िन्दगी के दामदार तुम्हीं हो। इस बुढ़ापे में [illegible]। तुम्हारे पास गाँव-गिराँव, देहात-बाग मकान, [illegible] पास रहो। अब हम लोग कुछ दिन के मेहमान हैं। [illegible] उसके बढ़के ख्वाहिश हमारे सामने और क्या है। मुझे उन दोनों बुड्ढे-बुढ़ियों का हाल देखकर तरस आया। और एक तरह [illegible] हैं। बूढ़े आदमी, और बहुत ही बूढ़े। मगर ये लड़के [illegible] जानते हैं। उसकी अब तक शादी भी नहीं हुई है। वह कहता है [illegible] छुट्टी खत्म होने पर फिर फौज में जाके भरती होगा। [illegible], कुछ नाम तो उसका बढ़ नहीं गया है। छुट्टी लेके आया है। जब छुट्टी खत्म हो जायगी तो दो-चार दिन पहले अपने काम पर चला जायगा।

[illegible]—है है, कितना बेदर्द लड़का है। माँ-बाप का इकलौता लड़का और लड़ाई-भिड़ाई का इतना शौक कि चाहे बीबी गुड़िया के मरे चाहे बाप मरे यह अपनी होनी करेगा।

कामिनी—जब दिल भी मान।

जैनब—तो खुदा न खास्ता, आपके दुश्मनो पर क्या मुसीबत पडी।

ठाकुर रनवीर सिह हर रोज एक खत भेजते थे और जिस दिन इत्तफाक से खत नही भेज सकते थे, उस दिन तार रवाना करते थे। उससे उनकी माँ और सब रिश्तेदारो को बडी तसल्ली होती थी। मगर अबकी दफा कुछ ऐसा इत्तफाक हुआ कि न खत आया न तार। इससे सबको किसी कदर फिक्र थी, कि इसका क्या सबब है। रोज बिला नागा दो वक्त बडे डाक-घर आदमी जाता था। मगर बैरग वापिस आता था। आज जो आदमी ने आके खत दिया, तो उसकी जान में जान आ गई, और खुशी के शादियाने बजने लगे। और कामिनी ने उसी दिन खत लिखा और रजिस्टरी करके भेजा और कमला को बुलवाकर खुश खबरी सुनाई।

कामिनी उस रोज बहुत खुश थी कि तीन दिन के बाद पति का खत आया और मालूम हुआ कि खैरियत से है। दिल को बडी तसकीन हुई। और बहुत खुश थी क्योकि तीन दिन तक खत के न आने से उसको एक तरह की फिक्र-सी हो गई थी। खत का जवाब रजिस्ट्री करके रवाना किया। उस रोज कोठे पर जाके धूप में सर धोकर बाल सुखा रही है और इठलाती हुई छतो पर जा रही थी। जब बाल सूख गये तो नाइन ने हिना का सोलह रुपय सेर वाला तेल डाला और चोटी सँवारी और हलकी सन्दली रग की महीन शरबती की सारी और आस्तीनोदार फँसी हुई कुरती, गुलनार रँगी हुई, पहनी और मोतिया का इत्र मलकर फूलो के गहने पहनके छत पर टहलने लगी, उस वक्त अजब आलम था। कुदरती मस्ताना चाल। न पिये और झूमती जाय! चुलबुलाहट। एक अजब शान से, नाज के साथ चहलकदमी कर रही थी। और सामने एक कोठे की रावटी पर एक गबरू जवान कोई बीस बरस का सिन, टिकटिकी बाँधे जोवन के मजे दूर ही दूर से लूट रहा था। उसकी भी उठती जवानी—बस, जी चाहता था कि जान पर खेल जाय कोठे से उड कर पहुँचे। जब कामिनी से चार आँखें होने को होती तो छिप जाता, कोन में हो जाता कि उसकी नजर न पडे, और उसको यह न मालूम हो कि कोई गैर मर्द देख रहा है।

नाइन ने कामिनी से रनवीर सिंह का हाल पूछा, कि अब कब से खत नही आया। उसने कहा, खत अभी कल भी आया। हमने जवाब भी उसी दम लिखके भेज दिया। अभी कोई ठीक-ठीक हाल नही मालूम हुआ। अब दिल को ढारस देना मुश्किल है। मगर क्या करूँ। कोई इलाज ही नही। छत्री की जिन्दगी बडी कठिन से कटती है। हर घडी तलवार की धार पर, मगर कुछ डर की बात नही। परमेशर मालिक है। कभी-कभी बहुत तडपती हूँ। जैसे बच्चा बिन दूध

के हुड़कता है। खत और तार के आने से जान में जान आ जाती है। जैसे खेत पर मूसलाधार दोगड़ा बरस गया।

नाइन ने कहा—बहू इधर-उधर की बातो से दिल बहलाओ, जरा मन में धीरज रखो। देखो तो कैसा नाम करके आते हैं, कि इस शहर के किसी राजपूत ने न किया हो। उँगलियाँ उठने लगे कि वह आये। कामिनी बोली—उम्मीद तो यही है। अब कुछ और बातें करो! हमारा दिल इस वक्त भर आया। (ठंडी साँस भरकर) क्या जाने इस वक्त कहाँ हों, लड़ाई में हो, रन में हों, धूप खाते हुए, गोलियो में दुश्मन उनके हों।

ये बातें हो ही रही थी कि उस गवरू से न रहा गया, और शामत जो आई तो कोठे पर से इश्क़िया शेर गाने लगा।

कामिनी ने जो फिरके देखा तो बीस बरस का एक लौडा, ऐनक लगाए सामने खड़ा घूर रहा है और शेर पढ़ रहा है। आग-भभूका हो गई और नाउन से कहा—हमारे देवर को बुला तो। उसने जो सुना कि कोई मर्द बे 'पर्दा' पुकारे कोठे पर आ गया, तो इस तरह कोठे पर आया जैसे तीर कमान से छूटता है या गोला तोप से निकलता है। कोठे पर आया तो अपने पडोसी को देखा कि सामने खड़ा शेर पढ रहा है। बस आँखो में खून उतर आया, और पुकारकर कहा—अगर अपने बाप का है तो ठहर जा! मैं आता हूँ, अभी जान लूँगा! यह कहकर नीचे उतर आया, और बाप की तलवार कमरे से लेकर, म्यान फेंककर नगी तलवार लिये दौड़ पड़ा और उसके घर में घुस गया। औरतें काँप उठी। और उस लड़के की माँ, जिसको यह चची कहता था, उसको लिपट गई।

चची—ए पूत, यह तलवार किस पर चलाओगे? चची के पूत पर?

देवर—अच्छा आप ही बताइये कि भलेमानस की औरतें जो अपने छत पर नहाती हो, उनको जाके झाँकना मूड़ काट लेने का काम है कि नही? हम तो बाप का सिर काट लें।

एक औरत ने पर्दे में से कहा—अच्छा तो तलवार हमको दो। हम औरत-बाँदी रख दे तलवार। कल का लौंडा, और हम औरतो को धमकाता है। उसने कहा—नही भाभी, तुमको धमकाएँ यह हमारा धर्म नहीं है। हमारा धर्म यह है कि जो तुम्हारी तरफ आँख उठाके देखे उसकी आँखें तलवो के तले मल डालें!

वह बोली—तो अच्छा, तलवार हमको लाके दे दे।

उसने तलवार कोठरी के पास रख दी। उसके बाद चची ने उस लड़के को कोठे पर से बुलवाया और कहा: यह तेरे बड़े भाई हैं। इनके हाथ जोड़!

वह लड़का अभी तीखा और नौजवान था, हाथ तो नही जोड़े; मगर नीची

निगाह करके झेंपा हुआ खडा हो गया। कामिनी के देवर की आँखें कबूतर के खून की-सी लहू की बोटियाँ।

चची ने कहा—बेटा, अब जाने दो। माफ करो। भूल चूक हो ही जाती हैं। भाई है तुम्हारा। अब हम उस रावटी ही को खुदवाए डालते हैं। न बखेडा रहे, न टटा।

पर्दे में से जो औरत बातें करती थी, वह उसकी बडी भावज थी। मगर कामिनी के देवर से पर्दा करती थी और यह उसका लिहाज़ करता था। उसने कोठरी में से कहा—जो खुद इसी की दुल्हन होती तो दो-चार का खून अब तक कर चुका होता। ऐसा खून सर पर चढ जाता है!—कान पकड अपने!

कामिनी के देवर ने मुस्कराते हुए अपने कान पकडे। इतने में कामिनी की सास और दो महरियाँ दौडी आई। दरवाज़े से दरवाज़ा मिला हुआ था। और आनके कामिनी की सास ने लडके को बहुत डाँटा। तू पागल सिडी सौदाई हो गया है? इस अँग्रेज़ी में भी नवाबी की बू नही गई? कल को मेरे ऊपर तलवार लेके दौडना! चल, जा, घर में जाके बैठ। और पडोसी लडके की तरफ मुडके कहा—बेटा, तुम भावजो से इस तरह बर्ताव करते हो! एक औरत नहा रही है। तुम्हें चाहिए था, हट जाते। न कि और डट गये। अपने घर में जिस तरह चाहता है आदमी बैठता है।

उसकी माँ ने भी लडके को डाँटा, और कामिनी के देवर ने तलवार की कासी घर से मँगवाई, और तलवार लेकर शर्माता हुआ चला। पडोसिन ने कामिनी की सास से कहा—अब हम रावटी ही को खुदवाए डालते है। उसने कहा—तुम्हारा बेटा जिए। इस झगडे को दूर कर दो। कामिनी की सास इधर-उधर की बातें करके घर गई, और वहाँ जाके लडके को बुलवाया। सुना, तलवार रखके बाहर गया है।

कामिनी—मैंने भी बुलाया, मगर न रुके, भाग गये।

सास—कैसी वाहियात बात की थी। कोई ऐसा करता है?

कामिनी—जैसे दुश्मनो को कोई सौदा हो जाता है। हैं-हैं, नगी तलवार लेके दौडा गया। उफ गज़ब ही हो गया था।

कारिन—और उसको तो कहो। उसने क्या कम लुच्चापन किया था?

कामिनी—उसका भी लुच्चापन हुआ।

सास—बडा लुच्चापन किया। मगर उसको इतनी जुरंत न करनी चाहिए थी।

कामिनी—यह तो बिल्कुल सौदाई ही हो गया। और जो कहीं रास्ते में मिल जाता तो खून-खच्चर हो जाता। उफ, क्या सूझी।

सास—नहीं, रोज़-बरोज़ उजड्ड होता जाता है। जब उसकी भावज ने डाँटा और दावे से डाँटा कि उसके सामने लगा मेला करता था तो भीगी बिल्ली की तरह तलवार रख दी और चुप हो रहा।

कामिनी—चलो, बड़ी खैर हुई। परमेशर ने बहुत बचाया।

बारिन—पास-पड़ौस कहीं ऐसा हो सकता है कि छत पर से घूरो और ताक-झांक करो! वाह, बहू-बेटियों में कहीं ऐसा होता है! हम तो सर काट लें! वाह, कहीं ऐसा होता है, कहीं एसा हुआ है! कभी ऐसा कहीं हुआ है? दोनों जहान में नहीं हुआ है। नहीं, नहीं जो हुआ है तो बताओ। वाह हुआ है, हुआ है, हुआ है कहीं—हुआ नहीं, हो चुका!

कामिनी—(मुस्कराकर) बारिन बस चुप रहो।

सास—इसको क्या हुआ? क्या है?

जैनब—(हँसती हुई) अरे बारिन सिड़न हो गई हो?

बारन—नहीं। तुम कहती हो ना, कि ऐसा होता है। हम कहते हैं कि नहीं होता। कभी नहीं होता। भई, जो कभी भी होता हो, छत पर से घूरो किसी बहू-बेटी को। बड़े घूरनेवाले। लाओ तो तलवार। लाओ तो मेरा खाँड़ा। घूरते हैं, बड़े घूरनेवाले!

जैनब—(बहुत हँसकर) अरे पगली, तुझे यह हो क्या गया है।

बारिन—और तुम बड़ी वह बनके आई हो! कि बहू-बेटियों को घूरो। छत पर से घूरा। लाना मेरी तलवार! ले, घूरो तो! आओ!

घर भर का मारे हँसी के बुरा हाल था। और बारिन सिवाय इसके और कहती ही न थी—कि बड़े घूरनेवाले। बहू-बेटियों को घूरने चले! लाना मेरी तलवार! ला तो तलवार!

असलियत इसकी यह थी कि बारिन से कामिनी ने वादा किया था कि जिस दिन खत आयेगा तुझको शराब मँगाके पिला दूंगी।

बारिन ने जो चुस्की पर चुस्की लगाई तो बहुत तेज हो गई।

बीसवाँ अध्याय

सोग

सुबह का वक्त, कामिनी और स्मृता नहा धोकर, पूजा करके बातें कर रही थीं कि डाकिये ने कई खत भेजे। एक खत रनवीर सिंह का था

"मेरे कलेजे से ज्यादा प्यारी, कमर, ईश्वर जानता है कि

तरस रही हैं ये आँखें, मुहाल है दीदार!

अब दिन-रात तुम्हारी याद रहती है। और यह तो खूब अच्छी तरह मालूम हो गया है कि हमारा दिल इस किस्म का नहीं कि तुम्हारे बगैर इतने दिन अकेले

सकें। कमन, ईश्वर जानता है कि अगर जगत हँसाई का खौफ न होता तो मैं चला आता। मगर डरता हूँ कि लोग यही कहेंगे कि अच्छे क्षत्री, अच्छे रनसूर हो। बाप दादा का नाम खूब रोशन किया। चार ही दिन में नोवदम पाली-वाहर। गरज कि गज भरी हँसिया है न उगलते, न निगलते बने।

"सात दिन से मेंह लगातार बरस रहा है। झडी लगी हुई है। इसलिये लडाई आजकल रुकी हुई है। और ऐसे में तुम और भी ज्यादा याद आती हो। रन में सिवाय मार धाड के और कुछ नहीं याद, और जिस वक्त गोलो और गोलियो की बारिश में घोडा कडकडाते जाता हूँ, मालूम होता है फूलो की बरसा हो रही है। जी चाहता है हरदम नगी तलवारो ही के साये में रहूँ। लेकिन, बस, यह बेकारी कमबख्त मारे डालती है। और जाहिर है कि इस परदेस में तुम सब के सिवा और कौन याद आयेगा। तुम्हारा खत सौ-सौ दफा पढता हूँ, और सौ ही सौ बार चूमता हूँ। स्मृता बहन रोज याद आती है। उनको यह खत पढके सुना देना। और कहना—लिखता है कि मेरी प्यारी कम्मन की तसल्ली करती रहो और वह तुम्हारी तसल्ली करे। भला नौचन्दी जुमेरात का तमाशा देखन जाती हो? आते के साथ ही पहले नौचन्दी जुमेरात तुमको दिखाऊँगा। परमात्मा वह दिन जल्द दिखाए। तुलसा बुआ और जैनब की मा से खैरियत कह देना।

रनबीर।"

कामिनी ने स्मृता को खत पढकर सुनाया। दोनो खुश हुइ। तुलसा ने सैकडो दुआएँ दी। जैनब की मा भी थोडी देर में आई। उसने कहा—अल्लाह लाखो बरस की उम्र दे! इस यादआवरी को देखिए कि समुन्दर-पार बैठे हुए हैं और तुलसा, जैनब की माँ—हम परजो—को याद करते हैं। रियासत के यह मानी है। नही इत्ते बडे अमीर-कबीर इतने बडे आदमी, अल्लाह इससे और मरतबे बढाए!

दूसरे रोज सुबह को जब इन दोनो ननद भावजो ने पूजा पाठ से छुट्टी पाई तो महताबी पर कौआ जोर-जोर से बोलने लगा।

कामिनी—अच्छी खबर ला तो दूध-बताशा खिलाऊँ।

स्मृता—हम सान से चोच मढ दें।

जैनब—भई अच्छी खबर न आई हो तो अपने दो नामो में से एक नाम बदल डालूँ।

कामिनी—ए, मैं हँसती थी। कौवे और तोता-मैना की बोली से क्या होता है।

तुलसा—कागा सोने से मढा दूँ तोरी चोच।

स्मृता—कल से मेरी बायी आँख फडक रही है।

कामिनी—फडकत है मोरी बायी अँखिया, आज सैयाँ नही मोरे अँगना! फरकत है

स्मृता—नौचन्दी-जुमेरात वहाँ भी न भूले। अब तो कोई आठ दिन होंगे, नौचन्दी को। बडा लुत्फ आता है।

कामिनी—नौचन्दी देखने जाती हो—यह सवाल हमसे हुआ है। पूछो, नौचन्दी तुम्हारे बगैर किसको पसन्द आयेगी! तुम्हारे दम से सब है।

इतने में धन्नो ठकुराइन खूब बनी ठनी हुई छत पर आयी। खत का मुख्तसर-सा उनको सुनाया गया। उन्होने कहा, हमारे नाम भी खत आया है। लिखा है, भाभी तुम्हारा जोबन यहाँ भी याद आता है! कामिनी मुस्कराकर बोली—यह बात हमारी समझ में नही आती कि या तो इतनी अंग्रेजियत मिजाज में है कि हँसना-बोलना, उठना-बैठना सब अंग्रेजी में, और उसके साथ यह वाहियात हँसी भावज से कैसी। धन्नो ने कहा—बस, बस मेरे दिल की बात कही! कहाँ तो इत्ता अंग्रेजपना और कहाँ यह हँसी दिल्लगी! जैनब की मा ने कहा—ए बीवी, बडी भावज से हँसी दिल्लगी सभी कही होती है।

धन्नो—आज यह कौआ बहुत कावें-कावें कर रहा है। अरे कोई अच्छी-सी खबर ला, तो दूध-बतासा खा! इतने में घडियाली ने घटा बजाया। और जैनब की माँ ने कहा—फतेह है। स्मृता खुश होकर बोली—भई, आज सब अच्छी ही अच्छी बातें होती जाती है। इतने में कुवडिन डाली लाई। केले के हरे-हरे पत्ते, उस पर हरे-हरे वूट, चकोतरे, लाल-लाल नारगियाँ, कच्चे केले, हरे-हरे अमरूद। धन्नो ने कहा—अहा हा हा! लो, हरी भरी डाली भी आई। और तुर्रा यह कि कुवडन भी सर से पावँ तक हरे कपडे पहने हुए।

ऐन उस वक्त जब कामिनी और स्मृता और धन्नो बीवी और जैनब की माँ और तुलसा और कुबडी हद से ज्यादा खुश थी, कोई कौए को दूध बालाई बतासा खिलाता था, किसी की बायी आँख फडकती थी, कोई घटे की आवाज सुनकर नेक फाल बताता था, कोई कुवडन के हरी-भरी डाली लाने को अच्छा शकुन समझता था ऐन इस खुशी के वक्त रोने की आवाज आई। धन्नो ने कहा—कोई रो रहा है।

तुलसा—अरे रोय देव। उधर ध्यान न करो।

जैनब—बीवी यह तो दुनिया-जहान है। कोई रोता है, कोई गाता है, कोई नाचता है, कोई बजाता है। कोई जीता है, कोई मरता है।

स्मृता—दूर से रोने की आवाज आती है।

कामिनी—क्या जाने किस बेचारे पर गोला पडा।

स्मृता—ए तो कहाँ से मालूम हुआ कि कोई मर ही गया है। और जो कोई यों रोता हो—कोई और सबब हो?

धन्नो—नही। है तो मातम ही की आवाज।

जैनब—कोई जरूर मरा है और कोई बडा सख्त मातम कर रहा है।

कामिनी—मर्द के रोने की-सी आवाज़ है। और फूट-फूटके रो रहा है। ढारें मार-मारके। तुलसा बुआ, जाके देखो तो, यह रोना कहाँ हो रहा है।

तुलसा जाने ही को थीं कि एक आवाज़ नीचे से आई—अरी बहन, बिजली गिर पड़ी। हाय, आसमान फट पड़ा। इसके बाद ज़ोर से रोया और उसके साथ ही साथ नीचे जो औरतें थीं, धन्नो और कामिनी की सास, और दूसरे सगे-सम्बन्धी, नौकर-चाकर सब मातम करने लगे। पिट्टस पड़ गई। कुहराम मचा हुआ। एक औरत की आवाज़ आई—और आखिर मालूम तो हो कि क्या बिजली गिरी! दूसरे ने कहा—अरे बताओ भाई, क्या हुआ! सबने यही सवाल किये—मगर मातम करते हुए। और जिस मर्द ने आकर कहा था, वह यह कहकर और एक दफ़ा ज़ोर से चीखकर ज़मीन पर बैठ गया—माथे को दाहने हाथ से सहारा देकर, आँसू जारी। उधर नीचे तो सब औरतें सीना कूट रही थीं, उधर ऊपर अलग सीना कूटा जा रहा था। पहले तो सबने छत के नीचे देखा। देखा, तो इन्द्र विक्रम सिंह। बस, छातियाँ कूटने लगीं। मौत की डरावनी सूरत साफ़ नज़र आने लगी। मौत हर दर और दीवार से अपना भयानक चेहरा दिखाने लगी। मालूम होता था कि हर झरोखे से काल-देव झाँक रहा है। सब के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई। कामिनी एकदम सकते में। बिलकुल जैसे तसवीर की मूरत। अंग-अंग जैसे बुत, इन्द्रियाँ सुन्न। उनमें से कोई अपना काम नहीं करता था। अगर कोई ज़हर खिलाता तो इसे पता न होता, और अगर कोई अमृत देता, तो पता न होता। तमाम दुनिया उसकी आँखों में अँधेरी थी। बल्कि यों कहना चाहिए कि रोशनी और अँधेरा दोनों से कोई मतलब न था। अगर कोई एक सौ एक बत्ती का झाड़ रोशन करके सामने लाता तो न सूझता, और अगर अँधेरी कोठरी के बन्द तहखाने में होती तो अँधेरा भी महसूस न होता। मातम और कुहराम की आवाज़ भी उसके कानों तक भनक ही नहीं पहुँचती थी। अगर कोई अंगारा हाथ पर रखता तो उसको ज़रा खबर न होती। अस्सी रुपये तोलावाला इत्र भी सुँघाया जाता तो नाक को पता न चलता। इन्होंने न सीना कूटा, न बैन किया। रोना धोना कुछ नहीं बस, एक बुत-सी हो गईं। जो जहाँ था वहीं कलेजा पकड़ के रह गया। और वहीं मातम करने लगा। छत की औरतें छत पर रहीं, और नीचे की नीचे। आधे घंटे तक यह कैफ़ियत रही कि कोई सर टकराती थी, कोई दीवार पर हाथ दे मारती थी, कोई दोहत्थड़ पीटती थी, कोई खाली रोती थी। मगर सिर्फ़ एक कामिनी सकते के आलम में थी। न बेहोशी, न गशी।

आध घंटे के बाद रनबीर सिंह की माँ ने आँसू पोंछकर कहा—अरे, उन दोनों को तो ऊपर से बुलाओ। रमुना को बुलाओ। रमुना रोती हुई उठी। धन्नो सर पीटती हुई चली। कामिनी को उठाया, साथ ले गईं। नीचे

दालान में, कामिनी एक कोने में बैठी। सर झुकाए हुए। इतने में बहुत-सी औरतें सब रोती, बैन करती। बाहर भी भीड की भीड़; मर्द, औरत। सबको बेहद रंज। कामिनी की सास ने इन्द्र विक्रम से पूछा—अरे बेटा, यह क्या बिजली गिरी। उसने जब्त करके कहा—तार आया अरजन्ट, पल्टन के मेजर का; कि रनवीर सिंह .... यह कहकर ज़ोर से रोया; फिर जब्त करके कहा—रनवीर सिंह लडाई में मार डाले गये। बस इतना कहना था कि माँ ने इस ज़ोर से सर और छाती पीटी कि औरतो को शक की जगह यकीन हो गया कि अभी-अभी मर जायगी। हाय मेरा शेर बबर! हाय मेरे सूरमा बेटे! हाय मेरे बहादुर लड़के। अरे बेटा, मुझे इस बुढौती वक़्त अन्धा कर गया। अरे, तू तो मेरे लिये सुरमे बनवाता था कि अम्मा की आँखो में नूर रहे। अरे अब दुश्मन बनके अन्धा कर गया! (सर टकराकर)—हाय! अरे मुझे छोड दो! मेरे हाथ न पकडो! अरे मेरा शेर कहाँ गया। हैं, हैं, बच्चा किस रन की भूमि में पड़ा होगा। पास की औरतो ने सर पकड़ा। हाथ पकड़े और यों कहने लगी:

'गलता भी तो गलते-गलते दो चार बरस चाहिये थे।'

'अब तुम इस बिचारी की तरफ देखो। तुम्ही अपना यह हाल करोगी, तो इसका क्या हाल होगा, जिसको उम्र भर रोना है।'

'अब तक जैसे यकीन नही आता। शेर का शेर।'

'अब इनको चाहिए कि कलेजे पर पत्थर रक्खें, और इस बेचारी दुखिया को कलेजे से लगाएँ।'

'अरे, जी, रोना तो उम्र भर का है। साल-दो-साल का रोना थोडा ही है। हाय कौन लड़की और क्या हो गई।'

धन्नो ने एक दफा सर पीटकर कहा, हाय, जब रोने की आवाज सुनी तो कामिनी ही ने कहा, कि क्या जाने किस पर गोला पडा। इस पर सब औरतें बेतहाशे रो दी। फिर धन्नो ने दोहत्थड़ पीटकर कहा—हाय यह मालूम ही न था कि यह गोला मेरे ही ऊपर पडा है। यह बम का गोला फटके इसी मकान पर गिरा। हाय, कहने लगी—मालूम होता है, कोई जवान मरा है। (इस पर फिर बडी पिट्टस हुई।) कल खत आये। जान में जान आई। आज गोला आया। बटाधार कर दिया। इतने में डयोढ़ी से बहुत-सी औरतो के रोने-पीटने, छाती कूटने की आवाज आई। मालूम हुआ कि कामिनी के मैके की औरतें आई है। अब इधर-उधर से वह पिट्टस हुई कि बयान से बाहर है। कामिनी की सूरत अगर कोई इस वक़्त देखता तो जरूर कहता कि अरे, यह मुर्दा कहाँ से आ गया! पूरी-पूरी मुर्दनी छाई हुई। और दिल की यह कैफियत कि इस तरह डूबा जाता था, जैसे किसी आदमी के बदन से सेरी खून निकल जाय। कामिनी

को पूरा यकीन हो गया कि बचूंगी नही। आंखो के आंसू पूरे तीन घटे बराबर लगातार जारी रहे। न आंसू पोछे, न आंखे खोली। आंखें बहुत ही कडवी हो गईं। कभी उम्र भर इसका सवां हिस्सा भी कडवी नही हुई थीं। तीन घटे के बाद शिवरानी और स्मृता ने जबरदस्ती आंखें धोईं। मुंह धोया, जबरदस्ती पानी पिलाया। यों तो कामिनी पर दुख का पहाड टूट ही पडा था, रज का आसमान एकदम से फट पडा। सुहागन से रांड हो गई। सुहाग से सोग, सुख से दुख। मगर कमजोरी एकाएक इतनी ज्यादा हो गई थी कि जैसे जान निकल गई हो। और दिल गवाही देता था कि रनवीर सिंह के साथ मेरी भी जान जायगी। इससे बडी तसल्ली हुई थी, कि खैर बेवा तो हुई मगर तमाम उम्र का रोना नही है। आज ही कल में हमारा भी फैसला हुआ चाहता है। हाय, काश, मै कमबख्त मर ही गई होती ! आज लोग कह रहे होते कि कैसे अच्छे भाग थे ! उस बेचारे पर जो बिजली गिरी, वह मुझी पर गिरी होती। दिल कमजोर होकर बैठा चला जा रहा था। एक दफा ही गश आया और गिर पडी। लाख-लाख जतन लोगो ने किये जितनी औरतें बैठी थी, सबने बारी-बारी कोशिश की। केवडा, ख्खलखा, गुलाब, इत्र सुंघाया, मुंह पर छीटे दिये, खीरा काट के सुंघाया, छुई मिट्टी पर पानी डालके सुंघाया। मगर गश दूर न हुआ। पूरे दस मिनट तक गश रहा। अब सबका ध्यान उधर हुआ। ग्यारहवें मिनट में जरा होश आया। जिस-जिसने उसको देखा, उसको यकीन हो गया कि मर जायगी। अगर उसके दिल को यह तसल्ली न होती मैं भी आज या कल मर जाऊँगी,—तो बेशक मर ही गई होती। अब जो गशी दूर हुई तो दिल में दर्द की चमक ज्यादा बढ गई। दिल के बैठे जाने ने और भी तरक्की की। आँखो ने और ज्यादा सताया। आंसू कही ज्यादा उमॅड-उमॅड के आने लगे, और जी बहुत ज्यादा घबराने लगा। उलझन ने दिल पर पूरा अमल-दखल कर लिया। रनबीर सिंह की बातें और खतो के मजमून याद करके दिल ही दिल में रोती थी। नौचन्दी जुमेरात जब याद आई तो दिल से एक दफा ऐसी हूक उठी कि औरतें डर गई कि ऐसा न हो कि इसी के साथ दम निकल जाय। रनबीर सिंह को याद करके दिल ही दिल में कहा, अरे मेरे शेर, तेरी प्यारी कम्मन तुझे याद कर रही है। या उसके पास आ, या उसको अपने पास बुला। कहाँ इतना प्यार था, कहाँ अब यह पहाड तोडा। हाय, किसी कोने से तो सूरत दिखा दे ! हाय, लिखा था कि स्मृता बहन से कहना कि मेरी प्यारी कम्मन को तसल्ली दें। या तो औरो से सिफारिश करते थे कि कम्मन को तसल्ली दो या अब यह तोताचश्मी कि खुद खुदाई भर के गम का पहाड मेरे दिल पर गिराया।

इसके बाद फिर दिल से एक दफा हूक उठी। और अक्सर औरतें दिल में

दुआ माँगने लगी, कि परमेशर इसकी जान बचा। जब कामिनी की बहन पद्मिनी ने यह हाल देखा, तो बहन का सर अपनी गोद पर रखकर समझाने लगी। कामिनी से अब बिलकुल न रहा गया। ज़ोर-ज़ोर से रोकर कहने लगी—अरी बहन, क्या समझाती हो, समझान की बात हो तो समझाओ। मैं समझ जाऊँ। अरे, मुझे क्या समझाती हो! हाय, मुझे खूब दिल खोलके रो लेने दो। (बहुत जार जार रोकर) अब मुझे कम्मन कौन कहेगा! अब मैं किसकी होके रहूँगी?

कामिनी अब आज़ादी के साथ बैन करने लगी, और पुरानी बातें याद करके दुहराने और मातम करने लगी, तो सुननवालियो का दिल और भी भर आया। एक औरत ने कहा—शायद झूठ हो, किसी दुश्मन ने तार भेजा हो। इस बात से ज़रा कामिनी और उसकी सास और पद्मिनी और धन्नो और शिवरानी को ढारस हुई। मगर वैसे ही इन्द्र विक्रम सिह न कहा, अजी, सरकारी तौर पर भी तार आया है, और मेरे नाम भी आया। फिर सब को पहले जैसी मायूसी हो गई। और वही हालत, वही मातम, वही बैन।

पूरे चार रोज़ तक कामिनी की यह कैफ़ियत रही कि जैसे शरीर से प्रान निकल गया हो। बुत जैसे।

पाँचवें दिन यह कैफ़ियत ज़रा-ज़रा कम हुई, तो स्मृता ने घटो समझाया। अब तो दिल को बग़ैर ढारस दिये कुछ नही हो सकता। और तुम तो पढीलिखी हो! रात भीगी है और तुम चार दिन की जागी हो।

कामिनी—नीद ही आती तो फिर क्या था।

तुल्सा—अब तुम भी सो रहो, बेटा।

कामिनी—हाय, मै तो बहुतेरा चाहती हूँ कि सो रहूँ। मगर जब नीद भी आये।

स्मृता—नीद ही आती तो यह रोना काहे का था।

कामिनी—दिल को लाख लाख समझाती हूँ कि जो होना था वह तो अब हो गया, अब ढारस रख। मगर दिल नही मानता।

दिल में एक दर्द उठा आँखो में आँसू भर आये।
बैठे-बैठे हमें क्या जानिये क्या याद आया!

स्मृता—(ठडी साँस भरकर) अरी बहन।

कामिनी—अब सिवाय रोने-पीटने के और क्या है।

स्मृता—हम लोगो के गुनाह भुगते कौन!

कामिनी—हम भुगतें और भुगतते ही हैं।

स्मृता—अरी बहन अब तो जो होना था, वह हुआ। अब तो कलेजे पर सिल रखनी चाहिए। हाय मेरी प्यारी बहन। अरे, भाई अब तो कुछ भी नही हो सकता।

कामिनी—अच्छा रो तो सकते हैं। फिर मुझे रोने ही दो। मुझे रोने से क्यो रोकती हो ?

'क्यो' कहके कुछ कहने को थी, मगर आँसुओ ने गला रुँध लिया।

स्मृता—(रोती हुई) अरी बहन, हम पर तो बिजली गिरी ही है, और सच यह है कि बिजली तो हम सब पर गिरी, मगर जो बिजली तुम पर गिरी वह किसी पर नही गिरी। हाय, वह किसी पर नही गिरी। वह तो एक अचरज हो गया।

कामिनी—(ठडी साँस भरकर) तुम मुझ समझाती क्या हो ?

तुलसा—बेटा, रोना तो उम्र भर का है।

कामिनी—बुआ, मैं तो रोती भी नही हूँ। मुझे तो रोना भी नही आता।

स्मृता—अरी बहन, रोना तो उम्र भर का है, जैसा तुलसा बुआ ने कहा।

कामिनी—(ठडी साँस भरकर) अरे मैं तो उफ तक नही करती।

तुलसा—(बहुत रोकर) बीवी, सरकार अब तो

'अब तो' के बाद कुछ कहने ही को थी कि जैसे किसी ने गला रोक लिया।

कामिनी—अरी बहन, मुझे लोग कहते थे कि सदा सुहागिन रहेगी। हाय, मुझे यह क्या मालूम था कि मैं सुहागिन न रहूँगी। अरे, मैं तो जानती ही न थी कि हाय, राँड कौन होती है। 'राँड' का लफ्ज सुनना था कि जितनी औरतें थी सब की सब रो दी। और इस तरह पर नही रोईं कि जिसको मामूली रोना कहते हैं, वह इस तरह रोईं कि हिचकियाँ लग गईं। आँसू का तार जो बँधा तो खत्म ही नही हुआ।

कामिनी—(रो रोकर) हाय, अरे मुझ यह क्या मालूम था।

स्मृता—किसी को भी मालूम होता है ?

जैनब—बीवी, यह तो वह चीज है कि कोई जानता ही नही। कौन जानता है ? कोई नही, अरे कोई नही।

कामिनी—जैनब की माँ इतना कहकर रोने लगी।

जैनब—सरकार, सब्र कीजिए।

स्मृता—(कामिनी को समझाकर) जो होना था, वह तो हो गया।

कामिनी—(बहुत रोकर) तुम मुझे समझाती क्या हो।

स्मृता—मैं समझाती नही हूँ।

कामिनी—(स्मृता को लिपटाकर) अरे, भई। (ठडी साँस भरकर) अरे भई।

स्मृता—(कान लगाकर) तुम क्या कहती हो ?

कामिनी—मैं तो कुछ भी नही कहती हूँ। अरे मैं क्या कहती हूँ।

स्मृता—देखो, मैं फिर कहूँगी, जो मैं हजार दफे कह चुकी हूँ। हाय, हाय।

जैनब—अरे बेटा, सरकार, यह सब बातें जाने दो।

कामिनी—(ठंडी साँस भरकर) अरे भई, मैं तो रोती नहीं, तुम क्यों रोती हो !

स्मृता—अरी बहन, यही तो बात है।

तुलसा—कुछ कहने की बात नहीं है।

स्मृता—तुलसा बुआ, मैं यह कहती हूँ (रोकर) मैं कहती हूँ कि . .

तुलसा—बीबी, तुम तो खुद रो रही हो, समझाओगी किसको। मुझको, (बार-बार इशारा कामिनी की तरफ करके) इनको ?

कामिनी—तुलसा बुआ, मैंने क्या गुनाह किये थे ?

तुलसा—बेटा, पुरबले जनम का किसी को भी हाल मालूम है!

स्मृता—कोई नहीं जानता। पुरबले जनम का हाल तो कोई भी नहीं जानता!

कामिनी—यह न कहो। मैं जानती हूँ, और खूब जानती हूँ। और क्या जानती हूँ—यह जानती हूँ कि पुरबले जनम में जो कुछ किया हो, मगर इस जनम में तो लुट गई। हाय, यह क्या मालूम था कि मेरी किस्मत में यह बदा है। दिल डूबा जाता है।

तुलसा ने हसरत से देखके एक ठंडी साँस भरी।

कामिनी—समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। दिल एक-एक सेकेन्ड में डूबा जाता है। बिलकुल बेकाबू हो गया है।

तुलसा ने फिर हसरत की नजर डाली और फिर ठंडी साँस भरकर खामोश हो रही।

कामिनी—बचूँगी तो मैं हूँ नहीं। मगर रंज यह है कि तबाही के साथ मौत आयेगी। दिल बैठा जाता है।

तुलसा ने आँसू जब्त करके फिर एक ठंडी साँस भरी।

कामिनी—हाय, कितनी बदनसीब औरत मैं निकली, (ठंडी साँस भरकर) यह मुझे क्या हो गया।

अब तुलसा से जब्त न किया गया और आँसू निकल पड़े।

कामिनी—मेरे तो आँसू भी जल गये।

बेहोशी की-सी हालत हो गई और सो रही। जैनब की माँ ने सर गोद में रख लिया। गिरने ही को थी कि जैनब की माँ ने सहारा दिया और लिटाकर कामिनी का सर अपनी गोद में रख लिया।

जैनब की माँ—तुलसा बुआ यह क्या गजब हुआ।

तुलसा—क्या, बैठे बिठाए यह क्या हो गया।

जैनब—यह कहाँ से गोला. . फट पड़ा। इस मौत निगोडी को नहीं मौत आई।

तुलसा—क्या था क्या हो गया।

जैनब—शहर भर रोता है। जिसने देखा था वह भी, और जिसने नही देखा था वह भी। ऐसा खूबसूरत जवान तो हमने दूर-दूर नही देखा। हजारो लाखो मे एक। हाय बच्चा, तुमको किसकी नजर खा गई। हाय, यह क्या हो गया। वह फूल से रुखसारे, वह शजरफी बदन मिट्टी के सपुर्द हो गया (रो रोकर) जरा तो आकर देखो कि जो तुम्हारी प्यारी बीवी तुमको देखके जीती थी, वह अब किस हाल में पडी है।

तुलसा—क्या जाने मूरछा आ गया, क्या जाने सो रही है।

जैनब—हाय भैया, तुमने यह कैसे दगा दी। इस बिचारी दुखिया को कुछ तो तसल्ली दे गये होते, कुछ तो कह गये होते।

जैनब के माँ जार-जार रोने लगी और आँसू टप्-टप् कामिनी पर गिरने लगे। तुलसा ने एक कपडा तर करके आँसू पाछे, और इशारे से कहा—यह क्या कर रही हो।

जैनब—उफ! हाय यह क्या हुआ!

तुलसा—(सर्द आह, भरकर) जीते जी मर मिटी।

जैनब—हाय, बूढी माँ का हाल तो कोई देखे। मै एक घटा भर नीचे बैठी, न वहाँ बैठने को जी चाहता है न यहाँ बैठने को। कलेजा कटता है कि अरे यह गजब हो गया।

तुलसा—कलेजा कटने की तो बात ही है।

जैनब—हमें वह दिन याद आता है जब यह पैदा हुए थे। कैसी खुशियाँ मनाई गई थी। रडी गा रही थी—"जान आलम के नैना नुकीले" हाय, वह घडी अब जो याद आती है, तो फूट-फूट रोना आता है। अरे! यह क्या से क्या हो गया।

इतने में बदली घिर आयी, और ठडी-ठडी हवाएँ चलने लगी, और यकायक बादल इस जोर से गरजा कि कामिनी चौंक पडी, और इधर-उधर अचम्भे से इस तरह देखने लगी कि मालूम होता था कि कोई बगल में बैठा था, और अभी-अभी उठके चला गया। उसी को ढूँढती है। इधर-उधर कुछ देखकर आँसू उसकी आँखो में इस कदर उमड आये कि कोई चीज नजर नही आती थी, सारी दुनिया अँधेरी थी। तुलसा ने आँखो पर छीटे दिये, रुमाल से मुँह और आँखो को पोछा, और कहा, जरा-सा ठडा पानी पी ले। पानी पीकर कामिनी वहाँ से उठ खडी हुई और दीवानी की तरह कभी इधर जाती थी कभी उधर। यह मालूम होता था कि कोई चीज उसको बहुत ही प्यारी थी। अभी-अभी उसके पास थी और अभी-अभी खो गई, उसी को ढूँढती फिरती है, और बड़ी ही हसरत से साथ ढूँढती है। अगर किसी को इसका हाल न मालूम होता, और वह कामिनी को इस हाल में देखता तो जरूर पूरा-पूरा यकीन हो जाता

कि यह कोई सिडन है। तिनके चुनते-चुनते अब किसी फर्जी खोई हुई चीज को गर्दन झुकाके ढूंढ रही है। मगर जाहिर है कि कामिनी जिस चीज को ढूंढती थी वह अस्ल में खोई हुई थी, फर्जी न थी। यों तो कोई शख्स पूरे यकीन के साथ नहीं कह सकता कि कामिनी वाकई कोई चीज इस वक्त ढूंढ रही थी या सिडन हो गई थी। या एक साइत का जनून हो गया था। अगर करीना यही कहता है कि कामिनी ने सपने में उसको देखा। बादल की गरज से चौंक उठते ही फिर जैसे चौंक पडी। पहले तो नींद से चौंकी। अब हैरत से चौंकी—जो अभी-अभी बगल में था क्या हो गया। जब कभी इन्सान सपना देखते-देखते चौंक पडता है, तो कुछ सेकेन्ड तक इसका इमर जरूर बाकी रहता है। मगर उस सपने और इन सपनों में ज़मीन आसमान का फर्क है। किसी जगह पर कामिनी को चैन नहीं आता था। किसी से बोलती थी न चालती थी, कभी इस कमरे में गई और खडी होके वापिस आई कभी उस कमरे में जाके मूंढे पर बैठी, कुछ सोचने लगी, कभी बाहर आई। कभी फिर तुलसा और जैनब की मां के पास जा बैठी।

एक बात और लिखने के काबिल है। वह यह कि उस दिन से अर्से तक कामिनी को बादल के गरजने से बहुत ही नफरत थी। दिल ही दिल में सोचती थी कि हाय अगर यह कमबख्त बादल न गरजता और मैं कयामत तक यही सपना देखा करती तो कैसी नसीबवाली होती।

मगर दुख पहुँचे हुए दिल को तसकीन ही गनीमत है, कि सपने में तो देखा। सपने में ही बातें हुईं। यह तो जाहिर है कि वह सपने में बातें हुईं तो क्या, मगर न देखने से तो अच्छा है। जो अपना प्यारा मर गया हो उसके देखने की अब क्या उम्मीद हो सकती है। लेकिन अगर रोज उसको सपने में देखें तो दिल को थोडी-सी तसकीन थोडी देर के लिये जरूर हो जाय।

तुलसा—हाँ, यह तो हुई है।

जैनब—जैसे ही बादल जोर से गरजा, वैसे ही यह चौंक पडी और यह मालूम हुआ कि जैसे कोई चीज खो गई थी, उसको ढूंढ रही है।

तुलसा—उम्र भर का डड सहना है।

जैनब—जैसे ही वह बादल जोर से गरजा, वैसे ही ये चौंक पड़ी, और खराबी यह है कि कोई पूछ नहीं सकता कि क्या सपना देखा।

तुलसा—(दाँतो तले उँगली दबाकर) अरे कोई पूछ भी नहीं सकता।

जैनब—यही तो मैं भी कहती हूँ। बस, गो-म-गो का मामला है। न समझाते बननी है न कुछ कहते बनती है, न करते-धरते बनती है। सिवा चुपके और रोने के बस, हाय।

इतने में आवाज आई। बुआ, जरा पानी पिला दो। कामिनी बरामदे खड़ी बाग़ की तरफ देख रही है। ठंडी-ठंडी हवा के झोंको और सन्दे

लहाने और वहार का नजारा करने से जरा दिल को योंही-सी तसकीन हुई, तो पानी माँगा। जैनब की माँ ने कहा—दौड़ो। दौड़ो!

तुलसा फौरन एक चाँदी की कटोरी में फिल्टर का पानी ले गई और उसमें थोड़ा-सा केवड़ा मिलाया और बहुत-सी बर्फ डाली, और जल्दी से ले गई। ठंडा-ठंडा पानी पिया। और भी तबीयत जरा-जरा बहाल हुई।

—:०:—

इक्कीसवाँ अध्याय

सातवें दिन की जरूरी रस्में जब पूरी हो गईं और बाहर की औरतें एक-एक करके चली गईं, तो कामिनी को कोठे पर ले गये। विलायती अनार का रस, बर्फ और केवड़ा मिलाकर एक बहुत बड़ा गिलास भरकर कामिनी को पिलाया गया। इससे बड़ी तसल्ली हुई। और पखे के नीचे आराम किया, तो आँख लग गई। कोई एक घंटे के बाद आँख खुली। इस अर्से में मर्दों और औरतों ने खाने-पीने से छुट्टी पाई। कामिनी ने कसमें खायी कि खाने से और तबीअत बिगड़ जाती है। सिर्फ अनार का रस पिया।

खाने-पीने से छुट्टी पाकर कमला और स्मृता कामिनी के कमरे में कोठे पर आयी। और दो ही मिनट में कामिनी की आँख खुल गई, तो दोनो को करीब बुलाकर कहा—

सपने में उन्हें देखा (आँखो में आँसू लाकर)—क्या देखती हूँ कि—

'कि' का लफ्ज कहकर कुछ और कहने को थी कि कमला ने कहा—बस, अब अपने आपको हलकान न करो। नही तो तुमसे भी हम लोग हाथ धोएँगे। हमें अब उनकी निशानी तुम्ही हो!

कामिनी ने ठंडी साँस भरकर कहा—'मुझे तो अब रोना भी नही आता। आँसू भी सूख गये। सपने में देखने से रंज तो जरूर होता है कि हाय, अब सभी कुछ सपना हो गया। मगर जरा देर तसल्ली भी होती है कि काश सपने ही में रोज देख लिया करूँ। दिल को यह तसल्ली होगी कि जो कुछ परमेश्वर को करना था वह तो हुआ अब मेरे साथ इतनी ही मोहब्बत निभा दें, कि अपनी सूरत एक दफा रोज दिखाएँ, इतना ही सही। सपने में देखा कि मैं और वह एक कोच पर बैठे हैं, और मैं एक लड़की को पढ़ा रही हूँ और एक लड़की को सीना सिखा रही हूँ और एक लड़की को जुर्राब बुनना सिखा रही

हूँ। हँसकर मुझसे कहा–मालूम होता है, तुम उस जनम की उस्तानीजी हो! मैंने कहा—फकीरो से अच्छी नही दिल्लगी।

इतना मेरा कहना था कि बस लड़कियो को वहाँ से हटाकर मुझे प्यार किया। और कहा कि यह 'मिसरा' अब कभी हमारे सामने न कहना। फ़कीर तुम्हारे दुश्मन। हमारी बीवी और फ़क़ीर! हाँ, हम मर जायें तो चाहे तुम फ़क़ीर हो जाओ, चाहे जोगिन। बस इतने में मेरी आँख खुल गई। हाय, मैं कही की न रही। दीन-दुनिया दोनो से गई गुजरी। इधर की रही, न उधर की रही। क्या से क्या हो गया। मैं तो सपने को मानती ही नही। मगर इस सपने ने मेरे दिल पर बडा असर किया। मैं सोचती हूँ कि लडकियो को पढाना शुरू करूँ। जरा देर दिल भी बहलेगा, और शगल का शगल है और पुन्न का पुन्न। और लडकियो को पढ़ाने में कोई ऐब भी नही। कोई हरफ भी नही रख सकता। मैं इस सपने को पूरा-पूरा सच कर दिखाना चाहती हूँ।

कमला ने समझाया कि देखो सपने में भी उनको तुम्हारा लडकियो का पढ़ाना अच्छा नही लगा। दूसरी बात यह है कि इस सपने को पूरा करने के माने यह है कि तुम्हारे बैरी-दुश्मन जोगन हो जायें। इसका तो तुम कभी खयाल न करना। यह तो तुमने इसीलिये पढ़ा-लिखा था कि ऐसी बातो का खयाल करो। परमेशर की किरपा से देवर-देवरानी जिठानी सास-सुसरा माँ-बाप भाई भावज गाँव-गिराँव नौकर-चाकर सवारी-शिकारी सब कुछ है। चारदीवारी में बैठो, पूजा-पाठ करो। लडकियो को पढ़ाओ-लिखाओ, मगर अपने घर में, अपनी चारदीवारी के अन्दर। स्मृता ने भी इस बात की ताईद की, और बहुत समझाया कि अपने दिल को रोको और काबू में रखो। तुम्हारे माँ-बाप सास-ससुर पर यह मुसीबत क्या कम पडी है कि उन पर एक और दूसरी मुसीबत पडे और वह बेचारे कही के न रहें।

कामिनी यह सब सुनके खामोश हो रही, और बात टाल दी। और दिल ही दिल में सोचने लगी कि सपना तो अच्छा देखा। दिन-रात बेकार बैठे रहने के सिवाय इसके कि रज को तरक्की हो और क्या फायदा हो सकता है। अगर मदरसा कायम हो जाय पुन्न इसी का नाम भी है और औरतो में तालीम भी होने लगे। और लडकियाँ मुफ्त में पढ़ना लिखना सीख जायँगी। ठान ली, कि जहाँ तक हो सकेगा जान लडा दूँगी और सुसरे की बडी खुशामद करूँगी कि मुझे मेहरबानी करके इजाजत दीजिए कि मैं लडकियो का मदरसा कायम करके भले-मानसों की लडकियो को पढ़ाऊँ। अगर मजूर कर लिया तो खैर वर्ना मजबूरी है। दुख में भी एक और दुख बढ़ेगा। और स्मृता की राय तो हो ही गई थी, कि यह इन खयालात के खिलाफ हैं। दोनों से कि

फजूल समझा। धन्नो ठकुराइन और शिवरानी, उम्र और दर्जे दोनो में उससे बडी थी। बडी बहन पद्मिनी बहुत अच्छ खयालात की औरत नही—पुराना फैशन ज्यादा।

० ० ० ०

एक रोज जसोदा इनसे मिलने आयी। दोनो एक उम्र की और हमजोली और करीब-करीब एक ही खयाल की थी। इनसे उसन यो बातचीत की—

कामिनी—बहन, एक बात कहूँ, जो किसी से कहो नही। बहुत छिपी हुई बात है। किसी से कहने की नही है।

जसोदा—हम जरूर कह देंगे। इधर तुमने बात कही उधर हमने ढिंढोरा पिटवा दिया।

कामिनी—हम तो अपने दिल से बात कहते है और तुम हँसी में टालती हो, वाह!

जसोदा—कैसी बच्चो की-सी बातें करती हो। अरे बहन, तुम्हारी बात और हम किसी से कहें? जबान काट लो, मुझे रज हुआ कि तुमने यह कहा क्यो?

कामिनी—क्या जाने तुम्हारी क्या राय हो, मगर हमने ठान ली है कि यही होगा। चाहे जो हो, तुमसे सलाह लिये बगैर न करूँगी।

जसोदा—दो बातें हम न होने देंगे। तुम पढी लिखी औरत हो, इससे कहने को जी चाहता है। कामिनी, किसी और से न कहती, डर मालूम होता कि शायद खफा हो जाय। सुनो, बहन, बात तो यह है कि दूसरी शादी गो शास्तर के रू से जायज है, मगर रिवाज के रू से नाजायज है। मै खुद जानती हूँ कि इसमें कोई ऐब नही। लेकिन माँ बाप सास-ससुर को जहर खा लेना पडगा। और इसका तो मुझको डर नही। क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम ऐसा अपने आप न करोगी। मगर हमें डर यह है कि कही और गुल न खिलाओ, जिससे हमें रज उठाना पडे।

कामिनी—वह कौन बात है। क्या जाने क्या समझी हो! उलटी पलटी समझी होगी कुछ। अच्छा अब कह डालो। सुनूँ तो क्या कहती हो।

जसोदा—कही तुम फकीर न हो जाओ। सिडन तो हो ही गई हो।

कामिनी—पहली बात वह कही, दूसरी बात यह कही। दोनो बातें ऊल-जलूल। अरी बहन दूसरी शादी के तो कोई मानी ही नही है। इसका तो जिक्र ही न करो।

जसोदा—यह सब मिलके तुम्हें जहर दे देंगी।

कामिनी—यह मैं नही मानती! अग्रेजी अमलदारी है दिल्लगी नही है। मगर मेरा दिल कब गवारा करता है। कोई और कहता तो मुँह नोच लेने को जी चाहता।

जसोदा—बस अब मैं खुश हो गई।

कामिनी—रही दूसरी बात। इसको मै बेवकूफी समझती हूँ।

जसोदा—बस चलो अब छुट्टी हुई।

कामिनी—और यो तो एक हिन्दू बेवा एक फकीरनी से भी बदतर होती है। न अच्छे कपडे पहन सके, न खाना अच्छा खा सके, न किसी रस्म-रीत में शरीक होने के काबिल। किसी मसरफ की नही। जिन्दगी तलख।

जसोदा—बहन, फिर जिस गुनहगार पर जो पडती है वह भुगतना ही पडता है।

कामिनी—खाली-खूली भुगतने से क्या होता है? खाली-खूली रँडापा भुगतने से क्या होता है? कोई बात ऐसी करे जिससे दुनिया में फायदा हो और परलोक भी सुधरे।

जसोदा—अच्छी बात तो है, मगर मालूम नही कि वह कौन-सी बात है।

कामिनी—वह बात यह है कि मैं भलेमानुसो की लडकियो को पढना-लिखना, सीना-परोना, जुर्राब बुनना, हिसाब किताब, कुछ इतिहास, थोडा-सा जुगराफिया, यह सब बातें सिखाऊँ।

जसोदा—रोकता कौन है। इसको कौन मना करता है, सुसरालवालो से पूछ लो, बस, फिर जो चाहे सो करो।

कामिनी—एक स्कूल लडकियो की तालीम के लिए कायम हो तो कैसा।

जसोदा—यह वाहियात बात है। बस, हो इतना ही सकता है, कि मेरे घर की या मसलन स्मृता है, या तुम्हारी बडी बहन है, या मैके की लड-कियाँ हैं—वह आएँ और दो चार घटे पढके चली जायें। यह नही कि मदरसा हो और वहाँ फीस ली जाय, और अग्रेज मास्टर आके इम्तहान लें। मैं तो अपने पडोस में देखा करती हूँ, न। मेमें आती हैं, साहब लोग आते है, हिन्दु-स्तानी मास्टर जाते है।

कामिनी—यह गलत है। मर्द वहाँ नही जा सकता, और औरतो के जाने में कोई हर्ज नही। और फीस मै लूँगी नही। पढाने के अलवा और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँगी। मैं कुल हाल पूरा-पूरा लिखके तुमको सुनाऊँगी कि यह होगा। मर्द का तो नाम ही न लो। मर्द वहाँ जा ही नही सकता। बस, यही खयाल तुमको है, न? यह तुम कहो नही। मै कोई सिडन हूँ? भला मुझे अपनी बद-नामी का खौफ नही है? तुम बडी वह बनके सिखानेवाली आई हो, सिडन कही की। मेरी मन्शा बस यह है कि मैंने जो थोडा-बहुत पढ़ा-लिखा है वह बिलकुल अकारथ न जाय। अगर उम्र भर रडापे और मातम और रोने धोने में बिताऊँ तो क्या, कुछ भी नही। जी यह चाहता है कि दुनिया और परलोक दोनो का फ़ायदा हो, और इस तरह से कार्रवाई हो कि कोई नाम न रखे।

इस बातचीत के पन्द्रह-बीस दिन के बाद कामिनी ने अपने स॰

खयाल जाहिर किया। पहले दबे दाँतो सिर्फ इतना कहा कि मै चाहती हूँ रिश्ते नाते की लडकियो को पढाऊँ, और सीना-परोना सिखाऊँ, और इसके अलावा और उम्दा-उम्दा नेक आदतो की तालीम दूँ। इसमें मेरा दिल भी बहलेगा, और बेकार भी न रहूँगी और गम भी ग़लत रहेगा और घर की लडकियाँ पढ-लिख भी जाएँगी। और सीधे ढर्रे पर भी आ जायँगी, और मुझे दुनिया और परलोक में, दोनो में, सुख मिलेगा। यह बात लाखो रुपये खर्च करके भी नही हासिल हो सकती है, और किसी का कोई नुकसान या हर्ज नही है।

उसके ससुर ने कहा—बेटा, हम गौर करके जवाब देंगे। हम चाहते है कि जो कुछ हम पर बिजली गिरनी थी वह तो गिरी। अब जहाँ तक हो सके तुमको जरा भी तकलीफ न हो, और जिस बात में तुम्हारी खुशी हो, वह सर-आँखो से बजा लाऊँ, कि उस गये हुए की निशानी हो। मै तुम्हारी सास और देवर से दरियाफ्त करके तुमको खबर करूँगा। वैसे हमारे देखने में तो कोई हर्ज नही मालूम होता। इसी वास्ते मैने पेंशन ले ली कि लडके-वालो में आराम से रहूँ। मगर ईश्वर को मन्जूर न था। मुझे बुढापे में यही देखना बदा था। दो तीन दिन के बाद बीबी और लडके से सलाह लेकर कामिनी से कहा— बेटा, कुनबे की लडकियो को पढाने में कोई ऐब नही है। हमने सब दरियाफ्त कर लिया है। पढना, लिखना, सीना-परोना सिखाओ; छोटी-छोटी लडकियाँ आया करेंगी।

कामिनी—मेरा जी दुनिया से हट गया है। मै चाहती हूँ कि किसी जगल बियाबान वीराने में जाके रहूँ, जहाँ न कोई मुझको देखे, न मै किसी को देख सकूँ। बहुत जी घबराता है। उलझन-सी होती है। मै कुछ अर्ज नही कर सकती। (रोकर) दिल किसी तरह नही बहलता, बल्लियो उछलता है।

ससुर (रोकर)—बेटी यह तो जब तक हमारी तुम्हारी जिन्दगी है, तब तक का रोना है। हाय, क्या शेर था। इस शहर में क्या मानी—दूर-दूर तक ऐसा न था। बडा भागवान मैं अपने आपको समझता था कि ऐसा होनहार लडका पाया। अब मुझसे बढ़के कोई बदनसीब नही।

सास—(कामिनी की तरफ इशारा करके) इससे बढ़के खुशनसीब कौन बीबी थी? हमारी कौम में तो कोई न थी। अब इससे ज्यादा कौन दुखी है! मुझसे बढ़के अच्छे भागोंवाली कौन थी। अब मुझसे बढ़के दुखिया कोई नही है। अब रोते-रोते आँसू भी जल गये।

कामिनी—अगर मेरे लिये बाग बना दिया जाय, तो जरा दिल को ढारस हो। मुझे तनहाई अब बहुत पसन्द है। आमन्दा जैसी मर्जी हो। बिना मर्जी मैं कोई काम न करूँगी।

सास—तुम अभी लडकी हो, अकेली क्योंकर रहोगी?

कामिनी—इसका तो खयाल ही न करो। मैं सौ बरस की बूढ़ियों से भी ज्यादा बूढ़ी हूँ। मेरे चाल-चलन से घर भर वाक़िफ़ है।

मानसिंह बुलाए गये। उनसे सब हाल कहा गया। मानसिंह ने कहा, हम ग़ौर करके इसका जवाब परसों देंगे। और उसी रोज़ जाके बलभद्रसिंह तहसीलदार और इन्द्र विक्रमसिंह से मशविरा किया और सलाह यह तय पाई कि इन्द्रविक्रम सिंह अपनी बहन से उसके जी का हाल मालूम करें। यह सबको पूरा-पूरा यकीन था कि मानसिंह के बाप उनका कहना मान लेंगे। इन्द्र बिक्रम ने बहन से पूछा। और तीन घंटे की बहस के बाद दूसरे रोज़ फिर दोस्तों से मशविरा हुआ। मगर अभी कोई राय क़ायम नहीं हुई।

* * * *

एक दिन दो-एक हमजोलियों ने जाके आहिस्ता से पूछा—बहन, क्यों तबीअत कैसी है?

उसने कहा—बहन इस वक़्त बिलकुल अकेला रहने को जी चाहता है।

दो घंटे के बाद फिर उस कमरे में गईं। सिरहाने जाके बैठी, माथे पर हाथ रखा। मगर जो बात पूछी, उसके जवाब में यही सुना कि सुलोचना मरी, और मैं जिन्दा हूँ। अगर मेरी जिन्दगी चाहते हो तो मुझे अपने इलाके में कोई जगह दो। नहीं, मैं अपनी जान दे दूँगी। एक हफ्ते तक, बस, यही कहा की। जब सब बाहर गये तो सलाह हुई, हम क्यों इसकी जान लें, जो कहती है, वह मंजूर कर लो। वर्ना अगर कहीं यह पागलपन बढ़ा और इसने जहर खा लिया या कूएँ में गिर पड़ी तो बड़ी रुसवाई और बदनामी होगी, और इस रंज में और रंज पैदा हो जायगा। बड़ी रद्दो-बदल के बाद कामिनी के बाप को राज़ी किया और अपने गाँव के एक टीले पर जो दूर तक चला गया था और पहले किसी ज़माने में किला था, खपरैल का एक छोटा-सा मकान बनवा दिया। और कहा—अभी तो इसमें रहो। बहुत जल्द इलाके के किसी उम्दा मुकाम पर कोई जगह तुम्हारा देवर तुमको दिखाएगा। वहाँ उम्दा से उम्दा बाग़ और मकान बनवाओ, और राम का नाम भजो। हम लोग अक्सर क्या यानी रोज़ आया करेंगे। तुम्हारी बहनें, देवरानी, जिठानी, भाई, देवर, सभी कुटुम्बवाले आयेंगे। चाहे लड़कियों का स्कूल खोलो, फीस तो किसी से लेनी नहीं है। इसमें कोई बदनामी नहीं है।

—:o—

बाईसवाँ अध्याय

जोगिन

जोगिन के गेरुए कपडे पहनकर कामिनी उस ज़मीन को देखने आई, जो उसके देवर ने उसके लिये तजवीज़ी थी। दरिया यहाँ से आध मील था। कामिनी ने एक बाग बनवाया। फूलो के चमन, फूलो की क्यारियाँ। चार चार कोनो पर मनोकामिनी के दरख़्त। चारदीवारी पक्की खिचवाई। और इर्द-गिर्द चौतरफा आम के झाड—सफेदा और बम्बई, और बनारस का लँगडा। मौलसरी के दरख़्त पहले ही से मौजूद थे। और बाग के बाहर दूर तक एक कतार नीम के दरख़्तो की थी। जब नीम फूलती थी तो अजब तरह की खुशबू आती थी, और उसकी छाया तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ही अच्छी थी। बाग के बीचोबीच में एक पक्का चबूतरा था—इर्दगिर्द फूले हुए गमले, और दरख़्तो पर तरह-तरह की बेलें, और कुछ अंग्रेज़ी क्रीपर दरख़्तो और दीवारो और बाँस के दरवाज़ो पर भी थी और उनके रग-बिरगे फूल बडी बहार देते थे। चबूतरे के सामने एक पक्का हौज़ छलक रहा था। चार मालिनें और दो गोई बैल और एक चौकीदार और उसकी औरत बाग का स्टाफ था, और एक औरत और एक लडकी कामिनी की सेवा में थी। बाग से थोडी दूर के फासले पर पक्की सरकारी सडक थी। वहाँ कामिनी ने, ऐन-चौराहे पर, जहाँ से चार रास्ते जाते थे, एक पक्का इँदारा बनवाया, और उसी से लगा हुआ भैंसो, घोडो, टट्टूओ, बकरियो के लिये एक पियाऊ बनवा दिया। इँदारे और पियाऊ पर एक खुश-नुमा खपरैल की छवाई कर दी। और उसी के पास अपने इलाके के एक बनिये को बसा दिया, और एक छप्पर बनवा दिया, और इसी छप्पर के पास एक छत पटवा दी—जिसके नीचे एक तरफ एक ब्राह्मण, चार रुपया माहवारी का नौकर, पानी पिलाता, और दूसरी तरफ एक भगवाला बिठा दिया था। कामिनी ने एक धर्मशाला भी यही बनवा दिया, जिसमें दस मुसाफिर रोज टिक सकते थे। और पाँच फकीरो साधुओ सन्तो ब्राह्मणो को, फी कस तीन पाव आटा, आध पाव दाल, लकडी, नमक, आलू, ये चीज़ें दो दिन तक मिल सकती थी। इसके अलावा कामिनी ने दो सस्कृत स्कालरशिप भी रनबीर सिंह के नाम से मुकर्रर की; एक दस रुपये माहवारी की, दूसरी पद्रह की। मतलब यह कि जो-जो फरमाइश की वह उसके ससुर ने बडी खुशी के साथ मजूर कर ली और फौरन रुपया दिया, ताकि उसकी कोई इच्छा बाक़ी न रह जाय, और किसी

बात का अरमान दिल में न रहे। एक मकान कुटी के नमूने का भी बनवा लिया था। उसमें खुद रहा करती थी।

एक रोज़ सोचा कि यहाँ दिन-रात पडा रहना और कीमती समय बेकार गँवाना कौन अकलमन्दी है—कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे दोनो लोक सुधरें। सोचते सोचते यह बात ध्यान में आई कि अमरीकन मिशन की लेडियो से मिले और उनके साथ गाँवो और कस्बो में जाकर पर्दा करनेवाली औरतो से मिले-जुले और उनको अच्छी-अच्छी सीख दे और पढना-लिखना सिखाए। मिशन की लेडियो से कामिनी ने लिखा-पढी की। वह तो हिन्दुस्तानी औरतो पर एहसान करने और उनको सीधे ढर्रे पर लाने के लिए तुली रहती है। फौरन अमरीकन मिशन की दो मिसें पता पूछती हुई पहुँची, और बाग के बाहर गाडी रोककर कार्ड भेजे। कामिनी ने फौरन बुलवा लिया, और हाथ मिलाकर एक कुरसी पर खुद बैठी और उनको भी कुर्सियो पर बिठाया।

एक मिस ने जिसकी उम्र कोई चौबीस बरस की थी, कहा—बी कामिनी आप ही है?

कामिनी ने कहा—जी हाँ और कार्ड उठाकर पूछा, मिस एमर्सन किसका नाम है और मिस नोवा कौन है?

चौबीस बरसवाली ने कहा—मिस नोवा मैं हूँ और मिस एमर्सन ये है।

कामिनी—आपकी मैं मशकूर हुई कि मेरी एक चिट्ठी पर आप यहाँ चली आईं।

नोवा—यह तो हमारा काम है।

एमर्सन—बल्कि हमको अलबत्ता आपका शुक्रिया अदा करना चाहिए कि आपने हमको याद किया। अगर आप हमारे साथ काम कीजिए तो बडा फायदा आपके मुल्क की बहनो को हो और खुदा आपको इसका अच्छा फल दे।

कामिनी—अब आप यह बताइए कि आज आप यहाँ रहेंगी या चली जायेंगी।

एमर्सन—(घडी देखकर) नौ बजे है। हम पाँच बजे शाम तक ठहर सकते है।

कामिनी—बस, तो सब काम पूरा हो जायगा।

नोवा—आप कौन है और रँगे हुए कपडे क्यो पहने है, और यहाँ इस तरह रहने का क्या सबब है?

कामिनी—मै एक ज़मीदार क्षत्री की लडकी हूँ, और एक बहुत बडे रईस इलाकेदार के यहाँ मेरा ब्याह हुआ था। मुझे मेरे बाप-माँ और भाई ने, जो पढे-लिखे लोग है, बडी अच्छी तालीम दी। मेरा पति मुझ पर जान से आशिक़ था, और मै उस पर। पढा लिखा, बहुत खूबसूरत, बडा जियाला, सिपाही। वह बेचारा लडाई में मारा गया, मै बेवा हो गई।

एमर्सन—अफसोस! क्या नाम था?

कामिनी—रनबीर सिंह!

नोवा—तो आप वह छत्री लेडी हैं जिन्होंने इस मुल्क में सबसे पहले अँग्रेजी में मिडिल का इम्तहान दिया?

कामिनी—जी हाँ।

एमर्सन—हमने आपके पति की बहादुरी की बडी तारीफ अखबार में पढी थी। आप दुखी हो गई हैं।

कामिनी—ईश्वर की मर्जी। इसमें किसी का क्या चारा है।

एमर्सन—बेशक। और आपके यहाँ दूसरी शादी नही हो सकती?

कामिनी—नही। मैं तो इसके खिलाफ नही हूँ। मगर मेरा दिल नही चाहता। मैं मर जाऊँगी मगर दूसरे की सेज पर कदम न रखूँगी। मुझे दिली मोहब्बत थी। वह क्या मर गये कि मेरी हरी-भरी जिन्दगी भी साथ ले गये। यह जो आपने कहा इसका तो खयाल ही नही है।

नोवा—औरत अगर अपने दिल को क़ाबू में कर ले तो कोई मुश्किल बात नही है। अब यह बताइये कि आप यहाँ क्या करती हैं।

कामिनी—जब से बेवा हुई यही रहती हूँ। यह बाग बनवा लिया, यह कुटी बनवाई है। और सामने सडक पर एक पक्का इँदारा और पियाऊ बनवा दिया है, और एक बनिया और उसकी बीवी अपनी गाँव की रिआया में से बसा दिये है, और एक भगवाला। अब मेरी ख्वाहिश यह है कि आस-पास के गाँव में जाके औरतो को अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँ, पढाऊ, लिखाऊँ, सीना-परोना सिखाऊँ, और जो अन्ध-विश्वास उनकी घुट्टी में पडा है, उसको धीरे-धीरे दूर करूँ, और आपसे मदद लूँ। मैं इस सेवा के काम में कुछ थोडा बहुत खर्च भी कर सकती हूँ। घर की एक पालकी गाडी मैंने मँगवाई है। उसी पर सवार होकर हम लोग जाया करेंगे।

एमर्सन—बहुत अच्छी बात है: आपके साथ होने से इतना होगा कि हिन्दोस्तानी शरीफज़ादियाँ जो हमसे ईसाई और मिस होने के सबब से ज़रा भडकती है उनकी भडक कम हो जायगी।

नोवा—(मुस्कराकर) पहले तो आपको भी वह हिन्दू ईसाई समझेंगी। मगर यह उन पर जाहिर कर दिया जायगा कि ये हिन्दू हैं, छत्री जोगिन।

एमर्सन—पहले तो यह देखिये कि यहाँ से कौन गाँव पास है, और आबादी क्या है और कौन बसते है।

कामिनी—यह आप डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के ज़रिये से दरियाफ्त कर सकती हैं।

नोवा—जी नही। इन सिविलियनों में कम ऐसे हैं जिनको हिन्दुस्तान की भलाई का दिल से खयाल हो। ये सिर्फ तनख्वाह, तरक्की और पेंशन के दोस्त हैं।

कामिनी—अच्छा मैं अपने देवर को बुलाकर तहसीलदार के ज़रिये दरियाफ्त कराऊँगी।

नोवा—अगर आबादी अच्छी हो और लडकियाँ आ सकें तो हम लोग खर-चने को भी मौजूद हैं, बशर्ते कि आप दो-तीन घंटे पढाने की तकलीफ बर्दाश्त कर।

कामिनी—मैं तो दिल से चाहती हूँ। इसीलिए आपको तक्लीफ दी है।

नोवा—फिलहाल इसकी बडी जरूरत है कि बच्चो को टीका लगाने के जो लोग इतने खिलाफ है उनको सीधे ढर्रे पर लायें।

कामिनी—ज़रा मुश्किल है। शहर के पढ़े-लिखे लोगो में भी अक्सर एसे है जो इसके खिलाफ हैं और गाँवो में तो लोग फौजदारी करने पर तुल जाते है। और औरतें तो औरतें, मर्द तक अक्ल से काम नही लेते। अच्छा तो चलिए, पहली मर्तबा इसी का दौरा, हो।

नोवा—बातो बातो में टीका लगाने की तारीफ करें।

एमर्सन—इनके कहने का बडा असर होगा।

कामिनी—हाँ, आप लोगो को तो वह समझेंगी, कि धर्म लेने आई है, और बहुत दिनो तक यकीन न आएगा कि मै हिन्दू हूँ। समझेंगी कि हिन्दू बनके छल करके, धर्म लेने आई है। मेरा भी कहना पहले न मानेंगी।

नोवा—आपने कभी ईसाई मजहब की कोई किताब पढी है, इजील वगैरह?

कामिनी—जी नहीं। न पढ़ी है, न शौक है। मैं तो दुनिया की बातो को ही थोडा-बहुत समझती हूँ, बस! और मेरा धर्म यह है कि आदमी हर धर्म में और हर घडी नेक कामो का खयाल रखे।

नोवा—आप बुरा न मानिएगा, हमारा धर्म यह है कि जिस आदमी को देखें उसको यह हिदायत करें कि ईसाई धर्म अपनावें; क्योकि हम इस धर्म को बहुत अच्छा समझते है, और इसी को सिर्फ वह धर्म समझते हैं, जिससे इन्सान नजात और अनन्त जीवन पा सकता है, और सबको हम गुमराह समझते है। हिन्दू, मुसलमान, बौध, पारसी, यहूदी, ब्राह्मो, आर्यसमाजी सब गुमराह हैं। अगर सीधे ढर्रे पर है तो ईसाई। इसलिये हम जो किसी को समझाएँ कि इस धर्म को अपनाओ तो इससे यह जाहिर होता है कि हमको दुनिया के कुल इन्सानो से हमदर्दी है।

कामिनी—इसमें कोई शक नही। मगर याद रखिये कि हर शख्स अपने धर्म को सबसे अच्छा समझता है, और उसी में मगन है। बस बात सारी यह है और कुछ नही। और जो लोग किसी भी मजहब के माननेवाले नही वह ईसाई मजहब को भी वैसा ही समझते हैं जैसा और मजहबो को। जो अगलो ने कहा, वह पत्थर की लकीर, इस बात से ईसाई धर्म भी खाली नहीं; और यही बड़ी खराबी और धर्मों में है।

एमर्सन—तो इससे यह तो मालूम होता है कि आप किसी धर्म की कायल नहीं।

कामिनी—मेरे लफ्जों को आप भूल गई। मैंने कहा था, कि जो लोग किसी धर्म को नहीं मानते है, वह ऐसा कहते हैं। अपनी खास राय तो मैंने दी ही नहीं।

नोवा—अच्छा, हम आपको किताबें दें, तो आप पढ़ियेगा या नहीं?

कामिनी—बड़े शौक से पढ़ूं। न पढ़ना क्या मानी?

नोवा—जरूर पढ़िये। और बहस कीजिये।

कामिनी—बहस इसमें फजूल है। जब से दुनिया पैदा हुई है, जब से धर्मों में फर्क हुआ तब से बहस हो रही है, और अभी तक वही झगड़ा कायम है। न हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा तय होगा, न हिन्दू ईसाइयों का, और न मुसलमान और यहूदियों का, न सुन्नी-शीयों का।

नोवा—अच्छा हम कल चार किताबें भेजेंगे।

कामिनी—बर्फ का पानी या लेमोनेड पीजिएगा?

एमर्सन—गर्मी के दिन तो है ही। मगर आप पिलाइएगा काहे में?

कामिनी—(मुस्कराकर) इतना खब्त हमें नहीं है। (शीशे के टम्बलर में लेमोनेड और बर्फ देकर) पीजिए।

नोवा—(पीकर) शुक्रिया। उम्दा लेमोनेड है।

एमरसन—(दूसरे गिलास से पीकर) इस वक्त इसकी बड़ी जरूरत थी।

कामिनी—आजकल गर्मियों में बर्फ और पखा जान है।

नोवा—आप हमारे साथ खाना खा सकती हैं?

कामिनी—जी नहीं।

नोवा—अगर हमारे साथ खाना खाइये तो धर्म जाता रहे?

कामिनी—जी नहीं।

एमर्सन—फिर आपको क्या उजर है?

कामिनी—मुझे खुद तो कोई उजर नहीं है। मगर कई सबब ऐसे हैं कि मुझे जरूर परहेज करना चाहिए। एक तो यह है कि अगर मैं आपके साथ खाऊँ तो ये जो औरतें सेवा के लिये लगी हुई हैं, ये मेरे बर्तन तक न छुएँ, दूसरे यह कि जितने हिन्दू हैं सब मेरे दुश्मन हो जायें। तीसरे मेरे मैके और सुसराल के सब मुझे किरस्टान समझने लगें। और जो मुझे मिलता है, वह बन्द हो जाय, रहने को मकान न हो, खाने को न जुड़े। यह आराम न मिले। भूख-प्यास की तकलीफ के सबब, से हरि का नाम न ले सकूँ। और जो कुछ अपनी बहनो, हिन्दू औरतो, बेवाओं, लड़कियो को फायदा पहुँचा सकती हूँ, वह न कर सकूँ, और फिर कोई हिन्दू हिन्दुस्तान के इस हिस्से में अपनी लड़की को इस डर से अंग्रेजी तालीम न दे कि ऐसा न हो, यह भी कामिनी की तरह बेधर्म हो जाय। अब आप ही गौर कीजिए कि कितना बड़ा नुक्सान हो। और फायदा क्या, कुछ भी नहीं?

मिस नोवा और मिस एमर्सन दोनो कायल हो गईं, और बात को टाल दिया।

मिस नोवा ने पूछा—अब परसों सूरज-ग्रहन है। आप भी गंगा नहाने जाइएगा, कुछ दान-पुन्न कीजिएगा?

कामिनी ने जवाब दिया—दान-पुन्न के लिये समझदार आदमी किसी खास वक्त का पाबन्द नहीं रहता। और न मैं सूरज-गहन और चाँद-गहन को वह समझती हूँ जो ये मूरख लोग राहु और केतु और क्या जाने क्या ऊल-जलूल बताते हैं।

नोवा—आप बेशक खूब पढ़ी-लिखी हैं।

एमर्सन—आप ऐसी को हमारे मिशन में आना चाहिए।

नोवा—हम गिरजा में रोज दुआ माँगेंगे।

कामिनी—मेहरबानी आप लोगो की। इसमें कोई शक नहीं है कि मिशन की लेडियो ने हमारे मुल्क को बडा फायदा पहुँचाया और पहुँचाती हैं, और हमारे मुल्क को आप का बडा शुक्रगुजार होना चाहिए।

नोवा—देखिये, कहाँ अमरीका और कहाँ अवध के कस्बे—सफीपूर, काकोरी। खीरी के जंगल के जरा-जरा से गाँव, बहराइच की तराई के गाँव—और मिशन का रूपया।

कामिनी—इस हमदर्दी की तारीफ ही नहीं हो सकती। इस पर भी अगर इस मुल्क के लोग कद्रदानी न करें तो अफसोस की बात है या नहीं।

साढे चार बजे के करीब इन दोनो ने इजाजत माँगी कि अब हमको रुखसत कीजिए। कामिनी ने फालसे का उम्दा शरबत बनवाया और बर्फ और केवड़ा डालकर दोनों मेहमानो को पिलाया। दोनो ने तारीफ की, और कामिनी बाग के दरवाजे तक गई और हाथ मिलाकर दोनो को बिदा किया। और वह वादा कर गईं कि एक हफ्ते के अन्दर ही अन्दर आएँगे।

तेईसवां अध्याय

दूसरी शादी पर इसरार और उधर से कतई इन्कार

सुबह को कामिनी सोकर उठी तो एक ब्राह्मणी, जो खास इसी काम के लिये मुकर्रर थी, पाँयती बैठी भैरवी की धुन में कौमुदी पढ़ रही थी। आँखें मलती हुई उठी तो इस औरत से कहा—या तो मोढे कुरसी पर बैठा करो या तख्त बिछवा लो, पाँयती न बैठो। तुम ब्राह्मन हो, हम छत्री। कौमुदी सुनकर बाग में थोडी देर टहली, और रविशो को देखा। मालियो से बातें थी, कि उसकी छोकरी ने एक कार्ड लाकर दिया—ठाकुर शमशेर

कामिनी ने कहला भेजा कि कहा—मैं मर्दों से नहीं मिलती, मजबूर हूँ। उसने वहाँ से कहला भेजा कि बड़ा जरूरी काम है। भलेमानुस हूँ। ठाकुर हूँ। जमींदार का लड़का हूँ। न चोर हूँ न कोई उचक्का हूँ । और दूर से आया हूँ। कामिनी ने फिर जवाब दिया कि अगर बड़ा जरूरी काम है तो कल आइये, मैं अपने देवर या भाई को बुला लूँगी। उसने मालिनी को बुलाया और उसको समझाया कि अपनी बीबी से कह दो कि मैं बड़ी दूर से आया हूँ, कोई खटिया, मूँढा मचिया भेज दीजिए। जरा देर टिकने भर का सहारा तो हो जाय। कामिनी ने फौरन कुरसी भेजी और ताजे फालसे का शरबत और केवड़ा और बर्फ। उसने बड़ी दुआएँ दीं और फिर मिलने की ख्वाहिश जाहिर की। कामिनी न थोड़ी देर गौर करके इजाजत दी कि अच्छा आने दो।

मालिन—चलिये, सरकार ने याद किया है।

जवाब—ए मैं तेरी जबान के कुरबान।

मालिन—इनाम का काम किया है, सरकार।

जवाब—लो (दो रुपये देकर) अभी और देंगे।

मालिन—आप देनेवाले सलामत रहें।

जवाब—जब हम जाने लगें तो बाहर हमसे मिलना।

मालिन—अच्छा सरकार।

जोगिन ने दूर से देखा तो पुलिस का अफसर। वही वर्दी, वही पगड़ी, वही किर्च, वही तलवार। कम उम्र आदमी। कोई तेइस चौबीस बरस का सिन। गेहुँआ रंग। छोटी खुशनुमा दाढ़ी, स्याह घनी। खुलता हुआ रंग। तनता हुआ, इत्र में डूबा हुआ, आके मूँढे पर बैठा।

कामिनी—मैं किसी मर्द स नहीं मिलती सिवाय अपने देवर या भाई के।

मर्द—मुझे भी अपने देवर या भाई की ही तरह समझो।

कामिनी—आप किस जरूरत से आये हैं वह फर्माइए। मैं तो सिर्फ एकान्त का जीवन ही अपने लिये पसन्द करती हूँ।

मर्द—सिर्फ दर्शनों को आया हूँ।

कामिनी—दर्शन मेरे कैसे। मैं कोई प कोई

कोई महन्त नहीं कोई पुजारी नहीं। एक ५ हूँ।

मर्द—जो मुझे सबसे ज्यादा प्यारा है उ

जो तेज तुम पर है मर्द औरत पर

औरत—हाँ, हूँ

मालि—सरकार मालूम

औरत—फुलवारी

मालि—पा

मर्द—वाह! वाह रे तेज!

मालिन—इसी में विचारी रात दिन रहा करती है।

औरत—राज है; गाँव है। घोडे, हाथी, रथ, महल, नौकर-चाकर, बग्घी, मकान, कोठी, बँगले—दुनिया भर का आराम है। और सबको त्याग कर बिचारी इस जगल में पड़ी रहती है; जहाँ आदमी न आदमी का पता। हम पच टहल को है, बस।

मर्द—अरे, ये जहाँ चाहे बैठ जायें, इनके लिये जगल में मगल है। अब देखो, यह जगल ही है, या कुछ? और फिर यहाँ मगल है या नही? और यही पर क्या जहाँ ये बैठ जायेंगी वहाँ मगल हो जायगा। अच्छा अब तुम लोग अपना-अपना काम करो; हमारे सबब से किसी काम में हर्ज न होने पाये।

मालिन इशारा समझ गई और दो रुपये भी पा चुकी थी। फौरन चली गई। औरत को भी उसने किसी बहाने से टाल दिया। कामिनी कुछ बेवकूफ तो थी नही, ताड गई, और दिल में ठान लिया कि अब इस पापी को न आने दूँगी। इतने में इन साहब की जबान खुल चली। फरमाया: जोगिन जी, हम पुलिस के सब-इन्स्पेक्टर है, और यह बाग़ और वह सडक सब हमारे ही थाने में है। मैं सवा सौ रुपये माहवारी पाता हूँ और छत्री हूँ। तुम्हारा जिक्र हमने चौकीदारों से सुना, कि एक जोगिन ने बाग बनवाया है, और यहाँ आके टिकी है। हमने कहा चलके देखें। तुम्हारी हालत पर हमें अफसोस आता है कि ऐसी अच्छी हैसियत और दौलत होते-साथी तुम बेमर्द के अकेली पड़ी रहती हो। यह तुमने खूब किया कि मैके और सुसराल से अलग होके रही। मगर जो मर्द नही तो क्या। और इसका सामान हम आसानी से कर सकते है। मैं पुलिस का सब-इन्स्पेक्टर हूँ और यहाँ का बादशाह। मेरे होते-साथी कोई तुम्हारा बाल बीका नही कर सकता, कोई बद निगाह से देखे, तो आँखे तलवो के तले मल डालूँ। मगर बात सिर्फ इतनी है कि तुम हमारी ही होके रहो। फिर खुदाई भर तुम्हारे खिलाफ कोई कार्रवाई नही कर सकती। जिसको इशारा कर दूँ, तुम्हारे दुश्मन को मार डाले। अगर मन्जूर हो तो रोज दोपहर को या शाम को आऊँ। अपना-तुम्हारा दिल बहलाऊँ—कि बेवा हो।

कामिनी ने यह सब सुनकर, बात को टालकर पूछा—तुम्हारी बीवी है? उसने कतई इनकार किया। पूछा—माँ जिन्दा है? कहा—नही। पूछा—बाप? कहा—दस बरस हुए, मर गये। पूछा कोई औरत है? कहा—हाँ, एक बहन है, बेवा बिचारी। कामिनी ने कहा—मुझ बेवा को तो माफ करो। तुम अपनी बेवा बहन का दिल बहलाओ। इन्स्पेक्टर समझ गया, खामोश हो रहा। कामिनी ने नौकरानी को बुलाया, और कहा—नहाने का सामान लैस करो। 'बहुत अच्छा' कहकर वह चली गई।

इन्स्पेक्टर—जोगिन, जरा तुम्हारे बाग़ की सैर करना चाहता हूँ।

जोगिन—जाइए। वह बाग ही कौन बडा है।

इन्स्पेक्टर—आप साथ चलिए। हाथ में हाथ देकर टहलें।

जोगिन—मैं किसी मर्द के साथ टहलना नही चाहती।

इन्स्पेक्टर—क्यो अपनी जवानी की दुश्मन हुई हो। कहा मानो, हमारी हो जाओ।

जोगिन—मैं दुखिया औरत हूँ और इस तरह की बातचीत की आदी नही। अब तुम यहाँ से चले जाओ। भला इसी में है।

इन्स्पेक्टर—अरी औरत, हम वह है जिनके आने को अच्छे-अच्छे अपना फख्र समझते हैं। और तुमको इतनी चिढ हो गई है। अब भी हम समझाए देते हैं। वर्ना बहुत पछताओगी, और रोते न बनेगी, इतना याद रखना। हम अभी चिरौरी और मिन्नत करते हैं, अगर इस पर भी न माना तो दम ही लोगी—वह बोदी मार दी हो, कि तमाम उम्र रोया करो। और मेरा बाल तक बीका न हो। मैं यहाँ का बादशाह हूँ। बादशाह। से कही जोगिनें मुकाबला कर सकती है?

जोगिन—अब तुम यहाँ से चले जाओ। अगर मेरे मैके और सुसराल के मर्द सुन लेंगे तो भुट्टा-सा सर उडा देंगे। तू समझता क्या है, चल दूर हो यहाँ से।

इन्स्पेक्टर *(हैरत से)—अल्लाह! यह गुस्सा! हो राजपूत की लडकी जरूर!* अच्छा, गुस्सा न करो, मैं जाता हूँ। कल फिर दरशनो को आऊँगा। और डडौत करूँगा। अब न बिगडो मैं तुम्हारे ही भले के लिये कहता था कि यह जवानी और यह हुस्न, और यो गारत हो जाय। और मेरा वह रौब यहाँ है—और दूर-दूर है कि कोई मेरे खिलाफ चूँ नही कर सकता। कोई कानो-कान तो सुनेगा नही। अच्छा, तुम आज दिन भर, रात भर, फिर गौर कर लो। कल मैं मिजाजपुरसी को आऊँगा।

जोगिन—नही। अब आप तकलीफ न कीजिएगा।

इन्स्पेक्टर—जानी! खुश कर दूँगा।

'जानी' का लफ्ज सुनकर कामिनी आग-भभूका हो गई, और वहाँ से उठके चल दी। इन्स्पेक्टर ने यह शेर पढा—

गरूरे-हुस्न इजाजत मगर न दाद, ए गुल,
कि पुरसिशे बकुनी अन्दलीबे-शैदा रा!

कामिनी को और गुस्सा मालूम हुआ कि मेरे उठ आने पर भी आवाजे-तवाजे कसता है। इतने में इन्स्पेक्टर ने कहा—

एक बोसा हमने माँगा राहे-मौला, बाहजी,
फूटे मुँह से यह न निकला, लेते जाओ शाहजी!

'अब हम जाते है।' यह कहा ही था कि चौकीदार ने सलाम किया और कहा—सूबेदार साहब, रात को पहरे का कोई चौकीदार नही मिलता। इनको मौका मिल गया कि जरा और बैठ जायें। मोढे पर टिक गये और चौकीदार को हुक्म दिया कि जाके हमारे चौकीदार को बुलाओ।

वह उधर गया, इधर इन्होंने मालिन से कहा कि जोगिन से संदेसा दो कि हम प्यासे बहुत हैं। अगर जरा सा पानी पिला दो तो एहसान होगा। कामिनी को तरस आया। बर्फ का ठंडा पानी बनाकर खुद ले गई और कहा—पानी है। इन्स्पेक्टर ने उठकर बड़े अदब के साथ पानी लिया। आबखोरे को चूमा, आँखों से लगाया और पानी पी कर कहा—कलेजे में जैसे ठंडक पड़ गई, आँखें खुल गईं, अच्छा, अब जरा बैठ जाओ।

कामिनी—यह मेरे नहाने का वक्त है।

इन्स्पेक्टर—मैंने जो कहा माफ करना। मेरा मतलब फकत यह है कि अगर तुम्हारी मर्जी हो तो हमारे साथ भँवरी फिरवा लो।

कामिनी—नहीं, मेरी मर्जी नहीं है। मैं इसके बिलकुल खिलाफ हूँ। अब इसका जिक्र भी न करना। मेरे मैके और सुसरालवाले दोनों मिलके मेरी गर्दन उड़ा दें। और वह न भी उड़ाएँ तो हमसे कब मुमकिन है? मैं तो बस अब मरते दम तक इसी हालत में रहूँगी। इस बात को अब कभी न दोहराना। और आज से आप यहाँ आने की तकलीफ भी न कीजिए।

इन्स्पेक्टर—अगर शादी नहीं ही करनी थी तो जोगिन बनके क्यों हम लोगों को तरसाती हो? इतनी कमसिन होके क्यों अकेली रहती हो? फकीरी अख्तियार की, तो क्यों बर्फ का पानी पीती हो? कुरसियाँ, मेज, मसहरी, यह सब क्यों हैं? मिट्टी पर क्यों नहीं सोती। यह रूप क्यों साधा है?

कामिनी—मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं न जोगिन हूँ, न साधू न सन्त। रंज और दुख के मारे इस एकान्त में आके बैठी हूँ। मुझे कोई यहाँ दिक क्यों करे। और यह जो रिश्ते की बात आपने छेड़ी, इससे मुझे माफ रखिये।

इन्स्पेक्टर—मेरी तो जान जाती है, और तुम माफी माँगती हो।

जोगिन—मैं फिर कहती हूँ कि मुझे माफ करो। तुम इस तरह की बातें करते हो और मेरे दिल पर इसका असर पड़ता है। मुझे जैसे तीर-सा लगता है जो कलेजे के पार हो जाता है। मैंने बड़ी गल्ती की जो तुमको आने दिया।

इन्स्पेक्टर—यह न कहो। मैं फाटक तोड़के तहकीकात करने आ सकता हूँ। पुलिस इन्स्पेक्टर बड़ी चीज है। मगर अभी तक मैं चिरौरी ही करता हूँ। अब भी कहना मानो और मेरी ही होकर रहो। वर्ना खैरियत नहीं। दिल में गौर कर लो। सोच लो, समझ लो, आगा-पीछा समझो, भलमसी से काम लो।

कामिनी—तुम क्यों मुझ दुखिया के पीछे पड़े हो? मुझे न सताओ। नहीं इसका खमियाजा उठाओगे।

तब इन्स्पेक्टर मारे गुस्से के यहाँ से चला गया।

चौबीसवाँ अध्याय

गुलबिया का पाजीपन

रात को कामिनी ने करीमन को मिट्टी के कोरे बरतनों में खाना खिलाया और बाग के चबूतरे पर कुरसियों पर बैठकर दुनियाँ की बातें करती थी—कि मालिन ने आके कहा—बीवी, एक औरत किसी ठकुराइन के घर से आई है, बुलाती है। कामिनी को हैरत हुई कि इस वक्त रात को औरत क्या करने आई। पूछा—कौन ठकुराइन? और औरत क्या कहती है! वह बोली—ए वो क्या खड़ी है। मिल लीजे, ना!

जोगिन मिलने गई तो देखा—अंगूर की रविश में एक औरत सफेद कपड़े पहने खड़ी है। करीब जाकर कहा—कौन है? उसने पास आकर कहा—ठकुराइन चन्द्र कुँअर ने भेजा है और कुछ कहा है, इधर आके सुन लीजिए। कामिनी कोने में चली गई और इस औरत ने उस बेचारी को गले लगाके चूम लिया और उसने चीख मारके कहा—चौकीदार दौड़ो! जब तक लोग दौड़ें और औरतें पहुँचें और चौकीदार आये तब तक उसने फिर गले लगाना चाहा। और कामिनी ने जोर से चीख मारी, और चौकीदार और करीमन और ब्राह्मणी, जो खाना पकाती थी, और कारिन यह सब पहुँच गई, और वह औरत भागी। चौकीदार पीछे दौड़ा मगर न पा सका।

करीमन—यह क्या भेद था? औरत तो न थी।

कामिनी—औरत नहीं जी, खासा भला-चंगा मर्द था।

करीमन—(दाँतों तले उँगली दबाकर) अरे! तोबा, तोबा। मैं समझी कोई भूत-परेत था।

मालिन न० १—यह आया किधर से? कपड़े मर्दों के पहने था कि औरतों के?

कामिनी—औरतों के। मैंने पहचान लिया। परसों इसका खमियाजा उठायेगा। अगर सूरत न बदल जाय तो हमारा जिम्मा। मेरा कुछ नहीं गया। लेकिन मैं छत्री की लड़की नहीं जो पूरा बदला न लूँ, आज से और सौ बरस तक।

मालिन न० २—आज यह नई बात हुई। मेरा तो कलेजा दहल गया।

कामिनी—इसकी पूरी-पूरी तहकीकात होगी। तुम देखती जाओ।

करीमन—और आदमी भले चंगे हैं। मगर इत्तफाक की बात।

कामिनी—वैसे ही मैं पास गई और पूछा, कहाँ से आई हो, कौन हो, ए बस, आग लगे इसकी जात को—लिपट गया, और पाँव पर टाँगी रखने कुछ कहने को था कि मैंने शोर मचाया। बस यही हरकत। मैंने पहचान लिया।

इतने में बूढा भगवाला आया। उसने सब हाल बताया कि मैं दुकान बढा रहा था। इँदारे के पास एक मर्द से गुलबिया मालिन बात कर रही थी। इस मर्द ने कपडे उतारे और गुलबिया के साथ-साथ इस तरफ चला। रास्ते में मैंने देखा कि उसके कपडे गुलबिया लिये खडी है और वह पकरिया के दरख्त के पास खडा पहन रहा है। मैं जानता हूँ कि वह औरतो के कपडे पहन रहा था। गुलबिया को निकाल देना चाहिए। इस काबिल नही है कि बहू बेटियो में रहे।

यह सुनते ही सब औरतें आग हो गईं और गुलबिया को कोसने और बुरा-भला कहने लगी। चौकीदार ने गुलबिया को पुकारा तो दूर से उसकी आवाज आई–आती हूँ। सबको यकीन हो गया कि गुलबिया की कारस्तानी है। जब गुलबिया आई तो उससे पूछा—तू कहाँ गई थी। आयँ बायँ-शायँ बताने लगी। सब ने ले-दे की और खूब आडे हाथो लिया।

'ऐसी बात भलेमानसो की औरतो में न करनी चाहिए।'

'कुटनापा कही और करो। यहाँ खोपडी गजी हो जायेगी।'

'इसको डूब मरना चाहिए। मालिन है या किसी बेसवा की नायका?'

'इसको घर से निकाल दो, मुई मालजादी कुटनी, अपने भतार को लेके आई थी।'

'अरी यह औरत कौन थी जिसको तू लाई थी? औरतें तेरे देस में ऐसी ही होती है?'

गुलबिया मालिन ने तुनुककर इन सब बातो का जवाब यो दिया। अरे मैं भला क्या जानूँ, उसके दिल में पाप है। सीधी औरत, किसी के दिल का हाल क्या जानूँ? जो जानती कि मर्द है तो दाढी पकड के नोच लेती।

देर तक यही बहस रही। सुबह को कामिनी ने घरबार ब्राह्मणी और मालिनो और चौकीदार के सपुर्द किया और दुर्गा की गाडी पर सवार होकर बारिन और करीमन को साथ लेकर गाँव चली। रात को भगवाले से कुछ कह आई थी, जिसका हाल आगे चलकर मालूम होगा।

जब गाँव में गाडी दाखिल हुई तो करीमन इत्तला करने के लिये अन्दर गई और वहाँ जाके रात का सब हाल कहा, कि गुलबिया मालिन ने जोगिन बिचारी की आबरू लेने की फिक्र की थी। दुर्गा और धन्नो को बडा बुरा मालूम हुआ। और दुर्गा के पति लाला शादीलाल को भी बडा गुस्सा आया। जब कामिनी और बारिन अन्दर आयी तो दुर्गा और धन्नो खुश-खुश मिली। शादीलाल ने भी झुककर प्रनाम किया। जब बैठ चुकी तो रात के वाकए का जिक्र छिडा।

दुर्गा—बीबी हमारा बस चले तो इस बात की कोशिश करें कि इस मालिन मुई की लाश फडकती नजर आये।

जोगिन—ए बुआ, इतने दिन तक हमारी सगत में रहकर इतना क्रोध! हमारी यह राय है कि जो अपने से बदी करे उससे नेकी करे।

लाला—जोगिन साहब, तुम फरिश्ता क्यो न हुई। दूसरी औरत होती तो उसका अपना लहू-पसीना एक करती। दाँतों से बोटियाँ नोचती। और तुम हो कि उफ नही करती।

दुर्गा—(लाला की बीवी) बुरा काम किया इस हरामजादी ने। मुँह पकड के झुलस दे ऐसी बद औरत का। खास पूरे मर्द को औरत के भेस में जवान औरत से मिलवा दिया। लूका लगा दे ऐसी को।

जोगिन—मालूम होता है परमेशर मेरा इम्तहान ले रहे हैं। मगर अब तक तो मै पूरी उतरी। आगे का हाल किसी को क्या मालूम है। किसी ने सच कहा है "का जानों मोरी का गत होय!" सिवाय परमेशर के और कोई नही जानता। हमने पढा और सुना है कि जिन औरतों की नेकी की लोग कसम खाते थे और दुआएँ माँगते थे कि या खुदा, ए परमेशर, ए देवी देवताओ, ए पीर पयम्बर, जैसी नेक बीवी, जैसी पतिव्रता फलानी औरत है, वैसी हमारी औलाद, हमारी बहू-बेटियाँ हों; और वही औरतें बिगड़ गईं। ऐसी कायापलट हुई कि कुछ से कुछ हो गया। इसमें कोई गरूर की नही ले सकती। बडे बोल का सर नीचा।

बारिन—अच्छा उसकी बदनीयती थी कि नही?

जोगिन—मै जब तक उसकी नीयत से अच्छी तह वाकिफ न हूँ, तब तक उसको बदनीयत नही कह सकती।

लाला—यह तो जोगिन साहब आपका बिलकुल ही सीधापन है।

जोगिन—जी नही, सीधापन नही है। मै सच कहती हूँ। यह आपको क्योकर मालूम हुआ कि उसकी नीयत खराब थी? शायद वह इसी में मेरी भलाई समझती थी। शायद उसकी दिल से यह राय हो कि मै नाहक अपनी जवानी को जगल मैदान बयाबान में तबाह कर रही हूँ, मेरे लिए वह यही बेहतर समझती हो कि मै किसी की होके रहूँ—अपनी जिन्दगी तलख न होने दूँ। अगर यह उसने किसी लालच से नही किया तो हम उसको बदनीयत नही कह सकते।

दुर्गा—भला एक राँड बेवा जवान औरत को एक मर्द से जो खुद जवान है इस तरह मिलाना कौन-सी नेक-नीयती है?

जोगिन—शायद उसका मतलब यह हो कि मेरी और उसकी शादी हो जाय।

दुर्गा—ए यह तुम क्या कहती हो, जोगिन। हिन्दू की बेवा की शादी कैसी!

जोगिन—होती है। और होती थी, और शास्त्र के रू से जायज है।

दुर्गा—हम न मानेंगे। सितम हो जाय।

जोगिन—मै किताबो से और बडे-बडे पडितों के कथन से साबित कर दूँ!

लाला—हम मानते हैं कि जोगिन साहब की बात सही है। अब रस्म नही है, यह हमने माना। मगर हिन्दुओ में बेवा की शादी नाजायज है।

जोगिन—अब भी बराबर होती है। पूना और नासिक और काशी के बाज-बाज पंडितो ने खुले बन्दो और कइयो ने छिपे तौर पर राय दी है कि बेवा की शादी शास्त्र के रू से मना नही है। मगर इसका रिवाज ऐसा उठ गया है कि अब ऐब समझा जाता है।

दुर्गा—एक बात पूछूँ, जो बुरा न मानो।

जोगिन—पूछिये। मैं समझ गई।

दुर्गा—अच्छा, फिर, समझ गई तो बताओ। जो बुरा ही नही समझती तो तुमने यह जोग क्यो साधा, और अकेली क्यो हो? बुरा मानने की बात नही है।

जोगिन—बुरा मानने की कौन बात है। बुरा तो मानती ही नही। देखिये बात यह है कि मैं हिन्दू बेवा की शादी को बुरा नही समझती, मगर मैंने दूसरी शादी इस सबब से नही की कि मुझसे दूसरे मर्द को अपना दूल्हा न बनाया जाता। वैसा मुझे इस ससार में अब मिल नही सकता। मुझे जो मोहब्बत उसकी थी उसका हाल मैं जानती हूँ और परमेश्वर। हाय, मैं उनके बाद दूसरे मर्द को मुँह दिखाऊँ! उसकी सेज पर बीबी बनके सोऊँ! जहर खा लूँ मगर यह न करूँ। मैं उसको (हस की मादा को दिखाकर) देखकर सोचती हूँ कि इन जानवरो को इतनी मोहब्बत अपने जोडे से होती है और हम इन्सान होकर ऐसी बेहयाई पट्टी आँखो पर रख लें कि प्रेमी पति के बाद दूसरे मर्द के साथ जायें। हम अगर कभी ऐसा सोचें तो हमारी औकात पर लानत!

दुर्गा—बस, ऐसा ही सबको समझना चाहिए।

जोगिन—पाँचो उँगलियाँ बराबर नही होती है। बाजी औरतें ऐसी होती है कि वह मनाती रहती है कि पति मर जायें तो गुलछर्रे उडायें, पति से जिनका दिल नही मिलता, और रुपया खाने को, घर में बहुत होता है और दिल की भी बद होती है, वह जरूर चाहती है कि पति न रहे तो खूब हो, मजे से खुल खेलें' एक पति नही, बीस हो जायेंगे। बाज ऐसी होती है कि उनके पढ़े-लिखे बाप भाई उनकी दूसरी शादी करने के खिलाफ नही होते, और वह अपनी भलाई इसी में समझती है।

दुर्गा—बुरी बात है कि नही?

जोगिन—अगर औरत नेकी के साथ रह सके तो कोई जरूरत नही है, और अगर न रह सके तो बदचलन हो जाने से यही अच्छा है कि दूसरी शादी कर ले।

लाला—इस बात को हम मानते है।

जोगिन—कितनी बडी जुल्म की बात है कि सात सात बरस की बच्चा, और दूल्हा मर गया, और वह तबाह हो गई। अगर करोडपति है, तो उसको

दुनिया का कौन आराम है, और अगर गोदनी की तरह जेवर से लदी है, तो उसको क्या सुख है। सोने का कौर भी कोई खिलाये तो क्या। हाय, पति पति ही है, नही तो जिन्दगी तलख है, जीना बेकार। हाँ, अगर दुनिया को कोई फायदा पहुँचाए तो अलबत्ता अच्छा है, बेवा की जिन्दगी इससे बेहतर और किस काम में आ सकती है।

लाला—हमने जब अखबारो में रनवीर सिंह की खबर सुनी तो रोना आ गया। बडा गम किया था। और सच यो है कि बडा ही जीवट का आदमी था। सूरमा जिसे कहते है। तुमने बेशक सच कहा है कि ऐसे शौहर के बाद दूसरे मर्द को मुँह दिखाना गुनाह है।

जोगिन—(आँखो में आँसू भर कर) क्या जानिये क्या याद आता है। जब सोचती हूँ, तो पहरो दिल काबू में नही रहता, उमँड आता है। मैंने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिए। सोचते-सोचते सब की इजाज़त से यह काम शुरु किया, कि ईसाई औरतो के साथ घर-गिरहस्तो की बहू-बेटियो में जाऊँ, उनको पढाऊँ लिखाऊँ सीना परोना सिखाऊँ, काढना बताऊँ, मोज़ जुर्राब बनाना सिखाऊँ। रात को कुटी में आके पडके सो रहूँ। उसका नाम लूँ। मोटा झोटा खाना खाऊँ। दो घडी जोडे के इस पटियल से दिल बहलाऊँ कि जो मुझ पर पडी है, वह इस बिचारी पर पडी है।

लाला—यह तो बहुत ही अच्छा आपने इरादा किया। जब तो भलेमानस लोग अपनी बहू-बेटियो को बेतक्ल्लुफ आपके यहाँ भेज देंगे। लडकियो के मदरसे अवध में हर जिले में है। मगर ऊँचे घरानो की लडकियाँ नही जाती। ऐब समझती है। डोलियाँ भी बहुत भेजी जाती है, पढाई भी मुफ्त होती है, किताबें भी मुफ्त दी जाती है। मगर गरीबो और नीच कौमो की लडकियो के सिवा और कोई नही जाती। बँगालियो और पारसियो की लडकियाँ ईसाइयो की लडकियो के मदरसे में जाती है। मगर इन दोनो कौमो ने हम लोगो से सुघडपने और तालीम में बही ज्यादा तरक्की की है। हम लोग अभी उनका मुकाबला नही कर सकते। हमारे मुल्क में तो अभी तक अक्सर मर्द ऐसे पाओगे, जो या तो बडे शरीफज़ादे और रईस है मगर जाहिल है और अक्सर मर्द एसे पाओगे जो औरतो की तालीम के दुश्मन है। भला ऐसे मर्दो से क्या उम्मीद हो सकती है, कि अपनी लडकियो को तालीम देंगे। अक्सर मर्द भी ऐसे बाकी है जो धर्म के विचार से लडको तक को अग्रेजी की तालीम से दूर रखते है, लडकियों की कौन कहे ?

दुर्गा—क्या बगालियो में बेवाओ की शादी जायज है ?

जोगिन—नही। अच्छे-अच्छे पढे लिखे बगालियो तक में भी इसकी रस्म नहीं है। हाँ, ब्राह्मो जो उनके हाँ एक धार्मिक गिरोह है, वह लोग शादी-ब्याह को जायज रखते है। मिस्टर मलाबारी नाम के एक पारसी विद्वान है। बम्बई के इस

बहुत बड़े आदमी ने अपना जीवन बेवाओं की भलाई में लगा दिया है। इसको बुरा मालूम होता है कि हज़ार बेवाओं में एक भी इस सबब से आवारा हो जाय कि वह बेवा हो गई है।

दुर्गा—यह तो हठधर्मी की बात है। जिनके पति पल्ले पर मौजूद हैं, क्या वह नेक ही रहती है। अगर ब्याही हुई औरतें सब नेकी का जामा पहने रहती तो मैं ज़रूर कहती कि बेवाओं की भी शादी होनी चाहिए। लेकिन हमको इस बात का दावा है कि हिन्दू की बेवा के पावँ धो-धोके पियें। और यों 'नेक-अन्दर बद और बद-अन्दर नेक' तो सब कहीं होती है।

जोगिन—यह सच है। हिन्दुओं की बेवाओं बिचारियों पर जो सख्तियाँ होती हैं उनको वही झेल सकती हैं, दूसरी नहीं झेल सकती। मगर इन सख्तियों से उन पर खामखा ज़ुल्म होता है या नहीं, उनका दिल कुढ़ता होगा या नहीं, मर जाने को इस जिन्दगी से अच्छा समझती होंगी या नहीं? ज़रूर समझती होंगी। क्या परमेशर ने इनको नहीं बनाया है? क्या उनके जान नहीं हैं, हाय! उन पर यह क्या कम मुसीबत है कि रॉड-बेवा हो गईं? उनको ढारस और सहारा देना चाहिए, न यह, कि हर कदम पर और हर बात में हम उन पर साबित करें कि वह बेवा है। हाय, यह क्या बेरहमी है! यह लहू कैसे सफेद हो गये हैं। यह चंगेज खाँ हलाकू की आदतें हमने क्यो सीख ली हैं? इन बेगुनाहों की जान के हम क्यों दुश्मन हुए हैं। उन्होंने क्या कसूर किया है? और सबको जाने दो। जिन बेचारी मासूम लड़कियों ने दूल्हा का मुँह भी नहीं देखा—हाय, जानती भी नहीं कि दूल्हा किसको कहते हैं, सास क्या चीज़ है, सुसरा कैसा होता है; जो सिर्फ इतनी गुनहगार हैं कि उनके अनजाने में, हमारी और तुम्हारी बेवकूफी से, भँवरी फेरी गईं उन ज़रा-ज़रा से बच्चों का बेवा हो जाना सितम ही तो है।

दुर्गा—हाँ, यह तो सच कहती हो। उन नन्ही-नन्ही मासूमों की तो फिर भँवरी न फेरनी चाहिए। किसी के सामने कहें तो ताने दे कि वाह, अच्छी बातें सीखी हैं!

लाला—हम तो विधवा विवाह के खिलाफ नहीं हैं।

जोगिन—कोई पढ़ा-लिखा इसके खिलाफ न होगा।

दुर्गा—सख्ती तो बेचारियों पर बड़ी होती है। एक तुम अपने ही को देखो, राज करती थी और अब किस हाल में हो।

जोगिन—हम पर पड़ी है ऐसी तो हम क्या करें।

लाला—मुसीबत जो आप पर पड़ी वह तो ज़ाहिर है मगर आपने इस हाल में सेवा का धर्म भी खूब निभाया है।

जोगिन—अपने दो घड़ी दिल बहलाने के लिये किया, किसी पर कोई एहसान नहीं।

लाला—इसका पुन्न तो मरनेवाले की आत्मा को पहुँचेगा।

जोगिन—(आँखों में आँसू भरकर)तुम्हारी कामना परमेश्वर सच्ची करे।

लाला—जो तुमने सीखा था, उससे ऐसा फायदा पहुँचा रही हो कि पचकोसी आदमी तुम्हारा जस मानते हैं।

जोगिन—हमारे सबब से जो किसी का फायदा हो तो उससे ज्यादा खुशी हमारी और क्या हो सकती है।

दुर्गा—फायदा तो तुमसे ऐसा है कि हमारा ही दिल जानता है।

चार बजे तक ज्ञान और सीख की बातें होती रही। चार बजे कामिनी ने इन सब के साथ खाना खाया और बिदा ली। लाला शादीलाल ने अपना एक सिपाही साथ कर दिया और उसको हुक्म दिया कि जब तक हम न बुलाएँ या वह बिदा न दें, तब तक रात-दिन वहीं रहना और जो हुक्म दें वह बजा लाना। कामिनी से चलने वक्त घन्नो ने बहुत जिद की कि यहीं रह जाओ। शायद वह फिर किसी बहाने से आये और गुलबिया को तुमने निकाल बाहर भी नहीं किया है। शादीलाल और दुर्गा और करीमन ने भी कई बार कहा तो कामिनी ने कहा—साफ-साफ यह है कि मैंने अपने भाई और देवर को बुलवाया है। जब वह आएँगे, तो इस मालिन को पूरी सज़ा दी जायगी और जो बद आदमी औरत बनकर आया था, उसको भी मैंने पहचान लिया है। मेरा भाई और देवर उसके गलफड़े चीरके धर देंगे। आप देखती ही जाइए।

बिदा लेकर जोगिन बाग में आयी। रात भर सिपाही और गाड़ीवान और चौकीदार और दोनों मालिनो और बारिन और ब्राह्मनी और भगवाले ने खूब चौकसी की। सुबह को कामिनी का देवर मानसिंह और भाई इन्द्रविक्रम सिंह और पद्मिनी, बड़ी बहन शिवरानी और कमला—यह काफिला आया। दोपहर तक कुल हाल इन सब ने मालिनो और चौकीदारो और भगवाले और बारिन और ब्राह्मणी से सुना, और उस कुटनी मालिन गुलबिया के भी बयान कलमबन्द कर लिये। और इन्द्रविक्रम सिंह को बाग में छोड़कर मानसिंह घोड़े पर सवार हुआ, और यह जा वह जा।

पच्चीसवाँ अध्याय

उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।

रनबीर सिंह के दोस्त ठाकुर रुस्तम सिंह और उनके चचा ठाकुर युद्धवीर सिंह, सी० आई० ई० तीन महीने तक समुन्दर में जहाज पर हवा खाने गये

थे। डाक्टरों ने सलाह दी थी कि युद्धवीर सिंह की तन्दुरुस्ती के लिये ज़रूरत है कि दो तीन महीने तक समुन्दर ही में रहें। रुस्तम सिंह उनके भतीजे भी साथ गये थे। तीन महीने के बाद वापिस आये तो बलभद्र सिंह के यहाँ एक दिन रुस्तम सिंह मेहमान हुए। आते ही कहा—भई, रनबीर और गुमान सिंह और इन्द्रबिक्रम सिंह को बुलवाओ।

इतना सुनना था कि बलभद्र सिंह की आँखों में आँसू आ गये। मेहमान का असबाब उतरवाया, और कहा—दस बज गये हैं। गुसलखाने जाके नहाइए, खाना खाइये। सब दोस्तों को बुलवा लूँगा। आप खाने-वाने से तो फरागत हूजिए। उन्होंने कहा—भई घबराहट क्या है, अभी तो दस ही बजे हैं। चाय और रोटी और मक्खन स्टेशन से उड़ाके आये हैं। चचा को गाँव पर भेजा, हमने हाजिरी खाई और यहाँ आये। मैं तो तार ज़रूर भेज देता, मगर पहले यहाँ उतरने का इरादा न था।

बलभद्र सिंह चाहते थे कि रुस्तम सिंह पहले खाना खा लें, फिर और बातें हों। मगर उन्होंने एक न मानी। कहा—हम कसम खाके आये हैं, कि आज रनबीर सिंह ही के साथ खाना खाएँगे। ज़रूर बुलाओ और जल्द बुलवाओ। बलभद्र सिंह ने फिर इसरार किया कि तुम तो पागल हो, कहना नहीं मानते। अरे, भाई खाना खा लो, फिर चलके हम तुम तहसीलदार को भी पकड़ लाएँगे और इन्द्र बिक्रम सिंह को भी।

उनके दोस्त ने बिगड़कर पूछा—और रनबीर सिंह को?

उन्होंने कहा—रनबीर सिंह तो लड़ाई पर गये हैं। रिसालदार हो गये हैं न। कहने को तो बलभद्र सिंह ने इतनी बात कह दी। करीब था कि फूट-फूट के रोने लगें; मगर ज़ब्त किया, कि ये अभी सफर से चले आये हैं; यह गोला लगेगा तो गज़ब ही हो जायगा। खाना-दाना खा लें तो इन्द्रबिक्रम सिंह या गुमान सिंह से कहें कि भई अब इनसे न छिपाओ। रुस्तम सिंह को क्या मालूम था कि जिस दोस्त के बारे में बातें कर रहे हैं उसके मरने का तार मुद्दत हुई आ चुका। बलभद्र सिंह का ज़ख्म उस वक्त हरा हो गया। कहना चाहते थे कि—अरे यार किसको पूछते हो! अब उसका ठिकाना कहाँ! मगर बस इसी खयाल से खामोश हो रहते थे, कि खाना खा लेने दो—वह दो घड़ी पहले सुना, तो क्या, और दो घड़ी बाद सुना तो क्या। कोई खुशखबरी तो है नहीं कि दोस्त के आते ही उससे कहा जाय।

रुस्तम—बीबी रनबीर सिंह की इतनी प्यारी है कि हम समझते थे यह कभी रिसाले में जाने का नाम भी न लेगा: आज बिलोचिस्तान भेज दिये गये, कल माल्टा में तायनात किये गये।

बलभद्र सिंह रो देने को थे कि यह क्या कह रहा है। रनबीर सिंह कहाँ बेचारा।

रुस्तम—हमने कामिनी की तस्वीर भी नही देखी। कई बार रनबीर से कहा, और वह दिखाने को भी था, मगर इत्तफाक!.. हमारी भावज कहती हैं कि ऐसी हसीन औरत देखी ही नही!

बलभद्र सिंह बात को टालते थे।

रुस्तम—मैं सोचके आया था कि रनबीर से कहेंगे कि कामिनी का झमकडा हमें दिखा दो! कोई औलाद हुई?

बलभद्र—नही, कोई नही।

रुस्तम—उम्मीद है?

बलभद्र—भगवान जाने!

रुस्तम—रनबीर के लडका हों तो हम उसको और अपने लडके को साथ ही साथ लन्दन रवाना करें।

बलभद्र सिंह ने फिर रोना जब्त किया। दिल में सोचने लगा, कि हाय रुस्तम सिंह किस खयाल में हैं। रनबीर सिंह बेचारे के यहाँ, अब लडका होना कैसा!

रुस्तम—भला कामिनी उनके लडाई पर जाने से खुश है या नाराज?

बलभद्र—मालूम नही।

रुस्तम—हमसे कुछ फरमाइशें की थी कि ये-ये चीजें लेते आना, वह हम नही लाये। हमसे बहुत बिगडेगा। खत-वत आता है? पता क्या है?

बलभद्र सिंह जल्दी से एक और कमरे में चले गये और वहाँ जाके बहुत रोए। नौकर देख रहा था, वह समझ गया कि रुस्तम सिंह जब से बाहर से आये हैं उनको अभी रनबीर सिंह के मरने का हाल नही मालूम, खोद-खोदके पूछ रहे हैं। और ये बिचारे टाल रहे थे। अब रोना आ ही गया। खैर आँसू पोछकर और मुँह धोकर रुस्तम सिंह के पास गये, और कहा—यार हम कल से भूखे हैं। चलो खाना खा लो। पहले तो रुस्तम सिंह ने बुरा भला कहा कि बडे मरभुखे मालूम होते हो। उस वक्त से सौ ही दफे कह चुके। ऐसी भी क्या भूख! चलिये, साहब, चलिए। हम कहते थे कि गुमान सिंह और इन्द्र बिक्रम सिंह भी आ जाते तो सब साथ ही चलते।

बलभद्र ने कहा—जी हाँ, वह लोग आपके लिये अब तक बैठे होंगे।

गरज कि इस रद्दो-बदल के बाद खाना खाने बैठे। अडे और कबाब और चुपडी हुई रोटियाँ और आलू का सालन और उरद की दाल और मुर्ग का कोरमा और चटनी खाने के साथ। बलभद्र सिंह ने पिल्स्नर की बीअर पी और रुस्तम ने ब्राण्डी।

बलभद्र सिंह ने गुमान सिंह और इन्द्रविक्रम सिंह को लिख भेजा कि रुस्तम सिंह आये हैं। अभी मैंने उनसे रनबीर सिंह मरहूम के बारे में कोई जिक्र नही किया हैं। तुम लोग भी आओ।' 'मरहूम' का लफ्ज लिखते हुए बलभद्र सिंह की

आँखों में आँसू डवडवा आये और और दोनों दोस्त भी मरहूम का लफ्ज पढ कर आंखो में आंसू भर लाये—आज रनवीर सिंह को हम 'मरहूम' कहते हैं।

ये दोनो खाना खाते ही थे कि वह दोनों (गुमान सिंह और इन्द्रबिक्रम सिंह) आ गये।

रुस्तम—(बड़े तपाक के साथ) बचा बिरादर: आओ रे भाई! (इन्द्र-विक्रम सिंह को आहस्ता से लप्पड़ लगाकर) इन गालो को ये हाथ ढूंढते थे। गुमान सिंह की टोपी सर से फेंककर) हमारे सामने टोपी उतारकर आया कर, और जूता उतारके। थू काला सूअर!

इन्द्र—कहिए कब आये?

रुस्तम—जब आपकी हमशीरा ने बुलवाया, तब आये।

गुमान—अब ठाकुर युद्धवीर सिंह की तबीअत का क्या हाल है?

रुस्तम—(गुमान सिंह को जाम देकर) लीजिए, ब्राण्डी तो पीजिए।

गुमान—(जाम लेकर) हमें पसन्द नही। (पीकर) व्हिस्की अच्छी होती है।

रुस्तम—(दूसरा जाम इन्द्रविक्रम सिंह की तरफ बढ़ाकर) लीजिए।

इन्द्र—शौक कीजिए। मैंने तो छोड़ दी। मुझसे इसरार न कीजिए।

रुस्तम—आपकी ऐसी-तैसी।

बलभद्र—भई इनसे इसरार न करो। इन्होने वाकई कोई तीन महीने से नही पी। इनको माफ कीजिए। हम और गुमान तो साथ दे रहे हैं।

खाना खाने के बाद सब कमरे में जाके बैठे और पखा होने लगा।

रुस्तम—(इन्द्रविक्रम से) रनबीर सिंह का खत कब से नही आया?

इन्द्र ने आंखो में आंसू लाकर एक ठंडी साँस भरी।

गुमान सिंह—किसको पूछते हो? रनबीर सिंह बेचारा।

इतना कहना था कि गुमान सिंह की आंखो में आंसू आ गये।

इन्द्र—(रोकर) रनबीर सिंह दग़ा दे गये।

रुस्तम—(जोर से) अरे!!

अचानक ही जो इतने पुराने दोस्त, बल्कि लँगोटिये यार कहिये, उसके मरने की खबर सुनी तो बेहद ताज्जुब हुआ। बस, 'अरे!' का लफ्ज तो मुंह से निकला; बहुत ज़ोर से 'अरे!' कहकर एक हैरानी-सी में डूब गया। उसके बाद दिल पर रंज का ऐसा असर हुआ कि ज़ोर से एक चीख मारी और रोना शुरू किया तो ज़ब्त करना मुश्किल था। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गईं। आंसू देर तक नही थमे। चारो रोते थे। कोई किसी से बात नही करता था। नौकर ने जब यह कैफियत देखी, तो पानी लाया और सब का मुंह धुलाया और तौलिया दिया। मुंह धो और आंसू पोछकर रुस्तम सिंह ने एक ठंडी सांस भरी और कहा—हाय रनबीर, अरे यह क्या हो गया!

रुस्तम—(बलभद्र से) यह क्या हो गया, भाई!

बलभद्र—(आँखों में आँसू भरकर) बिजली गिरी!

रुस्तम—हाय मैं कहता था कि रनबीर सिंह के साथ खाना खाएँगे। (रोकर) हाय अफसोस। अरे यार रनबीर सिंह (खड़े होकर) किसी कोने से आ जा! (बहुत रोकर) यह कैसा गोला लगा।

बलभद्र—हम लोगों के नसीब।

गुमान सिंह—(आँसू बहाते हुए) इन्द्रविक्रम सिंह ने उस दिन से शराब पीना और गोश्त खाना छोड़ दिया। घुलके काँटा हो गये हैं। बलज़ोर सिंह की बीवी रोते रोते अन्धी हो गईं। यानी वाकई अन्धी ही हो गई, एक आँख से बिलकुल नहीं सूझता। दूसरी आँख से कुछ योंही-सा दिखाई देता है।

रुस्तम—(आँसू पोंछकर) क्या दोस्त आदमी था! यह क्या हुआ।

इन्द्र—बड़ा किस्सा है। जंग में क्या पूछते हो, क्या हुआ!

रुस्तम—मैंने आते ही पहले उसी को दरियाफ्त किया, कि रनबीर को बुलाओ (ठंडी आह खींचकर) बलभद्र सिंह ने पहले तो कुछ कहा नहीं। बाद में कहा कि जंग पर हैं, वह रिसाले में नौकर हो गये। जो बात मैं पूछता था उससे ये बचते थे, और बार-बार टाल देते थे, और बड़ा इसरार करते थे कि खाना जल्दी खा लो। हाय हाय! बड़ा अंधेर हो गया!

इन्द्र—बड़ी नोक का ठाकुर था।

गुमान—छत्रियों की नाक।

रुस्तम—ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ था। (इन्द्र विक्रम से) हाय, मुझे और का तो रोना आता ही है, दुश्मन तक रोते होंगे। मगर मुझे तुम्हारी बहन बिचारी की हालत पर बड़ा ही रोना आता है।

इन्द्रविक्रम सिंह की आँखों से आँसू की धार बह चली।

बलभद्र—अरे मियाँ किसको रोते हो! और हम भी रोते हैं तो बेवकूफ हैं। वह हमारा दोस्त ही न था। दोस्त होता तो इतनी जल्द दगा दे जाता? कभी न देता। मगर वह तो पक्का दुश्मन था। और सब से ज्यादा दुश्मन हमारी बहन बिचारी का था।

गुमान—वह यहाँ की न रही।

रुस्तम—दोनों जहान से गई-गुजरी।

रुस्तम—आजकल तुम्हारे यहाँ हैं कि ससुराल में?

इन्द्र—(रोते हुए) न हमारे यहाँ हैं न ससुराल में।

रुस्तम—(ताज्जुब में आकर) क्या?

* * * * * * *

दूसरे रोज इन्द्रविक्रम सिंह के मामू के लड़के के साथ [illegible] सिंह और

बलभद्र सिंह और गुमान सिंह मारा गये । कामिनी किसी मर्द को बाग में नहीं आने देती थी। मगर जो कोई उनके भाई या देवर के साथ जाता था उसको नही रोकती थी। जिस वक्त ये लोग बाग़ के अन्दर गये, तो अजब हालत देखी। एक हूक की मादा चुग रही है, और बाग़ भर में सन्नाटा पडा हुआ है। मालिनें दूर अपने काम में लगी हुई हैं। और एक कमसिन नाजुक-बदन औरत गेरुए कपड़े पहने हुए, हाथ में छोटी-सी सितारी लिये आहिस्ता-आहिस्ता बजाती है, और बड़ी हसरत के साथ झूमती हुई गाती है—

भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।
चार जनें मिल लेने को आये, ले काठ की री घोड़ी।
जोड़ लकड़िया उन फूंक दीना, जैसे बिंदराबन की री छोरी।
भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।
शीश महल के दस दरवज्जे; आन काल ने घेरी
आगर तोडी नागर तोड़ी, तोड़ खोपड़िया निक्स गयो प्रान।
भज मन राम, उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।
पाय पकड़ के तिरिया रोए, बिछुडत है मोरी हँसा की जोरी
भज मन राम उमिर रही थोडी, भज मन राम।
कहत कबीर सुनो भई साधो जिन जोड़ी उन तोडी।
भज मन राम उमिर रही थोड़ी, भज मन राम!

छोटी-सी सितारी बजाती और यह भजन गाती थी:

उमिर रही थोडी; भज मन राम
पाय पकड़ वाके माता रोवे, बहियाँ पकड़ सग भाई
लट छिटकाय वाकी तिरिया रोवे, बिछुरत है मोरी हसा की जोरी
भज मन राम उमिर रही थोडी। भज मन राम।

जितने गये थे, सब की यह कैफियत थी, कि रूमाल हाथ में और आँसू पोछते जाते थे। यह आवाज कलेजे पर तीर का काम करती थी। 'बिछुरत है मोरी हँसा की जोरी—भज मन राम।' रुस्तम सिंह के दिल पर इस आवाज और इस अन्दाज ने तीर ही का काम किया। आँसुओं के तार ऐसे बँधे थे कि कुछ नही सूझता था।

इत्तफाक से एक बूढा ताल्लुकदार हाथी पर सवार उधर से निकला; घटा ठनाठन बजाता हुआ। जब पास आया तो एक औरत, और कमसिन औरत के गाने की आवाज सुनी। नौजवान की आवाज छिपी नही रहती। बाग की दीवारें छोटी-छोटी थी। हाथी रोकके देखने लगा। साफ देखा कि एक जवान औरत गेरुए कपडे पहने, फकीराना लिबास, जोगिन के भेस में है (हाथ में सितारी बहुत ही छोटी-सी है। इसको छेड़ती जाती है और गाती जाती है—)

रुस्तम—(बलभद्र से) यह क्या हो गया, भाई।

बलभद्र—(आँखो में आँसू भरकर) बिजली गिरी।

रुस्तम—हाय मै कहता था कि रनबीर सिंह के साथ खाना खाएँग। (रोकर) हाय अफसोस। अरे यार रनबीर सिंह (खडे होकर) किसी कोने से आ जा। (बहुत रोकर) यह कैसा गोला लगा।

बलभद्र—हम लोगो के नसीब।

गुमान सिंह—(आँसू बहाते हुए) इन्द्रबिक्रम सिंह ने उस दिन से शराब पीना और गोश्त खाना छोड दिया। घुलके काँटा हो गये है। बलजोर सिंह की बीवी रोते रोते अन्धी हो गई। यानी वाकई अन्धी ही हो गई, एक आँख से बिलकुल नही सूझता। दूसरी आँख से कुछ योही सा दिखाई दता है।

रुस्तम—(आँसू पोछकर) क्या दोस्त आदमी था। यह क्या हुआ।

इन्द्र—बडा किस्सा है। जग में क्या पूछते हो, क्या हुआ।

रुस्तम—मैने आते ही पहले उसी को दरियाफ्त किया, कि रनबीर को बुलाओ (ठडी आह खीचकर) बलभद्र सिंह ने पहले तो कुछ कहा नही। बाद में कहा कि जग पर है, वह रिसाले में नौकर हो गये। जो बात मै पूछता था उससे ये बचते थे, और बार-बार टाल देते थ, और बडा इसरार करते थे कि खाना जल्दी खा लो। हाय हाय! बडा अधेर हो गया।

इन्द्र—बडी नोक का ठाकुर था।

गुमान—छत्रियो की नाक।

रुस्तम—ऐसा कोई पैदा नही हुआ था। (इन्द्र बिक्रम से) हाय, मुझे और यो तो रोना आता ही है दुश्मन तक रोत होगे। मगर मुझ तुम्हारी बहन बिचारी की हालत पर बडा ही रोना आता है।

इन्द्रविक्रम सिंह की आँखो से आँसू की धार बह चली।

बलभद्र—अरे मियाँ किसको रोते हो! और हम भी रोत है तो बवकूफ है। वह हमारा दोस्त ही न था। दोस्त होता तो इतनी जल्द दग़ा दे जाता? कभी न देता। मगर वह तो पक्का दुश्मन था। और सब से ज्यादा दुश्मन इनकी बहन बिचारी का था।

गुमान—वह कही की न रही।

रुस्तम—दोनो जहान से गई-गुजरी।

रुस्तम—आजकल तुम्हारे यहाँ है कि सुसराल में?

इन्द्र—(रोते हुए) न हमारे यहाँ है न सुसराल में।

रुस्तम—(ताज्जुब में आकर) क्या?

* * * * * * *

दूसरे रोज इन्द्रविक्रम सिंह के मामू के लडके के साथ रुस्तम सिंह और

बलभद्र सिंह और गुमान सिंह बारा गये। कामिनी किसी मर्द को बाग में नहीं आने देती थी। मगर जो कोई उनके भाई या देवर के साथ जाता था उसको नहीं रोकती थी। जिस वक्त ये लोग बाग के अन्दर गये, तो अजब हालत देखी। एक हंस की मादा चुग रही है, और बाग भर में सन्नाटा पड़ा हुआ है। मालिनें दूर अपने काम में लगी हुई हैं। और एक कमसिन नाजुक-वदन औरत गेरुए कपड़े पहने हुए, हाथ में छोटी-सी सितारी लिये आहिस्ता-आहिस्ता बजाती है, और बड़ी हसरत के साथ झूमती हुई गाती है—

भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।
चार जने मिल लेने को आये, ले काठ की री घोड़ी।
जोड़ लकड़िया उन फूंक दीना, जैसे विंदरावन की री छोरी।
भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।
शीश महल के दस दरवज्जे; आन काल ने घेरी
आगर तोड़ी नागर तोड़ी, तोड़ खोपड़िया निक्स गयो प्रान।
भज मन राम, उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।
पाय पकड़ के तिरिया रोए, बिछुड़त है मोरी हँसा की जोरी
भज मन राम उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।
कहत कबीर सुनो भई साधो जिन जोड़ी उन तोड़ी।
भज मन राम उमिर रही थोड़ी, भज मन राम!

छोटी-सी सितारी बजाती और यह भजन गाती थी:

' उमिर रही थोड़ी; भज मन राम
पाय पकड़ बाके माता रोवे, बहियाँ पकड़ सग भाई
लट छिटकाय वाकी तिरिया रोवे, बिछुरत है मोरी हंसा की जोरी
भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।

जितने गये थे, सब की यह कैफियत थी, कि रूमाल हाथ में और आँसू पोंछते जाते थे। यह आवाज़ कलेजे पर तीर का काम करती थी। 'बिछुरत है मोरी हँसा की जोरी—भज मन राम।' रुस्तम सिंह के दिल पर इस आवाज और इस अन्दाज़ ने तीर ही का काम किया। आँसुओं के तार ऐसे बँधे थे कि कुछ नहीं सूझता था।

इत्तफाक से एक बूढ़ा ताल्लुकदार हाथी पर सवार उधर से निकला; घटा ठनाठन बजाता हुआ। जब पास आया तो एक औरत, और कमसिन औरत के गाने की आवाज सुनी। नौजवान की आवाज छिपी नहीं रहती। बाग़ की दीवारें छोटी-छोटी थी। हाथी रोकके देखने लगा। साफ देखा कि एक जवान औरत गेरुए कपड़े पहने, फ़क़ीराना लिबास, जोगिन के भेस में है (हाथ में सितारी बहुत ही छोटी-सी है। इसको छेड़ती जाती है और गाती जाती है—)

उमिर रही थोडी, भज मन राम।
पाटी पकड वाके माता रोवे, वहियाँ पकड सग भाई
भज मन राम, उमिर रही थोडी, भज मन राम।

यह भजन जिसके एक एक लफ्ज से वैराग बरसता था सुनकर ताल्लुकेदार को रोना आ गया। फीलवान से कहा—यह कोई वडी दुखी मालूम होती है।

फीलवान—सरकार, कोई वहुत वडा दुख इस पर पडा है।

ताल्लुकदार—मालूम होता है, इसका आदमी जाता रहा है, उसके दुख में जोगिन हो गई।

फीलवान—और कोई अमीर मालूम होती है।

ताल्लुकदार—हाँ, किसी वडे आदमी की वहू-वेटी है। हाय, दुख भी क्या वुरी चीज है।

फीलवान—और अभी उमर भी कम है, हुजूर।

ताल्लुकदार—वच्चा है, बिलकुल। अभी उम्र क्या है।

इतने में फिर आवाज आई—

चार जना मिल लेने को आए, काठ की री घोडी
जोड लकडिया उन फूँक दीना, जैसे विन्दराबन की री छोरी
भज मन राम, उमिर रही थोडी। भज मन राम।

बूढे ताल्लुकदार तो सुनते ही बस रो दिये।

दो आदमी पैदल जा रहे थे और उनके घोडे पीछे पीछे थे। एक दफा ही आवाज आई—

शीश महल के दस दरवज्जे, आन काल ने घेरी
आगर तोडी, नागर तोडी तोड खोपडिया निकस गयो प्रान
भज मन राम, उमिर रही थोडी, भज मन राम।

दोनो सुनते ही लोट हो गये। इन दोनो आदमियों ने चाहा कि वाग के अन्दर जायें और देखें कि यह क्या भेद है। मगर दरवान ने रोका। गुमान सिंह ने जो पीछे फिरके देखा तो दो सफेदपोश। इतने में उनके कान में आवाज आई कि तहसीलदार साहव मालूम होते हैं। आँख उठाकर जो देखते हैं तो रौनकनगर के बूढे ताल्लुकदार हाथी पर सवार। चार आँखें होते ही ताल्लुकदार ने बदगी की और हुक्म दिया कि हाथी को बिठा दो। गुमान सिंह वाग के वाहर गये। इन दो सफेदपोशो में एक उनकी तहसील का सियाहानवीस था जो अब बदल दिया गया, और दूसरा रेवेन्यू एजेन्ट। दोनो ने झुकके सलाम किया। और इधर ताल्लुकदार साहव वढे।

ताल्लुकदार—मुझे क्या मालूम था कि आप यही है। वह तो फीलवान ने कहा।

गुमान—मेरे कान में आवाज आई, जब तो मैंने देखा।

ताल्लुकदार—यह क्या माजरा है? यह कौन दुखी औरत है?

गुमान—इसको न पूछिये। इस वक्त कलेजा कटा जाता है।

ताल्लुकदार—मेरी खुद यही कैफियत है। जब से सुना और देखा, दिल रो रहा हूँ।

रेवेन्यू-एजेन्ट—हुजूर, यह है कौन विचारी?

सियाहानवीस—कोई बड़ा सदमा पहुँचा है।

गुमान—बस, ऐसा सदमा पहुँचा है कि राज छोड़ दिया।

सियाहा—अफ़सोस। और हुजूर आवाज से पाया जाता है कि अभी उम्र भी कुछ ऐसी नहीं है।

गुमान—यह बेचारी मुसीबत की मारी हमारी ही जात की है और ठाकुर बलजोर सिंह की बहू।

रेवेन्यू-एजेन्ट—अरे! रनबीर सिंह के बाप बलजोर सिंह!

गुमान—रनबीर सिंह की बीवी है।

ताल्लुकेदार—हाय, गजब! हाय, हाय, किस घर की बेटी और किस घर की बहू और इस हालत में। इस वक़्त दिल का बहुत बुरा हाल है; गजराज सिंह मेरा यार है।

रेवेन्यू-एजेन्ट—यह भी बहुत बड़ा दुख है। मगर हमने यह नहीं सुना था कि (दवे दाँतो) जोगिन.....

'जोगिन' का लफ्ज दबे दाँतो कहा तो गुमान सिंह बोले—यह आपने डरते-डरते क्यो कहा? जोगिन हो ही गई है! यह तो खुली हुई बात है।

ताल्लुकदार और वह दोनो आँखों में आँसू ले आये।

जोगिन का भजन सुनकर सब का कलेजा फटता था। खास तौर से बूढे ताल्लुकदार का, कि जिस पर बीत चुकी थी। जोगिन की हर तान पर उसकी आँखो से पट-पट आँसू गिरने लगे और दुनिया का नक्शा आँखो के सामने खिच गया।

छब्बीसवाँ अध्यया

कम्मन

नौचन्दी जुमेरात, और अँधेरी रात; बादल की फौज, काली पल्टन; दल-बादल परे जमाए हुए। मालूम होता था कि विन्ध्याचल परबत से भी कही ज्यादा ऊँचे पहाड से वह गिराब चलेगा कि जमीन का झूलना डाँवाडोल हो जायगा। इस काली पल्टन के कडकैत का नाम जनरल बज्जर था; जिसके

कडके के मुकाबिल में अच्छे-अच्छे कडकैतो का कडका पानी भरता। यह पल्टन थी या काली कलकत्ते वाली का कहर का नमूना। दर-दीवार, दरख्त, पत्ते, जड, आदमी, आसमान-ज़मीन, तमाम दुनिया—सियाह। एक अँधरा है कि छाया हुआ है। इस कदर अँधरा कि जिधर नजर जाती थी काली जी की मूरत अपनी सूरत दिखाती थी।

इस रात को इस प्रिया जोगिन का दिल और रातो से कही ज्यादा बचैन और बेकरार था। पलग पर से चौंक-चौक पडती थी, उठ उठ बैठती थी। किसी पहलू से चैन नही आता था। एक दफा तो बिलकुल पागल-सी होकर जोर से चीखी—हाय यह क्या हो गया। आधी रात तक सोया की, उसके बाद आँखें खुल गई और दिल में एक हूक-सी उठी।

जब मालिका का दिल दुख में हो तो लौडियो, बाँदियो, नौकरो-चाकरो का दिल भला क्योकर खुश हो सकता है। मालिनें, महरियाँ, ब्राह्मणी, बारिन सब परेशान। बाग गो हरा भरा, फला फूला हुआ था, मगर उदास।

कामिनी दीवानियो की तरह से सिर धुनती थी। दो बजे के वक्त पलग पर से उठी। एक औरत साथ हुई, दो मालिनें साथ हुईं। बाग़ की रविशो में टहलने लगी और कूकने लगी—

भज मन राम।

बिछुडत है मोरी हसा की जोडी—भज मन राम।

कोई चार बजे के वक्त बाग की दीवार के पास से आवाज आई

नाही बिछुडी तोरी हसा की जोडी—भज मन राम।

पहले एक मालिन ने सुना, चौकन्नी हुई। कामिनी न यह आवाज नही सुनी, और बदस्तूर कूकने लगी—

बिछुडत है मोरी हसा की जोडी—भज मन राम।

उधर से फिर आवाज आई—

नाही बिछुडी तोरी हसा की जोडी—भज मन राम।

मालिन से अब न रहा गया। कहा—यह कौन है, जी ? दूसरी मालिन और औरत ने पूछा—कौन ?

जोगिन ने कुछ ध्यान न दिया और फिर कोयल की तरह कूकी—

बिछुडत है मोरी हसा की जोडी, भज मन राम।

इस आवाज के खतम होने ही यह आवाज फिर आई, और अबकी पास से सुनाई दी

नाही बिछुडी तोरी हसा की जोडी—भज मन राम।

अब तो कामिनी ने भी सुना और कान खडे हुए।

जोगिन—यह कौन है ?

औरत—कहता है: नाही बिछुड़ी तोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम!

मालिन १—मैंने पहले ही सुना था बिछुड़ी नाही तोरी हंसा की जोडी, भज मन राम! सगुन तो कुछ अच्छा-सा मालूम होता है।

जोगिन—ऊँह! होगा कोई। चिढाने दो। (जोर से) बिछुड गई तोरी हंसा की जोडी भज मन राम!'

उधर से भी आवाज आई:

मिल गई तोरी बिछुडी जोड़ी, भज मन राम!

मालिन २—यह क्या कहता है?

औरत—यह है कौन?

मालिन १—सगुन तो अच्छा है।

जोगिन—चिढाता है। चिढाने दो। जोर से विहाग की धुन में—

फ़क़ीरों से अच्छी नही दिल्लगी

उधर से आवाज आई—

हे जोगी भी करते वहीं दिल्लगी!

अब जोगिन और चौकन्ना हुई। उसी विहाग की धुन में जवाब।

मालिनो ने कहा—बीबी कुछ इसमें फेर है। अब जवाब न देना। ऐसी अकासबानी सुनके चुप रहते हैं।

जोगिन—(ऊँची आवाज से)

सदा क्या य आती है आकाश से?

(जरा आहिस्ता से) सदा—क्या—आती है आ—काश से?

उसने उधर से यो जवाब दिया—

नही आती आवाज आकाश से: सदा आती है यह मेरी लाश से।

मालिन १—अब न बोलो बीबी। मैं तो डर गई।

मालिन २—मुझे भी डर लगता है।

औरत—अब अन्दर चलिए। क्या जाने कौन हो कौन न हो।

जोगिन—(बहुत ही अचम्भे में आकर) यह क्या भेद है?—तू इन्सान है, या कोई जिन है, या कि साया है! या कि मुझे छेड़ने आया है!

उधर से आवाज आई—

न जिन हूँ, न साया हूँ, ना हूँ परी।
मैं इन्सान हूँ, कौम का छत्री
चली आ—देख, पीरो की करामात:
मेरी प्यारी है नौचन्दी जुमेरात!

जोगिन ने कहा—अरे! पहले तो समझी कि रनबीर सिंह की रूह है। कुछ डरी; लाश का लफ्ज तो सुन ही चुकी थी, और फिर छत्री का लफ्ज

भी सुना। और उन सब पर तुर्रा यह हुआ कि 'नौचन्दी जुमेरात' की याद दिलाई, और महीने की पहली जुमेरात नौचन्दी जुमेरात तो थी ही। दिल पर अजब तरह का असर हुआ। मगर सोचा कि मरने के बाद आवाज़ का आना अन्ध-विश्वास के कारन भी हो सकता है। एक दफा सोचा, कि चलो आवाज़ की तरफ। कहा, लालटैन रोशन करो। औरतो ने मना किया, कि सरकार, बहुत बुरा करती है। हमारी सलाह नही है। यह आकासवानी अच्छी नही है। मगर जोगिन अच्छी नही है, और फाटक खुलवाया, और इन तीनों औरतो को साथ लेकर चली। दो मालिनो के हाथ में खुरपी, —कि अगर भूत-प्रेत हो तो नुकसान न पहुँचा सके। बाहर निकली तो देखा कि बाग के पास मशाल जल रही है और एक फिनस रखी हुई है और एक नौजवान ख़ूबरू जोगी खडा हुआ है। पीत पीताम्बर और केसर का रँगा हुआ चाँदनी का कुरता, सोने के बटन। नगे सर, बीच की माँग निकली हुई, बालो में ब्रुश किया हुआ, बहुत ही खूबसूरत। जवान जोगिन उसके पास जाकर खडी हुई और कहा—

महाराज आप कौन है?

जोगी ने कहा—कम्मन!

कम्मन का लफ्ज सुनना था कि जोगिन ने आव देखा न ताव, झपटके लिपट गई, और गश आ गया। जोगी ने सँभाला, और फिनस में मालिनो की मदद से लिटाया। फिनस बाग की तरफ चली। जोगी फिनस का पाया पकडे हुए, साथ मालिनें और साथ की औरतें, अचम्भे में डूबी। उनमें चुपके-चुपके यो बातें होने लगी—

१—दीदी यह अचरज देखा!

२—यह जोगी कौन है? लडका सुन्दर है और रुपयेवाला अमीर।

३—यह तो मर्द के नाम से काँपती थी। कोई आने नही पाता था। यह क्या हो गया, कि लिपट गईं। मै तो काँप उठी!

१—इससे बढ़कर अचरज और क्या होगा?

२—और अभी उम्र क्या है?

१—अरे, अभी बच्चा है।

२—मै तो बस जैसे योही रह गई धक से।

१—महाराज, आप कौन है?

२—जोगीजी महाराज कहाँ से आना हुआ?

जोगी ने झुकके कहा—गुरू के घर से।

इतने में बाग़ का फाटक आया, तो मालिन ने कहा—अब महाराज आप यहाँ विराजिए। हमारी सरकार का हुक्म है कि मर्द अन्दर न आने पाये।

चौकीदार ने भी यही कहा। मगर जोगी ने हिश! कहकर अन्दर कदम रखा। अपने कहारो को डाँटकर हुक्म दिया कि चले आओ। कहार उनके साथ थे। चौकीदार रौब में आया। फिनस बाग के अन्दर कमरे तक आ गई। वहाँ से इन हमालियो ने जोगी की मदद से जोगिन को फिनस से, निकाला और पलग पर लिटाया, तो जोगी ने कहा—अच्छा, अब तुम लोग जाओ! हम इनको दवा देंगे।

उस पर वह सब बिगड खडी हुईं। महाराज जी, अब किरपा करिये!

दूसरी बोली—हाथ पकडते ही पहुँचा पकड लिया।

इतने में एक औरत इस तकरार की आवाज सुनकर जाग उठी, और दूसरी आई, और जोगी को देखकर कहा—अरे!

अब सुनिये कि इसकी असलियत क्या थी। कुछ औरतो को यकीन था कि यह अकासबानी है। कामिनी को डराया कि बाहर न जाओ। मगर 'नौचन्दी जुमेरात' का लफ्ज सुनकर कामिनी से न रहा गया। वहाँ जाके 'कम्मन' का लफ्ज सुना। यह समझी कि रनबीर सिंह है। सच है दुनिया उम्मीद ही के सहारे कायम है। इस उम्मीद के सबब से बडे बडे धोखे इन्सान खा जाता है। और जब कामिनी सी सती स्त्री इस जोगी से लिपट गई तो साथ की औरत अचम्भ में डूब गईं, कि अरे! यह कायापलट कैसी! और सबके सामने पूरा यकीन हो गया कि जादूगर है।

अब सुनिये कि इस वाकये के दो दिन पहले एक अंग्रेजी अखबार में यह छपा था—

'बडी खुशी की बात है कि जिन लोगो को टापू की फौज ने फतह के बाद गिरफ्तार करके किले में कैद किया था और उसके बाद किले के उस दरजे में आग लगा दी थी, जिसमें वह बेचारे बेकस जलभुनके खाक का ढेर हो गये थे—इनमें से कुछ आदमियो को वहाँ के एक अफसर ने पनाह दी थी और इनको टापू के गाँव में छिपाकर रखा था और पूरी कोशिश की थी कि अपनी गवरमेंट से छिपाकर इनको रिहा कर दें। मगर इस अफसर के एक दुश्मन ने गवरमेंट से जड दी। और गवरमेंट ने इस अफसर को तलब करके बडी सख्ती के साथ हुक्म दिया कि अगर दो रोज के अन्दर उन कैदियो को हाजिर न किया तो समुदर में डुबा दिया जायगा। यह अफसर बडा नेकदिल और भला आदमी था। उसने कतई इनकार किया, कहा, मैं कुछ भी नही जानता, और कमान के ऊँचे अफसरो को समझाया कि जग के मैदान में तो बेशक मार-काट का दुश्मन को पूरा-पूरा अख्तियार है, और जग के मानी ही ये हैं कि दुश्मन को मौत के घाट पहुँचाए, मगर जब दुश्मन को गिरफ्तार कर लिया और वह बस में आ गया और बिलकुल आपके क़ाबू में हो गया तो आपको अख्तियार

हैं, चाहे कत्ल कीजिए, चाहे जिला दीजिए, चाहे तोपदम कीजिए, चाहे तलवार से *गर्दन उडा दीजिए। मगर अक्ल और इन्साफ और जग के उसूल यह हैं* कि जो अपने बस और फाबू में आ जाय उसके साथ उम्दा सलूक करे। अगर मैंने किसी कैदी को बचाया भी होता तो गवरमेंट को लाजिम था कि उस पर रहम करती न कि उसके साथ मुझ पर भी यह जुल्म हो। जब रूसियो ने उसमान पाशा को गिरफ्तार किया तो उसमान पाशा ने अपने भाई के नाम कैदखाने से खत लिखा कि जो आराम मुझ कैदी को यहाँ मिलता है, वह अपने घर पर भी नही मिलता था। सिपाही वही है जो दुश्मन कैदी पर रहम करे। इतना सुनना था कि वहाँ के उजड्ड लोगो ने फौरन नादिर हुक्म दे दिया कि इसी दम इसको समुन्दर में डुबो दो। और दस प्यादे और पचास सवार और दो अफ्सर पूरी वर्दियाँ डाटे इस बेचारे को समुन्दर में ले गये, और डुबा ही देने को थे कि उसके लडके ने इन चार कैदियो के साथ-साथ दो कैदियो को पेश कर दिया और अपने बाप की जान बचाई। इन दोनो कैदियो के लिये गवरमेंट के जालिम अफसरो ने कत्ल का हुक्म जारी किया, और किले के फाटक के पास वह बेचारे लाये गये। उनसे पूछा गया कि तुम क्या चाहते हो? तुम्हारी गर्दन इस वक्त उडाई जायगी। ऐसी हालत में एक ने कहा—मेरी लाश फूंकी या दफनाई न जाय, बहा दी जाय! दूसरे ने कहा—मुझे पूरी बोतल शराब की पिला दी जाय! इसके बाद जल्लाद ने पहले उस कैदी की गर्दन उडाई, जिसने अर्ज की थी कि लाश बहा दी जाय और उसका धड थोडी देर तडप कर गिरा और ठडा हो गया। इसके बाद उस बेचारे की बारी आई जो शराब की पूरी बोतल उडाकर बुत् बना हुआ था। जैसे ही जल्लाद ने तलवार उठाई, वैसे ही उसने डाँट बतलाई—ओ गीदी, खबरदार है और इस जोर और डपट के साथ डाँटा, कि जल्लाद का हाथ काँप उठा और तलवार हाथ से गिर पडी। जो अफसर साथ थे उन्होने जल्लाद को रोका और उस शराबी को रिहा कर और दूसरे जल्लाद को बुलाकर पहले जल्लाद की गर्दन उडा दी और कैदी और मरे हुए जल्लाद का खून किले के फाटक के अजगरो को पिलवा दिया। किले के फाटक के इधर-उधर दो अजगर बने हुए थे। दोनो पीतल के। उनके मुंह में खून डाल दिया और कटे हुए सर फाटक के इधर-उधर लटका दिये। जो कैदी मारा गया था उसका नाम दफादार दीपसिंह था, कौम का जाट और जो बच गया उसका नाम सूबेदार खडक सिंह सिख। जिस अफसर ने इन चार कैदियो को पनाह दी थी उसके लडके को गवरमेंट ने टापू की फौज का कमाण्डर मुकर्रर कर दिया। इसने मौका पाकर इन तीनो कैदियो को गवरमेंट से छिपे तौर से अदन रवाना किया। अदन में तीनो आदमी इतने सख्त बीमार हो गये कि वहाँ के डाक्टरो को इनकी जिन्दगी की उम्मीद नही

रही। कई दिन के बाद, दो की मौत हो गई। सिर्फ एक बच गया। और वह ब्रिटिश के पास माहरा गया, और कोसल से सफर का खर्च लिया और अपने घर तार भेजा कि मैं मुद्दत के बाद सलामत आता हूँ।'

दुनिया के भी क्या कारखाने हैं। कामिनी रनवीर के नाम पर फिदा थी। अगर इसको यह मालूम हो जाता कि मेरी जान जाने से रनबीर सिंह जिन्दा हो जायेंगे, तो यह जहर खा लेती। किसी न किसी तरह अपनी जान दे देती। इस जोगी को रनवीर सिंह समझकर ऐसी बेताब हो गई कि लिपट ही तो गई। बेहोश हो गई। और जिस वक्त फिनस चली, रास्ते में तीन बार आँख खुली। रनवीर सिंह और मालिनो ने कई बार पानी पिलाया, मुंह धुलाया। मगर दो-दो तीन-तीन मिनट के बाद गश आ जाता था, और जब आँखें खुलती थी, तो उसको सब एक सपना-सा मालूम होता था।

कामिनी को इस थोडे ही अर्से में कभी तो यकीन होता था कि यह रनबीर सिंह ही है और गोया दिल की बाछ खिल जाती थी, और कभी सब कुछ सपना समझती थी।

जब कामिनी को फिनस में लिटाया और फिनस चली और कई बार दिल ने पलटे खाये और कामिनी बेचारी उम्मीद और नाउम्मीदी के बीच झूल रही थी, एक दफा आँखें अच्छी तरह से खोलकर नजर भर के देखा तो वह खुशी हासिल हुई जो लैला को मजनूं और शीरी को फरहाद के देखने से होती। मगर जरा ही देर के बाद फिर खयाल आया, कि यह मैं सपना देख रही हूँ या वाकई यह सब हो रहा है जो मैं देख रही हूँ, तबीअत में जोश पैदा हुआ तो कहने लगी—अगर तुम रनबीर सिंह की रूह हो, तो अगर परमेश्वर कोई चीज है तो उससे बढके कोई नही जानता कि मैं कैसी हूँ। . . . हाय मेरा इम्तहान लेने को उसने अपनी रूह को भेजा है। अरी रूह, तू जिसको सबसे ज्यादा प्यार करती है, तुझको उसी की क़सम कि तू खुद मरा इम्तहान ले। तू रनबीर सिंह बनके आई है! अरे, यह कौन नाम मेरी जबान से निकल गया! हाय हाय, हम लोगो में दूल्हा का नाम नही लेते (बेहद रोकर) और क्यो नही लेते! अरे इस वजह से नही लेते कि कुछ और कहने को थी कि गला रुंध गया, और फिर बेहोशी छा गई। फिर आँख खुली। इस वजह से नही लेते कि, हाय (आठ-आठ आँसू बहाकर) अगर दूल्हा का नाम बीवी ले ले तो दूल्हा ('दूल्हा' का लफ्ज कहकर बहुत रोई, और कुछ कहने को थी कि फिर आँसू उमड उमडके आने लगे) हाय! (फिर जब्त करके कहा) नाम दूल्हा का इस सबब से नही लेते कि दूल्हा मर जायगा। मैं इन बातो को नही मानती, मगर फिर भी खयाल आ ही जाता है। अरी रूह—या जो कोई तुम हो—क्या जाने रूह है या क्या है

बस इतना सुनकर रनबीर सिंह ने कहा—प्यारी कम्मन, मेरी जान से प्यारी! मैं किसी की रूह हूँ न छलावा हूँ, न किसी न मुझ पर टोना किया है, मैं तुम्हारा डियर डार्लिंग रनबीर सिंह हूँ। कामिनी न पूछा, प्यारे, डियर डार्लिंग मैंन बशक लिखा था, लेकिन तुम ठीक-ठीक बताओ कि कब लिखा था, और कैसे लिखा था। मुझ तो खूब याद है, मगर तुम बताओ!

जोगी ने खत का हवाला देते हुए वह शेर दोहराया—

मिला खत तुम्हारा डियर डार्लिंग—कलेजे से मैंने लगाया उसे।

बस यह शर सुनना था कि कामिनी फिर लिपट गई। और तड़का हो गया। और जो खयालात कामिनी के थे वह सब बदल गये। और कामिनी जो अपन आप को राँड कामिनी, बेवा कामिनी समझती थी, वह अब मिसेज रनबीर सिंह है और सुहागिन है।

—o—